इस्लाम: कामवासना और हिंसा

अनवर शेख

प्रकाशक

दी प्रिन्सीपलिटी पब्लिशर्स

पो.ओ. बोक्स 918

कार्डिफ, ब्रिटेन

इस्लाम कामवासना और हिंसा

प्रकाशकः
दी प्रिन्सीपलिटी पब्लिशर्स
पोस्ट आफिस बाक्स 918
कार्डिफ ब्रिटेन

मूल्य : 85/ रुपए

मानवता को

जिसकी आत्मसाक्षात्कार की प्रगति को, विश्वभर में स्वयं नियुम्त मजहबी मसीहाओं की अहंकारयुक्त चालबाजियों ने अवरुद्ध कर दिया है ।

विषय सूची

टिप्पणी - 1. पुस्तक में जहां कही भी हदीस, इब्न ऐ माजाह तिर्मजी, मिस्किट, सहीह मुस्लिम, बोखारी के उद्धरण हैं व`लेखक की अंग्रेजी मे लिखित मूल कृति (इस्लाम- सैक्स एंड वायलैन्स) से लिए गए हैं क्योंकि इनके हिन्दी अनुवाद सुलभ नहीं हैं, अतः हिन्दी अनुवाद अंग्रजी रूप में उल्लिखित हदीसों से किया गया है और यह पूरा यत्न किया गया है कि भावार्थ सही निकले ।

टिप्पणी 2 - कुरआन के उद्धरणों के हिन्दी अनुवार , हिन्दी कुरआन अनुवादी- मौहम्मद फारूक खां, मकतबा अल हसनात (देहल) संस्करण 2001,2241 - कूचा चेलान, दरियांगज, नई दिल्ली 110002 से लिए गए है ।

प्राकथ्थन

अल्लाह ईमान न रखने वालों को सबसे बुरा जीव मानता है । (अल- अनफाल 8:55) और इस प्रकार अपने आपको काफिरों का शत्रु घोषित करता है । (अल बकरह 2:90) जो उसमें ईमान नहीं रखते, उनके प्रति घृणा इतनी गहरी है कि वह उनकी हत्या और स्थायी रूप से उनके नाश का आदेश देता है । इस सर्वाधिक विकराल योजना को पूरा करने के लिए वह इन दुष्कर्मों के लिए जन्नत बख्शता है जो दैहिक सुखों का सबसे विलासमय स्थान है । इस प्रकार कामवासना पूर्ति और हिंसा इस्लामी मजहब के दो स्तम्भ हैं ।

पाठकों को यह ध्यान रखना चाहिए कि इस्लाम की मूलभूत धारणा यह है कि अल्लाह एक है और वह '' सर्जक, सर्व शक्तिमान और सर्वज्ञ '' है । यदि यह सत्य होता तो अल्लाह ने सबको मुसलमान ही बनाया होता , किन्तु ऐसा नहीं हुआ क्योंकि मानव, हिन्दू ईसाई, यहूदी, नास्तिक आदि के रूपो में जन्म लेते हैं अतः यौन और हिंसा की घूस देकर उनका मतान्तरण दैवी मार्ग नहीं हो सकता और भी खराब बात यह है कि यदि कोई व्यक्ति केवल अल्लाह में विश्वास रखता है, वह भी मुस्लिम कहलाने के योग्य नहीं है, वह भी नरक की आग में झोंक दिए जाने योग्य है । जन्नत के योग्य अधिकारी बनने के लिए एक व्यक्ति को मौहम्मद पर ईमान लाना अनिवार्य है । स्पष्ट है कि मौहम्मद भी उतना ही बड़ा है जितना बड़ा अल्लाह ।

वस्तुतः अल्लाह नाम मात्र का ही सर्वेसर्वा है किन्तु मौहम्मद ही इस्लाम के पीछे का वास्तविक चालन बल है क्योंकि वही आचरण का मानक है , जिसका अनुसरण, प्रत्येक मुसलमान को भली भांति करना चाहिए और उसकी ही माध्यमीय शक्तियाँ हैं जो उसे जन्नत में पहुँचा सकती हैं जहां कामुक आमोद प्रमोद के असीम साधन हैं । यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि मौहम्मद '' सब जीवों के प्रति दयावान है '' जबकि अल्लाह यद्यपि उसे '' सर्व दयावान '' कहा जाता है , दोजख का सर्जक है, जिसे वह काफिरों से भर देने के लिए कृत संकल्प है । अल्लाह का व्यक्तित्व कितना परस्पर विरोधी है ?

निर्दोष लोगों की हत्या करना और उन्हें लूटना वह सबसे बड़ी बुराई की बात है जो कि हो सकती है और उससे भी अधिक सन्न कर देने वाल तथ्य यह है कि अल्लाह ऐसे अत्याचारों को जिहाद (पवित्र युद्ध) कहता है, लूट मार को ' कानून सम्मत और श्रेष्ठ कहता है और ऐसे निन्दित कर्मो के लिए जन्नत बख्शता है ।

जिहाद की योजना, हिंसा की पवित्र नियमावली, और उसका पुरुस्कार अर्थात्, जन्नत दुर्लभतम यौन सुखों के लिए सबसे अधिक विलासितापूर्ण स्थान का विश्लेषण करने पर हमें पता चलता है कि काम वासना और हिंसा की अलग अलग अवधारणांए नहीं हैं अपितु ये सुविचारित इस्लामी कामवासना संबंधी मनोविज्ञान के ही अभिन्न अंग हैं । यह इस्लामी मनोविज्ञान, नर की कामुक सुखों की दुर्बलताओं की पूर्ति के लिएनारी के अधिकारों और सम्मान की बलि देकर दुरुपयोग करना चाहता है ।

कोई भी ईश्वर अपने अनुयायी बनाने हेतु कामवासना पूर्ति और हिंसा का मार्ग नहीं अपनाएगा । दैवत्व की अवधारणा के प्रति घातक कोने के कारण यह ईश निंदा है । यह तो केवल अरब साम्राज्य बनाने के लिए मौहम्मदी योजना है ।

इस्लामी यौन मनोविज्ञान एक नवीन अनुसंधान हो सकता है, क्योंकि इस पर पहली बार इस पुस्तक मेंचर्चा हुई है । इस सत्य की स्थापना के लिए, मैनें उन सभी सन्दर्भो को नहीं लिया है जिन्हें गलत अर्थ लगाया जाना, कहा जा सकता है । चूँकि इस शोध ग्रंथ का प्रयोजन झूठ को जमाना नहीं है अपितु जन हित साधना है, तो यह आशाा है कि मुस्लिम विद्वान कुरआन की आयतों पर अमल करेगें जिनमें यह कहा गया है कि सत्य का ,बल प्रयोग (अंग्रेजी 2:255) के बजाय तर्क द्वारा (2:111) समर्थन किया जाना चाहिए ।

इस परियोजना में मेरी कितनी निष्ठा है , यह दिखाने के लिए मुझे यह घोषणा करनी पड़ेगी कि चूँकि यह पुस्तक जनहितार्थ लिखी गयी है और प्रकाशित हुई है अतः यह विक्रय के लिए नहीं है ।

अनवर शेख
कार्डिफ , यूके
1 दिसम्बर 2002

अध्याय 1

इस्लाम में यौन मनोविज्ञान की अवधारणा

इस्लाम के संदेश का यदि ध्यानपूर्वक विश्लेषण किया जाए तो यह विषय यौन विज्ञान का नूतन सिद्धान्त है जो कि दैहिक भोग और विवेकहीन हिंसा, इन दो स्तम्भों पर आधारित है । यह सिद्धान्त उस अल्लाह के नाम पर होता है जो सर्वाधिक दयालु और सर्वोत्तम निर्णायक होने का दावा करता है । यद्यपि यह मजहब इन स्तम्भों के बिना खड़ा नहीं हो सकता, इन्हें बड़ी चतुराई से दैवी आवरण से छिपा दिया गया है । इस्लाम को बौद्धिकता की कसौटी पर कसते ही इस की चमक दमक समाप्त हो जाती है ।

इस सत्य को दिखाने के लिए मैं सर्वप्रथम मैं दो विश्वव्यापी किवदंतियों - यूनानी व बाइबिल का वर्णन करूंगा, जिन्होंने इस्लाम में नारी का लैंगिक स्तर निर्धारित किया है तथा नारी के शारीरिक आकर्षण का लोगों को , हिंसा की तथा कथित पवित्र अवधारणा, जिहाद के लिए उकसाने, लूटपाट करने और गैरइस्लामिक समाजों को उत्पीड़ित एवं पंगु बनाने के लिए प्रयोग किया है ॅ

यूनानी परम्परा के अनुसार पहली नारी पण्डोरा की विशेष रूप से रचना देवताओं के राजा ज्यूस ने उस नर को दंडित करने के लिए की थी , जिसने प्रोमिथ्यूस द्वारा चोरी की गयी पवित्र अग्नि की भेंट को ले लिया था । उसने देवताओं के कलाकार, हिफेस्टस को आदेश दिया कि वह मिट्‌टी तथा पानी को मिलाकर एक ऐसी नारी की रचना करे जिसकी आवाज तो नर जैसी हो लेकिन सुन्दरता और सौम्यता में वह अमर देवी जैसा हो । उसने ऐथीना को यह आदेश दिया कि उस नारी को अच्छे से अच्छा ,क्लिष्टतम, कपड़ा बुनने की कला का प्रशिक्षण दिया जाए । सुनहरे एफ्रौडाइट को आदेश दिया गया कि इस नारी के शिर को लावण्यता के साथ दुखद इच्छाओं और चिंताओं से ऐसा अंलकृत करे जो उसके अंगों को शिथिल कर दे । इसके साथ ही प्रभु के संदेशवाहक हर्मीज को आदेश दिया कि इस नारी को कुत्ते जैसी बुद्धि और धोखा धड़ी के आचरण से सज्जित करे । ज्यूस के आदेशो का पालन करनके लिए देवताओं ने उसे बोलने का बहका देने वाला ढंग दे दिया । जब उस नारी की रचना पूरी हुई तो उसका नाम पण्डौरा रखा गया क्योंकि प्रत्येक देवता ने उसे ऐक एसा उपहार दिया था जो कि नर के लिए अनिष्टता का स्रोत हो ।

ज्यूस के इस आकर्षक उपहार को उस एपिमीथ्यूस नामक पूरुष को उपहार दे दिया था जिस के भाई प्रोमिथ्यूस ने उसे चेतावनी दे रखी थी कि वह देवताओं से कोई उपहार न ले । परन्तु पण्डौरा की सुंदरता के आगे एपिमीथ्यूस उसकों ले लेने के प्रलोभन को न रोक सका ।

देखिए दैवी योजना किस प्रकार फलीभूत हुई ? प्रामिथ्यूस ने एक रहस्यमय संदूक एपिमीथ्यूस के पास इस इस स्पष्ट अनुदेश के साथ रखा कि किसी भी परिस्थिति में उसे खोला न जाए । जब पण्डौरा ने उस संदूक को देखा तो उसकी जिज्ञासा असीमित हो गयी और उसने संदूक को खोल दिया जिसमें से दस हजार बुराइयां एकदम निकल पड़ी और मानव जाति को सताने लगीं । समयानुसार संदूक का ढक्कन बंद हो जाने से केवल आशा ही रह गयी जो संदूक से न निकल सकी ।

यदि पंडोरा ने एपिमीथ्यूस की बात मान ली होती तो इस संसार में बुराइयों का नाम भी न होता । इस प्रकार इस कहानी से यह सिद्ध होता है कि-

1- नर निर्दोष है तथा नारी दोषी है ।

2- नारी के यौन आकर्षण का ही यह परिणाम था कि एपिमीथ्यूस उपहार ग्रहण करने के लिए गुमराह हो गया, यद्यपि उसके भाई ने उसे पहले से ही कठोरतापूर्वक सचेत किया हुआ था कि वह ऐसा न करे ।

3- चूंकि एपिमीथ्यूस ने चेतावनी पर अमल किया परंतु पण्डौरा ने ध्यान नहीं दिया, इसीलिए नर नारी की तुलना में संकल्प, बुद्धिमत्ता और सामान्य चरित्र में श्रेष्ठ है किन्तु नारी अनिष्ट, दुःख एंव गलतफहमी का मुख्य स्रोत है ॅ

नारीत्व के इस हीसियोड दृष्टिकोण ने नारी को समान में निम्नतम स्तर पर रखकर यूनानी संस्कृति की आधारशिला के रूप में काम किया है , फलस्वरूप यूनानी संस्कृति पितृसत्तात्मक बनी और नारी को मात्र चल सम्पत्ति का पद मिला । वह नर की कामपिपासा का खिलौना मात्र रह गयी । इस दिशा में उसे लड़कों से प्रतिस्पर्धा करनी पड़ी क्योंकि अधिकतर नर कामपिपासा शांति के लिए लड़कों को वरीयता देते थे ।

इसमें संदेह नही कि उपर्युक्त यूनानी दंत कथा ने मानव समाज को अत्यधिक प्रभावित किया है परंतु बाइबिल में वर्णित आदम की रचना की कथा में पण्डौरा की कहानी से अधिक मनोवैज्ञानिक गहराई है ।

बाइबिल के अनुसार - “ लार्ड गाड ने अपना रूप देकर नर की रचना करके कहा कि नर का अकेला रहना अच्छा नहीं । मैं उसके लिए एक साथी बनाउँगा -------------------- ”

“ और यहोवा गाड ने आदम को भारी नींद में सुला दिया और सुप्तावस्था में उसकी एक पसली निकाल कर उसके स्थान पर मांस भर दिया ।

और उस पसली से जिसे यहोवा गाड ने नर में से निकाला था, एक नारी की रचना करके आदम के पास लाए ।

और आदम ने कहा यह मेरी अस्थियों में से एक अस्थि और मेरे मांस में का मांस हैः उसका नाम नारी होगा क्याकि वह आदम में से ही निकाली गयी है । ”

इसीलिए पुरुष अपने माता और पिता का साथ छोड़ देगा परन्तु अपनी स्त्री के साथ चिपका रहेगाः और वे एक मांस पिण्ड जैसे होंगे ।

और वे दोनों ही नग्न थे, पुरुष और उसकी स्त्री, तथापि लज्जित नहीं थे । (उत्पत्ति 2:18-25) (पवित्र बाइबिल, बाइबिल सोसाइटी आफ इंडिया, 206, महात्मा गांधी मार्ग, बैंगलूर-560001)

उपर्युक्त छंदों में यह स्पष्ट कहा गया है कि -
1- नर, नारी के बिना एकाकी है ।
2- नर, नारी से पूर्ववर्ती है क्योंकि नारी की रचना नर की पसली से हुई है ।
3- नर के लिए नारी सबसे प्रिय है क्योंकि वह उसको अपनी अस्थियों की अस्थि तथा मांस का मांस मानता है ।
4- नर और नारी, अपने माता और पिता को छोड़कर, जब तक मृत्यु उनको अलग नहीं कर देती, एक साथ रहेंगे ।
5- उनकी गहन निकटता के कारण उनका एक दूसरे के सामने नग्न होना लज्जास्पद नहीं है ।

बाइबिल के अनुसार, नारी की रचना का स्रोत नर है और उसकी रचना पुरुष का साथ देने और उसको आनन्दित करने के लिए ही की गयी है । फिर भी पद मेँ स्त्री, पुरुष के लगभग समकक्ष है क्योंकि उन्हें अनंत काल तक एक सा थ एक मांस पिण्ड की तरह रहना है ।

यहाँ तो ठीक है । तथापि इस कथानक में एक विचित्र मोड़ आता है । इस युगल को रहने के लिए अदन के बाग में एक घर मिल जाता है । वहाँ न तो कोई दुःख न रोग , न ही मृत्यु थी । इच्छा मात्र से जीवन की सब सुख सुविधांए निःशुल्क उपलब्ध थीं ।

इस बाग में अच्छाई और बुराई के ज्ञान का एक वृक्ष था (उत्पत्ति 2 : 9) लाई गाड ने आदम को आदेश दे रखा था कि वह इस विशेष वृक्ष का फल कभी न खाए । किन्तु आदम ने अपनी पत्नि, हव्वा के आग्रह करने पर , अपने रचयिता के आदेश का उल्लंघन किया । इस घटना से पता चलता है कि आदम ने अपनी पत्नी को प्रसन्न करने के लिए गाड के आदेश की भी अवहेलना कर दी । इससे नर के लिए कामवासना तृप्ति की कितनी महत्ता है, यह प्रकट होता है । संक्षेप में कहें तो इस घटना से प्रमाणित होता है कि

1. नर के लिए दैहिक तृप्ति इतनी महत्वपूर्ण है कि वह कामवासना की तृप्ति के लिए गाड के आदेश का भी उल्लंघन करेगा । इसके विपरीत यदि गाड नर को , उसकी कामवासना पूर्ति के लिए अधिक से अधिक साधन अर्थात् कामिनियां और सलोने लड़के उपलब्ध कराएगा, तो वह गाड की पूजा अत्यंत नम्रता और उत्साह से करेगा ।
2. कामवासना पुरुष के कार्य कलापों की मुख्य चालन शक्ति है और वह उसके प्रमोद और निराशा में भी अहम भूमिका निभाता है । पुरुष की मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक दशा का निदान उसकी कामवासनाओं की पूर्ति के साथ संबधित है । यह संबंध किशोरावस्था या यौवनावस्था तक ही सीमित नहीं वरन् पूर्व में शैशवकाल तक जाता है , क्योंकि माता पिता के संबंधों का तारतम्य अथवा वैमनस्य शिशु की मानसिकता को प्रभावित करता है, जो माता पिता के बीच काम संबंधों की पारस्परिक संतुष्टि पर आधारित होता है । कोई भी पति पत्नि कितना ही शिक्षित एवं सम्पन्न क्यों न हों उनके बीच के काम संबंधों का सामंजस्य, जो प्रेम संबंधों का स्रोत होता है, नहोना शिशु के स्वस्थ विकास में सहायक नहीं हो सकता ।
3. नारी का यौनाकर्षण उसके प्रति नर की हिंसक प्रवृत्ति के विरुद्ध एक सबसे बड़ी ढाल है । वास्तव में यह एक ढाल से भी अधिक है, यौनाकर्षण स्त्री का एक आक्रामक शस्त्र हो सकता है, जिसके द्वारा वह पुरुषों को मरोड़ कर , पालतू बनाकर खेल खिला सकती है । इस शस्त्र को वह स्त्री अधिक शक्तिशाली बना लेती है जो प्रेम कला में दक्ष है और अश्रु बहाकर अपने सौन्दर्य को निखार कर पुरुष को ललचाकर और हार्दिक उल्लासपूर्वक और बड़े बड़े वायदे करके उसे उत्तेजित रखती है ।

किन्तु चर्च के नियंत्रक (एल्डर्स) इस कथानक की मनौवैज्ञानिक गहराई को न समझ सके । उन्होंने इस कथानक में निहित बुद्धिमत्ता को मानव कल्याण के लिए प्रयोग नकरके अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए प्रयोग किया । इस घटना को मामूली पाप बताते हुए जिसके कारण आदम का पतन हुआ, उन्होंने स्त्री को शैतान का एजेंट एवं पुरुष का शत्रु घोषित किया । ईसाइयों की इस व्याख्या के फलस्वरूप नारी को समाज में नीचा स्थान मिला और समाज पितृसत्तात्मक बन गया और स्त्री को दुख व पीड़ा क सहगामी होना पड़ा ।

पण्डोरा एवं हव्वा की कहानियों का आविष्कार स्त्री को पुरुष का शत्रु दर्शाने के लिए किया गया । शत्रु वह होता है जिससे डर लगे , क्योंकि उसके पास नुकसान व कमजोर करने व विनाश की शक्ति होती है । स्त्री का आक्रषण जो कि स्त्री के यौनाकर्षण का सकल प्रभाव होता है और उ सके तरसाने वाले हाव भाव एक ऐसे शक्तिशाली डर का कार्य करते हैं जिसके कारण पुरुष स्त्री के सामने घुट्ने टेके रहता है । इन कथानकों में पुरुष का स्त्री से भयभीत रहना ही वर्णित नहीं हैं , बल्कि ये स्त्री के प्रति घृणा भी भड़काते हैं जो पुरुष को स्त्री से टकराव के लिए उकसाते हैं ।

प्रत्येक वस्तु का आभास उसके विलोम से होता है । उदाहरण स्वरूप प्रकाश की पहचान अन्धकार से होती है और मीठे का ज्ञान कड़वे के बिना निर्रथक होता है । वास्तव में सभी मनोभावनाओं जैसे प्रेम, क्रोध, मित्रता आदि के विलोम भी हैं, स्त्री का आकर्षण भी कोई अपवाद नहीं हैः नर को प्रभुत्व की ललक होती है , जो स्त्री के आकर्षण का सामना करती है ।

इसका तात्पर्य यह नहीं है कि स्त्रियों में प्रभुता की ललक नहीं होती । उनमें यह ललक होती है परन्तु यह प्रभुता की ललक उनके व्यक्तित्त्व की , जिसे मे। यौनाकर्षण कहता हूँ, तुलना में बहुत कम प्रभावी होती है । मानव समाज मुख्यतः पितृसत्तात्मक है जो इस बात को निर्णायक रूप में सिद्ध करता है कि नर की प्रभुत्व की ललक बहुत ही तीव्र , सफल व सम्पूर्ण है ।

पितृसत्तात्मक समाज वह है जिसमें पुरुष स्वामी हैः उसका शब्द ही कानून है और स्त्री के लिए पिता , पुत्र और पति रूपी पुरुष के आदेश का पालन करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है । संक्षेप में उसका अस्तित्व पुरुष की सुविधा और मनोरंजन के लिए ही है । यह पतन की पराकाष्ठा है जिससे कि स्त्री जाति, हो सके तो हर कीमत पर बचने का यत्न करना चाहेगी । परन्तु यह उसके लिए सदियों से संभव नहीं हो सका है । यदा कदा कहीं, कहीं थोड़े समय के लिए मातृसत्तात्मके समाज उभर कर आए हैं ।

नर के प्रभुत्व की ललक की धारणा को समझने के लिए कठफोड़वा पक्षी की तरफ जांए जहाँ शक्तिशाली चिड़िया दुर्बल चिड़िया पर चोंच का प्रहार केवल यह सिद्ध करने के लिए करती है कि वह अधिक शक्तिशाली है । प्रभुत्व की ललक ही जीवन के सभी पहलुओं में प्रतिद्वन्दिता का स्रोत बनती है जिसे प्राप्त करने के लिए नवीन तथा ऊँचे लक्ष्य निर्धारित करने होते हैं ।

मेरी धारणा यह है कि मानव सभ्यता का तंत्र अन्ततः प्रभुत्व की ललक और स्त्रीजन्य आकर्षण के टकराव से संचालित होता है । ये दोनों विलोम, मौलिक विलोमें, यानि कि धनात्मक एवं ऋणात्मक ध्रुवों से अलग है जो परिमापमें समान होते हैं और सहयोगियों की तरह कार्य करते हैं नकि विरोधियों के रूप में ।

इसके विपरीत प्रभुत्व की ललक का यह ही उद्देश्य होता है कि शत्रु और मित्र, दोनों पर ही समान रूप से हावी हुआ जाए । इसी कारण यह ललक द्वेषपूर्ण, कठोर और अनैतिक भी हो सकती है । चूँकि स्त्री को पुरुष के मुख्य शत्रु के रूप में दिखाया गया है, प्रभुत्व की ललक विशेष कर नारी द्वेषी है अर्थात् नारीत्व के प्रति घृणा भावी है, अतः स्त्री की सम्पूर्ण अधीनता चाहती है, जिसे बड़ी चतुराई से शांति, निष्पक्षता एवं सौम्यता के रंग भर कर कुटिलता द्वारा भी प्राप्त किया जाता है । मजहब पुरुष का सबसे अच्छा मित्र रहा है क्योंकि इसकी सहायता से वह अपनी प्रभुत्व की ललक को बेलगाम करके स्त्री जाति को गाड के नाम पर मूर्ख बनाने में तथा उनके समस्त मानव अधिकारों को अपने पिताओं , पतियों, पुत्रों एवं भ्राताओं को प्रसन्न रखने के लिए छीन लेना चाहता है । बहु पत्नि प्रथा, रखैल बनाना आदि जिन्होंने स्त्री जाति को व्यभिचारियों की कामवासना की पूर्ति का खिलौना बना दिया है , कुछ जाने माने उदाहरण हैं ।

जैसे कि पहले कहा गया है, इस पृथ्वी पर मातृसत्तात्मक सभ्यतांए भी उभरी हैं, सीमित मात्रा में यह वह सामाजिक व्यवस्था है जहां पर माता परिवार की मुखिया होती है और वंश भी स्त्री का चलता है । मातृसत्तात्मक समाज पितृसत्तात्मक समाज का विलोम होता है ँ

पुरुष की तुलना में नारी कलात्मक होती है क्योंकि उसके जीवित रहने का यही एक मात्र रास्ता है, अन्यथा वह दया , प्रेम और दुलार है ँ यही कारण है कि वह राजनैतिक और सैन्य क्षेत्रों में पुरुष का एक दुर्बल विकल्प है, जिनमें सफलता और उन्नति के लिए मजबूती, स्वार्थ और हिंसक भावनाओं की आवश्यकता होती है । मातृसत्तात्मक समाज में अर्थात जहाँ स्त्रियों की सरकार हो, इसके सदस्य परस्पर कलह तो कर सकते हैं परन्तु यह सम्भव नहीं है कि वे युद्ध की घोषण कर दें, क्योंकि उनकी कठोरता में भी मृदुता और निर्दयता में भी दयालुता होती है ।

उपर्युक्त पार्श्व भूमि की चर्चा के बाद मैं इस स्थिति में हूँ मैं यह कह सकूं कि पैगम्बर मौहम्मद (उन्हें शान्ति मिले) ने कामुकता एवं हिंसा को इस्लाम के दो स्तम्भों के रूप में क्यों चुना ।

इतिहास साक्षी है कि मौहम्मद में जितनी प्रभुत्व की ललक थी उतनी और किसी भी व्यक्ति में नहीं थी । यदि हम सम्पूर्ण मानव समाज को एक पिरामिड के रूप में देखें तो चोटी पर अरबी पैगम्बर को ही पांएगेः उन्होंने मानव जाति के आचरण के लिए स्वयं को दैवी मानक के रूप में प्रस्तुत किया, जिसका तात्पर्य यह है कि सभी को उनके अनुसार सोचना एवं अनुभव करना चाहिए, उनके अनुसार ही खाना , पीना चाहिए और सभी कानून जो उन्होंने अल्लाह के नामपर बनाए हैं उनकी अपनी सुविधा के अनुकूल ही हैं । केवल अल्लाह में विश्वास ही का कोई महत्व नहीं है, इससे दैवी कृपा और जन्नत तब तक नहीं मिलेगी जब तक मोहम्मद में विश्वास न व्यक्त किया जाए । व ह एक ऐसा बिचौलिया है कि कयामत के दिन उसका शब्द ही इसका निर्णय करेगा कि कौन जन्नत में जाएगा और कौन दोखज में । इतना ही नहीं, अल्लाह और उसके फरिश्ते भी मोहम्मद की पूजा करते हैं । इसी से मोहम्मद की प्रभुत्व की ललक की तीव्रता सिद्ध होती है । यीशू मसीह भी यहोवा गाड की पूजा करते हुए पाए गए थे लेकिन अल्लाह और उसके फरिश्ते तो मौहम्मद की पूजा करते हैं ।

इस प्रकार की स्थिति के जो कि मनुष्य एवं अल्लाह दोनों की ही पकड़ से परे है, अर्जन के लिए धैर्य , आयोजना एवं शक्ति की आवश्यकता है । पैगम्बर को ये सभी मिले थे और उन्हें, इन सबको असामान्य सफलतापूर्वक संचालिक करने की योग्यता भी मिली थी । इन सब चर्चा मैने अपनी पुस्तक इस्लाम अरब साम्राज्यवाद में की है । इन के दोहराने की आवश्यकता नहीं है केवल इतना ही कहना है कि पैगम्बर ने यह सुनिश्चित कर लिया था कि उनका राष्ट्र एक अजेय सैन्य शक्ति बने ताकि एक ऐसा शक्तिशाली साम्राज्य बन जाए , जोकि प्रधानतः उनकी व्यक्तिगत पवित्रता एवं शिक्षा की पुनीतता पर टिका हो । यातना, अत्याचार और उत्पीड़न की प्रचण्ड खुराक दे सकने में सिद्ध एक अति शक्ति सम्पन्न एवं निडर सेना निर्माण द्वारा अरब साम्राज्य स्थापना के अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए पैगम्बर ने पुरुषों को आकर्षित करने हेतु कामोत्तेजना को सबसे आकर्षक बल के रूप में प्रयोग किया है । तथापि यह समझकर कि पुरूषों का आह्लाद सिर्फ शारीरिक भोग तक सीमित नहीं रहता, तो उन्होंने अपील की के आकर्षण का क्षेत्र विस्तृत करे जिहाद का अन्वेष(ा किया जिससे पवित्र सैनिकों (मुजाहिदो) को न सिर्फ स्त्रियों और लड़कों की ही प्रभूत मात्रा की पूर्ति होती थी, बल्कि गैर मुस्लिमो को लूटने और उनकी हत्या को भी कानूनी रूप दे दिया, जो इस प्रकार अल्लाह को प्रसन्न करने का एक सबसे अच्छा रास्ता बन गया । यह पैगम्बर की शतरंजी चाल थी जिसके द्वारा उनके अनुयायियों के मस्तिष्कों में एक जबरदस्त विश्वास पैदा हो गया कि लूटपाट , हत्या, बलात्कार तथा वर्णनातीत दुख दर्द फैलाना, बच्चों को अनाथ तथा स्त्रियों को विधवा करना जिहाद (पवित्र युद्ध) के रूप में इस्लाम का सर्वोच्च कार्य है जिसके द्वारा जन्नत (स्वर्ग) के द्वार खुलने की पूरी गारण्टी है । माना कि मुहम्मद के पहले भी बड़े बड़े विजेता हुए हैं परन्तु किसी ने भी ऐसे अत्याचारों की पवित्रता का दर्जा नही दिया जिनके बदले में आशीष, मंगलकामनांए एवं आनन्द मिलें । मस्तिष्कों की सफाई की यह शक्ति जो कि पैगम्बर मोहम्मद के पास थी , वह न केवल भारी मात्रा में थी, बल्कि सदैव के रहने वाली थी क्योंकि यह दोनों ही रूपों में चौदह शताब्दियां बीत जाने के बाद भी अभी भी उसी मजबूती से चल रहीं है ।

निष्ठुर, नीरस और निर्दयी लोग ही युद्ध जीतते हैं, पौरुषहीन लोग तो रक्त देखकर ही बेहोश हो जाते हैं । पैगम्बर बहुत ही गहरी दृष्टि रखते थे, उससे उन्हें उस मनोवैज्ञानिक तंत्र को भुनाने की क्षमता दी, जिसे मै स्त्री का आकर्षण बनाम प्रभुत्व की प्राप्ति को

फिर चाहे प्रेम हो या घृणा और न्याय हो या अन्याय, तो प्रभुत्व की ललक के आगे स्थापित आचार संहिता महत्वहीन हो जाती है । इसीलिए पैगम्बर मोहम्मद को पुरुषों का दर्जा स्त्रियों के दर्जे की अपेक्षा ऊँचा रखना पड़ा । अतः उन्होंने एक ऐसी योजना खोज निकाली जिसमें काम पिपासा की तृप्ति पुरूष के आदेशानुसार हो, जिसने पुरूष को तानाशाही के अधिकार से सज्जित किया और स्त्री को कामुकता का सिर्फ खिलौना बना दिया । पुरूष को कानूनी रूप से व्यक्तिगत वेश्यालयों की स्थापना का अधिकार दे दिया, जिनका नाम हरम रख दिया गया । विलासिता पूर्ण दुष्टता के इन घरों को न केवल " परम दयालू अल्लाह " की पूर्ण स्वीकृति थी बल्कि ये ही मुक्ति के एक मात्र उपाय भी थे क्योंकि जन्नत में प्रवेश पाने के लिए ही मुसलमान अल्लाह मोहम्मद के आदेशों कापालन करता है, ऐसी जन्नत जहां पर परम सुन्दरी कामिनियाँ तथा लड़के रहते हैं जोकि काम पिपासा की शांति के अद्भुत स्रोत हैं ।

यद्यपि " स्त्री का आकर्षण बनाम प्रभुत्व की ललक " मोहम्मद का उद्देश्य सफल बनाने के लिए एक प्रभावी योजना थी परन्तु इसकों अरब में लागू करना एक कठिन कार्य था क्योंकि अरब की भूमि में मातृसत्तात्मक पद्धति थी जिसमें माताओं और दादियों को बहुत अधिकार थे तथा वे आदर की दृष्टि से देखी जाती थीं ।

इस्लाम की यह नीति रहीं है कि जहाँ कही भी उसने प्रभुत्व पाया है वहाँ की इस्लाम पूर्व की संस्कृति को पूरी तरह से नष्ट कर दिया । अरब भी इसका अपवाद नहीं है ।

यदि कोई इतिहास का अवलोकन करे तो उसे पता चलेगा कि अरब में इस्लाम के उद्भव के पहले अनेक रानियाँ थी । यह सम्भव नहीं हो सकता था , यदि वहाँ पर स्त्रियों को मूलभूत नागरिक अधिकर न मिले होते ।

हम जानते है कि ट्गिलथ पिलेसर 3(745-727 ईसा पूर्व) ने जिसने असीरियन साम्राज्य की स्थापना की थी, सीरिया और उसके निकटवर्ती क्षेत्रों पर , कई सैन्य आक्रमण किए थे । अपने शासन के तीसरे वर्ष में वह अरब की रानी जबीबी से खिराज वसूलने में सफल रहा था । अरब की एक और रानी शमसियाह थी जिसे कि उसने अपने शासन काल के नौंवे साल में विजित किया था ।

पामीर के राजा की जिसका नाम भारतीय शब्द उदयनाथ था, जिन्होंने प्रसिद्ध फारसी शपूर को राजधानी सीटेसिफोन (अल मदीन) की सीमाओं तक खदेड़ा था, पत्नि जिनोबिया बहुत सुंदर साहसी और महत्वाकांक्षी थी । उसने अपने आपको अपने पुत्र वाहब उल्लाह का प्रतिशासक घोषित करके अपने राज्य का योग्यतापूर्वक शासन किया तथा पामीर पर पुनर्विजय के लिए रोमनों के कई आक्रमणों को विफल करे , अपने आप को पूर्व की रानी घोषित किया ।

अरब की रानियों में से सबसे अधिक प्रसिद्ध सुनामिता कन्या थी । जिसकी सुन्दरता ने बुद्धिमान सुलेमान को भी मोहित कर दिया था ' सुलेमान को मुसलमान उस समय ईश्वर का पैगम्बर समझते थे ' ऐसा विश्वास है कि वह अरब के केदार कबीले से थीं । उसे शारीरिक सौन्दर्य को सुलेमान ने जो एक रसिक कवि भी था, सुरक्षित रखा । अरब की इस सुन्दरी बिल्कीस को इतिहास में शिबा की रानी के नाम से जाना जाता था । सुलेमान की बुद्धिमत्ता की सुनकर वह उस पर मोहित हो गयी और ढेरों उपहार लेकर उससे मिलने के लिए यरूशलम तक गयी । भेंट वस्तुतः मादकतापूर्ण रहीं । बदले में बुद्धिमान सुलेमान ने भी शाही उपहारों के अतिरिक्त शिबा के रानी को जो कुछ भी उसनेचाहा वही उसको दिया । राजा सुलेमान ने उसको अपनी राजसी उदारता से बहुत कुछ दिया । तब वह अपने सेवकों समेत अपने देश को लौट गयी ।

(पवित्र बाइबिल पुराना और नया नियम - राजाओं का वृत्तान्त- पहला भाग- राजा, 10.13 पृष्ठ 503 बाइबिल सोसाइटी आफ इंडिया, बेंगलूर)

उपर्युक्त छंदों का बाइबिल के विद्वानों ने यह अर्थ लगाया है कि सुलेमान ने अपने आतिथ्य में शिवा की रानी की कामपिपासा तृप्त की । यह व्याख्या अतिश्योक्ति तो लग सकती है, परन्तु इतिहास द्वारा इसके सत्य होन की पुष्टि की गयी है । गाड के इस पैगम्बर को स्त्रियों के संग्रहण की अभिरुचि थी ।उसने अपने हरम में अपनी 700 पत्नियाँ के अतिरिक्त 300 रखैलें और जोड़ ली ।

इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि शिबा की रानी ने इस अवसर को कामुक उल्लास के उत्सव के रूप में मनाया । वह गर्भवती हुई तत्पश्चात एक पुत्र को जन्म दिया जो कि मैनेलिक द्वितीय के नाम से जाना गया : जिससे यहूदियों के एक छोटे से अफीकी कबीले का जिसमा नाम फलाशा था, प्रादुर्भाव हुआ, यह कबीला 1867 ई0 तक अज्ञात रहा था ।

उपर्युक्त वृतान्त का प्रयोजन यह दर्शाना है कि अरब की स्त्रियाँ अपने पुरुषों की, पर्दों में रहने की बन्दिनी नहीं थी । यह परिस्थिति इस्लाम ने स्त्रीत्व के प्रति छल करके पैदा की ।

पैगम्बर मोहम्मद ख़ुद खदीजा के विश्वासपात्र थे जिसके साथ बाद में उन्होंने विवाह किया । यह उल्लेखनीय है कि शक्तिशालिनी खदीजा के, जो कि स्वयं अधिकार सम्पन्न काफिलों की व्यापारी थी, जीवन काल में अल्लाह ने मुस्लिम औरतों के पर्दानशीन होने का कोई आदेश नहीं दिया । इतना हीं नहीं मोहम्मद ने खदीजा के जीवित रहने तक बहुपत्निवाद भी नहीं अपनाया । यद्यपि खदीजा उनसे आयु में 15 वर्ष बड़ी थी और मोहम्मद की पत्नि बनने से पहले वह दो बार विवाह कर चुकी थी ।

यह भी उल्लेखनीय है कि मोहम्मद के उदय के पहले अरब में बहुपति प्रथा प्रचलित थी । इस प्रथा में एक स्त्री एक ही समय में कानूनी रूप से एक से अधिक पति रख सकती थी और घरेलू मामलों में स्त्रियों का पूर्ण आधिपत्य था ।

महाभारत में द्रौपदी की कथा से पता चलता है कि बहुपति प्रथा का मूल भारत में था । उनका पाँचों पांडव भाइयों से विवाह हुआ था । बहुपति प्रथा का तात्पर्य यह नहीं है कि एक स्त्री से अनेंक पुरुष सम्भोग के अधिकारी हो जांए । यह नियमित विवाह का रूप है जिसमें स्त्री स्वामी होती है । इस प्रथा का संबंध रिश्तेदारी की प्रथा से था । आमतौर पर इस प्रकार के वैवाहिक संबध भाइयों से ही होते थे यद्यपि अन्य पुरुष भी इस व्यवस्था में प्रवेश पा सकते थे और अपने को भाई कहला सकते थे ।

तत्वतः बहुपति प्रथा " व्यभिचारी मानसिकता " से बिल्कुल भिन्न थीं । " लैक का तात्पर्य उस सामुदायिक क्षेत्र से है जिसमें किसी प्रजाति के दो या दो से अधिक नर सम्भोग करते हैं । कीट पतंगों का लैक आचरण क्रीड़मयी होता है । परन्तु पर स्तनधारियों में इसका तात्पर्य है कि वे एक सुरक्षित क्षेत्र चुन लेते हैं जिसमें वे अपनी उग्रता के प्रदर्शन द्वारा काम, भोजन, पानी की प्राथमिकता

स्थापित करते हैं । निकट खड़ी हुई मादांए विजयी नर से इतना डर जाती है कि वे अपने आपको विजयी नर की कामपिपासा के लिए स्वयं इच्छापूर्वक समर्पण कर देती हैं । इस स्थिति में मादा को कोई अधिकार नहीं होता , उसका इच्छुक सहयोगी होना आवश्यक न हीं है ।उसको नर की इच्छानुसार सदैव सुलभ रहना चाहिए । इसी को मैं प्रभुत्व द्वारा वासना पूर्ति कहता हूँ । इससे उस स्त्री सुलभ आकर्षण की रक्षात्मक भूमिका समाप्त हो जाती है जिससे स्त्री को उसकी शालीनता , बड़प्पन और भव्यता मिलती है । लैंगिक दृष्टि से पुरुष के लिए एक आदर्श स्थिति है क्योंकि इससे आज्ञा मात्र से शारीरिक सुख सुलभ हो जाता है ।

उपर्युक्त स्थिति मातृ सत्तात्मक, व्यवस्था के बिल्कुल विपरीत है जिसमें नारी की गरिमा एवं सुन्दरता का सहज आदर निहित है । सत्य यह है कि इस सामाजिक व्यवस्था में स्त्री का वही महत्व होता हे जो मधुमक्खी के लिए पुष्प का, पतंगे के लिए दीपशिखा का और सूखी भूमि के लिए वर्षा का । इस प्रकार यह प्रभुत्व की ललक की कीमत कम कर देता है जो सामान्यतः पुरुष के लिए चालन बल है । वास्तव में पुरुषत्व प्रभुत्व की ललक का सहभागी है जो जंगली पशुओं का पालतू बना देने, तूफानों को काबू कर लेने और साम्राज्य निर्माण के लिए प्रेरित करता है । लोग जिनकी आक्रामकता की भावना कामवासना की पूर्ति के आगे हीन पड़ जाती है, वे सिर्फ काम के पूजक बन कर रह जाते हैं, वे स्त्रैण हो जाते हैं और ऐसी परिस्थिति में जब उच्च साहस, मजबूती, एवं प्रभुताकी कठोर परीक्षा होती है, तब अपनेआप को अक्षम महसूस करते हैं ।

इस प्रकार स्त्री का आकर्षण, पुरुष के प्रभुत्व की ललक का विपरीत ध्रुव नहीं रहता, क्योंकि यह उस ललक की कार्यशील सक्रियता में उसके समान नहीं रहता , और पुरुष के उस पाशविक बल के आगे चुनौती का काम करता है । प्रभुत्व की ललक का पुरुषत्व से वहीं संबंध है जो रेल का इंजन से , लावा का भूकम्प से, और सिंह का दहाड़ से होता है । इस प्रकार पुरुष अपने को तब तक पुरुष नहीं समझता जब तक कि वह समाज में प्रभुत्व शाली नहों । पितृसत्तात्मक समाज का यही रहस्य है जिसकी स्थापना स्त्रियों के अधिकारों का हनन कर के होती है ।

पैगम्बर मोहम्मद को इस तथ्य का ज्ञान था और उनके खदिजा से विवाह ने, जिसमें खदीजा प्रत्यक्ष रूप से प्रभुत्वशालिनी थी, पैगम्बर को पुरुष की प्रभुत्व की ललक का अधिक बोध कराया होगा । इस प्रकार उन्होंने प्रभुत्व की ललक और स्त्री के कामाकर्षण की सैद्धान्तिक नीति गढ़ डाली जिससे एक वास्तविक शक्तिशाली सांघातिक एवं कम्पमान राष्ट्र का निर्माण हो सके और जो एक साम्राज्य बन सके । इस प्रकार उन्होंने अपने मजहबी विचार विमर्श में कामोपभोग को केन्द्रीय भूमिका प्रदान हीः पुरुष को सभी अधिकार प्राप्त थे और स्त्री को सभी प्रकार के बन्धनों का भार ढोना था । पुरुष अपनी इच्छानुसार जितनी चाहें पत्नियाँ और रखैलें रख सकता है, एक सच्चा मुसलमान ही जन्नत में प्रवेश का अधिकारी है जहाँ पर कामवासना पूर्ति के चुनिन्दा साधन उपलब्ध हैं । पवित्र और द्रुत गति से स्वर्गीय हूरों को प्राप्त करने का मार्ग जिहाद है , जो गैर मुसलमानों की मारकाट, हत्या और जनसंहार को इतना पवित्र बना देता है कि यदि युद्ध में जीवित बच गया तो मुजाहिद (लड़ाकू) को लूट का माल मिलता है साथ साथ अल्लाह की दया से कामिनियां भी मिलती हैं और यदि युद्ध में मारा गया तो वह सीधा जन्नत जाएगा जहाँ पर कम से कम 72 हूरें अपने हृष्ट पुष्ट शरीरों को उसके प्रति समर्पित करने के लिए बेसब्री से प्रतीक्षा कर रही होंगी ।

इस समस्त दैवी योजना का सम्पूर्ण उद्देश्य मोहम्मद को पवित्र आत्माओं में से भी पवित्रमत के रूप में स्थापित करना था । यह तब तक सम्भव नहीं था जब तक युद्ध न लड़ा जाए । परन्तु लोग जब तक बड़े बड़े इनाम बदले में न मिलें, अपना जीवन जोखिम में नहीं डालते । इसका हल पवित्र जेहाद की संकल्पना है जिसे मोहम्मद ने अद्भुत चतुराई से गढ़ दिया । यह दावा किया जाता है कि जिहाद का वास्तविक उद्देश्य अच्छाई को स्थापित करना है और बुराई को रोकना है । (सूरह अत तौबा 9:25 और सूरह आले इमरान 3:110, 111 संस्करण 2001 अनुवादकः मुहम्मद फारूक खाँ , प्रकाशक मकतबा अलहसनात (दिल्ली) 2241 – कूचा चेलान दरियागंज, दिल्ली) परन्तु इतिहास कुरआन के इस विचार का समर्थन नहीं करता । निम्नलिखित घटना जिहाद की सच्ची प्रकृति और कामवासना के साथ इसके संबंध को दर्शाती है (यह घटना सर विलियम म्यूर की पुस्तक " लाइफ आफ मोहम्मद से ली गयी है (पृष्ठ 418-422) यह पुस्तक 19 वीं शताब्दी में प्रकाशित हुई । फिर भी किसी ने इसमें वर्णित तथ्यों को झुठलाने का साहस नहीं किया ।

हुनैन के चुद्ध में जो कि एक फरवरी 630 ई. को हुआ था, लूट का निम्नलिखित सामान मिला –

" 24000 ऊँट, 40000 भेड़ें और बकरियाँ , 4000 औंस चांदी और 6000 कैदी । इन सबको नि कट की घाटी अल जिराना में ले जाया गया और ठहराया गया जहाँ पर अत तैफ से सेना की वापसी की प्रतीक्षा थी । "

अत तैफ के नागरिकों ने वीरता से सामना किया परन्तु मोहम्मद की सेना ने उनके प्रसिद्ध , अंगूरों के बगीचों को जो उनकी अर्थव्यवस्था का आधार थे , ध्वस्त करना शुरू कर दिया तो उन्होंने आत्मसमर्पण कर दिया । किन्तु समर्पण की प्रक्रिया में काफी समय लगा और उस समय अल्लाह के सिपाहियों को लूट का सामान बाँटने के प्रतीक्षा के लिए बहुत लम्बा लगा ।

कैदियों को उनके संबंधियों को सौंपना स्वीकार करके जैसे ही मोहम्मद अपने ऊँट पर सवार होकर अपने तम्बू की तरफ बढ़े तो उनके अनुयायियों को और अधिक प्रतीक्षा करना असह्य हो गया । वे लूट के माल का तुरंत बँटवारा चाहते थे और उनका रास्ता रोककर वे चिल्लाने लगे कि लूट के सामान ऊँटों और भेड़ों आदि का बटवारा करो ।

" भीड़ ने हल्ला बोलकर उनके साथ इतनी धक्का मुक्की की कि उन्हें एक पेड़ के नीचे शरण लेनी पड़ी और उनका चोगा फट उनके कंधों के नीचे गिर गया । मोहम्मद जो भारी धक्का मुक्की से बचकर कुछ अधिक मुक्त स्थिति में आ गए थे, चिल्लाए " लोगों ! मेरा चोला मुझें वापिस करो और अल्लाह की कसम कि सब भेड़ों और ऊँटों को चाहे वे संख्या में इस जंगल के पेड़ों जितने हों, मैं उन सबको आप लोगों के मध्य बाँट दूंगा । तुमने अब तक मेरे में कोई भी कोताही या झूठ नहीं पाया है " ।

" इसके बाद अपने ऊँट के कोहान का ऐक बाल तोड़ा और उसको ऊँचा करके कहा कि " लूट के माल में से मैं अपने पाँचवे भाग के अतिरिक्त अपने पास कुछ भी नहीं रखूंगा और उसके भी मैं आप लोगों में बाँट दूंगा । इस प्रकार वे सब शान्त हुए और मोहम्मद ने अपना रास्ता लिया । "

उपर्युक्त उदाहरण से यह बिल्कुल स्पष्ट है कि मोहम्मद के अनुयायी अच्छाई स्थापित करने के लिए नहीं बल्कि लूट का माल हड़पने के लिए उनके साथ आक्रमणों मे सम्मिलित हुए, उन्होंने मोहम्मदके साथ जो दुर्व्यवहार किया उससे उनके लालच का पता चल जाता है ।

पुनश्च अनुयायी बढ़ाने के लिए और लूट का माल हड़पने के लिए मोहम्मद ने जिहाद का एक औजार की तरह इस्तेमाल किया । इस घटना के अनुसार पैगम्बर ने उन लोगों को , जिन्होंने इस्लाम को ताजा ताजा अपनाया था और जिनका मतान्तरण कुछ महत्वपूर्ण था, लूट में सबसे अधिक अंश दिया था । उदाहरणार्थ अबू सूफियां और उसके दो बेटों को प्रत्येक को सौ सौ ऊँट मिले थे और इसी आधार पर हकीम इब्न हिजाम, साफवन, सुहैल और कई अन्य लोगों को भी लूट का माल मिला था । ये वे ही लोग थे जो कि कुछ सप्ताह पहले मोहम्मद के कट्टर शत्रु थे । उससे नीचे के मुखियाओं को प्रत्येक को पचास पचास ऊँट मिले थे और फिर भी असन्तुष्ट रहे उनका हिस्सा निःसंकोच दुगुना कर दिया गया ।

जोईल जैसे लोग भी थे, जिन्हें मौखिक सहानुभूति के अतिरिक्त कुछ भी नहीं मिला । इस प्रकार के वितरण पर हुई शिकायत के उत्तर में पैगम्बर मौहम्मद ने कहा थाः मैं इन लोगों का हृदय इस्लाम के पक्ष में जीतना चाहता हूं जबकि जोईल को ऐसे किसी भी लालच की आवश्यकता नहीं थी ।

क्या यह शुद्ध राजनीति नहीं है ? क्या अल्लाह को अपनी पूजा कराने के बदले में निर्दोष लोगों को लूटने और लूटकर आए लोगों को शांत करने के लिए एसे व्यवहार की आवश्यकता है ? यदि अल्लाह का यही व्यवहार वास्तविक है तब क्या वह पूजा करने योग्य है ?

धन और औरतें पुरुष की दो मनोवैज्ञानिक दुर्बलताएं हैं और जिहाद दोनों का ही उपचार कर देता है । अत तैफ के युद्ध के कैदियों में तीन सुंदर स्त्रियां थी । पैगम्बर ने एक अली को दूसरी उत्थमान को तीसरी उमर को दे दी ।

यह तथ्य याद रहे कि अली और उत्थमान पैगम्बर के दामाद थे और उमर उनके श्वसुर थे ।

पुनः यह ध्यान रहे कि इस्लाम में अपनी गुलाम लड़कियों के साथ सम्भोग युक्तियुक्त था, पैगम्बर के स्वयं के पास दो गुलाम लड़कियाँ थीं । उनमें से एक मैरी, उनके पुत्र इब्राहीम की माँ थी जो कि शैशवास्था में ही मर गया था । इस प्रकार की प्रथा रोमन साम्राज्य में एक गम्भीर अपराध थी और एक लम्पट मालिक के लिए मृत्युदण्ड निर्धारित था ।

गुलाम स्त्रियों को अपने दामाद व श्वसुर को देना एक असाधारण कार्य था, इसकी नैतिकता समझ से बाहर है जब तक कि यह जिहाद का एक अभिन्न अंग नहो, जिसमें इसे मुजाहिद, मुस्लिम योद्धा के लिए, अल्लाह की नैमत बताया गया है । यद्यपि स्त्रियों के लिए यह एक बड़ा अभिशाप है जियमैं उनका पद एक घरेलू नौकरानी तक सीमित कर दिया जाता है, जिसका इच्छानुसार भोग किया जा सकता है, बेचा जा सकता है या फेंक दिया जा सकता है इससे यह साफ पता लगता है कि जिहाद पुरुष के प्रभुत्व का एक औजार है जो सरल एवं सस्ते सम्भोग के लिए स्त्रियों को नीचा दिखाता है ।

परिशिष्ट

वासना और हिंसा के विषय में इस्लामी दृष्टिकोण पर इतनी बुद्धिमानी से छलावरण डाला गया है कि वह दोष को गुण, गलत को ठीक और अन्धकार को प्रकाश की तरह दिखाता है । नितान्त सत्य यही है कि यह यौनमनोविज्ञान से भिन्न कुछ भी न हीं है । जिस अरब साम्राज्यवाद के सृजन ओर उसे बनाए रखने के लिए ही सोच समझकर खड़ा किया गया है । चूँकि इस पुस्तक में पहली बार यह आवरण हटाया गया है अतः यह अनिवार्य है कि इसके वर्णन में किसी भी प्रकार का भ्रम न रहे । अतः इसके मूल, इसकी प्रकृति और इसके प्रयोजन के सन्दर्भ में आधुनिक मनोविज्ञान की भाषा में इसकी मुख्य विशेषताओं को दोहराया जाना ही चाहिए । यौन मनोविज्ञान के इस्लामी सिद्धान्त को अग्रलिखित ढंग से वर्णन किया जा सकता है ।

वासना और हिंसा ऐसे दो स्तम्भ हैं जिन्होंने इस्लाम को इसके उदय से ही आधार दिया है । यद्यपि व्यवहार में, इन्होंने सभ्यता का विध्वंस ही किया है, किन्तु दिखाई ऐसे पड़ते हैं जैसे वे शुद्धता पवित्रता और ईश्वरीय विधान के सिरमौर हों ।

इस्लाम ने वासना और हिंसा को अपने मजहबी सिद्धान्त में इतनी परिश्रमशीलता से मिश्रित किया है कि अपने विवरणों सहित ये दोनों तत्व '' यौनमनोविज्ञान '' के घटक बन जाते हैं ।

इस्लामी मनोविज्ञान क्या है ? इस अवधारणा को समझने के लिए ओल्ड टैस्टामैण्ट देखना हो गा । इसके मूल सिद्धान्त जैनेसिस 1-3 में मिलते हैं । यदि सरल शब्दों मे कहना हो तो इसका अर्थ है कि गाड ने नर को अपना रूप देकर बनाया । यह जानकर कि आदम एकाकी है और फलतः असंतुष्ट है, गाड ने आदम की पसली से नारी की रचना की । इससे नारी पर नर की पूर्ववर्तिता का पता चलता है, जिसका स्वाभाविक रूप से प्रदत्त कार्य नर के मनोरंजन के लिए जीने से भिन्न कुछ नहीं हो सकता । चूँकि नारी नर में से निकलती है , वह अनिवार्यतः नर के मनोवैज्ञानिक तंत्र का नियंत्रण करती है फलतः इसे सुख और दुख नारी के उसके प्रति व्यवहार पर निर्भर करते हैं । नारी का नर पर इतना भारी प्रभाव पड़ता है कि वह नारी को सम्मान देने के लिए ईश्वर की

भी अवहेलना कर देता है । यह है वह कारण कि नारी, गाड के लिए और उन सब के लिए जो धर्म परायण बनना चाहते हैं एक खतरा बन जाती हैः यह गाड की इच्छा है कि उसे नर नियंत्रण में रखने के लिए उसके स्वातंत्र्य का दमन किया जाए ।

इस्लाम ने नारियों के अधिकारों पर जो प्रतिबंध लगाए हैं, उनको देखते हुए, यह बात उभर कर आती है कि नर को यौन आनन्द देने की उसकी योग्यता , उसका एक सक्षम शस्त्र है जो स्वांग रचने, चालाकी, चोचलेबाजी, सुंदर बनने की कलाओं, पहनावे का लालित्य, और आत्मदर्शन की विधियों के विशेषताओं से और घातक बन जाता है । इस कौशलों के सम्मिलित प्रभाव को '' नारी का आक्रषण कहा जा सकता है । वस्तुतः यह वांछनीय है किन्तु लुभावना सुखद और आनन्ददायक होते हुए भी नर की प्रभुत्व की ललक के जो उसके बड़प्पन, शान और प्रताप का स्रोत है, सर्वथा विपरीत है । एक पुरुष, स्त्री के आकर्षण का दास बन जाने पर पुरुषत्वहीन हो जाता है क्योंकि उसमें स्त्रीत्व की विशेषताएं आ जाती हैं और उसे एक सैनिक, अग्रेसर, साहसिक कार्यकर्ता या नायक बनने के अयोग्य बना देती है ।

चूँकि यौन तृप्ति पुरुष का सबसे बड़ा सुख है उसका संन्यासी जो जाना या ब्रहमचर्य कापालन करना उसके लिए स्वाभाविक है । वस्तुतः नर को यौन सुख भोगने के जितने अधिक अवसर मिलते हैं उतना ही उसकी प्रसन्नता की सम्भावना अधिक है किन्तु दैहिक तुष्टि का परिणाम नारी के आकर्षण के प्रति समर्पण नहीं होना चाहिए । इसके विपरीत , इसे नर की प्रभुत्व की ललक को प्रबल बनाना चाहिए, किन्तु यह तभी सम्भव है जब वह यौन तृप्ति आदेश से प्राप्त करे और अनुनय विनय से नहीं । इस प्रकार नर के प्रभुत्व की ललक और नारी के स्त्री सुलभ आकर्षण में सीधा टकराव है । चूँकि प्रभुत्व की ललक वह चालन शक्ति है जो उसे सब चुनौतियों पर विजयी होने का सामर्थ्य देती है, इस्लाम ने वे सब विधिक और सामाजिक कदम उठांए हैं जो नारी को उसकी स्वतंत्रताओं से वंचित करते हैं जिससे नारी के आकर्षण की शक्तियाँ निष्प्रभ बन जाती हैं । बहुपत्नि प्रथा, पर्दा, उत्तराधिकार संबंधी नर के वरीयतापूर्ण अधिकार, विधिक साक्ष्य देने में पक्षपातपूर्ण सुविधांए और स्वेच्छा से स्त्री को तलाक देना , कुछ ऐसे उदाहरण हैं ।

और भी अधिक स्तम्भित कर देने वाली बात यह है कि नर का नारी को तब पीटने का अधिकार है जब वह उसे प्रसन्न न कर पाए या उसे उन सुखों को देने की स्वीकृति न दे जिन्हें वह चाहता हो । नारी की पिटाई, इस्लाम की एक विशेषता मात्र नहीं है अपितु उन अन्तर्निहित आवश्यकताओं काएक अंग भी है जो यह मजहब नारी पर थोपता है, जिससे वह नर द्वारा किए जाने वाले उत्पीड़न को दैवी आशीर्वाद और कृपा और धन्य घोषण मानें । यह मुलम्मा चढ़ी , धर्मपरायणता, वस्तुतः एक प्रकार की स्वपीड़न रति (माशूकता वाद) है । जिसके अनेक रूप हैं ।

1. यह उन लोगों पर लागू होता है , जिन्हें कामेच्छा तुष्टिकरण, आत्मअवमानना और शारीरिक आघात में प्राप्त होता है ।
2. इसका भावार्थ अपने आपको क्षति पहुँचाने वाले व्यवहार तक बढ़ जाता है जो कि एक मुसलमान महिला की धर्मपरायणता का प्रमाण चिन्ह बन गया है, उसका पति उसके लाक्षणिक देवता का पद धारण करता है और उसे प्रसन्न करने के लिए, वह अपनी अवमानना करके पवित्र, गौरवशालिनी और अधिकार सम्पन्ना अनुभव करती है ॅ
3. आत्म अवनति के द्वारा,मुस्लिम नारियों की अधीनतापूर्ण भूमिका, जो कि स्वीपीड़न रति का एक रूप है, कुरआन द्वारा उनके लिए निर्धारित की गयी हैः इसमें व्यवस्था है कि नारियाँ नरों के लिए कृषि सदृश हैं जिसको नर जैसा चाहें वैसा उनका उपयोग कर सकता है ॅ

स्वपीड़न रति, निश्चित कामुकता से भरी हुई हिंसा का ही एक रूप है । इसके अधिक घृणित रूप को परपीड़न रति कहते हैं जो मस्तिष्क की एक ऐसी अवस्था है जिसमें कामवासना जागरण अथवा कामेच्छा पूर्ति , हत्या को शामिल करते हुए, कोई भी शारीरिक पीड़ा पहुँचाकर की जाती है ॅ जिहाद, इस्लामी कामवासना मनोविज्ञान की पराकाष्ठा है जो एक मुस्लिम सैनिक को लूट के माल के लिए युद्धों मे भाग लेने के लिए प्रवृत्त करती है और लूट के माल में केवल लूट का माल शामिल नहीं है अपितु उसमें शत्रु की नारियाँ और बच्चे भी शामिल हैं ।ये अल्लाह के सैनिक कामवासना पूर्ति के लिए उनका इस्तेमाल करने के भी अधिकारी होते हैं । क्योकि इन रखैलों का सामाजिक स्तर घरेलू चल सम्पत्ति जैसा होता है, उनके मालिक आज्ञा देकर उनके शरीर का भोग करते हैं, इस प्रक्रिया में नारी के आकर्षण के रक्षी आवरणों का ध्वंस किया जाता है ।

संक्षेप में कहें तो कामवासना संबंधी मनोविज्ञान की इस्लामी अवधारणा निम्नलिखित तथ्यों पर आधारित हैः

क. यौन तुष्टि नर का सबसे बड़ा सुख है जो नारी के आकर्षण में उसे इतना बांध देता है कि वह ईश्वर की अवज्ञा और नारी में देवत्व का आरोपण कर देने को प्रवत्त हो जाता है ॅ

ख. नर तो नर ही है क्योंकि उसे प्रभुत्व की ललक मिली हुई है, जो उसे लड़ने और आज्ञा देने के योग्य बनाती है । एक स्त्रैण नर (जोरू का गुलाम) नारी के आकर्षण का शिकार बन जाता है और अपना पुरुषत्व खो देता है जो कि प्रभुत्व की ललक का स्रोत होता है ।

ग. इस प्रकार नारी के आकर्षण और प्रभुत्व की ललक विलोम अनुपाती है । प्रभुत्व की ललक को सुदृढ़ करने का मार्ग नारी के आकर्षण को विधिक संहिता और सामाजिक परम्पराओं के द्वारा दुर्बल बना देता है ।

पैगम्बर मोहम्मद सम्भवतः किसी राष्ट्र का सबसे बड़ा नायक था जो किसी देश ने कभी पैदा किया । उनका बड़प्पन इस तथ्य में निहित था कि अपने राष्ट्र (अरब) को ऊँचा उठाकर उन्होंने व्यक्तिगत महिमा प्राप्त की । अपने लोगों को प्रभुता सम्पन्न बनाने के लिए, उन्हें कोई वास्तविक आकर्षण का प्रोत्साहन तो देना ही था जिससे वे लड़कर एक ऐसा साम्राज्य बनांए जिसमें उनका (मोहम्मद) शब्द ही कानून हो और वह स्वयं पवित्रतम स्थान पर हों ।

यौन मनोविज्ञान की अवधारणा , जिसमें वासना और हिंसा दो आधार स्तम्भ हैं, पैगम्बर के स्वप्नों को साकार करने के लिए पक्के स्रोत सिद्ध हुए । इसपुस्तक में इस घटना को उत्तरदायित्वपूर्ण ढंग से स्पष्ट करने का यत्न किया गया है , जिसमें तर्क और साक्ष्य मार्गदर्शी सिद्धान्त हैं । यह निश्चित रूप से इस्लाम के प्रति शत्रुता के किसी भी भाव से नहीं लिखी गयी है किन्तु इसमें मुसलमानों सहित मानवता के हित साधन का भाव है । मुसलमान तो दावा करते है कि कुरआन के अनुसार सत्य का प्रतिपादन तर्क (2:111) द्वारा करना आवश्यक है न कि बल प्रयोग से (अंग्रेजी 2:255) उनके (मुसलमानों के) लिए यह चुनौती है कि वे अपने मजहब के प्रति निष्ठा प्रदर्शित करें ।

नारीत्व के साथ छलावा

इस्लाम के कानून के अनुसार नारी को काम वासना पूर्ति के एक खिलौने के स्तर तक गिरा देने को प्रेरित करते हैं । इस्लामी कानूनों को इस प्रकार गढ़ा गया है कि प्रभुत्व की ललक बनाम नारी का आकर्षण मजहबी नीति को लागू करने लिए नारी की स्वाधीनता न्यूनतम रह जाए। तथापि,बलात् मतारोपण के द्वारा मुसलमानों को आश्वस्त किया जाता है कि इस्लाम ही वह प्रथम पन्थ (मजहब) है जिसने स्त्रियों को निम्नलिखित अधिकार दिए ।

1. सम्पत्ति का उत्तराधिकार (कोई कानून जब तक कानून नहीं है जब तक वह सभी पर समान रूप से लागू नहीं होता । इस प्रकार उत्तराधिकार का कानून पैगम्बर के वंशजों पर भी लागू होना चाहिए यानि कि पैगम्बर की पुत्री फातिमा पर उसी प्रभाव के साथ लागू होना चाहिए जिस प्रभाव से यह अन्य स्त्रियों पर लागू होता है, परन्तु ऐसा नहीं हुआ । हदीस संख्या 3:4351 (मुस्लिम) इस विषय पर व्यापक रूप से प्रकाश डालती है ।
2. पति को तलाक देने का अधिकार (हम पैगम्बरों के उत्तराधिकारी नहीं होते, हम जो पीछे छोड़ जाते हैं वह दान में (दे दिया जाना) है । इस हदीस के तर्क को दो कारणो से स्वीकार करना कठिन है । प्रथम तो पैगम्बर ने दावा किया है कि वह सब लोगों के लिए व्यवहार का आदर्श है इसलिए फातिमा को उसकी पैतृक सम्पत्ति सम्पत्ति से वंचित करना उसके प्रति एकदम अन्यायपूर्ण व भेदभावपूर्ण कार्य है । कोई कानून किसी व्यक्ति के विरुद्ध सिर्फ इसलिए भेदभाव पूर्ण नहीं हो जाता कि वह पुरुष अथवा स्त्री (फातिमा) या अन्य कोई पुरुष कानून बनाने वाली की संबंधी है ।

दूसरे फातिमा को अपनी पैतृक सम्पत्ति की शीघ्र आवश्यकता थी और उसका पति अली भी उसका समान रूप से इच्छुक था ।

मामला निर्णय के लिए खलीफा अबू बकर के पास भेजा गया । उसने पैगम्बर की सम्पत्ति में से फातिमा को कुछ भी देने से इंकार कर दिया ।

इस कारण वह अबूबकर से क्रुद्ध हो गयी और उसका परित्याग कर दिया और जीवन पर्यन्त उससे बात नहीं की । जब वह मरी तो उसके पति, अली बी, अबू तालिब ने उसे रात्रि में ही दफना दिया । उसने अबूबकर को फातिमा की मृत्यु की सूचना भी नहीं दी और जनाजे की नमाज भी स्वयं ही सम्पन्न कर दी ।

इससे स्पष्ट है कि यदि पैगम्बर अपनी पुत्री ही को पैतृक सम्पत्ति से वंचित कर सकता है तो अन्य स्त्रियों को इस्लाम के उत्तराधिकार के कानून से कोई अधिक आशा नहीं करनी चाहिए जो केवल कागज पर ही अच्छा दिखाई देता है ।)

परन्तु प्रभाव में ये अधिकार जाली ही हैं क्योंकि स्त्रियों निम्नलिखित कारणों से इन अधिकारों का उपयोग नहीं कर सकती ।

1क. अल्लाह ने स्त्रियों पर पर्दे का कानून लागू किया है , अर्थात उन्हें सामाजिक जीवन में भाग नहीं लेना चाहिए

" और ईमान वाली स्त्रियों से कहा कि वे अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों (गुप्त इंद्रियों) की रक्षा करें और अपना श्रृंगार न दिखांए सिवाय उसके जो जाहिर रहे और अपने सीनों (वक्ष स्थल) पर अपनी ओढ़नियों के आंचल डाले रहें और वे अपने श्रृंगार किसी पर जाहिर न करें ....

अनुवादक मुहम्मद फारूक खाँ, मकतबा अल हसनात (देहली) संस्करण (अल अन नूर : 31)

पुनः कुरआन में कहा है

हे नबी ! अपनी पत्नियों और अपनी बेटियों और ईमान वाली स्त्रियों से कह दो कि वे (बाहर निकलें तो) अपने ऊपर चादरों के पल्लू लटका लिया करें ।

(33 अल अहजाब : 59)

चादरों के पल्लू लटका लेने के साथ साथ , अल्लाह स्त्रियों के कार्यकलाप उनके घरों की चार दीवारों के भीतर ही सीमित कर देता है ।

" अपने घरों के अंदर रहो । और भूतपूर्व अज्ञान काल की सज धज न दिखाती फिरो "

(33 अल अहजाब : 33)

स्त्रियों को उनके अधिकार से वंचित करने के लिए कुरआन में यह प्राविधान है

" पुरुष स्त्रियों के निगरां और जिम्मेदार हैं , इसीलिए कि अल्लाह ने एक को दूसर पर बड़ाई दी है, ... तो और जो स्त्रियाँ नेक होती है वे आज्ञा पालन करती हैं ....और जो स्त्रियाँ ऐसी हों जिनकी सरकशी का तुम्हें

सच्चाई यह है कि इस्लामी कानून पूर्णतः कालवाह्य हैं । एक स्त्री द्वारा पति को तलाक देने का अधिकार एक आधुनिक घटना है जो स्त्रियों के स्वतंत्रता आंदोलन के फलस्वरूप हुई है । इस विषय पर और अध्ययन करने पर मुझे ज्ञात हुआ कि इस्लाम में खुला की वैधता नहीं है और मुस्लिम मौलवियों ने स्त्रियों की संतुष्टि के लिए और खुले विद्रोह से बचने के लिए इसका प्रचलन किया है । कुरआन खुला का समर्थन

नहीं करता है किन्तु कई हदीसें हैं जो इसका विरोध करती हैं । इनमें से एक को देखिए '' ये स्त्रियाँ जो खुला का सहारा लेकर वैवाहिक बंधनों को तोड़ती हैं वे पाखण्डी हैं मुसलमान नहीं । ''

(मिस्कट 2:3148)

भय हो, उन्हें समझाओ, बिस्तरों में उन्हें तन्हा छोड़ दो, और उन्हें मारो ।

(4 अन निसा : 34)

चूँकि एक स्त्री के लिए पर्दा अनिवार्य है और वह घर में ही प्रतिबन्धित है और पुरुष उसका प्रबंधक है, और यदि स्त्री उसकी आज्ञा का उल्लंघन करे, तो पुरुष को उसे पीटने का अधिकार प्राप्त है, उसके सम्पत्ति के अधिकार एक आकर्षक ड्रामेबाजी ही है । वे अधिकार ऐसे ही हें जैसे कि आत्मा के बिना शरीर, भाप के बिना रेल का इंजन, और तीरों के बिना कमान ।

2 क. जैसा कि पाद टिप्पणियों में कहा गया है कि एक स्त्री के पास पुरुष को तलाक देने का कोई कानूनी अधिकार नहीं है किन्तु खुला से यह अर्थ निकलता है कि स्त्री ऐसा कर सकती है । तथापि पुरुष अपने आपको वैवाहिक बंधन से बिल्कुल स्वतंत्र रूप से इच्छानुसार मुक्त कर सकता है परतुं एक पत्नि को यह यह लक्ष्य प्राप्त करने के लिए एक अत्यंत पेचीदा कानूनी प्रक्रिया से गुजरना होता है । इसके अतिरिक्त यदि एक स्त्री पूर्ण औचित्य के बिना यह पग उठाती है तो उस पर खुदा का कोप एवं फरिश्तों का कहर टूट सकता है । पुनः पुरुष प्रधान समाज में यह संभव है कि एक स्त्री की सब दलीलें पुरुष न्यायाधीश के ऊपर निष्प्रभावी रहें जिसे स्त्रियों का उपहासकरने , उन्हें दबाने, और उन पर प्रभुत्व प्रदर्शित करने की आदत होती है ।

इब्न ऐ माजाह खण्ड 1 पृष्ठ 571 के अनुसारः एक पत्नि को अपने पति से किसी गम्भीर कारण के अभाव में तलाक नहीं लेना चाहिए । यदि वह ऐसा करती हैतो वह जन्नत में नही जा सकेगी । यदि वह तलाक का कारण सिद्ध कर पाती है तो उसे कानूनी मान्यता तभी प्राप्त है जब वह उसके पति द्वारा प्रदत्त सभी वस्तुओं को, चाहे वे हक के रूप में अथवा प्रत्यक्ष उपहार के रूप में हों वापिस कर दे । एक स्त्री जो खुला का आश्रय लेती है, किसी समझौते की आशा नहीं करती ।

उत्तराधिकार के कानून एक पुरुष को दो स्त्रियों के बराबर मानते हैं । (4 अननिसाः11) साक्ष्य का कानून इससे भी अधिक सख्त हैः न केवल दो स्त्रियों का साक्ष्य एक पुरुष के बराबर होता है किन्तु जहाँ साक्ष्य के लिए पुरुष उपलब्ध हो तो स्त्रियों को साक्ष्य देने की अनुमति नहीं है ।

इस्लाम द्वारा स्त्रियों पर लादी गयी निम्नलिखित सीमाओं को ध्यान में रखते हुए कोई भी ईमानदारी से इसी निष्कर्ष पर पहुंचेगा कि यह सब जानबूझकर किया गया है ताकि स्त्रियों को कामवासना तृप्ति के खिलौने के रूप देने के लिए मानवाधिकारो से वंचित रखा जाए जिससे पुरुष समुदाय अधिकाधिक संख्या में इस्लाम में घुस जाए ।

1. स्त्रियों का यह मजहबी कर्तव्य है कि वे अधिकाधिक संख्या में बच्चे पैदा करें, इब्न ऐ माजाह खण्ड 1 पृष्ठ 518 और 523 के अपने '' सुनुन '' में यह उल्लेख है पैगम्बर न कहा थाः '' शादी करना मेरा मौलिक सिद्धान्त है । जो कोई मेरे आदर्श का अनुसरण नहीं करता, वह मेरा अनुयायी नहीं है । शादियाँ करो ताकि मेरे नेतृत्व में सर्वाधिक अनुयायी हो जांए फलस्वरूप मैं दूसरे समुदायों (यहूदी और ईसाइयों) से ऊपर अधिमान्यता प्राप्त करूं ।

इसी प्रकार मिस्कट खण्ड 3 में पृष्ठ 119 पर इसी प्रकार की एक हदीस हैः कयामत के दिन मेरे अनुयायियों की संख्या अन्य किसी भी संख्या से अधिक रहे , और इस उद्देश्य की पूर्ति स्त्री जाति पर मात्र संतान उत्पत्ति के अनन्य भार को डालकर सम्भव थी । स्पष्टतः एक स्त्री जो दर्जन भर बच्चे की माँ होंगी । उसके मस्तिष्क में तो इसी भय से आक्रान्त रहने की संभावना है कि यदि उसका पति उसे छोड़ दे तो उसका क्या होगा ? पत्नि का अपने अँगूठे के नीचे रखने के लिए यह भय पर्यापत शक्तिशाली अस्त्र है ।

2- दूसरी शर्त जो इस्लाम में स्त्रियों की स्थिति का निर्धारण करती है वह कुरआन में 57 अल हदीद 27 में दी गयी है ।

'' और संसार त्याग (वैराग्य) की प्रथा उन्होंने स्वयं निकाली हमने इसका आदेश कभी नहीं दिया था, दिया था तो बस अल्लाह की प्रसन्नता चाहने का, तो उन्हेंाने उसका जैसा पालन करना चाहिए था नहीं किया ।

साधारण शब्दों में इन आयतों का तात्पर्य है कि ईसाइयों ने वैराग्य का पालन करके प्रभु की इच्छा की अवज्ञा की है क्योंकि पुरुष द्वारा स्त्री का संभोग अल्लाह का मनोरंजन है ।

इस प्रकार स्त्री कुछ भी नहीं है किन्तु वह तो पुरुष की भोग विलास की वस्तु है । तथापि इसके निहितार्थ है कि सुखदातु होने के बदले में प्यार, आदर, इत्यादि इसके मूलभूत अधिकार हैं । वास्तव में प्रत्येक स्त्री को इसका ज्ञान है और वह आदर का व्यवहार चाहती है, परंतु इस्लाम जो एक सेमिटिक दर्शन का अनुसरण करता है जिसके अनुसार एक पुरुष को उसके आदेशानुसार कामवासना की पूर्ति होनी ही चाहिए, इस दृष्टिकोण से विरोध में है ।यही कारण है कि इस्लाम में स्त्री के संभोग में सहमति की कोई अवधारणा नहीं है । इस्लाम में एक स्त्री पुरुष की जोत होती है और एक पुरुष को उसे स्वेच्छापूर्वक उपयोग करने का अधिकार है । यही कारण है कि इस्लामी कानून का उद्देश्य पुरुष की प्रभुता है, स्त्री के ऊपर तद्नुरूप अपमान आरोपित हो जाता है । निम्नलिखित आयत से पाठक इस तथ्य का निर्णय कर सकते हैं :

'' उन स्त्रियों के भी सामान्य नियम के अनुसार वैसे ही अधिकार है जैसे कि स्वयं पर उन पर हैं , हाँ पुरुषों को उन पर एक दर्जा प्राप्त है ।

(2 अल बकरह 228)

यह आयत बहुत ही विवादास्पद है और इस्लामी कट्टरपंथी उसे स्त्री एवं पुरुषों की समानता सिद्ध करने के लिए खींचते तानते रहते हैं । इसलिए इसकी सच्चाई को प्रदर्शित करने के लिए मैं हदीस का उद्धृत कर रहा हूँ ।

‘‘ यदि स्त्रियाँ आपके आदेशों का पालन करें तो उन्हें उत्पीड़ित न करो .... उनकी बात ध्यान से सुनो, उनका आप पर अधिकार है कि आप उनको भोजन तथा वस्त्रों का प्रबंध करो ’’

(इब्न ऐ माजाह खण्ड 1 पृष्ठ 519)

इस प्रकार स्त्री के अधिकार उसके भरण पोषण तक ही सीमित हैं बशर्ते कि वह अपने पुरुष की आज्ञाओं का पालन करे । इस बिंदु पर और अधिक चर्चा करने की बजाय मैं यह कहना चाहूँगा कि इस्लाम का सामान्य विश्वास है कि पुरुष स्त्री की अपेक्षा श्रेष्ठ होता है । वास्तव में कुरआन का कानून इस विचार की पूर्णतया पुष्टि करता है । स्पष्टीकरण प्रस्तुत है ।

‘‘ .... स्त्रियों में से जो तुम्हारे लिए जायज हो दो दो , तीन तीन , चार चार तक विवाह कर लो । ’’

(4 अननिसा 3)

यहाँ पुरुष को यह कानूनी अधिकार दिया गया है कि वह एक समय में अपनी पसंद की चार स्त्रियाँ रख ले । मुस्लिम विद्वान बहु विवाह की लज्जा से बचने के लिए इस आयत की भिन्न भिन्न व्याख्याएं प्रस्तुत कर रहे हैं । उदाहरण स्वरूप वे कहते हैं कि स्त्रियों को बहु विवाह (एक समय में एक से अधिक पति) की अनुमति इसलिए नहीं दी गयी क्योंकि बच्चों के पिता का पता लगाना सम्भव नही ंतो यह तर्क खरा नहीं उतरता, उनके समानता का सिद्धान्त निहित है ।

पुनः विज्ञान के विकास से यह दृष्टिकोण निष्प्रभावी हो जाता है पहले तो गर्भ निरोधकों से स्त्री को अपने शरीर पर नियंत्रण प्राप्त हो गया है और अनिच्छुक होने पर संतानोंत्पत्ति से वह बच जाती हैं । दूसरी ओर आजकल चिकित्सीय परीक्षणो से बच्चे के पितृत्व की पुष्टि पक्के तौर पर हो जाती है । इसलिए इस प्रकार के तर्क से इस्लामी कानून की मात्र तुच्छता, छिछोरापन,और अवास्तविकता ही प्रमाणित होती है क्योंकि इस्लामी न्याय, सुख शांति एंव लाभदायकता के नाम पर स्त्री के ऊपर पुरुष को ही थोपना चाहता है ।

इन सबके ऊपर रखैलों के विषय में इस्लामी कानून तो एक पुरुष को इतनी स्त्रियाँ हरम में रखने की अनुमति देता है जितनी वह रख सकता है । उदाहरण स्वरूप भारत के अकबर महान के हरम में 5000 रखैलें थी और उसके पुत्र जहाँगीर के हरम में भी 6000 कम रखैलें नहीं थीं । इनके लिए सिर्फ एक ही नाम दिया जा सकता है वह है– निजि वैश्यालय । तो भी मुसलमान विद्वान नैतिकता और स्त्रियों के अधिकारों की बाते करते है।

3. हमें यह बताया गया है कि जैसे पुरुषों के स्त्रियों पर अधिकार हैं वैसे ही स्त्रियों के भी पुरुषों पर अधिकार है । इसे बराबरी के प्रमाण के रूप में उल्लेख किया जाता है । वास्तव में यह अत्यंत भ्रामक है क्योंकि उनके पारस्परिक अधिकारों का संबंध ही पुरुष को मालिक और स्त्री का दासी बना लेता है ।

स्त्रियों को पुरुषों के ऊपर एक ही उल्लेखनीय अधिकार है, वह है– भरण पोषण का अधिकार । इस विषय में मैं पहले ही एक हदीस उद्धृत कर चुका हूँ । अब सिक्के के दूसरे पहलू को भी देखिए –

यदि कोई पति अपनी पत्नि को पत्थरों की गठरी इस लाल पर्वत से उस काले पर्वत तक ले जाने को कहे तो उस स्त्री को उसका पूरे मनोयोग से पालन करना चाहिए ।

(इब्न ऐ माजाह खण्ड 1 अध्याय 592 पृष्ठ 520)

4. अल्लाह कसम, मौहम्मद का जीवन कौन नियंत्रित करता है, एक स्त्री अल्लाह के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वाह नहीं कर सकती जब तक उसने अपने पति के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन नहीं किया है, यदि वह स्त्री ऊँट पर सवारी कर रही हो और उसका पति इच्छा प्रकट करे तो उस स्त्री को मना नहीं करना चाहिए ।

(इब्न ऐ माजाह खण्ड 1 अध्याय 592 पृष्ठ 520)

पुनः यदि एक पुरुष का मन संभोग करने के लिए उत्सुक हो तो पत्नी को तत्काल प्रस्तुत हो जाना चाहिए भले ही वह उस समय सामुदायिक चूल्हे पर रोटी सेक रही हो ।

(तिरमजी खण्ड 1, पृष्ठ 428)

5. यहाँ यह भी ध्यान रहे कि इस्लाम ने वह सभी कुछ किया है जिससे एक स्त्री अपने पति से तलाक न ले सके, और यह बात विशेषकर सत्य है कि जबकि स्त्री माता भी हो, क्योंकि बच्चों की अभिरक्षा पिता को ही करनी होती है । इस निर्दयता को इस्लाम ने कानूनी आवरण पहिना दिया है जिससे स्त्री पर पुरुष की पकड़ हो सके ।
6. इस्लाम में पुरुष के पक्ष में और एक स्त्री के विरुद्ध इतना अधिक भेदभाव है कि यह सामाजिक सोपान के निम्नतम स्तर से ही प्रारम्भ हो जाता है ।

‘‘ आयशा ने कहा कि उसके पास एक दास और एक दासी है जो विवाहित पति पत्नि थे ।उसने नबी से कहा वह उनमें से एक को मुक्त करना चाहती है । ’’ तो पैगम्बर ने कहाः कि पहले (पुरुष) को मुक्त किया जाए ।

(इब्न ऐ माजाह खण्ड 2 अध्याय 130, पृष्ठ 100)

7. उत्तराधिकार और विधिक साक्ष्य के क्षेत्रों में भी इस रवैये का बोलबाला है । यद्यपि न विषयों में मैं इस्लाम के दृष्टिकोण के विषय में पहले ही कह चुका हूँ फिर भी स्त्रियों के प्रति साक्ष्य विधि के विषय में एक या दो शब्द और जोड़ देना चाहता हूँ ।

‘‘ .... और अपने पुरुषों मे से दो गवाहों को गवाही कर लो, और यदि दो पुरुष न हों तो एक पुरुष और दो स्त्रियाँ जिन्हें तुम गवाह होने के लिए पसंद करो .... (2 अल बकरह 282)

इस प्रकार कानून में एक पुरुष दो स्त्रियों के बराबर है ।

8. इस्लाम में बहु पत्नि प्रथा चार पत्नियों तक ही सीमित है, इस कल्पना से अधिक त्रुटिपूर्ण कुछ भी नहीं हो सकता, इसका छिपा हुआ अर्थ, जो कुछ दिखाई देता है उससे कही अधिक गहन है क्योंकि इसमें मृगतृष्णा का भाव छिपा हुआ है :

'' और यदि तुम ऐ पत्नि को छोड़कर उसकी जगह दूसरी पत्नी लाना चाहो उसमें से कुछ न लेना .... (4 अननिसा 20)

इसका तात्पर्य है कि एक मुस्लिम पति को अधिकार है कि वह एक पत्नी को दूसरी से बदल सकता है बशर्ते कि एक समय पर चार पत्नियों की निर्धारित सीमा से अधिक न हो जाए, सीमा उल्लंघन न हो जाए । वह ऐसा आसानी से कर सकता है उसको अपनी इच्छानुसार कारण बताए बिना तलाक देने की शक्ति है । हसन जो कि पैगम्बर का पौत्र था इसी रीति से अपनी पत्नियों की संख्या बढ़ाकर सत्तर से अधिक बना सका । उसकी आदत थी कि दिन में शादी करता था और एक अथवा दो रात बिताकर उस स्त्री को तलाक दे देता था ताकि फिर से दूसरी शादी कर सके ।

9. एक रखैल, जो कि बेसहारा होती है, के साथ संभोग करना मानवता के विरुद्ध प्रथम श्रेणी का अपराध है । रोम के कानून में इसके निमित्त मृत्यु दण्ड निर्धारित है परंतु इस्लाम ने इस अशिष्टता को बढ़ावा ही दिया ताकि उसके अनुयायी बढ़ सकें । रखैल के साथ बलात्कारी पुरुष के विरुद्ध कोई कानून नहीं है किन्तु एक व्यभिचारिणी स्त्री को एक दम दंडित करने की कानूनी व्यवस्था है और उसका पुरुष विधिक परिणामों के भय के बिना उसको इसका दण्ड दे सकता हैः '' तुम्हारी स्त्रियोँ में से जो व्यभिचार से ग्रस्त हों, उन पर अपने में से चार की गवाही लो । फिर यदि वे गवाही दे ंतो उन्हें घरों में बंद रखों यहाँ तक कि उन्हें मृत्यु ग्रस ले या अल्लाह उनके लिए कोई राह निकाले । ''

(4 अननिसा 15)

'' या अल्लाह उनके लिए कोई राह निकाले '' चूँकि इस वाक्य का किसी ने भी संतोषजनक ढंग से स्पष्टीकरण नही किया है, एक व्यभिचारिणी स्त्री के लिए अन्य कुछ भी दण्ड नहीं हो सकता सिवाय इसके कि बंदी बनाकर उसे मार दिया जाए । यह दण्ड के अन्य रूपों यथा कोड़े मारना या पत्थरों से मारना के अतिरिक्त है ।

10. इस्लाम में स्त्री का सही मूल्य सुस्पष्ट हो जाता है जब हमें पता चलता है कि उसका विवाह स्थायी नहीं होता है, वरन पराधीन होता है । यदि एक पुरुष अपनी पुत्र वधु को पसंद नहीं करता है और वह अपने पुत्र को आदेश देता है कि कारण बताए बिना वह अपनी पत्नी को तलाक दे दे तो पुत्र को ऐसा करना ही पड़ेगा ।

(तिर्मजी खण्ड 1 पृष्ठ 440)

(क) पैगम्बर की एक प्रसिद्ध परंपरा भी है जो कि कातिब अल वकीदी से संबंधित है और जिसको मुल्ला लोग मुस्लिम भाई चारे की घोषणा के लिए गर्व से बताते हैं :

'' मेरी दो पत्नियों की ओर देखो और इनमें से तुम्हें जो सर्वाधिक अच्छी लगे उसे चुन लो । ''

इस भाई चारे का प्रदर्शन मदीने के एक मुसलमान (अंसार) ने एक प्रवासी मुसलमान से उस समय किया था । जब पैगम्बर ने अपने अनुयायियों समेत मक्का से भागकर मदीना में शरण ली थी । यह प्रस्ताव तुरंत स्वीकार कर लिया गया था और भेंटकर्ता ने अपनी उस पत्नि को तलाक दे दिया था जिसको प्रस्ताव के स्वीकारकर्ता व्यक्ति ने चुना था ।

इससे यही सिद्ध होता है कि इस्लाम में स्त्री एक निशानी मात्र है । निम्नलिखित हदीस को भी देखिए–

(ख) अबूबकर के नेतृत्व में फजारा के विरुद्ध हुए युद्ध में एक अति सुंदर कन्या लूट के हिस्से के रूप में सलमा बिन अल अकवा को दी गयी । उसने उस समय तक उसका शील भंग नहीं किया कि रास्तें में पैगम्बर मिल गए और कहा : '' ओ सलमा, यह लड़की तू मुझे दे दे, अल्लाह तुम्हारे पिता को सुखी रखे । '' सलमा ने कहा '' हे अल्लाह के पैगम्बर यह लड़की तो आपके लिए ही है, अल्लाह कसम अभी तक मैंने इसके कपड़े नहीं उतारे है । ''

अल्लाह के संदेश वाहक ने उस लड़की को मक्का के लोगों के पास भेज दिया जहाँ पर उसे, वहाँ रखे गए मुसलमान कैदियों की मुक्ति के बदले में अभ्यर्पित कर दिया ।

(मुस्लिम 4345)

पैगम्बर ने स्वयं भी लड़कियों को भेंट में स्वीकार किया था । कौप्टिक मारिया जिससे उन्हें पुत्र भी प्राप्त हुआ था इस विषय का उदाहरण है ।

11. हज्ज में पैगम्बर ने मंच से घोषणा की कि एक पत्नि को अपने पति की आज्ञा के बिना उसके स्वामित्व की वस्तु में से कुछ भी व्यय नहीं करना चाहिए यहाँ तक कि खाद्यान्न खरीदने के लिए भी यह निषेध समान रूप से लागू था ।

(तिरमजी खण्ड1 पृष्ठ 265)

12. अति महत्वपूर्ण मजहबी मामलें में भी एक पत्नि के लिए पति के आदेश का पालन करना अनिवार्य है । कई हदीसों में ऐसा कहा गया है कि पत्नी को पति की स्वीकृति के बिना उपवास भी नहीं रखना चाहिए यदि वह उसका संभोग करना चाहता हो ।

(तिरमजी खण्ड 1 पृष्ठ 300)

13. इस्लाम एक स्त्री को पुरुष पर उसके कामोद्दीपक प्रभाव के कारण शैतान का रूप मानता हैः

'' पैगम्बर ने एक बार अनायास ही एक स्त्री को देखा और कामातुर हो गए । वह घर गए तथा जैनब का जो सुंदर पत्नियों में से एक थी, संभोग किया । उन्होंने कहाः '' एक स्त्री का सामना शैतान के सामने जैसा है यदि आप किसी स्त्री के आकर्षण से

प्रभावित हो जांए तो आप अपनी पत्नी के साथ संभोग कर लें क्योंकि उसके पास भी वह सब है जो उस स्त्री के पास है जिसने आपको प्रभावित किया ।

(तिरमजी खण्ड1 पृष्ठ 428)

14. एक स्त्री जन्म से ही विकृत होती है ।
पैगम्बर ने कहा :
" स्त्री के रचना एक अस्थि से हुई है जो विकृत होती है । यदि आप उसे सीधा करना चाहेंगे तो आप उसे तोड़ देंगे । जैसी भी वह है उसका वैसे ही सर्वोत्तम उपयोग करना चाहिए यही वांछनीय है ।

(तिरमजी खण्ड1 पृष्ठ 440)

15. यहाँ एक आश्चर्य चकित करने वाली हदीस है । " वह स्त्री जिसका पति उससे रात्रि में और प्रत्येक रात्रि में प्रसन्न रहता है उस स्त्री को जन्नत में स्थान मिलेगा । "

(तिरमजी खण्ड1 पृष्ठ 428)

इसका तात्पर्य यह है कि एक औरत द्वारा पुरुष की काम पिपासा को शांत करना ही उसकी अल्लाह पूजा का कार्य है ।

क. इसी कारणवश एक और हदीस में कहा गया है किः

" एक स्त्री जो अपने पति से भिन्न किसी अन्य व्यक्ति के लिए अपने आपको सजाती है तो वह कियामत के दिन के अधिंयारे के समान है । "

(तिरमजी खण्ड1 पृष्ठ 430)

15. स्वभाव से ही एक स्त्री पुरुष के लिए विपदा है । पैगम्बर ने कहा कि उन्होंने पुरुष के लिए सिवाय स्त्री के कोई विपदा नहीं छोड़ी जो उसको चोट पहुचाए ।

(तिरमजी खण्ड1 पृष्ठ 430)

उपरलिखित के साथ निम्नांकित जोड़कर इस्लाम में नारी के स्थान का अनुमान कीजिए ।

17. एक स्त्री यदि अपने पिता, पति या भाई के साथ के बिना, अकेली, तीन या उससे अधिक दिनों की यात्रा पर जाती है तो वह ईमान वाली नहीं है ।

(तिरमजी पृष्ठ 431)

18. यदि कोई स्त्री अपने पति से बुलाए जाने पर शय्या पर न आए तो वह फरिश्तों की बद्दुआओं का निशाना बन जाती है । यदि वह अपने पति की शय्या त्याग कर चली जाती है तो भी ठीक ऐसा ही होगा ।

(बोखारी, खण्ड 7 पृष्ठ 93)

19. जो स्त्रियाँ अपने पति के प्रति कृतघ्न हैं, वे दोजख की अर्तवासी हैं, एक स्त्री का यह कहना भी कृतघ्नता है कि " मुझे तुमसे कोई अच्छाई नहीं मिली । "

(बोखारी, खण्ड 7 पृष्ठ 96)

20. एक स्त्री को अनेक ढंगों से उसके अपने शरीर के अधिकार से भी वंचित कर दिया जाता है । उसके दूध का भी मालिक उसके पति होता है ।

(बोखारी, खण्ड 7 पृष्ठ 27)

उसे गर्भ निरोध प्रयोग में लाने की भी अनुमति नहीं दी जाती ।

21. पैगम्बर ने कहा है कि जब एक पत्नि अपने पति को खिजाती है तो जन्नत की हूरें उसको यह कहकर बद्दुआंए देती हैं " खुदा नाश करे क्योंकि वह तुम्हारे साथ थोड़े ही समय के लिए हैः वह जल्दी ही तुम्हारा साथ छोड़कर कर हमारे पास आ जाएगा । "

(इब्न ऐ माजाह खण्ड 1 पृष्ठ 560)

22. पैगम्बर ने कहा हैः " एक स्त्री की गवाही की कीमत एक पुरुष की गवाही के सामने वजन की आधी होती है .... ऐसा इसलिए है क्योंकि उनके पास बुद्धि की कमी होती है । तथापि स्त्री इस्लाम की मर्यादा के लिए भी हानिकारक है और उनको रज़स्राव के होते हुए प्रार्थना करने या उपवास रखने की अनुमति नहींदी जा सकती । "

(मिस्कट खण्ड 1 पृष्ठ 19)

23. पैगम्बर ने कहा हैः " स्त्रियों से सावधान रहो क्योंकि इस्राइलियों पर जो विपदा आयी थी वह स्त्रियों के ही कारण थी । "

(मिस्कट खण्ड 2 पृष्ठ 70)

24. पैगम्बर ने कहा हैः " दुर्भाग्य , स्त्रीत्व, आवास व घोड़े का एक भाग है । "

(मिस्कट खण्ड 2 पृष्ठ 70)

25. पैगम्बर ने कहा हैः " कोई भी स्त्री अपने स्वयं की या किसी दूसरी स्त्री के विवाह की रस्म न करे क्योंकि ऐसी स्त्री पथभ्रष्ट करने वाली होती है । "

(मिस्कट खण्ड 2 पृष्ठ 78)

26. पैगम्बर ने कहा हैः " यदि हव्वा की रचना न हुई होती तो कोई भी स्त्री अपने पति के प्रति बेईमान न होती । "

(मिस्कट खण्ड 2 पृष्ठ 98)

27. पैगम्बर ने कहा हैः '' जब एक पुरुष अपनी पत्नि को शय्या पर बुलाए और वह मना कर दे और पति क्रोधित हो जाए तो फरिश्ते सारी रात उस स्त्री को बददुआंए देते हैं । .... यहाँ तक कि आकाश का स्वामी, (अल्लाह) उससे तब तक क्रोधित रहता है जब तक कि उसका पति उससे समझौता न कर ले । '' (मिस्कट खण्ड 2 पृष्ठ 100)

28. पैगम्बर ने कहा हैः '' यदि किसी स्त्री की मृत्यु हो जाती है और उसका पति उससे प्रसन्न था, तो वह जन्नत में जाती है । '' (मिस्कट खण्ड 2 पृष्ठ 102)

29. पैगम्बर ने कहा हैः '' कयामत के दिन एक पति से,उसके द्वारा अपनी पत्नि की पिटाई के विषय मे पूछताछ नहीं की जाएगी । '' (मिस्कट खण्ड 1 पृष्ठ 19)

(अ) '' स्त्री की पशुता '' को पालतू बनाने के पिटाई किया जाना , इस्लाम की विशेषता है-

कुरआन ने कहा है किः ''और जो स्त्रियाँ ऐसी हों जिनकी सरकशी का तुम्हें भय हो, उन्हें समझाओ, बिस्तरों में उन्हें तन्हा छोड़ दो और उन्हें मारो । फिर यदि वे तुम्हारी बात मानने लगें तो उनके विरुद्ध कोई राह न ढूढें । ''

(4 अन निसा 34)

ऐसा कहा गया है कि स्त्रियों की कमी के कारण अरब में एक ऐसी संस्कृति थी जो लगभग मातृसत्तात्मक थी अर्थात् वे इसलिए पुरुषों पर हावी थीं । पैगम्बर स्वयं खदीजा का कर्मचारी था जिससे बाद में उन्होंने शादी कर ली, इस तथ्य के होते हुए भीकि वह उनसे 15 वर्ष बड़ी थी ।

पैगम्बर को पुरुष प्रधान समाज की सोच वरदान में मिली थी और चाहते थे कि पुरुष प्रभुत्व प्राप्त कर ले ताकि एक मजबूत, लड़ाकू, अरब राष्‍ बन सके जो विश्व को जीत सके । इसी कारण से कुरआन में पुरुषों को पूर्ण अधिकार दिए गए कि वे स्त्रियों को दबा सकें, आवश्यकता पड़ने पर मार पीट कर भी पुरुष की काम पिपासा की सर्वोच्चता हेतु स्त्री का दमन अनिवार्य अंग था । पुरुषों ने इस अधिकार का निश्चित रूप में सर्वोत्तम प्रयोग किया । एक हदीस में कहा गया है :

'' स्त्रियाँ पुरुषों के सामन साहसी हो गयी हैं, अतः पैगम्बर ने स्त्रियों की पिटाई का अधिकार दिया था । इसके फलस्वरूप एक संध्या को 70 स्त्रियाँ पैगम्बर के घर इकट्‌ठी हुई तथा उन्होंने अपने अपने पतियों की शिकायत की जिन्हें वे लोग अच्छे लोग नहीं समझती थीं ।

(इब्न ऐ माजाह खण्ड 1 पृष्ठ 553)

30. मैं दोहराना चाहूँगा कि पत्नी को पीटने की प्रथा के साथ ही पर्दे की प्रथा का स्त्रियों की स्वतंत्रता को समाप्त कर देने में बड़ा हाथ रहा है । पाठकों की सुविधा के लिए मैं कुरआन की संबधित आयतों को उद्‌धृत करता हूँ : '' और ईमान वाली स्त्रियों से कहो कि वे अपनी निगाहें नीची रखें और अपने शर्मगाहें (गुप्त इंद्रियों की रक्षा करें, और अपना श्रृंगार न दिखांए सिवाय उनके जो उसमें से जाहिर रहं, और अपनी सीनों (वक्ष स्थल) पर अपनी ओढ़नियों के आँचल डाले रहें और वे अपना श्रृंगार किसी पर जाहिर न करें ।

(24 अन नूर 31)

पुनः हे नबी ! अपनी पत्नियों अपनी बेटियों और ईमान वाली स्त्रियों से कह दो कि वे (बाहर निकलें) तो अपने ऊपर अपनी चादरों के पल्लू लटका लिया करें ।

(33 अल अहजाब 59)

31. तत्पश्चात कुरआन में फिर से आदेश है

'' और अपने घरों के अंदर रहो । ''

(33 अल अहजाब 33)

इस प्रकार मुस्लिम स्त्रियों को समाज से पूर्णतः अलग कर दिया गया है और उसको एक काम पिपासा पूर्ति का खिलौना मात्र और पुरुषों के लिए राजनीतिक सुविधा का स्रोत बना दिया गया । इस सत्य की जाँच करने के लिए स्त्रियों के प्रति व्यक्तिगत व्यवहार से भी की जा सकती है । मैं अगले अध्याय में इस विषय पर प्रकाश डालूँगा ।

स्त्रियों के प्रति पैगम्बर का दृष्टिकोण

बीसवीं शताब्दी में मुस्लिम देशों को एक बड़ा धक्का सहन करना पड़ा है । इसका मुख्य कारण है स्त्रियों के अधिकारों का नहोना । जिसके कारण वे आधुनिक इतिहास में अपना योगदान कर सकने में पिछड़ गए हैं ।

सामाजिक रूप से प्रतिबंधित स्त्री विकलांग माता है, जिसको यथेष्ट प्रशिक्षण नहीं मिल पाने से वह अपने बच्चों को समय के परिवर्तन के अनुसार चल सकना नही सिखा सकती ।

जैसा कि हमनें पिछले अध्याय में देखा है कि एक मुस्लिम स्त्री का जीवन पुरुष के यौन सुख के लिए ही बना है तथापि उसको मुस्लिम दर्शन की गलत व्याख्या करके यह विश्वास दिलाया जाता है कि उसको ठोस विधिक अधिकार दिए गए हैं, जो उसको पुरुष के समान स्तर देते हैं । चूँकि इस विषय को मुस्लिम मौलवियों ने जानबूझकर अपना उल्लू सीधा करने हेतु जटिल बना दिया है मैं पाठकों का ध्यान पैगम्बर के स्त्रियों के प्रति व्यक्तिगत दृष्टिकोण की ओर आकर्षित करना चाहूँगा । चूँकि वह मानव व्यवहार के आदर्श थे, उनके पूर्ववर्ती उदारहण विषय को समझ पाने में सहायक हो सकते हैं ।

(मुस्लिम 2 : 3371) हदीस में सम्भोग के समय अवरोध की जिसका तात्पर्य सम्भोग करते समय स्खलन के पूर्व पुरुष लिंग को स्त्री योनि से बाहर निकाल लेना है, असारता का वर्णन है, अरबी भाषा में इस को अल अज्ल कहते हैं ।

अबू सईद बताता है कि हम अल्लाह के दूत '' अल्लाह उसे शक्ति दे '' के साथ बनु मुस्तालिक की मुहिम पर थे और हमने उनकी कुछ अति सुंदर स्त्रियों को बंदी बना लिया था । चूँकि हम अपनी पत्नियों से काफी समय से दूर थे, हमारी कामवासना जाग गयी । हमने उनके साथ अज्ल की विधि से सम्भोग करना शुरु कर दिया यानी लिंग को रति निष्पत्ति के समय ही योनि से बाहर निकालने की प्रक्रिया अपनाई ताकि गर्भ न ठहर जाए । वह काम करते समय जैसे ही हमें अहसास हुआ कि अल्लाह के दूत हमारे साथ हैं, हमने निर्णय लिया कि मामले को तुरंत उनके समक्ष प्रस्तुत किया जाए । पैगम्बर ने कहा '' तुम अज्ल करते हो या नहीं उससे कोई अंतर नहीं पड़ता क्योंकि वह प्रत्येक जीव, जिसको कयामत के दिन तक जन्म लेना है, जन्म लेगा ही ।

उपर्युक्त हदीस में उपरलिखित तथ्य विचारणीय हो जाते हैं :

1. पैगम्बर स्वयं मुस्तालिक कबीले के, जिसने उस समय तक इस्लाम कबूल नहीं किया था, विरुद्ध अभियान का नेतृत्व किया था ।
2. पैगम्बर के साथियों, यानी उनके निकटतम अनुयायियों ने जोकि व्यवहारिक तौर पर उनके साथ ही थे, उन स्त्रियों के पतियों का वध करके उनके साथ संभोग किया था ।
3. उन लोगों ने उन महिलाओं के साथ केवल सम्भोग ही की इच्छा नहीं थी अपितु उनके कारण फिरौती भी वसूल करनी चाही थी ।

अल्लाह का यह दावा है कि वह रंग या जाति के भेदभाव के बिना ही सभी सृष्टा और ईश्वर है, तथापि जब मुसलमान अल्लाह और मौहम्मद में ईमान न लाने मात्र के अपराध के कारण निर्दोष लोगें के विरुद्ध सैनिक अभियान चलाते हैं तो अल्लाह प्रसन्न हो जाता है । क्या यह वास्तव में अल्लाह है जो ईमान न लाने वालों पर विध्वंसक कार्यवाही कर रहा है ?

वह ऐसा नहीं कर सकता इस असीम सृष्टि का रचयिता इतना महान है कि वह साधारण नश्वरों के विश्वासों और अविश्वासों की परवाह क्यों करे ? यदि यह ही महत्वपूर्ण हुआ होता तो वह उसमें ईमान रखने वाले मनुष्य ही पैदा करता । चूँकि प्रशंसा और महानता की कामनाएं मानवीय दुर्बलता ही होती है, यह मौहम्मद की ही इच्छा मात्र है कि व्यक्तिगत शान के लिए निर्दोष लोगों की हत्या की जाए और उन्हें दा स बनाया जाए । निश्चित ही अल्लाह के चरित्र को बदनाम करना है और उसकी महानता का अनादर ही है ।

कल्पना कीजिए एक ऐसे पुरुष की जो स्वयं को उच्च नैतिकता के मसीहा के रूपैगम्बर में प्रस्तुत करे और दूसरी ओर निर्दोष स्त्रियों के साथ सम्भोग को प्रोत्साहित करे । अपने श्रद्धालु साथियों को सम्भोग करने की अनुमति देने और उन्हें उत्साहित करने के स्थान पर उन्हें चाहिए था कि अपने साथियों को धमकाते और दंडित करते ताकि मानवीय मूल्यों की रक्षा हो सकती । चूँकि नबी ने इसके सर्वथा विपरीत आचरण किया था, इस तथ्य से एकदम स्पष्ट है कि उन्होंने वासना पूर्ति का प्रयोग अपना प्रयोजन सिद्ध कर ने के लिए किया था, वह प्रयोजन अपने आपको देवतुल्य सिद्ध करना और राष्टीय प्रभुत्व स्थापति करना था । यदि उन्होनें बलात् शील भंग करने वालों को दण्ड दिया होता तो कोई भी उनके अभियानों में सम्मिलित न हुआ होता।

यह स्मरण रहे कि बाइजैण्टाइन साम्राज्य में एक दास कन्या के साथ सम्भोग के लिए मृत्यु दण्ड का विधान था, और यह परिपाटी थी कि किसी भी बंदिनी स्त्री का अपमान नहो क्योंकि ईसाइयों और पैगनों (मूर्ति पूजकों) के संसारों में विजिता स्त्रियों का ऐसा अपमान करना अमानवीय कृत्य समझा जाता था क्योंकि उनका असहाय होना ही उनका एकमात्र अपराध था । इन लोगों को इस तथ्य का स्पष्ट ज्ञान था कि बंदिनी स्त्रियों ने अपने पिता, पति, पुत्र और भाई युद्ध में खो दिए हैं । अपने आप में यह अति बड़ा दण्ड था और उसके आगे किसी भी प्रकार की अवमानना शुद्ध बर्बरता ही समझी जाती थी । यही कारण है कि सभ्य संसार में बंदिनी स्त्रियों का सम्मान ही फिरौती की शर्त थी । इसके विपरीत मुसलमान अज्ल की विधि द्वारा संभोग भी किया करते थे जो फिरौती वसूलने के लिए दबाव का एक रूप था ।

2. जन सामान्य , राजनीतिबाजों और मौलवियों की भाँति नबी ने भी स्त्रियों का प्रयोग शक्तिशाली लोगों से पारिवारिक संबंध बनाने के लिए ही किया, अबूबकर और उमर उनके श्वसुर थे और उस्मान और अली उनके दामाद थे । ये वे लोग हैं जिनका रुतबा और आदर

इस्लाम के प्रसार और अरब साम्राज्य की स्थापना में उनकी भूमिका के कारण नबी की मुस्लिम मृत्यु के पश्चात क्रमांक दो पर गिना जाता है । नबी से जो कि अपने आपको अल्लाह द्वारा नियुक्त पैगम्बर और मानवीय आचरण का आदर्श होने का दावा करते थे उच्चतर नैतिकता की अपेक्षा की जाती है ।

3. सोधा बिण्ट जमा मोहम्मद की सबसे पहले की पत्नियों में से एक थी । उन्होंने खदीजा की मृत्यु के पश्चात उनसे शादी की । चूँकि भयानक परिस्थितियों में उसे मोहम्मद के साथ मदीना भागना पड़ा था स्पष्टतया उसमें एक अच्छी पत्नी के गुण थे । मुस्लिम इतिहासकारों का मानना है कि उसकी आयु के कारण नबी उसको तलाक देना चाहते थे यद्यपि वह मात्र एक या दो वर्ष ही नबी से बड़ी थी । वह वैवाहिक संबंध विच्छेद नहीं चाहती थी और हर कीमत पर वह उस अनर्थ से बचना चाहती थी ।

नबी की कई पत्नियां थी और उनके प्रति बराबरी रखने के लिए उन्होंने क्रमावली बना रखी थी ताकि प्रत्येक पत्नि के साथ निश्चित क्रम पर नियमितता के साथ रात्रि बिता सकें । चूँकि आयशा मौहम्मद की सर्वाधिक प्रिय पत्नि थी अतः सोधा ने मौहम्मद को प्रभावित करने के लिए आयशा के पक्ष में अपनी बारी त्यागने को स्वेच्छा से कहा । नबी ने इस प्रस्ताव को इच्छापूर्वक स्वीकार कर लिया और तलाक देने की अपनी धमकी छोड़ दी ।

(मिस्कट खण्ड 3 पृर्ष्ईसाई 352)

क्या इस कृत्य समान व्यवहार की अवधारणा पर खरा उतरता है ? इसके विपरीत क्या यह स्त्रियोँ के प्रति नबी की सोच को नहीं दर्शाता ? नबी ने यह प्रस्ताव क्यों स्वीकार किया ? निम्नलिखित वर्णन से इस मामले का स्पष्टीकरण हो सकता है –

4. नबी एक बुद्धिमान व्यक्ति थे । वह आयशा के पिता अबूबकर के साथ निकट के संबंध बनाना चाहते थे क्योंकि वह धनवान निष्ठावान, और अत्यंत योग्य व्यक्ति था “ मौहम्मद की मृत्यु के पश्चात इस्लाम जंगल में एक गूँज मात्र रह जाता , परन्तु अबूबकर की, जो खलीफा हो जाने के कारण मौहम्मद का उत्तराधिकारी बना, बुद्धिमत्ता, दृढ़ता और साहसिक कृत्यों ने इस्लाम में जान फूँक दी जिससे दुनिया भर के मुसलमानों के ऊपर अरब का एक सांस्कृतिक साम्राज्य थोंप दिया । यह ठीक वैसे ही हुआ जैसा कि मौहम्मद ने स्वप्न संजोया था । चूँकि यह कथानक कामोन्मुखी है मैं पाठकों को बताना चाहूँगा कि मौहम्मद की आयशा के साथ शादी का वृतान्त ताकि वे अपने निष्कर्ष स्वयमेव निकाल सकें ।

खदीजा, नबी की पहली पत्नि एक धनी एवं शक्तिसम्पन्न महिला थी और इस प्रकार वह उनके उत्थान में सहायक सिद्ध हुई । यह सर्व स्वीकार्य है कि वह नबी से उम्र में 15 वर्ष बड़ी थी किन्तु नबी आयशा से आयु में 45 वर्ष अधिक बड़े थे । आयशा विवाहोत्सव के समय 6 वर्ष की एक बालिका थी और नबी की आयु इक्यावन वर्ष थी । मौहम्मद की तुलना में खदीजा और आयशा की आयु का अंतर स्त्रियों के प्रति उनका व्यक्तिगत दृष्टिकोण उजागर कर देता है ।

आयशा छः वर्ष की आयु की एक बालिका थी और विवाह या उसके प्रयोजन से अवगत न थी । इस्लाम ने स्त्रियों के विवाह के विषय में कुछ नियम निर्धारित किए हैं

क. कोई भी स्त्री अपने संरक्षक की अनुमति के बिना विवाह नही कर सकती । जिस स्त्री का बिल्कुल भी कोई संरक्षक नहीं हो सकता संरक्षक शासक या राज्य होता है ।

(मिस्कट खण्ड 2 पृर्ष्ईसाई 78)

ख. किसी भी विधवा या कुवांरी का विवाह उसकी स्वीकृति के बिना नहीं किया जाना चाहिए ।

(मिस्कट खण्ड 2 पृर्ष्ईसाई 77)

यद्यपि अबूबकर आयशा का पिता उसका संरक्षक था, किन्तु वह इतनी छोटी थी कि विवाह का अर्थ और प्रयोजन भी नहीं जानती थी जो अपनी सहमति देती । इस प्रकार यह घटना इस्लाम के विवाह संबंधी आधारभूत नियमों पर खरी नहीं उतरती ।

आयशा नबी की सर्वाधिक प्रिय पत्नि थी, आयशा यह जानती थी

(मिस्कट खण्ड2 पृर्ष्ईसाई 79)

और इस तथ्य की पुष्टि पति के पत्नि के प्रति असामान्य व्यवहार से होती है ।

आयशा ने कहा : “ नबी (खुले) द्वार में खड़े हो जाते थे जहाँ पर मस्जिद के प्रागंण में नीग्रो लोग अपने भालों द्वारा अभ्यास करते थे । वे (नबी) मुझे ऊपर उठा लेते थे ताकि मैं उनके कन्धों के ऊपर से उन्हें देख सकूं । वह मेरे कारण तब तक खड़े रहते थे जब तक मैं उन्हें छोड़कर चली नहीं जाती थी । इससे एक छोटी बालिका के खेल में लगाव का अनुमान लगाया जा सकता है ”

(मिस्कट खण्ड 2 पृर्ष्ईसाई 99)

आयशा ने कहाः “ रजोस्राव के समय मैं हड्डी से मांस काटकर खाती थी, नबी ने मुझसे वह हड्डी ले लेते थे तथा जहाँ से मैं खाती थी वहाँ से वह भी खाने लगते थे, जब मैं पानी पीती थी तब वह पात्र मेरे से लेते थे और अपने होंठ उसी जगह लगा देते थे जहाँ से मैने पानी पिया था ।

(इब्न ए माजाह खण्ड 1 पृर्ष्ईसाई 202, 203)

आयशा ने कहा : “ नबी ने मुझे बताया थाकि एक फरिश्ते ने उन्हें लगातार तीन रातों तक मुझे दिखाया । हर बार मुझे रेशमी कपड़े पहना कर वह फरिश्ता मुझे (आयशा) उनके (नबी) के निकट लाता था और कहता था “ यह तुम्हारी पत्नि है ” । नबी ने मेरे मुख से कपड़ा हटा कर इस तथ्य की पुष्टि की थी कि वह मैं ही थी । नबी ने कहा था कि यदि अल्लाह से था तो यह इसी प्रकार होना ही था ।

(मिस्कट खण्ड 3 पृष्ठ ईसाई 265)

पूर्वोक्त हदीसों से नबी का आयशा के प्रति गहरा प्रेम तथा कामवासना प्रकट होती है परंतु आगे लिखित हदीस तो वास्तव में आश्चर्यचकित ही करती है :

.... मैं जब आयशा से इतर किसी भी अन्य पत्नि के साथ शय्या पर होता हूँ तो गिब्रील दैवी संदेशों को लेकर मेरे पास नहीं आता । (मिस्कट खण्ड 3पृष्ठ 265)

आयशा ने कहा : " मैं और नबी इकट्ठे होकर एक ही पात्र से जल लेकर स्नान करते थे । यदि वे जल्दी में होते तो मैं कहती थी मेरे लिए कुछ पानी छोड़ देना । उस समय हम दोनों ही दूषित अवस्था में होते थे ।

(मिस्कट खण्ड 1 पृष्ठ 102)

आगे कुछ और हदीसों का विवरण है जिनसे नबी के स्त्रीत्व के प्रति दृष्टिकोण को समझने में सहायता मिलती है ।

(क) आयशा ने कहा : " मैं छः वर्ष की थी जब नबी ने मुझसे विवाह किया था .... तब हम मदीना चले गए .... जहाँ मुझे ज्वर चढ़ गया । मेरे बाल गिर गए और मैं गंजी हो गयी । मैं अपनी सहेलियों के साथ झूला झूल रही थी कि मेरी माँ रूमान मेरे पास आई । उसने मुझे बुलाया और मैं उसके पास आ गयी । मुझे उसके इरादों का पता नहीं था । उसने मेरा हाथ पकड़ कर द्वार पर खड़ा कर दिया जबकि मैं हाँफ रही थी । उसने मेरे मुख और सिर धोए और अंदर ले गयी जहाँ पर कुछ अंसार स्त्रियाँ एकत्रित थीं । वे कह रहीं थीं " खुदा का आशीर्वाद और अच्छा नसीब " तब मेरी माँ ने मुझे इन औरतों के हवाले कर दिया और उन्होंने मेरा श्रृगांर किया । तभी नबी आ गए और मैं डर गयी, उन्होंने मुझे उनके हवाले कर दिया । तब मैं नौ वर्ष की थी । "

(इब्न ऐ माजाह खण्ड 1 पृष्ठ 526)

अग्रलिखित हदीस से और अधिक स्पष्टीकरण हो जाता है :

(ख) जब पैगम्बर मौहम्मद ने आयशा से निकाह किया तब वह 6 वर्ष की थी, तथा ज बवह अपने पिता का घर छोड़कर उनके साथ रहने आयी, तब वह नौ वर्ष की थी और उनकी मृत्यु के समय वह 18 वर्ष की थी ।

(इब्न ऐ माजाह खण्ड 1 पृष्ठ 250)

यहाँ पर उपर्युक्त हदीस (ख) में (क) में वर्णित घटना की व्याख्या हुई है अर्थात यह विवाह समारोह की नहीं वरन विवाह की परिणति के विषय में है । यह ध्यान रहे कि आयशा के मुख और सिर को उसकी माँ ने धोया था । इसका स्पष्ट अर्थ है कि मानसिक विकास की दृष्टि से वह समय से आगे नहीं थी और नौ वर्ष की सामान्य बालिका थी । निम्नलिखित हदीस से इस कथानक का समापन हो जाता है ।

(ग) आयशा ने कहा " मेंरी आयु नौ वर्ष की थी जब संभोग हुआ और मेरी गुड़िया मेरे पास थी । "

(मिस्कट खण्ड 2 पृष्ठ 77)

यह हदीस अपने आप में स्पष्ट है और पाठक अपना निष्कर्ष निकाल सकते हैं ।

यौन संभोग सारे संसार में संबंधित पक्षों के बीच एक व्यक्तिगत एवं गोपनीय व्यवहार माना जाता है परंतु मुस्लिम में एक आश्चर्यजनक हदीस है ।

" अनास वर्णन करता है कि अल्लाह के पैगम्बर (अल्लाह उन्हें शांति दे) की नौ पत्नियाँ थी और उन्होंने प्रत्येक के लिए पृथक रात्रि निश्चित की थी । इस प्रकार प्रत्येक पत्नि का क्रम प्रत्येक नौवें दिन आता था । तथापि वे सभी पत्नियाँ उस पत्नि के घर में एकत्र हुआ करती थीं जिसके साथ नबी को संभोग करना होता था ।उस रात्रि को (सबसे छोटी पत्नि) आयशा की बारी थी तभी जैनब एक सुंदर पत्नि वहाँ आयी । नबी ने जैसे ही उसकी ओर हाथ बढ़ाया । वैसे ही आयशा को ज्ञात हुआ वह चिल्लाई कि " यह जैनब है " अतः नबी ने अपना हाथ खींच लिया । दोनो पत्नियों में झगड़ा हुआ जो धीरे धीरे बढ़ता हुआ भोर तक चलता रहा, तब तक प्रार्थना हेतु अजान की घोषणा हो गयी ।सदैव की भांति आयशा के पिता अबूबकर नबी को मस्जिद बुलाने के लिए आ गए । उसने कहा " अल्लाह के पैगम्बर नमाज के लिए चलो और इन औरतों के मुँह में खाक डालो । "

आयशा ने टिप्पणी की नमाज खत्म होने के बाद उसका बाप आकर उसे डाँटेगा जैसा कि ऐसे अवसरों पर वह किया करता था और ठीक उसी प्रकार हुआ भी । अबूबकर वापिस आया और कठोर शब्दों में आयशा को डाँटा और कहा " क्या तुम इसी प्रकार का व्यवहार किया करती हो । "

(सहीह मुस्लिम हदीस 3450 पृष्ठ 747)

एक पत्नि के साथ दूसरी पत्नियों की उपस्थिति में, संभोग करना अति असामान्य व्यवहार है । इससे भी अधिक आश्चर्यजनक है अबूबकर का अपनी पुत्री को ऐसे मामले में डाँटना जो पूर्णतः यौन तुष्टि से संबंधित था ।

(5) नबी का यह दावा था कि वह समस्त मानव जाति के प्रति दयालु, व्यवहार का आदर्श और उच्चतर नैतिकता का प्रचारक था । परंतु जब हम उनके अपने ही कानूनों की तराजू पर रखैलों के समूह के प्रति उनके रुख की सावधानी से जाँच करते हैं तो इन दावों पर विश्वास करना अति कठिन हो जाता है ।

न्याय प्रणाली का यह सर्व सामान्य सिद्धान्त है कि एक बार जब कोई कानून बन जाता है तो कानून निर्माता को भी उसका सम्मान अवश्य करना चाहिए जब तक कि उस कानून का अस्तित्व रहे । क्योंकि कानून को सर्वोच्च और अविभाज्य माना जाता है इसीलिए कोई भी व्यक्ति कानून से ऊपर नहीं हुआ करता क्योंकि यह छोट। और बड़े सभी पर समान रूप से लागू होता है ।

सिद्धान्ततः कुरआन की यह मान्यता है कि कानून को लागू करने में पक्षपात से कानून के ढाँचे में प्रतिकूलता उत्पन्न हो जाएगी और यह अल्लाह के शब्द की गरिमा के लिए घातक है ।

'' और क्या वे कुरआन पर सोच विचार नहीं करते हैं ? और यदि यह अल्लाह के सिवाय किसी की ओर होता तो निश्चय ही इसमें बहुत विभेद पाते ।

(4 अन निसा 82)

संक्षेप में इसका तात्पर्य यह है कि कोई संदेश अल्लाह से नहीं हो सकता यदि उसमें विरोधाभास हो । इस नियम को यदि कुरआन पर प्रयोग करें तो यह दैवी परीक्षण पर अनुत्तीर्ण हो जाता है क्योंकि इसमें हमें अनेक विरोधाभास मिलते हैं , उदाहरण के लिए विवाह के कानून को लें ।

'' और तुममें से जिस किसी में इतनी सामर्थ्य न हो कि ' ईमान ' वाली महिलाओं से विवाह करे, तो तुम्हारी वे ' लौण्डियाँ ' ही सही जो तुम्हारे अधिकार में हों, जो ईमान वाली हां । और अल्लाह तुम्हारे ईमान को भलीभाँति जानता है । तुम सब आपस में सहजाति हो, तो उनके मालिकों की अनुमति से तुम उनसे विवाह कर लो, और सामान्य नियमुस्लिम के अनुसार उन्हें उनकी महर अदा करो, इस तरह से कि वे विवाहिता बनायी जाएं, न कि वे व्यभिचार करने वाली हों, और न चोरी छिपे प्रेम करने वाली हों ।

(4 अन निसा निसा 25)

यहाँ यौन विषयक कानून स्पष्ट बताया गया है अर्थात

(1) ईमान वाली महिलाओं से विवाह करो किन्तु यदि किसी में ऐसी सामर्थ्य न हो तो ,

(2) एक ईमान वाली लौण्डी से ससम्मान विवाह कर लो परन्तु विवाह के सभी कानूनों का और उचित परम्परागत नियमों का पालन करते हुए ही ।

अब यह स्पष्ट है कि कुरआन बिना शादी के सम्भोग की अनुमति नहीं देता । इसका तात्पर्य है कि एक रखैल के साथ सम्भोग करना बलात्कार या व्यभिचार के समान है क्योंकि ऐसी स्त्री को विवाह की मान्य क्रियाविधि के द्वारा वैवाहिक सम्मान नहीं मिला है । यद्यपि वह स्त्री अपने मालिक की सम्पत्ति है तथापि उसको उसके साथ सम्भोग करने का कोई अधिकार नहीं है, साधारणतया यह व्यभिचार है । बाइजैण्टाइन (रोमन) कानून दास लड़की के शील रक्षा के अधिकार को मान्यता देता था और शील भंग करने वालों को मृत्यु दण्ड का विधान था । अल्लाह ने भी प्रत्यक्षतः वही मार्ग अपनाया है जिसकी पुष्टि निम्नलिखित आयतों से हो जाती है ।

'' तुममे से जो एकाकी (अर्थात वे जोड़े के अविवाहित अवस्था में) हों और तुम्हारे गुलामों और तुम्हारी लौण्डियों में जो नेक हों, उनका विवाह कर दो । यदि वे गरीब होगें तो अल्लाह अपने अनुग्रह से उन्हें अनुग्रहीत कर देगा ।

और तुममें से जिन्हें विवाह का अवसर प्राप्त नहो, उन्हें चाहिए कि अपने आप को बचाए रखें (संयमपूर्वक रहें) यहाँ तक कि अल्लाह अपने अनुग्रह से उन्हें सम्पन्न कर दे । और उन लोगों में जिन पर तुम्हें स्वामित्व का अधिकार प्राप्त हो जो (अपनी स्वाधीनता के लिए) लिखा पढ़ी करना चाहे उनसे लिखा पढ़ी कर लो .... और अपनी लौण्डियों को सांसारिक जीवन का लाभ प्राप्त करने के लिए दुश्चरित्रता पर विवश न करो, जबकि वे सतवंती (और विवाहिता होकर) रहना चाहती हों ।

(24 अन नूर 32-33)

उपर्युक्त आयतों मे यह स्पष्ट रीति से निर्धारित कर दिया गया है कि एक पुरुष जब तक वह विवाह के लिए समर्थ न हो, ब्रह्मचर्य का पालन करे । इस प्रकार गुलाम स्त्री के साथ बलात संभोग करना वेश्यावृत्ति के तुल्य है , जो कि पाप है तथा भारी दण्ड का पात्र भी बनाता है ।

अब तक जो भी कहा गया है वहाँ तक सब ठीक है किन्तु कुरआन यकायक इसका प्रतिवाद कर देता है

हे नबी ! हमने तुम्हारे लिए तुम्हारी पत्नियाँ हलाल कर दी हैं जिनके मेहर तुमने दे दिए हैं और तुम्हारी लौण्डियों जो अल्लाह ने तुम्हे गनीमत के माल में दी ....

(33 अल अहजाब 50)

इस्लाम की उदारता के प्रचार के लिए मुस्लिम विद्वान इस बात पर बहुत बल देते है कि यह मजहब कुरआन में वर्णित लोगों अर्थात यहूदियों और ईसाइयों केसाथ विवाह की अनुमति देता है । यहाँ पर मारिया और रेहाना का रखैल बनाए रखना , इस गप्प का भंडाफोड़ कर देता है

कुरआन एक ओर तो वैवाहिक बंधन के बिना यौनाचार को वर्जित करता है किन्तु दूसरी ओर वह बंदी दास लड़कियों के साथ संभोग को गैर कानूनी करके भी अधिकृत करता है । यह स्पष्ट विरोधाभास क्यों ? इसका कारण भी इन्ही आयतों में स्पष्ट दे दिया गया हैः यहाँ लौण्डियाँ शब्द युद्ध की लूट में प्राप्त माल के साथ उल्लिखित है । स्त्रियों की कमी के कारण अरब वासियों की काम पिपासा बहुत बढ़ गयी थी । अल्लाह ने लौण्डियों के शील भंग करने की अनुमति जिहाद को बढ़ावा देने के उद्देश्य से की थी ताकि पैगन (मूर्ति पूजक) अरब लोग भी शारीरिक प्रलोभन के माध्यमुस्लिम से इस्लाम की ओर आकर्षित को जाएं । पुनश्च युद्ध में मिले माल के रूप में इसके प्रयोग को कुरआन में अच्छा और वैध मान लिया गया, रखैलों के साथ संभोग अर्थात लौण्डियों का नियमित आधार पर शील भंग करना वैध हो गया और इस्लाम में एक पवित्र कार्य हो गया । आगे यह भी याद रहे कि स्वयं नबी भी कई गुलाम लड़कियों के मालिक थे जो कि उन्हें यहूदियों के विरुद्ध युद्ध में लूट के माल के रूप में उनके भाग में मिली थीं । उदाहरण स्वरूप सुंदर सफाया ने जो कि नबी की लूट के माल के रूप प्राप्त हुई थी इस्लाम स्वीकार कर लिया और स्वाधीन महिला के रूप में उनकी पत्नि बन गयी । किन्तु सुंदर रेहाना ने इस्लाम स्वीकार नहीं किया, फलस्वरूप नबी की रखैल बनने के अतिरिक्त उसके पास कोई विकल्प नहीं थाः उसका कानूनी दर्जा घर की चल सम्पत्ति के समान था । इसलिए वह अपने मालिक द्वारा संभोग की माँगों की उपेक्षा नहीं कर सकती थी ।

मतान्तरण और मतान्तरित लोगों को इस्लाम में जकड़े रखने के लिए जैसे ही रखैलों की कामाकर्षण शक्ति विदित हो गयी , नबी ने इसका क्षेत्र युद्ध क्षेत्र में मिली लूट से आगे बढ़ा दिया । उन्होंने रखैलों के संभोग के लिए उनकी खरीद एवं मित्रता के उपहार के रूप में स्वीकार करने को भी वैध बना दिया ।इसके लिए उन्होंने रखैल प्रथा को एक संस्था के रूप में प्रोत्साहित किया ।

'' और मुश्रिक स्त्रियों से जब तक वे ' ईमान ' न लांए विवाह न करो : ईमान वाली एक लौण्डी एक मुश्रिक स्त्री से अच्छी है, यद्यपि वह तुम्हें भली लगे .... (2 अलबकरह 221)

इसका तात्पर्य यह नहीं है कि एक (मुस्लिम) पुरुष एक ईमान वाली लौण्डी (दास कन्या) से शादी अवश्य करे, वह उसके साथ संभोग करने के लिए स्वतंत्र है । रखैल प्रथा की संस्था के विस्तार के उद्देश्य से ही एक गैर मुस्लिम स्त्री से विवाह न करने पर जोर दिया गया है, वे स्त्रियाँ संभोग के लिए उपर्युक्त तो मानी गयी हैं किन्तु शादी के पवित्र बंधन के लिए उपयुक्त नहीं मानी गयी हैं । यह किस प्रकार शादी की नैतिकता है ।

अल्लाह के आदेश से मोहम्मद सभी प्राणियों के व्यवहार का आदर्श है, उन्होंने रखैल प्रथा का उदाहरण प्रस्तुत किया । उन्होंने मिस्र के शासक से एक सुंदर कन्या मारिया (मेरी) को उपहार में स्वीकार किया । चूँकि मारिया ने इस्लाम स्वीकर नहीं किया वह नबी की रखैल ही रही जिससे एक पुत्र इब्राहीम पैदा हुआ जो शैशवास्था में ही मर गया ।

जैसे कि पहले ही बताया जा चुका है नबी ने एक क्रम प्रणाली बनायी हुई थी जिसके अनुसार नियत पत्नि के साथ क्रमानुसार उन्हें रात्रि विशेष बितानी होती थी । चूँकि रखैल को पत्नीत्व का अधिकार नहीं था, मारिया (ईसाई) और रेहाना (यहूदी) क्रमिक नियमितता के इस नियम में नही आती थी , परन्तु उन्हें जब भी नबी की इच्छा होती थी अपने आपकों उपलब्ध कराना होता था ।

एक बार जबकि उस रात्रि को आयशा (नबी की सबसे कम आयु की पत्नि) बारी थी, हफसा (नबी की अन्य पत्नि जो कि उमर की पुत्री थी) ने नबी को मारिया के साथ अपने कमरे में पाया । चूँकि यह क्रम प्रणाली का घोर उल्लंघन था, नबी ने इसके परिणामों को जानकर हफसा की मिन्नतें की कि वह यह भेद आयशा से बताए । उससे नबी ने शपथ ली कि क्षति पूर्ति स्वरूप वह मारिया से अधिक सम्बन्ध नहीं रखेगें किन्तु कुद्ध हफसा इस कृत्य को पचा न सकी क्योंकि यह काम उसकी की शय्या पर हुआ था, उसने यह भेद खोल दिय (यह घटना कुतुब खाना इशायत उल इस्लाम 3755 चूड़ी वालान दिल्ली 6 भारत, द्वारा प्रकाशित कुरआन के अनुवादक द्वारा पृष्ठ 679 पर वर्णित है । इससे कामवासना पूर्ति के मामलों में नबी के व्यवहार का और उनके अपने नियमों की अवहेलना का ज्ञान होता है ।)

मारिया मिस्र मूल की ईसाई कन्या थी, किन्तु नबी की सभी पत्नियाँ (सफाया को छोड़कर) को , अपने कुरैश मूल पर अभिमान था और मारिया को नीची दृष्टि से देखती थीं । इस घटना से उन बहुत बुरा प्रभाव पड़ा क्योंकि :

(1) आयशा के विश्वास को तोड़ा, क्रम प्रणाली के अनुसार उसके साथ सोने के बजाए उन्होंने मारिया को आदर दिया था ।

(2) हफसा पूरी तरह परेशान थी क्योंकि उन्होंने इस कृत्य के लिए उसके कमरे और उसकी शय्या का प्रयोग किया था ।

इस घटना से नबी और उनकी पत्नियोँ के मध्य जबरदस्त झगड़ा हुआ । इस घरेलू झगड़े के परिणाम को मापने के लिए निम्नलिखित आयत पर ध्यान देना आवश्यक है ।

'' हे नबी की स्त्रियों ! तुम दूसरी स्त्रियों में किसी की तरह नहीं हो । यदि तुम परहेजगार रहना चाहती हो, तो दबी जबान से बात न किया करो .... बल्कि साफ सीधी बात किया करो । '

(33 अल अहजाब सू 32)

घृणित बातचीत कुछ अन्य नहीं हो सकती सिवाया गाली गलौच की भाषा के । यहाँ पर नबी इसी बात की शिकायत कर रहें हैं । जैसे ही स्थिति और खराब हुई उन्होंने अपनी पत्नियों को तलाक की धमकी दी और इला घोषित कर दिया यानि कि तलाक की क्रिया को अंतिम रूप देने से पहले अलग रहने की अवधि । इस कथानक का वर्णन सहीह मुस्लिम के अध्याय DLXXXI में मिलता है । यह उल्लेख करना आवश्यक है कि आयशा के पिता अबूबकर और हफसा के पिता उमर ने अपनी पुत्रियों की पिटाई की ताकि वे उनके दामाद नबी के आदेश का पालन करें ।

मै दृढ़तापूर्वक कहना चाहूँगा कि रखैल प्रथा मौहम्मद की ही खोज नहीं थी । यह प्रथा उनके आगमन से काफी पहले से ही पूर्व में विद्यमान थी ।

अल्लाह ने नबी के नाते जो कि अपने व्यक्तिगत उदाहरण द्वारा आदर्श प्रस्तुत करके उच्चतर नैतिकता स्थापित करने के लिए आए थे, उन्हें इसको समाप्त कर देना चाहिए था । मैं यह स्पष्ट करना चाहूँगा कि रखैल प्रथा एक बुरी प्रथा है और जिन्होंने इसे अपनाया उन्हें भी यह मालूम रहा होगा ।

निम्नलिखित कारणों से यह निकृष्ट प्रथा थी ।

1. एक रखैल अपने मालिक की सम्पत्ति है, वह उसको कोड़े मार सकता है और बेच सकता है ।
2. वह एक बलात पत्नि है और वह अपने मालिक को उसकी इच्छानुसार उसके साथ संभोग करने से इंकार नहीं कर सकती, नही वह वहाँ से भाग सकती थी क्योकि भगोड़े दासों से संबंधित कानून वस्तुतः बहुत कठोर था ।
3. किसी रखैल के साथ सोना बलात्कार के समान ही है क्योकि वह विवश थी और सहमत नही थी ।
4. रखैल प्रथा स्त्रीत्व के विरुद्ध एक अपराध है । यह उसकी स्वतंत्रता के सभी (मानवीय) अधिकारों, उत्तराधिकार और प्रतिष्ठा का हनन करती है ।
5. रखैल प्रथा रखने का यह तात्पर्य है कि औरत के जीवन का पुरुष को प्रसन्न करते रहने के अतिरिक्त और कोई प्रयोजन नहीं है ।

जब कि विज्ञान की आधुनिक प्रगति ने किताब पर आधारित पंथों की जड़ों पर , जो मतारोपण द्वारा टिके थे , गंभीर आघात किया है, मुस्लिम विद्वानो ने भ्रम का विस्तृत जाल फैलाया है जिससे ईमान वालों को एक शाश्वत सम्मोहन की स्थिति मे रखा जा सके । वे दावा करते हैं कि मुस्लिम घरों में एक रखैल को उसकी इच्दा के विरुद्ध वासना तृप्ति के लिए नही रखा जाता वरन वह एक द्वितीयक पत्नि है ।

यह बहुत ही भ्रामक है क्योंकि :

(1) नबी ने स्वयं मारिया और रेहाना से शादी नहीं की थी, ये दोनों स्त्रियों उनकी दासी ही थीं और वह उनके साथ स्वेच्छा से सोते थे ।

अल्लाह ने एक विवश स्त्री के साथ जो एक मुसलमान के दाँये हाथ के अधिकार में हो , संभोग करने के स्वीकृति दे सकता है किन्तु नैतिकता ऐसे अत्याचार की अनुमति नहीं देती । यदि मुसलमानों की पुत्रियाँ, बहिनें, पत्नियाँ, माताएं गैर मुस्लिम द्वारा पकड़ ली जांए और अनैतिक कार्यो के लिए उनका प्रयोग किया जाए तो मुसलमानों को कैसा लगेगा ?

(2) एक बहु पत्नि वाले मुस्लिम घराने में कोई द्वितीयक पत्नि जैसी वस्तु नहीं होती ।

‘‘ .... स्त्रियों में जो तुम्हारे लिए जायज हो – दो दो, तीन तीन और चार चार तक विवाह कर लो, और यदि तुम्हें इसका भय हो कि उसके साथ समता का व्यवहार न कर सकोगे, तो फिर एक ही पर बस करो या वह लौण्डी जो तुम्हारे कब्जे में हो उसी पर बस करो ।

(4 अननिसा 3)

उपर्युक्त आयत में निर्णायक रूप से कहा है

(क) अनेक पत्नियाँ रखने की अनुमति इस कठोर शर्त पर है कि पति अपनी सभी पत्नियों से समान और निष्पक्ष व्यवहार करे । इस प्रकार एक समय पर एक से अधिक पत्नि रखने के लिए समानता का सिद्धान्त ही मूल सिद्धान्त है । यदि एक पुरुष अपनी सभी पत्नियों से समान व्यवहार नहीं कर सकता तो उसका अनेक पत्नियों रखने का अधिकार समाप्त हो जाता है ।

यह स्मरण रखना चाहिए कि विवाह एक नागर संविदा है जो कि वैवाहिक अनुष्ठान द्वारा सम्पन्न होता है जो रीति रिवाजों और कानून द्वारा मान्य है । समानता के नियम की यह मांग है कि एक पुरुष का एक रखैल के साथ विधिपूर्वक विवाह होना चाहिए । यदि वह ऐसा करता है तो वह एक पत्नि बन जाती है जो समानता की अधिकारिणी है इस प्रकार उसे द्वितीयक पत्नि नही माना जा सकता ।

वह या तो पत्नि है या नहीं है ।

(ख) उपरलिखित आयत में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि यदि एक पुरुष को यह भय है कि वह अपनी सभी पत्नियों के साथ एक जैसा व्यवहार नही कर सकता तो उसके एक ही पत्नि रखनी चाहिए पर वह रखैलें रख सकता है ।

इससे यह निस्संदेह स्पष्ट हो जाता है कि एक रखैल पत्नि नहीं होती परतुं एक ऐसी स्त्री है जो कि घरेलू कार्यों और कामवासना तृप्ति के लिए ही रखी जाती है ।

(ग) अनेक हदीसें हैं जो कि रखैल और पत्नि के अंतर को स्पष्ट करती हैं ।

अब्द बी जामा ने नबी से कहा , ‘‘ वह मेरा भाई है और मेरे पिता की रखैल का पुत्र है ।

(मिस्कट पृष्ठ 115)

यहाँ पर पत्नि एवं रखैल में अंतर जानबूझ कर रखा गया है ।

नबी ने कहा , ‘‘ रखैल जिसने अपने मालिक के लिए पुत्र उत्पन्न किया है, उसकी मृत्यु के बाद स्वतंत्र हो जाएगी ।

(इब्न ए माजाह, पृष्ठ 96)

जबीर ने बताया, ‘‘ हम अपनी उन रखैलों को बेचा करते थे जिनसे हमें संताने हुई परन्तु नबी के कभी विरोध नहीं किया । ’’

(इब्न ए माजाह, पृष्ठ 96)

एक आदमी ने अपनी पत्नी की लौण्डी के साथ व्यभिचार किया परंतु नबी ने उसे कोई दण्ड नहीं दिया ।

(इब्न ए माजाह, पृष्ठ 107)

एक पत्नी और रखैल के लिए दण्ड भी भिन्न भिन्न हैं । यदि पत्नी पर पुरुष गामी है तो उसे पत्थर मार कर मृत्यु दण्ड निर्धारित है किन्तु एक रखैल यदि यह चार बार कर बैठे तो भी उसे मात्र कोड़ों की ही सजा दी जाती है, तत्पश्चात मालिक चाहे तो उसको बेच दे, भले ही उसके बदले मात्र एक रस्सी का टुकड़ा ही मिले ।

तथापि इन रखैलों के विषय में, जिनसे उनके मालिकों को संताने मिली हैं, विचित्र प्राविधान है, रखैलों की संताने जायज मानी जाती हैं चाहे रखैल काफिर अर्थात गैर मुस्लिम हो । यह कितना आश्चर्यजनक है कि कामवासना तृप्ति के संदर्भ में मुस्लिम और गैर मुस्लिम का अंतर भी समाप्त हो जाता है, विलीन हो जाता है । इस्लामी सिद्धान्त की वैधता और नैतिकता को देखकर आश्चर्य होता है ।

स्मरण रहे नबी का पुत्र इब्राहीम, उनकी रखैल मारिया से उत्पन्न हुआ था ।

इस्लाम की दुनियाँ में रखैल प्रथा इसीलिए प्रचलित हुई क्योंकि मुसलमानों का यह विश्वास था कि नबी उनके व्यवहार के लिए आदर्श प्रारूप हैं और जन्नत में प्रवेश तब तक सम्भव नही है जब तक कि जीवन के सभी पहलुओं में नबी की निष्ठा पूर्वक नकल न की जाए, जैसे खानपान, चलना , बातचीत करना इत्यादि मे ।वास्तव में एक व्यक्ति तब तक सच्चा ईमान वाला नहीं कहलाता है जब

तक वह नबी ही की भाँति कार्य नहीं करता और उन जैसा ही दिखाई नहीं देता । यह आचरण कुरआन की निम्नलिखित आयतों पर आधारित है ।

'' तुम लोगों के लिए अल्लाह के रसूल में एक उत्तम आदर्श था उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और अंतिम दिन की आशा रखते हैं ....।

(33 अल अहजाब 21)

सच्चाई यह है कि नबी, व्यवहार का आदर्श हो ही नहीं सकते क्योंकि वह अपने कानूनों से ऊपर थे । यदि वह स्वयं अपने आचरण नियमों का पालन करने के इच्छुक नहीं थे तो वह दूसरे लोगों से इनके पालन के लिए कैसे आशा कर सकते हैं । यहाँ अनेक ऐसी घटनाओं में से कुछ ऐसे ही उदाहरण प्रस्तुत करूंगा ।

(1) एक गैर मुस्लिम को एक समय पर चार स्त्रियों से अधिक पत्नियाँ रखने का अधिकार नहीं है किन्तु नबी के एक ही समय में न्यूनतम नौ पत्नियाँ थीं ।

(2) एक मुस्लिम को एक से अधिक पत्नि रखने का अधिकार इस कठोर शर्त पर प्राप्त होता है कि वह समानता का व्यवहार रखेगा परंतु जब स्वयं नबी ने ऐसा नहीं किया तो अल्लाह ने उसको केवल एक पत्नि रखने के लिए नहीं कहा बल्कि उन्हें बहुपत्नि प्रथा के आधारभूत सिद्धान्त से भी छूट दे दी ।

'' तुम उनमें से जिसे चाहो अपने से अलग रखो और जिसे चाहो अपने साथ रखो, और जिनको तुमने अलग कर दिया है यदि उनमें से किसी को अपने पास बुला लो तो इसमें तुम पर कोई दोष नहीं ।

(33 अल अहजाब 51)

यदि यह पर्याप्त नहो तो निम्नलिखित आयत को देखिए ।

और वह ईमान वाली स्त्री जो अपने आपको नबी के लिए हिबा कर दे यदि नबी चाहें (यह विशेष अधिकार हे मौहम्मद) केवल तुम्हारे लिए है, दूसरे ईमान वालों के लिए नहीं ।)

(33 अल अहजाब 51)

वाह ! क्या बात है कि अल्लाह ने नबी के लिए काम तृप्ति के लिए अनन्य कानून बनाए जो अन्य ईमान वालों को पूरी तरह छोड़ देते हैं । यह िवह अनन्यता है जो नबी को उनके अनुयायियों के व्यवहार के आदर्श होने के दावे को गलत सिद्ध करती है । मनुष्य, मनुष्य के पद चिह्नों पर चल सकता है परंतु ऐसे मनुष्य के पद चिह्नों पर नहीं चल सकता जो कभी कभी तो मनुष्य होने का आभास देता है परतुं प्रायः ईश्वर के अधिकारों का दावा करता है ।

इन तथ्यों के आलोक में ऐसा लगता है कि क्या इस्लाम में मौहम्मद वाद मानना उचित नही है ।

ईमान वाले व्यक्ति जो प्रायः सम्मोहित कर दिए जाते हैं , विवेक शक्ति खो देते हैं । मैंने जो कुछ पहले कहा है उसके बावजूद इस्लाम के अनुयायियों ने नबी के व्यवहार का आदर्श रुप मानकर बडे बड़े हरम बनाए हैं । मैं इसका वर्णन भारत के सन्दर्भ में अगले अध्याय में करूँगा ।

भारत में इस्लाम के हरम

स्त्री के आकर्षण के प्रभावों का सामना करने के लिए इस्लाम ने पुरुष की प्रभुत्व की ललक का, जो कि (याचना या प्रार्थना के स्थान पर) आदेशानुसार यौनतृप्ति चाहती है, अनुचित लाभ उठाया और इस प्रकार पुरुष के लम्पट व्यवहार को बढ़ावा दिया, परिणामस्वरूप हरम निर्माण को बढ़ावा दिया ।

यह सही है कि मानव इतिहास लुटेरों से , जो कि विजेता कहे जाते हैं, भरा पड़ा है, जिन्होंने अपने प्रभुत्व, लूट, प्रतिष्ठा की वासना पूर्ति के लिए , हत्या, अत्याचार और नारियों के अपहरण किए । उन्हें यह मालूम था कि उनके कुकृत्य उनकी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं द्वारा प्रोत्साहित शुद्ध बर्बरता के काम थे किन्तु जिहाद ने जो गैर मुसलमानों को नष्ट कर देने के लिए अल्लाह का हुक्म है, इन अत्याचारों को न केवल पवित्र घोषित किया अपितु उन्हें मजहब परायणता, पवित्रता एवं सत्य निष्ठा के शिखर पर पहुँचा दिया । इस प्रकार यह एक अति असाधारण घटना बन गयी ।

चूँकि यौन तृप्ति मनुष्य का सबसे बड़ा सुख है और जिहाद जो कि काम वासना तृप्ति के लिए असीमित अवसर प्रदान करता है, बड़ी अलंकृत और उत्तप्त सुंदरियों से भरपूर, शानदार हरमों के निर्माण के लिए नींव के पत्थर की तरह काम करता है ।

हरम एक बहुत बडा अहाता होता है जिसमें औरतों को रखने के लिए शानदार भवनों का एक परिसर होता है । इतिहासकारों ने बताया है कि अकबर महान के हरम में 5000 औरतें थी और उसके पुत्र जहांगीर के हरम में 6000 स्त्रियाँ थीं । बुद्धिमान सुलेमान के बहु चर्चित हरम में मात्र 1000 स्त्रियाँ थीं जो कि तुलनात्मक रूप से बौना ही था । निस्संदेह सुंदरियों का इतना समूह एक आदमी यानी कि राजा के उपभोग के लिए था परंतु हरम की सभी स्त्रियाँ इस संस्थापन का प्रशासनिक कार्य करती थीं । यह हरम मनोरंजन का स्थान होने के साथ अत्यधिक सुरक्षा का भी स्थान था जहाँ हर व्यक्ति को कड़े अनुशासन में रहकर शासक की दैवी मान मर्यादा के प्रति सम्मान दिखाना होता था, जो कि लम्पटता, कामुकता और व्यभिचार से ओत प्रोत होते थे । उदाहरण स्वरूप मालवाके सुल्तान गियासुद्दीन को ही लें, उसके हरम में 15000 औरते थीं और इस प्रकार की व्यवस्था थी कि एक छोटी राजनीतिक प्रशासकीय इकाई हो । इसकी सुरक्षा में दो महिला सैनिक टुकड़ियाँ थीं जिनमें हर टुकड़ी मे अफीका मूल की 500 बंदी लड़कियाँ थी ताकि उनमें से एक टुकड़ी से खतरे की सभांवना हो तो दूसरी की प्रहारक शक्ति से संतुलन रखा जाए । यद्यपि हरम की रक्षिकांए देखने में सुकुमारी, नाजुक और भद्रांए दिखती थीं परंतु उनका दिखाव बनाव मरीचिका थी जैसे कि मरुस्थल मे एक प्यासे को अनुभव होता है ।

वास्तव में हरमों के ये सुरक्षा कर्मी अमेजन थे जो यूनानी पौराणिक कथाओं के स्त्री लड़ाके थे । हरक्यूलिस यूनानी हीरो था जो कि हिप्पोलाइट, अमेजन की रानी कमरबंद छीनने गया था । यूनानी कलाकृतियों में अमेजनों को धनुष, भाला कुल्हाड़ी और आधी ढाल से सुसज्जित दिखाया जाता है । बाद की कलाकृतियों में इनकी तुलना आरटीमिस (जंगली जानवरों की पवित्र देवी) से की है । सोलहवीं सदी में स्पेन के गवेषक फ्रान्सिस्को की मरानौन नदी के निकट लड़ाकू स्त्रियों के साथ युद्ध करना पड़ा था । मरानौन नदी का नाम उनके नाम पर अमेजन या अमेजनों की नदी रख दिया गया था ।

इन पौराणिक अमेजनों को यूनानी देवियों ओथीना और आरटीमिस जो कि पवित्रता की रक्षक मानी जाती हैं, के साथ जोड़ा गया है । हरमों में अमेजनों की नियुक्ति शाही स्त्रियों रानियों और रखैलों दोनों की पवित्रता की रक्षा के लिए की जाती थी । इस विषय में राजा लोग बहुत ईर्ष्यालू हुआ करते थें यहाँ तक कि गाजर, मूली, ककड़ियों को हरमों में ले जाने पर प्रतिबंध हुआ करता था क्योकि हरम की स्त्रियाँ जो वास्तव में शाही शान की बंदी हुआ करती थीं, कही इनसे इपनी कामपिपासा तृप्ति का प्रयास न करें । यह डर वास्तविक था क्योकि एक पुरुष (राजा) सैकड़ो स्त्रियों को तृप्त नहीं कर सकता । समलैंगिकता रोकने के लिए हरम की सुंदरियों को पूर्णततः एकान्त में रखा जाता था । उनके द्वारा बाहर से बंद कर दिए जाते थे और उन्हें अपनी कोठरियों में भी पर्दानशीन रहना पड़ता था । इस विषय में थोड़ी सी गलती के लिए भी कठोर सजा मिलती थी और समलैंगिकता के लिए मृत्यु दंड था ।

राजा के अंतः पुर का मुखिया एक हिजड़ा हुआ करता था । फारस में जहाँ से यह कुप्रथा प्रारंभ हुई होगी यह प्रचलन था कि सैकड़ों युवकों को हिजड़ों में परिवर्तन करने के लिए उन्हें बधिया कर दिया जाता था । चूकि इनके पास करने योग्य कोई अधिक उचित काम नहीं हुआ करता था, वे अपने मालिक की काम तृप्ति की दलाली कुशलता पूर्वक, मजहबी भक्ति भाव से बढ़कर किया करते थे । वे काम कला में निपुण होते थे और हरम की स्त्रियों को काम कला सिखाते थे जिसमें कामुक हाव, भाव, आकर्षक अंदाज, अदाएं व बातचीत का ढंग आदि सम्मिलित थे । जैसा कि रोम के हरमों में हुआ करता था वे भारत के राजसी निजी कक्षों में रात्रि के पहरेदारों का काम करते थे । इस प्रकार उनके मालिक जब पूर्णतः नग्न होते थे तब के उनकी काम पिपासा तृप्ति के समाधान के लिए अभीष्ट काम किया करते थे राजा प्रायः हिजड़ों की ही राय से रात्रि की संगिनी स्त्री का चयन करता था । वह ही उस स्त्री को तेल, फुलेल, कस्तूरी, सुगंध आदि लगाकर तैयार करता था । वही श्रृंगार काल और आभूषणों के प्रयोग में भी दक्ष होता था और एक साधारण स्त्री को भी अति सुंदरी बना कर प्रस्तुत करता था । इनके अतिरिक्त स्तम्भन शक्ति बढ़ाने के विकृत क्रिया विधियों द्वारा संभोग क्रिया के आनंद को बढ़ाने के लिए वांछित कामोद्दीपकों का भी वह पारखी होता था ।

वह हिजड़ा, जो अपने मालिकों को प्रभावी, उत्तेजक, रसायन दे पाता था, जन्नत से आया हुआ दूत समझा जाता था । चूँकि वह अपने मालिक के यौन सुख को बढ़ाने के लिए कटिबद्ध होता था इसलिए वह हरम का सबसे अधिक लाभदायक और विश्वास पात्र सदस्य समझा जाता था । मुस्लिम हरमों के इन शाही हिजड़ों ने हिन्दू अन्तः पुरों से गुर सीखे, जिनमें विशेष प्रकार से निर्मित व्यंजन होते थे जैसे कि छोटे कबूतर, चूजे, गौरैय्या शामिल थे । इनकी सूची में नशीले पदार्थ जैसे कि अफीम, विशेष शराब आदि भी थे । फारस के माजूनों और कुश्तों की माँग काफी अधिक थी क्योंकि इनकी उस देश के हरमों में प्रभावोत्पादकता सिद्ध प्रायः थी । ऐसा

कहा जाता है कि औरंगजेब के लिए मक्का से इन्सटिन्कों नाम की मछली लायी जाती थी जो कामोद्दीपक होती थी जो बलख की कुछ नदियों में मिलती थी ।

एक हिजड़े की रुचिकर कार्य कुशलता के साथ साथ मालिक के प्रति उसकी सम्पूर्ण स्वामी भक्ति होती थी जो किसी विवाद में उसके कथन पर विश्वास करता था और अपनी पत्नि की साक्षी को भी अस्वीकार कर देता था । इसके कारण से हिजड़ा भयानक शक्तिशाली तथा भयभीत कर देने वाला व्यक्ति बन गया । हरम एक बड़ा स्थान हुआ करता था लेकिन जनानखाना जहाँ राज या दरबारी की यौन क्रीड़ांए होती थी केन्द्र बिन्दु होता था । यह जन्नत की सी विलासिता की होड़ करने के लिए अतिशय सज्जित होता था । हरम की हर स्त्री को सुंदर सुसज्जित कमरे आवण्टित किए जाते थे, जो विशाल, शानदार और कीमती होते थे, यद्यपि रखैल का रुतबा और आय उनके कक्षों की साज सज्जा से जानी जाती थी । लगभग हर कक्ष में जलाशय, चालू फव्वारे, सुदंर विन्यास वाले बाग, शानदार वीथिकाएं, छायादार स्थान, चमकदार चश्में, कंदराए और अति वास्तुकीय सौन्दर्य की भूमिगत संरचनाएं होती थीं । चूंकि एक औसत मुस्लिम हरम में 2000 औरतों को रखने की क्षमता होती थी, अनुमान लगाइए कि इनके रखरखाव व शान में कितना धन व्यय होता होगा । फिजूल खर्ची की पराकाष्ठा ही हो जाती है जब यह तथ्य उजागर होता है कि प्रत्येक हरम में दर्जनों दूसरे देशों की सुरुचिकर वस्तुएं एकत्रित की जाया करती थीं जिसमें से प्रत्येक का अपना मनोरंजन और संतुष्टि का भाव होता था । चूँकि ये सभी स्त्रियाँ अपने मालिक का मनोरंजन करती थीं उसके आमोद प्रमोद और सुख की व्यवस्था करती थीं तो मालिक का भी कर्तव्य होता था कि वह उन्हें खुश, चकित और उत्तेजित रखे क्योंकि एक उपेक्षिता स्त्री एक कामी पुरुष की कामुकता को ठीक प्रकार से संतुष्ट नहीं कर सकती । इस कारण से विलासिता का स्तर ऊँचा था तथा व्यय भी बहुत अधिक था । इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि शांहजहाँ के हरम पर एक करोड़ रुपए वार्षिक से भी अधिक व्यय हुआ करता था । उस समय को देखते हुए यह एक बहुत बड़ी राशि थी ।

प्रत्येक जनाना कक्ष परियों के देश जैसा लगता था, प्रत्येक स्त्री, चाहे उसका रुतबा कैसा भी हो, चित्र की भाँति सुंदर दिखनी चाहिए थी , प्राकृतिक सौन्दर्य जैसे हाथ पैरों का अनुपात, नेत्रों की मादकता उरोजों की सुदंरता, चाल का सम्मोहन, वाणी की मधुरता और व्यक्तित्व का जादू के अतिरिक्त उसको एक ऐसी सुदंर गुड़िया जिससे रंग , प्रकाश और सुगंध फूटे, दिखना आवश्यक था । इस प्रकार हरम की स्त्रियाँ गुलाबजल,चंदन, सुगंधित तेलों, फूलों, रूज, पाउडर, मेंहदी, काजल व अन्य प्रकार के रंगों के प्रयोग में निपुण थीं । (भारत के राजाओं से छीने गए) बहुमूल्य आभूषण इन स्त्रियों को, जो पहले से ही इत्र फुलेल, के जादू से विलक्षण बनी होती थीं, शांभायमान करते थे । सुदंरतम हीरों और रूबी का भण्डार भारत , उन चकाचौधं करने वाली विलासिता के कमरों में सर्वाधिक भव्य दिखता था । दिल्ली और आगरा के सुनार स्वर्ण के जादू से अपने आपको सजाने की इच्छुक महिलाओं के अधिकार सम्पन्न ठग बन गए थे । इन सुनारें की आकर्षक गहने बनाने की निपुणता और विक्रय दक्षता में शाही खजाना लुटा करता था , परंतु उनके साम्राज्यवादी मालिकों की लूट खसोट के नारों की तुलना में यह कार्य बड़ी नम्रतापूर्वक होता था ।

हरम की स्त्रियों का पहनावा उपयुक्त कम होता था, किन्तु कामोत्तेजक,अधिक होता था , क्योंकि उनके अस्तित्व का एक ही उद्देश्य था, नित्य नवीन, विभोर कर देने वाली और चमत्कारिक चेष्टाओं द्वारा चाहे वे विकृत ही हों, मालिकों की दैहिक तुष्टि । उनमें प्राकृतिक सौन्दर्य का होना ही काफी नहीं था, परन्तु यह भी आवश्यक था कि वे अपने आपको आकर्षक व कामुकता पूर्ण और उत्तेजक बनाकर रखें । इन स्त्रियों के शृगांरित शरीर कस्तूरी की महक से भरे होते थे और मोहक बुनावट और डिजाइन के उनके पारदर्शी वस्त्रों में से कामुकता स्पष्ट होती थी । वस्त्र पहने हुए भी नग्न दिखने की उनकी कलात्मकता को बंगाल के जुलाहों ने पूर्ण बना दिया था जिनकी पारदर्शी मखमल बनाने की कार्यकुशलता ने परिधानों की विलासिता को पूर्व से लेकर पश्चिम तक विस्तीर्ण कर दिया था । ऐसा कहा जाता है कि औरगंजेब ने जब अपनी बेटी जेब उन निसा को वस्त्र न पहनने के लिए डाँटा तो उसने दावा किया कि वह तो मलमल की सात पर्तें पहने थी ।

क्या यह अतिश्योक्ति है ? सम्भवतः नहीं : इन स्त्रियों के वस्त्र इतने हल्के होते थें कि उनका वजन लगभग एक औन्स होता था तथा एक अंगूठी में से बड़ी सरलता से निकल जाते थे । इन महलों में कैलिकों नाम के कपड़े का भी खूब प्रचलन था । इनके रंग बिरंगे डिजाइन और सम्मोहित कर देने वाले छापे से ऐसा लगता था कि जैसे कपड़े पहनने वाली चलती फिरती गुलाब की झाड़ी पहनी हो । जब कि यूरोप की धनाढ्य एवं सामर्थ्यवान महिलाएं इन कपड़ों की कामनाएं करके ही रह जाती थीं किन्तु भारत के हरमों में स्त्रियों के पास वस्त्र प्रचुर मात्रा में रहते थे ।

हरम में रहने वाली इन सुंदरियों की रेशम में रुचि, आश्चर्यजनक , मादक, कामुकतापूर्ण और व्यय साध्य (खर्चीली) होती थी । एक स्त्री चाहे कितनी ही कठोर हृद्‌य वाली हो वह सौम्य दिखने का प्रयास करती थी ताकि वह अपने मालिक को उसकी तुष्टि करके कामुक जाल में आकर्षित कर सके और अपने प्रतिद्वन्दियों से दूर रख सके । ये स्त्रियाँ अपने रूप को संवारने सजाने में सारा दिन व्यतीत करती थीं ताकि रात्रि के अंधेर में जगमगाते तारे के समान दिखाई दे सकें । रेशम के कपड़ों पर सोने चाँदी के तारों से कढ़ाई की जाती थीं और उनमें मोती और रूबी टंके होते थे । ये सुगधित गुड़ियाँ अलौकिक वस्त्रों से पूरी तरह सुसज्जित होने पर नग्न दिखाई दिया करती थीं और लगता था कि मादक सौन्दय्र वाली हूरों से भरपूर जन्नत उतर आयी हो और वे अपने प्रेमियों की तुष्टि के लिए आतुर हों । मुस्लिम शासकों को रात्रिभर विलासिता में ऊबे रहने का व्यसन था तथा प्रातः अल्लाह की प्रार्थना कर उच्च नैतिकता के प्रति समर्पण प्रदर्शित करने का भी रिवाज था ।

रेशम भारत में ही निर्मित होता था और इसकी भिन्न किस्में जैसे साटन, कीम ख्वाब, कतान आदि दूसरे देशों से मँगाई जाती थी ताकि हरमों की इन हूरों की रुचियाँ और आवश्यकताएँ पूरी हो सकें । उन दिनों रेशम इतना बहुमूल्य था कि तैमूर लंग ने लालचवश लाशों से, सिल्क के कपड़े जिन पर हीरे जवाहिरात टँके हुए थे, उतरवा लिए थे । भारत में मुस्लिम हरमों मैं इस प्रकार के कपड़ो का चलन हो गया था । इन स्त्रियों के न केवल कपड़े हीर मोतियों से टंके होते थे, उनके जूते भी हीरे मोतियों से जगमगाते थे । सबसे आकर्षित तो इनकी पगड़ियाँ करती थीं, जिनमें शुतुरमुर्ग के परों की कलगी और रूबी की कलगी लगी रहती थी ।

हरमों की एक स्पष्टतया विशेषता थी सुरभि और रंग बिरंगापन जो इत्रों, तेलों, मेंदहीं, अगर बत्तियों, पुष्पों और चंदन की लकड़ी से भरपूर थे ।

इस्लाम में शराब व संगीत को शैतान की क्रियांए माना जाता है, परंतु भारत के मुस्लिम शासकों के ये दोनों ही पसन्दीदा मनोरंजन के साधन थे । ये लोग बहुमूल्य पात्रों में महंगी शराबों का सेवन करते थे ।कई शहजादे विशेषकर अकबर के दो बेटे अत्यधिक शराब पीने से ही मर गए थे । शराब का प्रस्तुत करना भी एक कला मानी जाती थी जिसकी मुस्लिम शासक प्रशंसा किया करते थे । जहाँगीर ने सुरा पान के प्रति प्रतिष्ठा शराब के एक गिलास के बदले में नूरजहाँ को अपना सारा राज्य देकर दिखाई थी ।

मदिरा पान इस व्यभिचार का एक अभिन्न अंग था और जब शाही दिल इस जन्नतीय प्रवृत्ति में अत्यधिक संतुष्टि हो जाने के कारण ऊब नहीं सकता था, तब संगीत और नृत्य मनोरंजन की भूमिका संभालते थे, न केवल व्यवसायिक नर्तकियाँ जिन्हें कांचनी कहा जाता था, शासकों का मनोरंजन किया करती थीं बल्कि उनकी रखैलें भी जो इस कला शीघ्र सीख लिया करती थीं ताकि वे सरलता से मालिक का दिल जीत सकें, मनोरंजन करने के लिए अपने कौशल का प्रदर्शन करती थीं । जब यह महफिल अपने चरम उत्कर्ष पर पहुँचती थीं तो शासक व शाही स्त्रियाँ सोने और चाँदी के सिक्कों से भरे थालों से उन पर वर्षा किया करते थे ।

ये कांचनियाँ अनिवार्यतः सभ्य वेश्याएँ थीं जो गाने व नाचने में निपुण होती थीं उनका व्यवहार भी शालीन होता था जिसमें कुटिलता को सफलतापूर्वक छिपा लिया जाता था और जिंदादिली का प्रदर्शन किया जाता था । शाही पुरुष जो कि अत्यधिक व्यभिचारी के कारण विवेक व मर्यादा खो बैठते थे, इन वेश्याओं की विभिन्न मुद्राओं के समक्ष अभिभूत हो जाया करते थे । चूँकि ये वेश्यांए दिलों का ही व्यापार किया करती थीं, अतः अधिकतम मूल्य भी वसूल किया करती थीं । इतिहास में यह लिपिबद्ध है कि लालकुँवरि ने, जो कि दिल्ली दरवार को अत्यधिक पसंद थी, जहांदार शाह के समय में अपने भाइयों के लिए ऊँचे पद और अपने लिए जवाहिरात और अनेक हाथी प्राप्त कर लिए थे ।

इन बड़े बड़े हरमों के अनेक प्रयोजन होते थे ।

सर्वप्रथम मुस्लिम शासकों का पक्की तौर पर मानना था कि इस्लाम में विश्वास रखने से हूरों अर्थात ऐसी अद्वितीय सुदंरी कुँवारी कन्यांओं की, जो कोई कल्पना ही कर सके गारण्टी है । जन्नत में बहु पत्नि प्रथा है जहाँ पुरुषों को संभोग विषयक सम्पूर्ण अधिकार उपलब्ध हैं और स्त्रियों का यह दायित्व है कि उन्हें प्रसन्न करें । इस प्रकार भारत के मुस्लिम शासकों और दरबारों ने नैतिकता को पूर्णतः ताक पर रखकर काम वासना पूर्ति को ही इबादत माना ।

औरंगजेब ने भी , जिसको आडम्बरहीन शासक के रूप में पेश किया गया है, अनेक रखैले रखी हुई थीं । इतिहास साक्षी है कि वह जैनाब्दी महल का दीवाना था । वह एक हिन्दू लड़की थीं, उसका असली नाम हीरा बाई था और बुरहानपुर के शासक सैफखाँ की रखैल थी । सैफखां खूंख्वार आदमी था, उसकी शादी औरंगजेब की मौसी से हुई थी । जब औरंगजेब दक्षिण का शासक नियुक्त किया गया था तो अपनी मौसी के प्रति सम्मानार्थ बुरहानपुर में ही रुक गया । ज्यों ही उसने हीराबाई के स्तंभित कर देने वाले रूप को देखा तो वह उस पर आसक्त हो गया और घण्टो उसी अवस्था में रहा । अंततः ज बवह सामान्य हुआ तो उसने अपनी मौसी को विश्वास में लेकर अपनी भावनात्मक उथल पुथल का और उस लड़की के प्रति अपनी प्रबल चाहत का उल्लेख किया । अपने पति के भयानक स्वभाव को जानकर उसे कंपकपी चढ़ गयी , किन्तु औरँगजेब को अपने पति से हीरा बाई दे देने के लिए बातचीता का वायदा किया । यह समझते हुएकि औरगजेब भारतीय राजनीति का एक चमकता हुआ सितारा था, सैफखाँ हीराबाई को इस शर्त पर देने को राजी हो गयी कि बदलें में उसे चतरबाई जो औरगजेब की हिन्दू रखैल थी मिल जाएं ।

हमें ध्यान रखना चाहिए कि सम्राट औरगजेब बलवान किन्तु इस्लाम का मितव्ययी दरवेश समझा जाता है, रखैले रखने के विषय में उसके नैतिक आचरण को देख जा सकता है । फिर भी इस घटना पर अनावश्यक बल नहीं देना चाहिए क्योंकि यह एक स्थापित इस्लामी परम्परा है ।

दूसरे भारत के मुस्लिम शासक हिन्दुओं को अपनी शक्ति, शान व आनबान दिखाकर प्रभावित किया करते थे, जिससे उनकी शक्ति, वैभव और सैन्य शक्ति की उनकी हिन्दू प्रजा में पहचान बने । इतने ब़डे बड़े हरमों में जिनमें मादकता और यौवन से भरपूर हजारों सुंदरियाँ हों, उनका रखरखाव कोई बच्चों का खेल तो था नहीं । माना कि हिन्दू राजा भी रखैलें रखते थे परंतु वे पापपूर्ण वैश्यालय माने जाते थे क्योंकि वेदों में वासना, काम पिपासा और व्यभिचार पर पवित्रता, शुचिता और निष्ठा की मोहर नहीं लगायी गयी है । इस्लाम में स्थिति पूर्णतः भिन्न है, उसमें कानूनी व नैतिक दृष्टि से गैर मुस्लिमों की हत्या करके उनकी स्त्रियों का अपहरण और उन्हें रखैल बनाना भी मान्य है । उनके साथ सम्भोग करना भी पाप नहीं है । स्वेच्छया कोड़े लगाने और बेच देने की भी अनुमति है ।

तीसरे मुस्लिम शासकों द्वारा बड़े बड़े हरम रखने का एक अशुभ राजनीतिक उद्देश्य भी है ।

इस्लाम एक गैर मुस्लिम स्त्री के साथ संभोग की आज्ञा तो देता है किन्तु उससे विवाह वर्जित है । इसलिए अकबर और उसके पुत्रों व पौत्रों की हिन्दू शहजादियाँ के साथ शदियों को गम्भीरता के साथ नही लिया जा सकता और इसको केवल अधीनस्थ हिन्दू राजाओं को प्रसन्न करने के लिए एक राजनीतिक चाल ही समझना चाहिए । वास्तव में हिन्दू शहजादियाँ विदेशी शासकों के लिए अतिलाभदायक बंधको की तरह ही थीं । इन शहजादियों के भाई और पिता जो कि मुस्लिम शासकों के अधीन रहते थे, उनसे संबंध स्थापित करने में गर्व अनुभव किया करते थे । मुस्लिम पतियों से हिन्दू शहजादियों के गर्भ से उत्पन्न होने वाली भी अपने आपको मुगल या तुर्क ही माना करती थीं । उनकी रगों में जो आंशिक खून बहता था, उससे उन्हें कोई अंतर नही पड़ता था । यहाँ तक कि अधीनस्थ हिन्दू शासक भी इन संतानों को अपना आनुवांशिक सम्मान समझते थे और उनकी अपने तन और धन से सेवा करके अपनी राष्ट्रीय दासता को पक्का किया करते थे ।

इन विवाहों का एक दूसरा पहलू भी था जो कि उससे भी अधिक भद्दा था । हिन्दू रीति रिवाजों के अनुसार दुल्हन के पिता को अपनी पुत्री को अधिकतम दहेज देना होता था । हिन्दू दुल्हनें (दहेज के रूप में) काफी बड़ी संख्या में दासियाँ लाया करती थीं जो

कि शाही हरमों को भारी भरकम बनाती थीं, उनके साथ आभूषण, सोना , हीरे , धन, हाथी , घोड़ें और जागीरें भी आती थीं । उदाहरणस्वरूप जब राजा भगवान दास ने अपनी पुत्री मानबाई की शादी शहजादा सलीम से की तो दहेज में नकद दो करोड़ तन्खे (उन दिनों में एक बहुत बड़ी राशि थी ।) दी थी, इसके अतिरिक्त एक सौ हाथी, कई सौ घोड़े (अच्छी नस्ल के) सोने के बर्तन जिनमें हीरे जड़े हुए थे और पारिवारिक आभूषण जो सदियों से संग्रहीत थे, दहेज में दिए थे । इस सारी सामग्रीं का मूल्यांकन आज तक किसी से भी नहीं हो पाया है ।

राजा अजीत सिंह ने अपनी पुत्री के साथ फर्रूखसियर को दो करोड़ रुपए का दहेज दिया था । इसके अतिरिक्त उपरलिखित तिभिन्न वस्तुएं भी दी थीं । यह उस समय की बात है जब इंग्लैण्ड का चार्ल्स प्रथम अपने संसदीय विद्रोहियों से लड़ने के लिए दस लाख पौण्ड नहीं जुटा सका था ।

स्पष्टतया मुस्लिम शासकों का हरम बनाने का काम एक राजनीतिक डकैती थी ताकि हिन्दुओं से विवाह संबंधं स्थापित करके उन्हें दबाकर रखा जा सके ।

इस तथ्य को सिद्ध करने के लिए अनेक उदाहरण हैं कि भारत के मुस्लिम शासकों को प्रत्येक रात्रि को एक नूतन कुमारी कन्या की आवश्यकता पड़ा करती थी । अकबर के शासन काल में सिंध के शासक मिर्जा अली बेग का उदाहरण बारंबार दिया जाता है । मुस्लिम शासकों तथा दरबारियों की लम्पटता मात्र स्त्रियों तक ही सीमित नहीं थी, वे समलैगिक भी थे, जवान लड़के भी तो इस्लामी जन्नत के भाग हैं । बड़ी संख्या में ऐसे दरबारी थे जो लड़कों के पीछे दीवाने रहते थे ।

इस्लाम में कामोपभोग को मात्र इस धरती का ही नहीं वरन मृत्यु के बाद भी दैहिक भोग को जीवन का लक्ष्य माना है जिसकी प्राप्ति के लिए जन्नत में तभी जाया जा सकता है जब कोई पैगम्बर मौहम्मद का हाथ पकड़ ले । इस दर्शन ने समस्त संसार में मुस्लिम मानसिकता का सर्वनाश किया है, यह वह अफीम है जो ईमानवालों को संज्ञाहीनता की दशा में रख सकती है, वे जीवन की वास्तविकता एवं नैतिकता को पूर्णतः भूलकर केवल कामवासना के ही वशीभूत हो संभोग सुख में ही फँस कर रह जाते हैं । इसलिए यह जान लेना रुचिकर है कि

1- जन्नत क्या है और (2) वह किस प्रकार का यौन सुख देती है ।

संक्षेप में मृत्यु के पश्चात यौन सुख के लिए जन्नत सर्वाधिक विलासितायुक्त स्थान है । इस प्रकार इतना बड़ा विषय संक्षेप में नही कहा जा सकता । विशेषकर जब कि कामवासना कई प्रकार की हुआ करती है । अगले अध्याय में मैं इसे स्पष्ट करूँगा ।

अध्याय 5

मृत्यु के उपरांत यौन सुख

यौन सुख के प्रति मानव की दुर्बलता को विचारकर इस्लाम में कामवासना की तृप्ति के लिए एक असाधारण सिद्धान्त प्रस्तुत किया है जो कि बहुत लुभावना, सुखद एंव क्षुधा तृप्ति दायक है । इसके अनुसार कामोपभोग की ललक मृत्यु के उपरान्त भी समान्त नहीं होती है क्योंकि यदि वह व्यक्ति मुसलमान है तो उसे पुनः जीवित किया जाएगा और उसे जन्नत में स्थान मिलेगा जहाँ पर वह अपनी इच्छानुसार दिन रात यौन सुख भोगेगा । वहाँ पर यौन सुख केवल पुरुषों के लिए ही आरक्षित है और जन्नत की हूरें (सुंदरतम कुमारी कन्याएं) अपने मृरुष स्वामियों की पूर्णतया आज्ञाकारिणी हैं । यह विचार इस्लामी यौन मनोविज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है क्योंकि यह नबी के दृष्टिकोण यानि कि “ नर की प्रभुत्व की ललक बनाम नारी का कामाकर्षण ” से मेल खाता है जिसमें स्त्री अपने आपको पुरुष के समक्ष शारीरिक व मानसिक और कलात्मक लुभावनेपन समेत पूर्णतः समर्पण कर देती है । इस प्रकार नर को सुख पहुँचाना ही नारी का एक मात्र सुख है ।

पाठक कृपया स्मरण करें कि आदम (बाइबिल में मानव सृष्टि का जनक) ने अपनी स्त्री (हव्वा) के लिए गाड के आदेश का भी उल्लंघन कर दिया था, यह समझना कठिन नहीं है कि एक तेजस्वी पुरुष इस्लाम के लिए ही जिएगा और मरेगा भी क्योंकि इस में मृत्यु के पश्चात भी स्वेच्छानुसार यौन सुख का वायदा है, जन्नत में स्थान की गारण्टी है, जहाँ पर सुंदरतम कुमारियाँ एंव लौण्डे उपलब्ध हैं । यहाँ उस जन्नत का संक्षिप्त विवरण है जिसे इस्लाम गर्व से एवं गम्भीरता से प्रस्तुत करता है -

उस जन्नत का हाल यह है जिसका वायदा डर रखने वालों से किया गया है उसमें पानी की लहरें हैं जिसमें सड़ांध नही है और दूध की नहरें हैं जिनका मजा बदला नहीं, और शराब की नहरें हैं, जो पीने वालों के लिए स्वादिष्ट हैं और साफ सुथरे शहद की नहरें हैं और उनके लिए वहाँ हर प्रकार के फल हैं ।

यहाँ जन्नत का वर्णन प्रतीकात्मक नहीं है जैसा कि मुस्लिम विद्वान बहकाते हैं वरन् जन्नत का सत्य विवरण है । कुरआन की निम्नलिखित आयतें पाठकों के संदेहों का निवारण कर देगी ।

“ अलबत्ता अल्लाह के उन बंदों की बात और है जो उसके चुने हुए (मुक्त) हैं । उनके लिए जानी बूझी रोजी है, मेवे, और उनका सम्मान किया जाएगा । नेमत भरी जन्नतों मेंख तख्तों पर आमने सामने बैठे होंगे, (41- 44) निथरी बहती (शराब के स्रोत) से मद्यपान भर भर कर उनके बीच फिराए जाएंगें, उज्जवल ,पीने वालों के लिए आस्वाद (45- 46) न उसमें कोई खराबी होगी न वे उससे मतवाले होंगे । (47) और उनके पास निगाहें बचाने वाली, सुंदर आंखो वाली स्त्रियाँ होंगी ऐसी (निर्मल) मानो छिपे हुए अण्डे हैं । (48-49)

जबकि चीनी लोग समतल छाती वाली स्त्रियों को अधिमानता देते हैं, वही अरब के लोग भारी उभरी हुई छाती वाली स्त्रियों को पसंद करते हैं । इसलिए अरब वालों की पसंद के अनुसार कुरआन घोषित करता है ।

“ निस्संदेह डर रखने वालों के लिए सफलता है (31) बाग हैं और अंगूर, (32) और नवयुवतियाँ समान आयु वाली (33) (अंग्रेजी में विद् स्वैलिंग बासम्स है) ”

(78 अन नबा 31 - 33)

जन्नत का आकर्षण और भी बढ़ा दिया गया है जब शराब जन्नत के निवास का अंग बना दी गयी हैः

“ निस्संदेह नेक लोग (जन्नत की) नेमतों में होगे, (22) ऊँची मसनदों पर से देख रहे होंगे, (23) तुम्हें उनके चेहरों से नेमतों की ताजगी और छटा का अनुभव हो रहा होगा । (24) उन्हें खालिस शराब पिलायी जा रही होगी जो मुहरबंद होगी । (25) मुहर उसकी मुश्क की होगी, बढ़ चढ़ कर अभिलाषा करने वालों को इसकी अभिलाषा करनी चाहिए । (26) और उसमें तसनीम का मिश्रण होगा । (27) हाल यह है कि वह एक स्रोत है जिस पर बैठकर सामीप्य प्राप्त लोग पिएंगे । (28)

(83 अल ततफीफ, 22-28)

विचाराधीन इस विषय को भली प्रकार से समझने के लिए मैं आपका ध्यान हदीस तिरमजी खण्ड 2 पृष्ठ (35-40)की ओर आकर्षित करना चाहूँगा जिसमें जन्नत में सदैव जवान रहने वाली हूरों का विस्तृत वर्णन है ।

(1) हूर एक अत्यधिक सुंदर युवा स्त्री होती है जिसका शरीर पारदर्शी होता है । उसकी हड्डियों में बहने वाला द्रव्य उसी प्रकार दिखाई देता है जैसे रूबी और मोतियों के अंदर की रेखाएं दिखती हैं । वह एक पारदर्शी सफेद गिलास में लाल शराब की भांति दिखाई देती है ।

2. उसका रंग सफेद है और साधारण स्त्रियों की तरह शारीरिक कमियों जैसे मासिक धर्म, रजोनिवृत्ति, मल व मूत्र विसर्जन, गर्भधारा इत्यादि संबंधित विकारों से मुक्त होती है ।

3. वह ऐक ऐसी स्त्री होती है जो नम्र होती है और कातिलाना दृष्टि रखती है, वह अपने पति के अतिरिक्त किसी अन्य पुरुष को कभी नहीं देखती तथा अपने पति की पत्नि के कारण कृतज्ञता का अनुभव करती है ।

4. प्रत्येक हूर एक ऐसी युवती होती है जो अहंकार और द्वेष भाव से मुक्त होती है । इसके अतिरिक्त वह प्यार का अर्थ समझती है और उसे व्यवहार में लाने की योग्यता भी रखती है ।

5. हूर एक ऐसी अमर स्त्री होती है जो कभी वृद्धा नहीं होती । वह विनम्रता से बोलती है और अपने पति के सम्मुख अपनी आवाज ऊँची नही उठाती, वह सदैव उससे सहमत रहती है । विलासिता में पत्नी होने के कारण वह स्वंय विलासिता होती है ।

6. प्रत्येक हूर किशोर वय की कन्या होती है उसके उरोज उन्नत और बड़े होते हैं । हूरें भव्य परिसरों वाले महलों में रहती हैं ।

हूर के वृतान्त के बाद देखिए कि मिस्कट के खण्ड 3 पृष्ठों 83-97 मैं क्या लिखा हैः

7.हूर यदि जन्नत में आवास से पृथ्वी की ओर देखती है जो सारा मार्ग सुगन्धित और प्रकाशित हो जाता है ।

8. हूर का मुख दर्पण से भी अधिक चमकदार होता है, तथा उसके गाल में कोई भी अपना प्रतिबिम्ब देख सकता है उसकी हड्डियों का द्रव्य आंखों से दिखाई देता है ।

9. प्रत्येक व्यक्ति जो जन्नत में जाता है उसको 72 हूरें दी जाऐंगी ज बवह जन्नत में प्रवेश करता है , मरते समय उसकी उम्र कुछ भी हो वह तीस वर्ष का हो जाएगा और उसकी आयु आगे नहीं बढ़ेगी ।

10. तिर्मिजी के खण्ड 2पृष्ठ 138 पर कहा गया है,

जो आदमी जन्नत में जाता है उसे एक सौ पुरुषों के पुरुषत्व के बराबर पुरुषत्व दिया जाएगा ।

यह ध्यान देने योग्य बात है कि वे पुरुष जो इतने पौरुष वाले हैं उनका झुकाव प्रेम प्रसंग के अतिरिक्त और कही नहीं होगा । इसी कारण इस्लाम के अनुसार कामवासना की तृप्ति जीवन का अंतिम लक्ष्य है और इस प्रकार एक मुसलमान का दृष्टिकोण कामोपभोग उन्मुखी हो जाता है ।

यह भी स्मरण रहे कि इस्लाम इस तथ्य को नहीं भूलता कि विषम लैंगिकता दैहिक तुष्टि का पूर्ण स्रोत नहीं है क्योंकि कुछ व्यक्तियों की रुचियाँ भिन्न भिन्न होती हैं इसलिए यह जन्नत का सुख को एक सन्न करने वाला आयाम देता है । कुरआन कहता है

तो अल्लाह ने उन्हें.. उन्हें प्रफुलता और प्रसन्नता से सम्पन्न किया, (11) और जो सब्र उन्होने किया था उसके बदले में उन्हें जन्नत और रेशमी कपड़े प्रदान किए (12) वे वहाँ न सूर्य का तपन देखते हैं और न कड़ाके का जाड़ा (13) और वहाँ उन पर छाया पड़ रही है और उसके मेवे झुकाकर बिल्कुल वश में कर दिए गए हैं (14) और उनके पास गर्दिश कर रहे हैं चाँदी के बर्तन और आबखोरे बिल्कुल शीशे हो रहे हैं, शीशे चादीं के जिन्हें ठीकठीक अंदाजे से रखा है (15, 16) और उन्हें वहाँ ऐसे मद्य का पान कराया जाता है जो जन्जबील (सोंठ) से मिलाकर तैयार किया गया है । (17) यह वहाँ का एक स्रोत है जिसे सल्सबील नाम दिया गया है, (18) उनके पास ऐसे लड़के आ जा रहे हैं जिनकी अवस्था सदा एक ही रहेगी तुम उन्हें देखो तो समझोगे कि मोती बिखरे हैं (19) और वहाँ देखो तो तुम्हें दिखाई देगा परम सुख और महान राज्य (20) उनके ऊपर बारीक हरे कपड़े हैं और दबीज रेशमी कपड़े भी और वे चाँदी के कंगनों से आभूषित किए गए हैं उन्हें उनके रब ने स्वच्छ पेय पिलाया । (21)

(76 अद दहर 11-21)

बूढ़े न होने वाले लड़कों का यह फुसलाने वाला वर्णन 52 अत तूर 23-24 में मिलता है ।

वे वहाँ आपस में प्याले छीन झपट रहे हैं उसमें न बेहूदगी है और न कोई गुनाह की बात और उनके पास उनके (सेवक) लड़के आ जा रहे हैं, वे ऐसे सुंदर हैं जैसे धराऊ मोती ।

(52 अत तूर 23, 24)

इससे यह पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है कि सर्वाधिक सुन्दरियों के अतिरिक्त जन्नत में लड़के भी हैं जो कि (1) मोतियों के समान सुदंर हैं ।

2. सदैव युवा हैं क्योंकि उनकी आयु नहीं बढ़ती ।

3. रेशम के कपड़े पहनते हैं ।

4. और चाँदी के आभूषण पहने होते हैं ।

जन्नत में रहने वाले इस असाधारण आकर्षक युवकों का क्या प्रयोजन है ? जन्नत इस प्रकार बनाया गया है कि हर एक सोने की ईंट के पश्चात चांदी की ईंट होती है, और गारे या सीमेंट के स्थान पर केशर द्वारा उन्हें जोड़ा गया है और वहाँ के पत्थर भी हीरे के होगें । जो कोई जन्नत में जाएगा, दुख से मुक्त होगा, वहाँ सदैव रहेगा, सदैव युवा रहेगा और कभी मरेगा नहीं ।

इस घोर विलासिता के वातावरण में इन मादक युवकों के वहाँ होने का कोई असाधारण उद्देश्य होगा ही, यद्यपि मुस्लिम विद्वान दावा करते हैंकि वे साधारण सेवादार हैं जो भाग्यशाली मुसलमानों की सेवांए करते हैं ।

परतुं किस प्रकार की सेवांए ? एक साधारण सेवादार को सदैव युवा उम्र का, मोतियों की भाँति सुंदर व शराब पीने के अभ्यस्त (वह भी शुद्ध शराब) सिल्क के कपड़े और चाँदी के आभूषण पहनने की क्या आवश्यकता है ।

ये लड़के साधारण सेवादार नहीं हो सकते । फिर वे हैं क्या ? यदि मैं सीधी बात करूँ , तो मुस्लिम मुझ पर ईश निंदा का आरोप लगाऐगें और मुझे ' नबी का अपमान करने वाला बताएंगे ' किन्तु मैं इस प्रकार का व्यक्ति नहीं हूँ । मेरे मन में नबी के प्रति विशेष आदर है और मैं नबी को एक महान राष्ट्रीय वीर मानता हूँ जिसने अरबों को असाधारण प्रतिष्ठा प्रदान की । वास्तव में मेरी इच्छा है कि वे भारत में पैदा होते जिससे इस भूमि मैं जहाँ इतनी प्राकृतिक सम्पदा है, उसके अनुरूप ऊँचा उठा सकते।

इन लड़को ने इतिहास में जो यौन आकर्षण पैदा किया है उसका मैं संक्षिप्त उदाहरण देना चाहूँगा ।

समलैंगिकता से तात्पर्य हैं लैंगिक विपर्यय, अर्थात कामवासना का एक ही लिंग के व्यक्तियों में (पुरुष का पुरुष) व स्त्री का स्त्री में) आकर्षण । बाद वाले को (लेस्बियानिज्म) स्त्री समलैंगिकता कहा जाता है क्योंकि इसका संबंध लेसबौस के एजीयन द्वीप से रहा है ।

यहाँ पर नर समलैंगिकता की ही विवेचना करेंगे । जो इसे अपनाते हैं उनकी दृष्टि से यह एक सुख है किन्तु इसके विरोधी इसे घृणित मानते हैं । लेखक ने न तो इसे अपनाया है और न ही इसकी वकालत करता है फिर भी यह एक विचारणीय विषय है कि

इसने इतिहास को एक नया मोड़ दिया है , इसीलिए इसकी मुक्त रूप से विवेचना आवश्यक है चाहे कियी को रुचिकर लगे अथवा नहीं । यही कारण है कि आज के विधिज्ञ इसे अपराध नही मानते । , यदि यह कृत्य दो सहमत वयस्कों के मध्य व्यक्तिगत स्थान पर होता है ।

यह वंशानुगत अवस्था है या यह आदत बाद में आती है ? इस विषय में अभी कोई निर्णायक राय नहीं दी जा सकती किन्तु कुछ तथ्यों का अध्ययन किया जा सकता है । अंतिम निर्णय पाठक पर छोड़ना होगा ।

ए. सी. किन्से ने सन् 1948 और 1953 में समलैंगिकता पर वृहद युक्ति संगत सर्वेक्षण किया था उससे पता चला था कि अमेरिका में 37 प्रतिशत पुरुष इस कृत्य में लिप्त थे ।पुनः अमेरिकी मानव विज्ञानी सी. एस. फोर्ड और मनोवैज्ञानिक एफ. ए. बैन्च ने सन् 1951 में आदिम समाजों का अध्ययन किया । कुल 76 समुदायों में से 64 प्रतिशत ने इसे एक सामान्य व्यवहार माना है ।

कुछ पशुओं जैसे छोटी पूंछ वाले बंदरों में समलैंगिकता देखी गयी है । गाएं जब इस काल में होती हैं दूसरी गायों पर चढ़ती हैं और इसी प्रकार बिल्ली, और कुत्तों, खरगोंशों, शेरों तथा घोड़ों मे यह व्यवहार पाया जाता है ।

मनुष्यों में यह अधिक प्रचलित है, और उन समुदायों में जिनमें लिंग पृथकता की प्रथा है, यह विशेष कर पाया जाता है । लड़के लड़कों को उत्तेजित करके इस व्यवहार को अपनाकर कामवासना तृप्त करते हैं । किशोर अवस्था में पहुँचने से पूर्व इसके मानसिक व शारीरिक विकास पर प्रभावों के कारण यह कृत्य वांछनीय नहीं है । दूसरी ओर लड़कियों की कामवासना को बलात दबाया जाता है ताकि वे पवित्र, शुद्ध और अखण्ड रहें । उनको प्रारम्भ से ही उच्चस्तर की नैतिकता की शिक्षा दी जाती है और उन्हें अनुशासित रखा जाता है । पुरुष केवल कुमारी कन्याओं से ही विवाह करना पसंद करते हैं भले ही वे अपनी स्वयं की पवित्रता अपने जीवन के प्रारंभ में ही गँवा चुके हों । इनसे स्त्रियों का कामवासना के प्रति दृष्टिकोण विकृत हो जाता है । जिससे समाज पुरुष प्रधान हो जाता है और इससे दहेज जैसी कुरीतियाँ जन्म लेती हैं और उत्तराधिकार तथा पति पत्नि के वैवाहिक अधिकारों में विषमता स्थापित हो जाती है ।

भौतिकी के एक नियम के अनुसार विपरीत ध्रुव आकर्षित होते हैं और एक ध्रुव विकर्षित होते हैं । यह नियम न केवल निर्जीव वस्तुओं पर लागू होता है अपितु मनुष्यों पर भी और यह बचपन से प्रारम्भ हो जाता है । नर शिशु अपनी माताओं के प्रति और कन्यांए अपने पिताओं की ओर इसी कारण आकर्षित होते हैं, इसके पीछे कोई अन्सुलझे यौन भाव नहीं हैं । माना कि दोनों लिंग निहित यौन गुण लेकर जन्म लेते हैं लेकिन उनके परिपक्व होने में वर्षों लग जाते हैं, और जब तक यह नहीं होता तब तक दैहिक आकर्षण का कोई महत्व नहीं होता और इसे किसी संकल्प की आवश्यकता नहीं होती । यदि यह सत्य न होता तो शिशुओं का सम्भोग एक आम दृश्य होता । तथापि अपवाद सदैव होते हैं, कुछ बच्चे जल्दी परिपक्व हो जाते हैं और भिन्न भिन्न अंशों में यौन तीव्रता रखते हैं ।

समलैंगिकता के विषय में यह कहा जा सकता है कि भौतिकी का उपरलिखित नियम भंग हो जाता है । और फलस्वरूप समान ध्रुव आकर्षित होने लगते हैं ।

इस विरोधाभास का हल तब निकल आता है जब हम जान लेते हैं कि काम शक्ति पुरुष की प्रभुता की ललक का ही एक अंग है । जितना अधिक पुरुषत्व वाला व्यक्ति होगा उतनी ही अधिक उसकी हरमों को स्थापित करने की तीव्र इच्छा होगी या व्यभिचारी व्यवहार होगा, जैसे कि व्यभिचारी पशु नर अपनी प्रभुता सिद्ध करने के लिए अनेक मादाओं को रखता है,इसी से इस तथ्य की पुष्टि होती है कि शारीरिक व्यवस्था में मनुष्य पशुओं से भिन्न नही है । उसकी प्रभुता की ललक पशुओं से अधिक होती है । चंगेज खां और एडोल्फ हिटलर जैसे लोग जिन्होंने लाखों लोग, अपने प्रभुत्व के प्रदर्शन मात्र के निमित्त की वध करवा दिए, इस विचार की पुष्टि करते हैं ।

यह भी कहा जा सकता है कि समलैंगिकता जो कि एक प्राचीन अनुभव है, एक अनुघटना है जो कि विषमलैंगिकता के साथ सदैव रही है । यह विपरीत धर्फ्वों के भौमिक नियम की भी अवहेलना करता है । फिर भी कामवासना का अतिरेक इसे उसी प्रकार नियंत्रित करता है जैसे परमाणु बल की पाशविक शक्ति, ऋणात्मक और धनात्मक दोनें ही आवेशों पर, उनके विरोधाभासी होने पर भी समान रूप से प्रभावी हो जाती है ।

कामवासना मानव की एक आवश्यक प्रेरक शक्ति है । इसके समाधान के लिए वह कोई पाप या अपराध कर सकता है । बाइबिल का कथानक कि आदम ने हव्वा को प्रसन्न करने के लिए गाड के विरुद्ध द्रोह किया, इस सत्य को भली भांति प्रतिपादित करता है । पुरुष की सर्वाधिक प्रेरक शक्ति है उसकी प्रभुत्व की ललक, यौन प्रेरणा इसकी एक अंग होने के कारण इसकी संतुष्टि के लिए सामान्य व्यवहार का अतिर्कमण कर सकती है ।

फिर भी मनुष्यों और पशुओं के व्यवहार में एक अंतर है, मनुष्य अपने कृत्य को, चाहे वे कितने भी त्रुटिपूर्ण हों झूठे अथवा धोखा धड़ीपूर्ण हों, नैतिक अथवा आध्यात्मिक आधार पर न्यायोचित सिद्ध करना चाहता है । इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वह मजहब (ईश्वर) और तर्क दोनों का ही प्रयोग कर सकता है ताकि अपनी अन्तरात्मा को अपराध के भार से मुक्त कर सके । आत्मा की संतुष्टि की सतत इच्छा यह दर्शाती है कि मानवता एक दिन पूर्ण नैतिकता की स्थिति में पहुँचेगी ही और वह समय सन्निकट है जब वे सभी राजनैतिक व आर्थिक बंधन समाप्त हो जाएगें, जो इसके मार्ग में खड़े हैं ।

मनुष्य की समलैंगिकता को मजहबी स्वीकृति देने की कहानी वास्तव में मनोरंजक है । यद्यपि यूयान इस कुत्सित यौन प्रक्रिया का जन्म दाता नहीं है किन्तु फिर भी यूनानियों की पटुता ने ही इसे आध्यात्मिक शालीनता प्रदान की थीं ।

एक यूनानी किवदंती के अनुसार ट्राय के राजा ट्रान्स का पुत्र गैनीमीड इतना सुंदर था कि देवताओं का राजा ज्यूस उस पर मोहित हो गया और बाज का रूप धरकर इस युवा लड़के के ऊपर प्यार से नीचे को झपटा लगाकर देवताओं को मदिरपान कराने के लिए पेय वाहक की सेवा में ले गया ।

यूनानी किवदंती इस घटना की व्याख्या करने के में निष्कपट एवं ईमानदार है । यह मुस्लिम विद्वानो की भाँति नहीं है जो यह बहाना करते हैं कि घिलमान यानी सदैव युवा रहने वाले दुल्हनों जैसे लड़के जन्नत में ईमानवाले को मात्र शराब पिलाने के लिए हैं अन्य किसी उद्देश्य के लिए नहीं । इसके विपरीत यूनानियों का यह विश्वास था कि देवताओं के राजा ज्यूस का गैनीमैड के लिए समलैंगिक झुकाव था । रोम में गैनीमीड को कैटामीटस यानी कि कैटामाइट की भाँति प्रदर्शित किया गया है । यूनानी परम्परा में यह प्रथा इतनी प्रचलित थी कि कुछ इतिहासकार यह मानते हैं कि रोमनों यानि कि रोमवासियों का इसी कारण नैतिक पतन हो गया था । जिसके फलस्वरूप उनके राजनैतिक वैभव का भी पतन हो गया ।

'' यूनान के महान दार्शनिक सुकरात द्वारा समलैंगिकता को लोकप्रिय बताया गया लगता है '' प्लैटो (गैनीमीड और धिलमान (मोती जैसे सुंदर युवा) के बीच ध्वनि साम्य पर ध्यान दीजिए, हो सकता है कि धिलमान गैनीमीड का अपभ्रंश हो) बताते हैं कि सुकरात और अलसिबिऐड्स आपस में प्रेमी थे और दार्शनिक सुकरात सुंदर लड़कों के पीछे पड़े रहते थे ।

सुकरात में विषय में लिखते हुए विल ड्यूराँ कहते हैं कि यह समलैंगिक एव गणिकाओं को परामर्श दिया करते थे कि प्रेमियों को कैसे आकर्षित किया जाए ।

सुकरात (2,3 , दी स्टोरी आफ सिविलाइजेशन, दी लाइफ आफ ग्रीस, लेखक डब्ल्यू ड्यूरा पृष्ठ 366) की महानता पर अपनी राय देते हुए विल ड्यूराँ कहते हैं '' कि जैसा कि प्लेटो ने सहजता से कहा कि उन सब पुरुषों में से जिन्हें मैंने कभी जाना था वह सर्वाधिक बुद्धिमान, सर्वाधिक न्यायप्रिय और श्रेष्ठतम पुरुष था ।

उपरलिखित से यह स्पष्ट है कि यूनान में समलैंगिकता को हेय दृष्टि से नहीं देखा जाता था वर्ना प्लेटो, सुकरात की , जिसके अलसिबिऐड्स के साथ समलैंगिक सम्बंध थे, इतनी प्रशंसा न करता ।

विल ड्यूराँ बीसवी सदी के एक अति आदरणीय इतिहासकार हैं उनके वक्तव्य की पुष्टि '' इण्टरनेशनल लाइब्रेरी आफ फेमस लिटरेचर '' खण्ड 2 के पृष्ठ 693 में वर्णित बयान से होती है । उस (अलसिबिऐड्स) का पालन पोषण पैरिक्लस के घर में हुआ था और उसकी सुकरात के साथ घनिष्ठता थी ।

सुकरात एक महान दार्शनिक ही नहीं था अपितु एक उच्च कोटि का सैनिक भी था । पौतिदिया के युद्ध में उसने अलसिबिऐड्स के जीवन और शस्त्रों के रक्षा की थी और अपने वीरता के पुरस्कार का दावा उसके पक्ष में त्याग दिया था ।

पैडरास्टी का, जिसका अर्थ एक अधेड़ पुरुष का एक युवा लड़के से लैंगिक संबध है, प्रचलन संभवतः सुकरात ने, जो स्वयं रहस्यवादी था, आरम्भ किया था । यद्यपि समस्त संसार में व्यवहृत रहस्यवाद के सिद्धान्त वैदिक मूल के हैं और ये यूनान के रास्ते होते हुए फारस में प्रविष्ट हुए और बाद में सूफी परम्परा के रूप में पुनः भारत आए ।

रहस्यवादी के रूप में सुकरात के पास एक मैला कुचला चोगा ही था जो वह वर्ष भर पहनता था, अपनी गरीबी से वह संतुष्ट था और कुछ नहीं होते हुए भी वह अपने आपको एक धनवान पुरुष समझा करता था । अत्यधिक कठिनाइयों को सहन करना उसका एक बड़ा गुण था । वह धैर्य पूर्वक भरपूर मात्रा में शराब का सेवन करता था किन्तु नशे में धुत कभी नहीं होता था । उसने अपने आपको सर्दी और गर्मी के प्रभाव से मुक्त कर लिया था, जबकि उसके साथी सैनकि अपने आपको कपड़ों मे सावधानी पूर्वक लपेट लेते थे तथा पैरों में ऊनी मोजे पहन लेते थे । वह असह्य सर्दी में भी अपने चोगे को पहने रहता था और नंगे पैर बर्फ पर चलता था । प्रातः से सांय तक वह साधना में लिप्त रहता था और जब भी साधनालीन हुआ करता था अपने आपमें पूर्णतः मग्न रहता था ।

हम जब सुकरात के इन गुणों को विचारते हैं तो स्पष्ट होता है कि इस्लामी रहस्य (तसव्वफ्) सुकरात के प्ररूप के आधार पर ही विकसित हुआ है । मुझे कोई संदेह नहीं है कि मुस्लिम सूफी संतों ने अपने गीतों में शराब का जो वर्णन किया है और अभ्यासपूर्वक दोहराते हैं वह सुकरात की ही देन है । और इसी प्रकार उनका लड़कों, गरीबी, संतोष समाधान और साधना के प्रति प्रेम भी वहीं से प्रादुर्भूत होता है ।

सुकरात एक खुली पुस्तक था परंतु प्लेटो ने जिसने उसके विचारों को अपनाया था, अपने विचार इतनी निष्कपटता से प्रकट नहीं किए । एक तथ्य विशेष जो प्लेटोनिक प्रेम के नाम से जाना गया है वस्तुतः इसका मूल सुकरात के प्रवचनों में ही है ।

प्लेटों के अनुसार मनुष्य दो भागों से निर्मित है- एक शाश्वत तथा दूसरा नश्वरः शाश्वत को आत्मा कहा जाता है जो दिव्य है और नश्वर भाग कामुक ह्रास वृद्धि वाला और लौकिक है क्योंकि इसे मनुष्य को छोटे देवताओं ने परमपिता परमात्मा के आदेशानुसार दिया है । जब इन भोग्य कामनाओं का अनुसरण किया जाता है जो शरीर से आत्मा की मुक्ति कठिन हो जाती है और मानव जन्म मरण के लम्बे चक्र में फंस जाता है ।

प्लेटो कहता है कि आत्मा की मुक्ति केवल ज्ञान से ही संभव है, यह तभी संभव है जब बुद्धि ईरोस, यूनान के प्रेम के देवता (जिसे भारत में काम का देवता कहा गया है) किसे कामवासना भी कहते हैं, द्वारा मार्गदर्शन पाती है । यह कामवासना प्रेम और वात्सल्य की जनक होती है जिसके कारण ज्ञान का उदय होता है । तथापि सभी प्रकार का प्रेम उत्पादक नहीं हुआ करता क्योंकि वह किसी भी दिशा में विवेक या काम, अच्छाई या बुराई की ओर ले जा सकता है । प्लेटो को ये विभाजन, उस समय के प्रचलित द्वन्द्वात्मक विचारों से उत्तराधिकार में प्राप्त हुए थे ।

प्लेटो के प्रकार के प्रेम को जो समलैंगिक ही है, उस समय प्रोत्साहित किया जाता था जब यूनान में अत्यधिक जनसंख्या का अत्यधिक भय व्याप्त था । उस समय सौ घरों में से कोई एक ही घर ऐसा होता था जहाँ एक से अधिक कन्या का पालन पोषण किया जाता हो, अधिकांश लड़कियों को जन्मते ही मार दिया जाता था । परिणामस्वरूप स्त्रियों का अभाव हो गया था और समलैंगिकता की आवश्यकता बढ़ गयी थी ।

सामाजिक प्रभाव के अतिरिक्त प्लेटो अपनी दार्शनिक कल्पना शक्ति से मार्गदर्शन पाता था और वह समलैंगिक प्रेम का समर्थक नहीं था जिसका उद्देश्य मात्र प्रजनन था और जिसमें आत्मा शरीर की बंदी होकर रह जाती थी । उसका विचार था कि लोग इस प्रकार के

प्रेम में इसीलिए पड़ते हैं कि वे अपने बच्चों के यादों के मध्य जीना चाहते थे । परन्तु जिनकी इच्छा आत्मा के लिए क्रियात्मक क्रियाकलाप की होती थी वे स्त्री से दूर ही रहते थे । इस प्रकार आध्यात्मिक उत्थान का रहस्य पुरुष के प्रति पुरुष प्रेम में ही है । दूसरे शब्दों में लिंग के प्रेम से समस्यांए खड़ी हुआ करती हैं किन्तु एकसमान लिंग के प्रेम से अमरता की गारण्टी है । इस प्रकार बुद्धि (आत्मा) को शरीर से मुक्ति दिलाने का एकमात्र मार्ग यही है । फिर भी उसने कही भी पुरुषों के प्रति पुरुषों प्रति प्रेम को काम तृप्ति से नहीं जोड़ा । यह जानबूझ कर रखा गया भ्रम था क्योंकि यह स्पष्टतया काम देवता, ईरोस के , जो कि कामवासना तृप्ति का प्रतीक है, कार्यो का खंडन करता था ।

प्लेटोनिक प्रेम आखिर क्या था ? यह दो पुरुषों के मध्य एक प्रेम संबंध था , एक ईरास्टस (प्रेमी) कहलाता था दूसरा ईरामीनोस (प्रेयसी) । पुनः यह समाज के बराबरी के लोगों के मध्य होता था और इस प्रकार प्रेम के सर्व व्यापक नियमों का उल्लंघन था क्योंकि प्रेम जात, रंग या पंथ की सीमाओं को स्वीकार नहीं करता । यह एक नवीन प्रकार के पीडेरस्टी (यहाँ सुकरात अलसिबिएड्स के प्ररुप को, उनके यौन संबंध को छोड़कर स्पष्ट देखा जा सकता है) की खोज करने की चेष्टा थी जिसमें कामवासना को एक काल्पनिक बौद्धिक ऊर्जा के रूप में दिखाने का व्यर्थ प्रयत्न किया जाता है ।

यह दृष्टिकोण सर्वथा मूर्खतापूर्ण है क्योंकि यह जीवन की वास्तविकता के विपरीत है । फिर भी यह सिद्धान्त कहलाता है कि चूँकि सभी की दृष्टि में प्रेयसी की सुंदरता का एक आदर्श होता हे तो वह प्रेमी की आत्मा में प्रेम व सम्मान उत्पन्न करता है ।प्रारम्भ में वह ईरोस के रूप में कामवासना ही होती है जो प्रेयसी (युवक) की सुंदरता द्वारा आत्मा को जागृत करती है, युवक की सुंदरता, जैसा कि उसका प्रेमी देखता है, प्रतिबिम्ब होकर उस युवक को भी कामुक बना देती है । इस प्रकार प्रेमी ईरोस (कामवासना) एक प्रतिक्रियात्मक ईरोस (कामवासना) उत्पन्न करता है जो कि प्रेरित प्रेम का प्रतिबिम्ब ही होता है । इस प्रकार एक ओर ईरोस (कामवासना) प्रेरित करता है और साथ ही प्रतिक्रियावश प्रेरित (कामवश) हो जाता है । इस प्रकार परिणाम में प्रेमी और प्रेयसी का सौन्दर्य प्रत्येक आत्मा में बिम्बित और प्रतिबिम्बित हो जाता है । कामासक्ति के प्रेम का यह कैसा छलावा है ?

दो पुरुषों के बीच यह पारस्परिक संबंध यह मानकर चलता है कि प्रेमी (जैसा कि सुकरात था) प्रेमिका के लिए शिक्षक होता है और जहाँ तक कि ज्ञान का संबंध है ‘‘ प्रेमिका ’’ छात्र होता है । प्रेमी एक शिक्षक होने के कारण अपने अधिकारवश ऊपर की ओर देखता है जबकि प्रेमिका प्रतिबिम्ब देखती है और दोनों प्रेम की सीढ़ी में चढ़े जाते हैं किन्तु शाश्वत की खोज में प्रेमी प्रेमिका से सदा आगे रहता है ।

सुकरात जो उपरिलिखित सिद्धान्त का रचयिता था, (प्लेटो द्वारा संशोधित) अलसिबिऐड्स का प्रेमी था, जो कि एक महत्वपूर्ण ऐथेनियन राजनीतिज्ञ व सेनापति बना । युवावस्था में उसके सुकरात के साथ दीर्घकाल तक गहन सम्बंध थे । सुकरात जो यूनान का एक महान दार्शनिक था, बहुत ही गुणी व्यक्ति था । उसने रहस्य की अनेक विधाएं प्रतिपादित की थीं जो कि पूर्व में आज भी प्रचलित हैं । किन्तु यह वास्तव में सत्य भी है कि उसके ऊपर कई लड़को को भ्रष्ट करने का आरोप लगाया गया था और उसे मृत्यु दण्ड दिया गया था । उसकी महानता उसकी निडरता में निहित हैः अवसर दिए जाने पर भी वह जेल से नहीं भागा और खुशी खुशी विष का प्याला पीकर इस संसार से एक साहसी सत्यनिष्ठ व्यक्ति की भाँति विदा हुआ ।

महान अलक्षेन्दर यद्यपि महदूनियाँ का निवासी था, यूनानी संस्कृति का, जिसमें समलैंगिकता शराब के नशे की भाँति सामान्य थी, दूत सिद्ध हुआ । वह न केवल एक विरल सैनिक प्रतिभा सम्पन्न था वरन् उसमें एक महान राजनेता के एवं प्रशासनिक गुण भी थे ।उसे पूर्वी रीतिरिवाजों से प्यार था, वह पूर्व के वस्त्र पहनता था तथा उसकी दो रानियाँ भी पूर्व की थीं किन्तु उसकी समलैंगिकता पूर्वी राजनीति के लिए एक आवरण मात्र ही थीं ।वह भी अन्य यूनानियों की भाँति, जिनकी संस्कृति से वह प्रेम करता था और पालन करता था स्वयं समलैंगिक था । हीफैएस्टियन और बागो उसके दो जानेमाने कैटामाईट थे । उसके और उसके बादवाले सेनापतियों के माध्यम से यूनानी संस्कृति, जिसे हेलेनवाद कहा जाता है, मध्यपूर्वी देशों मे फलीभूत हुई । इसको अधिक शक्ति विकास इस तथ्य से मिला कि अलक्षेन्दर देवता होने का दावा किया करता था, और उसके सम्पूर्ण पूर्वी साम्राज्य में वह इसी रूप में पूजा जाता था । देवता की सी उसकी रुचियाँ, सामान्य जीवधारियों पर शीघ्र और स्थायी प्रभाव डालती थीं । यह सब फारसी कविताओं में इतना गहरा पैठ गया कि रहस्यमयी कविताओं में कामुकता सजीव हो गयी थी जो उन सभी मुस्लिम देशों में फैल गयी जहाँ फारसी बोली जाती थी ।

अरब प्रायद्वीप अछूता नहीं रह गया । यूनानी संस्कृति की स्त्री देवियाँ की पूजा न केवल दक्षिणी भाग में हुआ करती थी किन्तु हेलेनवाद उत्तर में पैगम्बर मौहम्मद की भूमि मे भी पहुँच गया था । अलक्षेन्दर महान का वर्णन ‘ कुरआन ’ में भी ‘‘ धूलकरनैन ’’ के नाम से हुआ है ।

(हे मौहम्मद ते तुमसे ‘ जुलकरनैन ’ के बारे में पूछते हैं ' कह दो मैं उसका कुछ जिक्र तुमसे बयान करता हूँ (18 अल कहफ 83) हमें स्मरण रखना चाहिए कि अलक्षेन्दर महान का नाम (नबी के देश) अरब में भी अनसुना नही था क्योंकि लोग उसके विषय में और अधिक जानने के इच्छुक थे । कुरआन में अलक्षेन्दर महान का वर्णन एक ऐसे पवित्र महापुरुष के रूप में है जिससे अल्लाह ने वार्तालाप किया तथा महत्वपूर्ण निर्णय देने का अधिकार दिया ।

‘‘ .... हमने (अल्लाह ने) कहा : ‘‘ हे जुलकरनैन ! (तुम्हें इसकी शक्ति प्राप्त है कि) चाहे तुम इन्हें तकलीफ दो और चाहे इनके साथ अच्छा व्यवहार करो ।

(18 अलकहफ 86)

यह बात पूर्णतया स्पष्ट है कि कुरआन ने अलक्षेन्दर महान की निन्दा नहीं की बल्कि उसे एक पवित्र आत्मा माना है जिसके निर्णय पर अल्लाह को विश्वास था और आदर करता था । यह भी स्पष्ट है कि उसकी समलैंगिकता का उसकी पवित्रता पर कोई प्रभाव नही पड़ा था । इस तथ्य की पुष्टि सूरा (52 अत तूर 23, 24) द्वारा भी हो जाती है

‘‘ वे वहाँ आपस में प्याले छीन झपट रहें हैं उसके न कोई बेहूदगी है और न कोई गुनाह की बात । और उनके पास उनके (सेवक) लड़के आ जा रहे हैं वे ऐसे सुंदर हैं जैसे धराउ मोती ’’

इन आयतों से दो तथ्य उभर कर सामने आते हैं

(1) सभी मुसलमान पुरुष के ‘ उनके अपने लड़के ’ होंगे जो मोतियों के समान सुंदर हैं ।

(2) यह पाप नहीं होगा अर्थात् जन्नत के कानून इतने उदार होंगे कि लम्पटता वहाँ पाप नही मानी जाएगी ।

अलकहफ (18:80) प्रो ए. जे. आरबरी के कुरआन के भाष्य के आधार पर किसी भी मुस्लिम विद्वान ने कुरआन में वर्णित जुलकरनैन (धुलकरनैन) को अलक्षेन्दर महान न होने को प्रमाणित नहीं किया ।

कुरआन की उपरलिखित आयत की व्याख्या के सही व ईमानदारी से होने की पुष्टि इतिहास के तथ्यों के आधार पर होती है । प्रो फिलिप के हिट्टी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक हिस्ट्री आफ दी अरब्स (दसवाँ संस्करण, पृष्ठ 341 पर) में अरबों के प्रभुत्व के समय में वहाँ के उच्च वर्ग के विषय में लिखा है-

‘‘ जो सेवक थे, वे लगभग सभी गुलाम थे, और गैर मुस्लिम थे, जिनको युद्ध के समय पकड़कर बंदी बना लिया जाता था या शांति काल में खरीदे जाते थे । श्वेत गुलाम (मामलुक) मुख्यतया यूनान, स्लाव, आरमीनियन और बर्बर थे । कुछ दास, हिजड़े (खिस्वान) भी थे जिनको हरमों की सेवा में रखा जाता था । दूसरे कुछ दासों को घिलमान कहा जाता था जो कि सम्भवतया हिजड़े ही होते थे, अपने स्वामियों के विशेष प्रिय होते थे, और स्त्रियों की तरह सौन्दर्य प्रसाधनों का प्रयोग करते थे । हम घिलमान के विषय में पढ़ते हैं कि अल रशीद के शासन काल में, किन्तु यह अल अमीन था जिसने फारसी पूर्वोदाहरण का अनुगमन करकके अरबवासियों के संसार में अप्राकृतिक यौन संबंधों को व्यवहार में लाने के लिए घिलमान संस्था स्थापित की । अल मामून के अधीन एक न्यायाधीश ऐसे चार सौ लड़कों का उपयोग करता था । कवि अबूनईवास जैसों ने अपनी विकृत कामनाओं को उजागर करके और दाढ़ी रहित किशोरो को अपने प्रणय गीतों से सम्बोधित करके जुगुप्सा महसूस नहीं की ।

ये ऐतिहासिक तथ्य भी, कुरआन में बड़ी व्यापक कामुकतायुक्त ढंग से वर्णित जन्नत के लड़कों के वर्णन के अनुरूप हैं । ये लड़के सदा युवा थे, मोतियों की भाँति सुंदर थे, वे रेशमी कपड़े पहिने रहते थे, और हाथों मे कंगन पहनते थे । सबसे ऊपर वे गैनीमीड की भाँति स्फटिक के पात्रों में शराब भी प्रस्तुत करते थे ।ये लड़के जैसा कि मुस्लिम विद्वान बहाना बनाते हैं, सेवक नहीं थे क्योंकि सेवक तो वृद्ध, बदसूरत और निम्न कोटि के कपड़े पहिने होते है ।

फारसियों (ईरानियों) में समलैंगिकता के प्रति प्रेम विजेता अलक्षेन्दर महान् व उसके यूनानी सैनिकों से प्राप्त हुआ था । अरबवासियों में इस प्रथा को, कुरआन में वर्णित सुंदर लड़कों के वर्णन से कानूनी मान्यता मिली थी, अल रशीद ओर अल अमीन मुस्लिम जगत के विख्यात शासक और नेता थे जिन्हें मुस्लिम जगत व्यवहार का आदर्श मानता था । इसी कारण काजी गण (मुस्लिम न्यायाधीश) भी जिनसे यह आशा की जाती थी कि वे इस्लामी सिद्धान्तों के अनुसार ही रहें तथा निर्णय करें, लड़कों के हरम, निर्लज्जापूर्वक रखे हुए थे । जो कुछ भी मैंने लिखा है उसका न केवल इतिहास साक्षी है, अपितु कुरआन और हदीस (नबी के कथन और जीवन का पूर्ववर्ती व्यवहार) इससे भी अधिक कामुकता की स्वतंत्रता देते हैं और ऐसा भ्रम की भूल भुलैया और परस्पर विरोधी कथनों द्वारा किया जाता है । ऊपर से तो इस्लाम में स्त्रियों से गुदा द्वारा सम्भोग वर्जित है । इस विषय में मिस्कट खण्ड 2 के पृष्ठ 89 पर कई हदीसें हैं ।एक कहती है जो पुरुष अपनी पत्नि से गुदा मार्ग से संभोग करता है अभिशप्त है । वहीं दूसरी ओर कहा गया है कि तुम्हारी स्त्रियाँ तुम्हारे लिए खेती समान हैं तो अपनी खेती में पीछे से या आगे आओ किन्तु मिकाद (गुदारोग) या रजोधर्म के दिनों में उनसे बचो ।

मिकाद का आशय गुदा से है । मुल्लाओं ने जानबूझकर इस आयत का गलत मतलब निकाल कर यह कहा है कि इस्लाम में गुदा मार्ग से स्त्री संभोग वर्जित है । इस हदीस में यह स्पष्ट कहा गया है कि एक पुरुष अपनी पत्नि के साथ गुदा मार्ग से संभोग की , रजो धर्म के दिनों में छोड़कर, अनुमति है ।

मिस्कट खण्ड 2 के पृष्ठ 87 की निम्नलिखित हदीस की ओर ध्यान दीजिए ।

नबी को उद्धृत करते हुए जबीर ने कहा कि ‘‘ यहूदी कहा करते थे कि यदि कोई पुरुष अपनी पत्नि के साथ गुदा मार्ग से संभोग करता है तो बच्चे भेंगे हो जाते हैं किन्तु अल्लाह ने यह आयत भेजी कि ‘‘ तुम्हारी स्त्रियाँ तुम्हारें लिए खेती समान हैं तो अपनी खेती में जिस तरह से चाहो जाओ ’’

पाठकों के समाधान के लिए यह आयत कुरआन में सूरा अल बकरह में है (सू 2 अल बकरह आ 223)

इस विचार से स्पष्ट है कि इस्लाम, पुरुष की कामुकता की मनोवैज्ञानिक दुर्बलता का अनुचित लाभ उठाकर उसका जिहाद के लिए आह्वान करता है और जिहाद के बदले में सर्वाधिक विलासिता के घर, जन्नत की प्राप्ति के लिए निश्चित मार्ग का निर्धारण करता है ।

इतना सब होने पर भी कहा जाता है कि अच्छाई को व्यवहार में लाने और बुराइयों को दूर करने के लिए यह दिव्य संहिता है ।

मृत्यु के उपरांत यौन सुख की जो कि इस्लाम की एकल विशेषता है, जिहाद की अवधारणा की जो मूलतः कामतृप्ति से संबंधित है समीक्षा की आवश्यकता है ।

जिहाद और जन्नत

चूँकि जिहाद जन्नत प्राप्ति का पक्का साधन है वह जन्नत, जो मृत्युपरान्त मनचाहे यौन सुख का निवास है अतः कामवासना और हिंसा संयुक्त रूप से इस्लाम के आधारभूत माध्यम हैं जिनके द्वारा पुरुष को मुक्ति के जाल में फंसाया जा सकता है । यह पुरुष के स्वाभाविक भय और अनिश्चितता की भावना का सर्वाधिक प्रभावी शोषण है ।

जिहाद क्या है ? कुरान स्पष्अट करता है ।

क – '' निस्संदेह अल्लाह ने ईमान वालों से उनके प्राणों और उनके मालों को इसके बदले ख़रीद लिया है कि उनके लिए जन्नत है वे अल्लाह के मार्ग में लड़ते हैं तो वे मारते भी हैं और मारे भी जाते हैं । यह अल्लाह के जिम्मे ऋऋ जन्नत का ऋऋ एक पक्का वादा है । ''

ख – किताब वाले जो न अल्लाह पर ईमान लाते हैं और न अंतिम दिन पर और न उसे हराम कहते हैं जिसे अल्लाह और उसके रसूल ने हराम ठहराया है, और न सच्चे दीन को अपना बताते हैं उनसे लड़ों यहाँ तक कि सत्ता से दस्तबरदार ऋऋ विलग ऋऋ होकर और छोटे ऋऋ अधीन ऋऋ बनकर जिजया ऋऋ जानमाल की रक्षा के बदले में कर .. देने लगें ।

■ सूरा 9 अलतौबा आयत 29 ...

कुरआन की उपरलिखित आयतों में यह अंकित किया गया है कि अल्लाह और मुसलमानों के मध्य जिहाद एक बंधनकारी अनुबंध है जिसका निम्नलिखित प्रभाव हैः

1– एक मुस्लिम के पास उसके जीवन समेत जो कूछ है जन्नत के बदले अल्लाह का ही है ।

2– अल्लाह एक मुसलमान को जन्नत दिलाने के लिए वचनबद्ध है बशर्ते कि वह अल्लाह की ख़ुशी के लिए इच्छापूर्वक मरने और मारने को कटिबद्ध हो ।

3– मुस्लिमों को गैरमुस्लिमों से लड़ना चाहिए ।

4– गैरमुस्लिम वे लोग हैं जिनको इस्लाम (सच्चाई के मजहब) में विश्वास नहीं है । किताब वाले लोग अर्थात् (ईसाई, यहूदी उतने ही) काफिर हैं जितने हिन्दू बौद्ध, नास्तिक हैं । यदि वे इस्लाम की तलवार के सामने झुककर और जिम्मी की तरह न रहें अर्थात जिजया अदा करके अपना अपमान स्वीकार न करें तो उनकी हत्या ही कर दी जानी चाहिए ।

5– अल्लाह और मोहम्मद के बताए मार्ग पर जो कि जीने का उचित मार्ग हैं , यदि लोग न चलें तो जिहाद स्वतः एक मुस्लिम का उत्तरदायित्व बन जाता है । जिहाद के निम्नलिखित मूलभूत सिद्धान्त हैं जिन पर, इस विषय को समझने के लिए सावधानी से विचार करना चाहिए ।

1क– जिहाद मात्र हत्याकाण्ड, अंग भंग एवं पीड़ा देने के उद्देश्य को ही लेकर किया जाता है न कि किसी भी सामाजिक, नैतिक या मानवीय सेवा हेतु जैसे कि मुस्लिम मौलवी बहकाते हैं ।

पुनः जिहाद (गैर मुस्लिमों के हत्याकाण्ड) और जन्नत के मध्य सीधा संबंध है अर्थात मृत्यु के उपरान्त मनचाही यौन तृप्ति जो बहुत कामुकतापूर्ण वातावरण से सज्जित है, सुखों से भरपूर है, और जहाँ सर्व. उपहार और सुख ही सुख विस्तीर्ण है ।

मृत्यु के उपरान्त यौन सुख की उपलब्धि एक अनूठी संकल्पना है जो गैर मुस्लिमाके को डराकर, कत्लकर और आतंकित करके ही उपलब्ध हो सकती है । काफिरों को यातना देने से अल्लाह वचनबद्ध हो जाता है कि बदले में जन्नत की भेंट एक मुसलमान को अर्पित करे ।

1ख– इस्लाम केवल जीने का सही मार्ग हैः शेष झूठे, घृणित और दुष्टतापूर्ण हैं । इस प्रकार किताब के लोग अर्थात यहूदी और ईसाई ईमान वाले नहीं हैं वरन् गैर ईमान वाले हैं । उनकी या तो हत्या कर देनी चाहिए या उन्हें दास बना लेना चाहिए ।

जीवन का सही मार्ग, अर्थात् इस्लाम को अल्लाह और मोहम्मद ने मिलकर, न कि अल्लाह ने अकेले ही निर्धारित किया है ।यही कारण है कि कलमा में अर्थात वह मूलभूत स्वीक' जो कि एक व्यक्ति को मुस्लिम होने के लिए पवित्र करती है, अल्लाह और मोहम्मद को बराबरी का दजा दिया जाता है । कलमा के शब्दों पर विचार कीजिए '' अल्लाह के अतिरिक्त कोई दूसरा ईश्वर नहीं है और मोहम्मद उसका दूत है । ''

इन दोनों का एक ही वाक्य में वर्णन इन्हें समान बना देता है किन्तु यदि सावधानी से विचार किया जाए तो ज्ञात होता है कि व्यवहार में यह स्वीकृति मोहम्मद से ही संबंधित है क्योंकि एक व्यक्ति केवल अल्लाह में ही विश्वास करने से मुसलमान नहीं हो जाताः इस व्यक्ति का मोहम्मद में भी विश्वास करना आवश्यक है ।एक हदीस में उल्लेख हैः

'' मुझे (मोहम्मद) को यह आदेश मिला है कि लोगों के विरुद्ध करता रहूँ जब तक वे यह स्वीकार न कर लें कि अल्लाह को छोड़कर अन्य कोई ईश्वर नहीं हे और मैं (अललाह का दूत हूँ, मुझ (मोहम्मद में यह विश्वास प्रकट करें .... और उनके ऐसा करने पर उनकी जान, धन सम्पत्ति की सुरक्षा की गारण्टी मेरी है बशर्ते कि यह कानूनन सही हो '' ।

इस हदीसे से यह स्पष्ट हो जाता है कि मोहम्मद में विश्वास समान रूप से अनिवार्य है अपितु सुरक्षा की सारी गारण्टियां मोहम्मद के नाम से ही जारी होती हैं । इस प्रकार अल्लाह तो नाम मात्र का ही प्रभु है जो सारे प्रशासनिक मामले तो मोहम्मद के लिए ही छोड़ देता है । इस प्रकार अल्लाह की स्थिति तो मात्र म्यान जैसी है तलवार तो मोहम्मद ही है । अल्लाह की स्थिति गिरकर मलाई रहित दूध की है और मोहम्मद की स्थिति बढ़कर मलाई की हो जाती है ।

अल्लाह को तो मोहम्मद के निमित्त प्रभात करने का कार्य ही सौंपा गया है जो एक अस्थायी पर्दे का ही काम करता है और जैसे ही सूर्योदय होता है वह विलुप्त हो जाता है । अल्लाह तो मोहम्मद के लिए मंगलाचरण मात्र है और जिहाद मोहम्मद को शिखर पर पहुँचा कर सत्य को प्रकट करने का माध्यम है ।

मोहम्मद की यह परोक्ष पहुँच उनकी बुद्धिमत्ता एवं परिपक्वता का परिचायक है । ऊपर से तो यह दावा किया गया है कि वह अल्लाह का एक विनम्र सेवक है और उसकी महिमा का प्रार्थी है । इस सोच मे मूर्ति पूजा का विरोध सम्मिलित था और इस कारण उन्हें घोर पेरशानी, पीड़ा और यातना का भी सामना करना पड़ा । बाहरी तौर पर यह लगता था कि उनका इस अभियान मे कोई निहित स्वार्थ नहीं था किन्तु कलमा की शब्दावली के विश्लेषण और उसकी सफलता से स्पष्ट है कि उन्होंने मूर्ति पूजा का विरोध इसीलिए किया ताकि सभी मूर्तियाँ तोड़कर वह स्वयं एकमात्र मूर्ति रह जाए ।

पुन- अल्लाह अरबों का ही ईश्वर था जो कि जनसाधारण के नामों के पीछे लगाए जाने वाला लोकप्रिय शब्दथा । उदाहरण स्वरूप मोहम्मद के पिता का नाम अबद अल्लाह (ईश्वर का सेवक) था । लोकप्रियता के कारण काबा में उसकी मूर्ति की पूजा की जाती थी और वह मूर्ति कुरैश कबीले को, जो मोहम्मद की प्रजाति थी, समर्पित थी । इस तथ्य से उन्हें पर्याप्त आदर और सामाजिक लाभ प्राप्त हुआ ं अल्लाह के दूत कादावा व उस निमित्त कष्ट उठाना अनिश्चित काल तक छिपा न रहा ।

यही कारण है कि मोहम्मद ने अल्लाह का नबी होना निश्चित किया । वास्तव में उन्होंनें दावा किया कि उन्हें अल्लाह ने उसका दूत बनने के लिए विवश किया है ं । हीरा नामक मरुस्थली गुफा में जब मोहम्मद ध्यानमग्न था तब यह हुआ । वे आश्चर्य चकित हुए जब गैब्रील नामक फरिश्ता अल्लाह का लिखित संदेश लेकर आया यद्यपि मोहम्मद अनपढ़ थे । उसने मोहम्मद को आदेश दिया ।

पढ़ोः '' अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया, पैदा किया मनुष्य के एक लोथड़े से । '' पढ़ो '' और तुम्हारा रब '' बड़ा ही उदार है जिसने कलम द्वारा ज्ञान दिया है, ज्ञान दिया मनुष्य को उस चीज का जिसको उसने जाना न था ।

(96 - अल- अलक आयतें 1-5)

इस्लाम के सिद्धान्तों मे यह पर्याप्त रूप से स्पष्ट लिखा गया है कि केवल अल्लाह में विश्वास रखने से ही कोई व्यक्ति मुस्लिम नहीं हो जाताः अनिवार्य हे कि वह अल्लाह और मोहम्मद दोनों पर विश्वास रखे । क्या इसका तात्पर्य यह नहीं है कि अल्लाह मोहम्मदके अभाव में कुछ भी नहीं है या अधिक उपर्युक्त शब्द कि अल्लाह और मोहम्मद एक ही है क्योंकि लोग मोहम्मद से बात कर सकते हैं अल्लाह से नहीं । पुनः मोहम्मद के संदेश ही अल्लाह के आदेश कहकर प्रचारित किए जाते थे और अल्लाह कुछ नहीं था सिवाय उसके जैसा मोहम्मद ने उसे चित्रित किया । फिर भी कुरआन बारबार मोहम्मद को अल्लाह का दास कहता है ! क्या दास मालिको को नियंत्रित करते हैं ? क्या ही विरोधा भास है ?

यदि हम कुरआन का गहराई से अध्ययन करें तो स्पष्ट हो जाता है कि मोहम्मद एक मनुष्य ही है जिसने बड़ी चतुराई से अपने आपको अल्लाह के स्थान पर रख दिया । स्वयं ही देखिए कि उन्होंने अपने इस उद्देश्य की प्राप्ति में कैसी विलक्षणता से काम लियाः

क. कलमा में उन्होंके अपना नाम अल्लाह के साथ संयुक्त कर दिया, यद्यपि यह एक तथ्य है कि ऐसा करने की कोई भी आवश्यकता नहीं थी । क्यों ? क्योंकि लोगों के मार्ग दर्शन के लिए मोहम्मद की कोई भूमिका नहीं थी क्योंकि यह कार्य अनन्य रूप से अल्लाह का ही हैः

1. '' उन्हें राह पर लाना तुम्हारे जिम्मे नहीं है बल्कि अल्लाह ही जिसे चाहते हैं राह दिखाते हैं ।

(सूरा 2 अल बकरह आयत 272)

2. तुम्हारा रब तुम्हें भली भांति जानता है । वह चाहे, तो तुम पर दया करे और चाहे तो तुम्हें यातना दे और (हे नबी) हमने मुझे उन पर कोई हवलदार बनाकर नहीं भेजा है .... ।

(सूरा 17 बनी इसराईल आयत 54)

इस आयत में स्पष्ट रूप से यह लिखा है कि मोहम्मद स्वयं अल्लाह की दया व दण्ड का भागी है, और उसे लोगों पर हवलदार नहीं बनाया गया वरन् वह मात्र एक मनुष्य ही है जो उनको केवकल सचेत ही कर सकता है । फिर भी उन्होंने अल्लाह का समतुल्य बनने के लिए अपना नाम अललाह के साथ जोड़ा है ।

ख. मोहम्मद की दैवत्व की योजना का मूल तो उनकी प्रभुत्व की ललक में निहित है, प्रारम्भ से ही इस विषय में गम्भीरतम चिंतन कर लिया गया था । लोगों का विश्वास प्राप्त करने के उद्देश्य से और उन्हें आश्वस्त करके कि उसमें उनका कोई निहित स्वाार्थ नहीं हैं उन्होंनें अपने आपको विनम्र व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है ।

1. '' तो सीधे मार्ग पर जमें रहो जैसा कि तुझे हुक्म हुआ है और वे लोग भी जो तौबा करके तेरे साथ हो गए हैं और हद से आगे न बढ़ना । जो कुछ तुम करते हो, निश्चय ही वह उस पर निगाह रखता है '' (सूरा11 हूद, आयत 113)

2. तो तुम अपने ' रब ' का गुणगान करो और ' सजदा ' करने वालों में सम्मिलित रहो । और अपने ' रब ' की इबादत में लगे रहो, यहाँ तक कि यकीनी चीज तुम्हारे सामने न आ जाए ।

(सूरा 15 अल हिज्र आयत, 98,99)

3. '' ये तत्वदर्शिता की बातें हैं जो तेरे रब ने तेरी ओर वह्य की हैं । और अल्लाह के साथ कोई दूसरा ' इलाह ' (पूज्य) न गढना, नहीं तो निन्दित और ठूकराया हुआ ' जहन्नम ' में झोंक दिया जाएगा '' ।

(सूरा 17 बनी ईसराईल, आयत 39)

इन आयतों से पूर्णतः स्पष्ट है कि अन्य मनुष्यों की भाँति मोहम्मद भी भटक सकते हैं और जहन्नुम के दण्ड के भागी हो सकते हैं । उन्हें भी अल्लाह के समक्ष शीश नवाकर उसकी प्रशंसा करनी चाहिए ताकि उनका भी मार्ग्रदर्शन हो सके ।

ग. चूकिँ नबी भी मनुष्य है और कुछ भी नहीं है अतः वह भी दैवी दण्ड का पात्र हो सकता है ।

“ कह दोः महिमावान है मेरा रब! क्या मैं इसका सिवा और भी कुछ हूँ कि एक मनुष्य है हूँ जो रसूल भी है ?
(सूरा 17 बनी ईसराईल, आयत 93)

1. “ कह दो मुझे तो बस यह हुक्म हुआ है कि मै अल्लाह की इबादत करूं औरउसके साथ किसी को साझी न ठहराँऊ । मैं उसी की ओर बुलाता हूँ और उसी की ओर मुझे लौटना है । ”
(सूरा 13 अर रअ्द आयत 36)

इसके ऊपर भी नबी, मरण शील है और उसे भी जन्म मरण के चक्र में पड़ना है तुम भी मरण शील हो , और वे (अन्य लोग) भी मरणशील हैं, तब कयामत के दिन अपने प्रभु के समक्ष तुम विवाद करोगे ” हदीसः (कम्पनीज 475)
घ. पैगम्बर के पास कोई भी कैसी भी दैवीय शक्तियां नहीं हैं, यह कि क्या किया जाएगा तुम्हारे साथ मैं बस उसी पर चलता हूँ जो मेरी ओर वह्य की जाती है और मैं तो बस एक साफ साफ सचेत करने वाला हूँ । (सूरा 46 अल अहकाफ 9)
यहाँ तक कि अल्लाह भी मोहम्मद के मनुष्य होने की बात को जोर से और स्पष्टतः पुष्ट करता हैः
“ जान लो कि कोई इलाह (पूज्य) नहीं सिवाय अल्लाह के , और अपने गुनाहों के लिए क्षमा करो, ईमान वाले पुरुषों और ईमान वाली स्त्रियों के लिए भी । ”
(सूरा 47 मोहम्मद आयत 19)
पाठ्कों को यह समझ लेना चाहिए कि जब मोहम्मद दुर्बल थे तब उन्होंने विनम्रता और मानवता की नीति अपनाई : यह सब अपने अनुयायियों को आश्वस्त करने के लिए ही था कि उस मिशन में जिसका प्रचार करना था उसका कोई निहित स्वार्थ नहीं था , वह तो अललाह द्वारा उसकों आवंटित कर्तव्य का ही पालन कर रहा था, किन्तु जैसे वह सशक्त होते गए उसनकी कार्य शैली उल्लेखनीय रूप से बदलती चली गयी जिससे पूर्णतः स्पष्ट होता है कि वह दिव्य शक्ति के रूप में पहचाना जाए ऐसा चाहते थे और अल्लाह तो मोहम्मद के लिए मात्र मांगलिक था । अग्रलिखित देखिए ।
ड. अल्लाह और रसूल का कहना मानो ताकि तुम पर दया की जाए ।
(सूरा 3 इमरान आयत 132)

1. “ जो कोई भी अल्लाह और उसके पैगम्बर की आज्ञा मानता है वह उसका ब्रागों में प्रवेश कराएगा जिनके नीचे नहरें बह रहीं होगी । ” (सूरा अल अलताफ आयत 20)

   आज्ञाकारिता के निमित्त अल्लाह के साथ अपना नाम जोड़कर मोहम्मद ने यह दावा किया कि वह अल्लाह के साथ ही है । चूँकि अल्लाह इस बात पर जोर देता है कि वह मनुष्य की कण्ठनली से भी अधिक निकट है, इसलिए कुरआन की मोहम्मद के संबंध में घोषणा है कि :

   “ नबी का संबंध ‘ ईमान वालों ’ के साथ उससे अधिक हे जितना उन लोगों का अपने आप से है । ”

   (सूरा 33 अलअहजाब आयत 6)

   च. मोहम्मद का आगामी पग है अल्लाह के साथ दैवी शक्तियों में सहभागी होना और अल्लाह के साथ अपने प्रभुत्व को घोषित करना ।

   “ न किसी ‘ ईमान ’ वाले पुरुष और न किसी ‘ ईमान ’ वाली स्त्री को यह हक है कि जब अल्लाह और उसका ‘ रसूल ’ किसी बात का फैसला कर दे , तो फिर उन्हें अपने मामले में कोई अधिकार रहेः जो कोई अल्लाह और उसके रसूकल की अवज्ञा करे तो वह खुली गुमराही में पड़ गया । ”

   छ. अल्लाह के साथ निर्णय लेने में सहभागी हो जाने के बाद मोहम्मद ने अल्लाह के अज्ञात को जान लेने के दिव्य दृष्टि में भी भागीदार हो जाना प्रारम्भ कर दिया यद्यपि पहले यह अधिकार अल्लाह का ही था ।

   “ वह परोक्ष का जानने वाला है और अपने परोक्ष को किसी पर जाहिर नहीं करता । रहा वह व्यक्ति जिसे उसेन रसूल की हैसियत से पसन्द किया, तो उसके आगे से और पीछे से निगरानी की पूर्ण व्यवस्था कर देता है ”

   (सूरा 72 अल जिन्न, आयत 26-27)

   ज. जैसे जैसे युद्धों और लूट के आकर्षण के कारण मोहम्मद के अनुयायियों के संख्या बढ़ती गयी, उन्होंने घोषित किया कि उनके अभिमत और संस्तुतियां अल्लाह पर बंधनकारी होंगी और इस प्रकार उनकी स्थिति अल्लाह से भी ऊपर हो गयी । उनकी पूर्वकालिक घोषणाओं “ अल्लाह न्यायकर्ता है ”, “ वह सभी न्यायाधीशों में सर्वोत्तम है, ” “ और उसको स्वयं नहीं मालूम कि उसका क्या होगा” के होते हुए भी कुरआन कहता हैः

   “ निस्संदेह वह एक आदरणीय संदेशवाहक (फरिश्ते) की (पहुँचाई हुई) बात हैः जो शक्तिशाली है, सिंहासन के स्वामी के यहाँ बड़ा ही मरतबे वाला है, वहाँ उसकी बात मानी जाती है, विश्वास करने योग्य भी है । ”

   (सूरा 81 अत तकवीर, आयत 19- 21)

   मुसलमान लोग इस आयत का उद्धरण यह सिद्ध करने के लिए देते हैं कि मोहम्मद की मध्यस्थता की शक्तियां प्राप्त हैं । उन्हें विश्वास है कि कयामत के दिन वह अल्लाह के साथ न्याय के आसन पर बैठेगा । वह अल्लाह के दांए हाथ को बैठेगा । और संस्तुतियाँ अल्लाह पर बंधनकारी होंगी ।

झ. तब अंतिम पग आता है । स्थिति पूरी तरह उलट दी जाती है ।

'' निश्चय ही अल्लाह और उसके फरिश्ते ' नबी ' पर ' रहमत ' भेजते हैं । तुम भी उन पर रहमत भेजो और खूब सलाम भेजो '' ।

(सूरा अल अहजाब, आयत 56)

प्रत्येक मजहब में मनुष्य ईश्वर की पूजा करते हैं परंतु इस्लाम में ईश्वर और फरिश्ते मोहम्मद की पूजा करते हैं और सामान्य विश्वासियों को उनका अनुगमन करना पड़ता है । मोहम्मद के लिए शांति की प्रार्थना करना इस्लामी रीति रिवाजों का एक अभिन्न अंग है जैसे कि दारूद और नमाज ये दिन में न्यूनतम पाँच बार किए जाते हैं और पूजा के सही तरीके हैं इसके होते हुए भी मुस्लिम दावा करते हैं कि उनके मजहब में एक ही ईश्वर है और वे मात्र एक ही ईश्वर में विश्वास रखते हैं और उसी की पूजा करते हैं ।

यह सत्य के साथ वंचना है , और कुरआन का यह चकित कर देने वाला विरोधाभास भी । इसका स्रोत है मनुष्य की प्रभुत्व की ललक जो उसे शक्ति और प्रतिष्ठा के उच्चतम शिखर पर पहुँच जाने के लिए प्ररित करती है । चूँकि ईश्वरत्व शक्ति और सम्मान का शीर्ष बिन्दु है अतः अपने आपको ईश्वर के रूप में प्रस्तुत करना और अपनी पूजा कराना, मानव की प्राकृतिक मूर्खता है । क्योंकि झूठा ईश्वरत्व सच्ची दैवी शक्ति से सर्वथा विपरीत होता है । प्रत्येक पंथ में अनेंक झूठे भगवान झूठ फरेब , हिंसा और चालबाजी द्वारा उत्पन्न हो गए हैं और सामान्यजनों के ऊपर उन्होंने अपने इन्हीं ढंगों को थोप दिया है ।

ईश्वरत्व के इच्छुक सभी व्यक्ति इतने वीर व साहसी नहीं होते कि सीधे सीधे ईश्वरत्व का दावा करें । इसीलिए वे अपने स्थापित पैगम्बरों और मसीहों की महानता को बढ़ा चढ़ाकर प्रस्तुत करते हैं और अपने आपको संत , महात्मा , मजहब का रक्षक घोषित करते हैं । इस क्षेत्र में पुजारी और जो पंथ को अपनी आजीविका का साधन बना लेते हैं और अनुयायियों को एकत्रकर , अपनी राजनैतिक अभिलाषांए पूर्ण करते हैं, निकृष्टतम अपराधी हैं ।

तनिक निम्नलिखित वर्णन की ओर ध्यान कीजिए कि कीरपंथी मुस्लिमों ने मोहम्मद की पवित्रता को किस प्रकार बढ़ाचढ़ाकर प्रचारित किया हैं

1. जब मोहम्मद पैदा हुए तो सारा घर प्रकाशमय हो गया और आसमान के तारे इतना झुक गए कि मानो वे पृथ्वी पर गिर जाने वाले हों ।
2. ईरान के अग्नि पूजकों ने देखा कि उनके मंदिरों के हवन कुण्ड जो हजारों वर्षो से प्रज्वलित थे बर्फ के समान ठण्डे हो गए ।
3. मोहम्मद जब पैदा हुए तो जन्म से ही उनका खतना हो रखा था और स्वतः नाभि नाल से पृथक हो गयी और उनके शरीर केचारों ओर सामान्य शिशु की भांति कोई गंदगी नहीं थी ।
4. शेख अहमद सरहन्दी ने जो मुजददद माने जाते हैं अपने एक पत्र में एक हदीस का वर्णन करते हुए लिखा है कि नबी कहा करते थे कि '' मैं देवीय प्रकाश से पैदा हुआ हूँ ।
5. जामे तिरमिजी खण्ड 2 की एक हदीस इस प्रकार कहती है : '' जब आदम का शरीर और आत्मा बनाए जा रहे थे उस समय भी मोहम्मद एक पैगम्बर थे '' ।

इन सभी पर कोई टिप्पणी करने के पश्चात मैं इन अतिश्योक्ति के विषय में क्रमांक 5 पर लिखित हदीस के संदर्भ में ही चर्चा करना पसन्द करूंगा ।

इस संबध में कुरआन का निम्नलिखित कथन काफी जानकारी देने वाला है :

'' और याद करों जब नबियों (द्वारा उनके अनुयायियों (से वचन लिया किः '' जो कुछ मैंने तुम्हें किताब और हिकमत (तत्वदर्शिता (प्रदान की, तो फिर तुम्हारे पास एक रसूल उसकी तसदीक करता हुआ आएगा जो तुम्हारे पास मौजूद है , तो तुम उस पर ' ईमान ' लाना और उसकी सहायता करना '' । पूछा '' क्या तुमने इकरार किया है और इसमें मेरी ओर से डाली हुई भारी जिम्मेदारी तुमने उठाई ? '' उन्होंने कहा, '' हमने इकरार किया । '' कहा '' तो गवाह रहो और मैं भी तुम्हारे साथ गवाहों में से हूँ '' । तो इसके बाद जो फिर आएंगें वही अवज्ञाकारी होंगे ।

सूरा3, आले इमरान, आयत 81-82

संक्षेप में उपरलिखित कथन का तात्पर्य है कि आदम की रचना से पहले अल्लाह ने भावी नबियों से एक प्रतिज्ञा पत्र भरवाया था कि वे मोहम्मद को नबी मानेंगे तथा अपने अनुयायियों को उसमें विश्वास प्रकट करने के लिए भी कहेंगे । यदि वे उस समझौते का पालन नहीं करेंगे तो अवज्ञाकारी हों जाएगें ।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि प्रभुत्व की ललक के आदेश भारी हिंसात्मक हो सकते हैं । मोहम्मद न सिर्फ जनसाधारण को अपना अनुयायी बनाना चाहते थे वरन् अन्य पैगम्बर भी उनका अनुसरण करें ऐसा चाहते थे ।

कितना आश्चर्यजनक है कि अल्लाह ने पैगम्बरों के जन्म से पूर्व ही उनसे वचन कैसे ले लिया । यदि ये पैगम्बर सृष्टि की रचना के पूर्व ही विद्यमान थे तो उन्हें यह पवित्र पद अल्लाह के मार्गदर्शन से ही मिला होगा जिससे उनका अल्लाह के साथ विशेष प्रकार का संबंध स्थापित हो गया होगा ।

किन्तु कुरआन में इसका खुला ओर निर्णायक ढंग से विरोध किया गया है ।
" और इसी तरह हमनें (हे मोहम्मद) रूह (कुरआन) अपने हुक्म से तुम्हारी ओर वह्य की । तुम नहीं जानते कि ' किताब ' क्या चीज है और न ' ईमान ' , किन्तु हमने इसे प्रकाश बनाया है कि इसके द्वारा हम अपने बंदों में से जिसे चाहते हैं मार्ग दिखाते हैं ।
(सूरा 42 अश शुरा, आयत) 52)
सरल भाषा में इसका आशय है कि मोहम्मद को सही मजहब के विषय में तब तक कोई भी ज्ञान नहीं था, न उन्हें कोई मार्ग दर्शन प्राप्त था, जब तक अल्लाह ने उन्हें किताब (कुरआन) प्रदान नहीं की । उन्होंने चालीस वर्ष की आयु में ही प्रथम रहस्योद्घाटन मिलने का दावा किया था। तब तक वह अज्ञानी थे । इसलिए वह ईश्वर के प्रकाश से उत्पन्न हुए नहीं हो सकते । इसीलिए उनके जन्म से संबंधित ये सब कहानियां , उन लोगों की शानदार जालसाजी से भिन्न कुछ नहीं हैं जो कि उनकी एक महापुरुष के रूप में उपलब्धियां से लाभ कमाना चाहते हैं । यदि यह पर्याप्त नहीं था तो अग्रलिखित आयत देखिए । " ताकि अल्लाह तुम्हारे लिए अगले गुनाह और पिछले सब क्षमा कर दे, और अपनी नेमत तुम पर पूरी कर दे और तुम्हें सीधे मार्ग पर चलाए । "
(सूरा 48 अल फतह-2)
यह आयत हुदैबिया के समझौते से संबंधित मानी जाती है, जब मोहम्मद पचास वर्ष से अधिक के थे । यहाँ पर कुरआन से निम्नलिखित तथ्यों की पुष्टि होती है -

1. मोहम्मद ने भूतकाल में पाप किए थें ।
2. वह बाद में भी पाप करते रहेंगे ।
3. उन्हें सन्मार्ग पर चलने के लिए अल्लाह के मार्ग दर्शन की आवश्यकता नहीं थी और इस प्रकार उनमें अपना मार्गदर्शक होने का गुण नहीं था । वह दूसरों का मार्ग दर्शन किस प्रकार कर सकते थे ?

इस प्रकार अब स्पष्ट हो गया है कि पैगम्बरपन केवल प्रभुता की ही एक युक्ति है जिसके द्वारा वह व्यक्ति अपने आपकों दिव्य प्रदर्शित करने योग्न बनाता है । नबी मोहम्मद ने किसी भी अन्य की अपेक्षा इस युक्ति का अधिक प्रभावी ढंग से प्रयोग किया । ईसा मसीह जो कि बैथलहम का पैगम्बर था, इस युक्ति से अपने आप को ईश्वर का पुत्र होने का ही दावा कर सका परन्तु मोहम्मद ने तो तो अपने आप को ईश्वर से भी ऊपर प्रस्थापित कर लिचा, अल्लाह और उसके फरिश्ते भी उसकी पूजा करते हैं । यह सबसे बड़ी ईश निन्दा और प्रभु का विकरालतम अपमान है । तथापि इस्लाम का दावा है कि इस्लाम ईश्वर का एक पात्र सही मजहब है । सत्य का यह कैसा उपहास है ?
इस्लाम के एक दैवी मजहब होने संबंधी मेरा विश्वास दो कारणों से डगमगा गया । प्रथम जब मैं यह नहीं समझ सका कि इस्लाम के अनुसार अल्लाह मोहम्मद की वंदना कैसे करता है जब कि अन्य सभी पंथों में मनुष्य समुदाय ईश्वर की वंदना करते हैं । दूसरे ये आयतें कुरआन की मूलभूत आत्मा से मेल नहीं खाती । इस प्रकार जब कुरआन की सर्वाधिक मूलभूत विषयों पर ही विरोधाभास है तो यह ईश्वरीय पुस्तक नहीं हो सकती ।
कुरआन का प्राथमिक उद्देश्य हैः
" मैंने जिन्न और मनुष्य को केवल इसीलिए पैदा किया है कि वे मेरी इबादत करें । मैं उनकी कोई रोजी नहीं चाहता और न मैं यह चाहता हूँ कि वे मुझे खिलाएं ।
(सूरा 51 अज जारियात, आयत 56-57)
चूंकि मोहम्मद एक मानव की ही भाँति जन्में थे , एक मानव की भाँति ही जिए और एक मानव की भाँति ही मरे भी , कुरआन के अनुसार उन्हें अल्लाह को पूजना था न कि उसके विपरीत अन्य कुछ ।
वास्तव में कुरआन (कृपालू और दयालू अल्लाह का वर्णन करके) इस प्रकार प्रारम्भ होता हैः
" सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का रब है । "
(सूरा 1 अल फातिहा आयत 1,2)
पुनः कुरआन कहता है - प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो सारे संसार का रब है ।
(सूरा अलअनआम आयत 45)
वास्तव में अल्लाह में प्रशंसा की भूख है । कहोः " यदि समुद्र मेरे रब की बातों के लिखने के लिए रोशनाई हो जाए तो इससे पहले कि मेरे रब की बातें समाप्त हो जाएं, समुद्र शून्य हो जाएगा । " .... (हे मोहम्मद) कहोः मैं तो केवल एक मनुष्य हूँ तुम्हारी तरह । " .... मेरी ओर वह्य की जाती है कि तुम्हारा इलाह (पूज्य) बस अकेला इलाह है । अतः जो कोई अपने रब से मिलने की आशा रखता है उसे चाहिए कि अनुकूल कर्म करे और अपने रब की इबादत में किसी को सहभागी न बनाए ।
(सूरा अल कहफ आयत 109-110)

पूर्वलिखित आयतों की ओर ध्यान करने पर स्पष्ट हो जाता है कि यह सोचना भी कि अल्लाह और उसके फरिश्ते दिन रात मोहम्मद की प्रशंसा में व्यस्त हैं एकदम ईशनिंदा हो जाती है ।
पैगम्बर मोहम्मद एक स्वप्न दृष्टा नहीं थे वरन् व्यवहारिक व्यक्ति थे । ईश्वरत्व प्राप्त करने की उनकी योजना भली भांति सोची समझी थी । उन्होंने राष्ट्रीयता की एक योजना बनाई थी, जो उनकी व्यक्तिगत शान के चारों ओर घूमती थी । उन्होंन निश्यच किया कि एक सुदृढ़ अरब राष्‍ बनायाजाए जो उनके नाम का अनुगमन करे और उनके ईश्वरत्व का ध्वज एक विजेता के रूप में सारे विश्व में

फहराए । इसी कारण उन्होंने अपने लोगों में एक उत्कट राष्ट्रीयता की भावना जगाई ताकि एक वृहद् अरब साम्राज्य का निर्माण हो । अग्रलिखित हदीसों को देखिए जो कि इस तथ्य को असंदिग्ध रूप से सिद्ध करती है ।

1. जन्नत तलवारों के साए में रहती है । (अलबुखारी, खण्ड 4)
2. पैगम्बर ने कहा था : आप (अरब लोग) कुछ ही समय में कई शहरों को जीत लेंगे । काजवीन उनमें से एक होगा । जो व्यक्ति उस युद्ध में चालीस दिन या चालीस रात्रि तक भाग लेगा उसे जन्नत में सोने का एक खम्भा मिलेगा जिसमें हीरे माणिक जड़ें होंगे । वह ऐसे महल में रहकर भोग विलास करेगा जिसके सत्तर हजार द्वारा होंगे , और हर द्वारा पर एक हूर उसकी पत्नी के रूप में मिलेगी ।

(इब्न ऐ माजाह, खण्ड2, पृष्ठ 169)

पैगम्बर ने कहा था

3. युद्ध क्षेत्र में एक रात्रि के लिए अल्लाह के सैनिक होकर काम करना दो हजार वर्ष वक लगातार प्रार्थनांए करते रहने से अधिक श्रेष्ठ है ।

(इब्न ए माजाह, खण्ड 2 पृष्ठ 166)

4. पैगम्बर ने कहा था : वह जो जिहाद में भाग लेने के लिए यात्रा करता है और मार्ग में जो धूल कण लगते हैं वे धूलकण कयामत के दिन उसके लिए सुगंध बन जाएगें ।

(इब्न ए माजाह, खण्ड 2 पृष्ठ 167)

5. यहाँ एक हदीस है जो पैगम्बर के साम्राज्यवादी विचारों की पुष्टि करती है । उन्होंने एक अरबी साम्राज्य का स्वप्न देखा था, जो अरब की सीमाओं से आगे जाकर विश्व के अधिकांश भागों में फैल गया ।

पैगम्बर ने कहा था

'' जो समुद्र में शहीद हो जाता है उसकी शहादत भूमि के युद्ध में शहादत से दोगुनी है ''

(इब्न ए माजाह, खण्ड 2 पृष्ठ 168)

6. पैगम्बर ने कहा थाः '' वह जो केवल जिहाद मेँ ही प्रयोग के लिए एक घोड़े का पालता है, तो घोड़े को खिलाए गए हर दाने के लिए उसकों एक पुण्य मिलेगा । ''

(इब्न ए माजाह, खण्ड 2 पृष्ठ 172)

7. पैगम्बर ने कहा थाः '' यदि एक पुरुष जिहाद में केवल इतनी ही देर भाग लेता है जितनी देर एक ऊटनी का दूध निकाला जाता है तो वह जन्नत का अधिकारी होगा ।

(इब्न ए माजाह, खण्ड 2 पृष्ठ 173)

8. पैगम्बर ने कहा थाः '' वह जिहाद उत्तम है जिसमें घोड़ा और योद्धा दोनों, घायल हो जाते हैं । ''

(इब्न ए माजाह, खण्ड 2 पृष्ठ 173)

9.. पैगम्बर ने कहा थाः '' जिहाद में एक शहीद को मजहब के चमकदार कपड़े पहनाए जाते हैं और उसका विवाह हूरों से होता है और उसके कहने पर अल्लाह सत्तर और व्यक्तियों की जन्नत देदेगा और उसकी मध्यस्थता की स्वीकृति अवश्यम्भावी है । ''

(इब्न ए माजाह, खण्ड 2 पृष्ठ 174)

10. पैगम्बर ने कहा थाः '' ऐ मेरे लोगों ! घुड़सवारी और तीरंदाजी सीखो, ध्यान रखो ! तीरंदाजी में ही शक्ति है, जिसने तीरंदाजी सीखकर फिर छोड़ दी उसने मेरी आज्ञा का उल्लंघन किया । ''

(इब्न ए माजाह, खण्ड 2 पृष्ठ 178)

11. पैगम्बर ने कहा थाः ''जो कोई जिहाद को सफल बनाने के लिए जो कुछ भी व्यय करेगा, अल्लाह पुरुस्कार स्वरुप उसे उसके योगदान के सात सौ गुने से भी अधिक देगा । ''

(तिरमिजी, खण्ड 1 पृष्ठ 697)

12. पैगम्बर ने कहा थाः '' एक पुरुष जो खुजूर खा रहा था, उसने पैगम्बर से पूछा कि यदि मैं जिहाद में मारा जांउ तो मैं कहाँ हूँगा ? पैगम्बर ने कहा जन्नत में । उस आदमी ने खजूर फेंक दिया और मृत्युपर्यन्त लड़ा ।''

(सही मुस्लिमः 4678)

13. पैगम्बर ने कहा थाः '' जो दूसरे की हत्या करेगा, मृतक की सारी सम्पत्ति हत्यारे की होगी । ''

(इब्न ए माजाह, खण्ड 2 पृष्ठ 183)

14. पैगम्बर ने कहा थाः '' युद्ध करना एक छल कपट की कला है ।''

(इब्न ए माजाह, खण्ड 2 पृष्ठ 182)

उपरलिखित हदीसें मात्र एक छोटा सा चयन हैं, जिनसे पैगम्बर के उद्देश्य का स्पष्ट ज्ञान होता है , वह अरब योद्धाओं का एक राष्ट बनाना चाहते थे जो अल्लाह के पैगम्बर के नाम से हर किसी को दीनहीन बनाकर अरब राष्ट का निर्माण करे और विश्वव्यापी ख्याति अर्जित करे । यह अल्लाह वस्तुतः मोहम्मद का मात्र शिष्टाचार है क्योंकि अल्लाह वही करता है जो मोहम्मद उससे कहते हैं । अपने आदेशों को ईश्वरीय आदेश बनाने और उनमें ईश्वरीय चमत्कार भरने के उद्देश्य से ही मोहम्मद ने अल्लाह के नाम का प्रयोग किया जिससे लोग हूरों और लौडों से भरपूर जन्नत में विश्वास के लिए फुसलाएं जा सकें । यौन तृप्ति के भूखे, और भूख के मारे अरबवासियों ने अविलम्ब इस दैवी अवसर को पकड़ लिया जिसमें न केवल अतृप्त कामवासना का समाधान और भुखमरी से मुक्ति का वायदा था वरन् निष्कंटक अधिराज्य और शान की गारण्टी थी । ईश्वर के नाम में इस प्रकार की चेष्टा सर्वशक्तिमान का घोर अनादर है जो कामतृप्ति के साधनों को देकर तथा कत्ल, शील हरण, और लूटपाट को सर्वोच्च नैतिकता का स्तर देकर अपने उपासक एकत्रित करने के लिए निम्नतम स्तर तक जा गिरा था ।
पैगम्बर मोहम्मद का संदेश मूल रूप में अरब राष्ट वाद की भावना से ही परिपूर्ण था, जबकि भ्रम उत्पन्न करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीयता के आवरण से भी युक्त है । जैसे जैसे दूसरे राष्टों पर अरब की पकड़ मजबूत होती गयी गैरमुस्लिमों , जिम्मियों के लिए आरक्षित , अरब शासकों द्वारा किए जाने वाले अपमान और जजिया टैक्स के भुगतान से बचने के लिए वे इस्लाम स्वीकार कर लेते गए । जैसे जैसे गैर अरब मुस्लिम लोग जैसे तुर्क शक्तिशाली हुए उन्हें भी यह अनुभव हुआ कि राष्ट्रीय एकता एवं प्रभुत्व प्राप्ति के लिए अपने लोगों को , विदेशियों की हत्या के लिए उकसाना, अल्लाह द्वारा मान्यता प्राप्त उच्चतम नैतिकता का रूप देना राष्ट्रीय एकता की प्राप्ति का सर्वोत्तम साधन था, तो उन्होंने भी जिहाद को अपने जीवन का आदर्श मान लिया, यद्यपि इस मार्ग को पैगम्बर ने अपने लोगों के लिए ही निकाला था । इसका साक्ष्य इस प्रकार है –
क. एक व्यक्ति के हाथ में फारसी धनुष देखकर पैगम्बर ने आदेश दिया था कि उसे फेंककर एक अरबी धनुष भाले का ही प्रयोग करे, क्योंकि दूसरें देशों को जीतने में अल्लाह तुम्हारी मदद तभी करेगा जब तुम अरबी धनुष और भालों का प्रयोग करोगे ।
(इब्न ए माजाह, खण्ड 2 पृष्ठ 177)
ख. पैगम्बर ने कहा थाः '' अरे ईस्माइल के पुत्रों, धनुर्विद्या सीख लो तुम अरबी धनुष और भालों का प्रयोग करोगे ।
(इब्न ए माजाह, खण्ड 2 पृष्ठ 178)
स्मरणीय है कि इस्माईल मोहम्मद व अरबवासियों का पूर्वज था । इस हदीस के माध्यम से वह जिहाद के प्रयोजन को बताते हैं : वह उन्हें अल्लाह के अर्थात अरबी प्रभु के सैनिकों के रूप में संगठित होने के लिए प्रशिक्षित कर रहे हैं, ताकि विदेशियों को अपमानित कर सकें और लूट सकें ।
चूँकि हत्या करना एक सरल कार्य नहीं है, जैसा हम पहले ही देख चुके हैं, मोहम्मद ने इसे जिहाद का नाम दिया । मानव स्वभाव को रुचिकर, लूटपाट, हत्या को उन्होंने वैध और पवित्र घोषित कर दिया । पुनः उसके जिहाद को पंथ में शुद्ध विश्वास का विषय बना दिया । ताकि कोई भी जिहाद के सिद्धान्त को तर्क की कसौटी पर न कसे । उन्होंने यह स्थापना कर दी कि '' इस्लाम ही अल्लाह का एक मात्र मान्य मजहब है और बलपूर्वक कहा कि अन्य कोई मजहब अल्लाह को मान्य नही है । इस प्रकार सभी गैरमुस्लिम अल्लाह के शत्रु घोषित कर दिए गए ।

1. ' मुनाफिक अल्लाह को धोखा देना चाहते हैं, हालाँकि वही उन्हें धोखे में रखने वाला है ।
(सूरा 4 अननिसा, आयत 142)
2. वे गुप्त चाल चलें तो अल्लाह ने भी उसका गुप्त तोड़ किया और अल्लाह उत्तम तोड़ करने वाला है ।
(सूरा 3 आले इमरान, आयत 54)
3. काफिरों पर अल्लाह की फट्कार है ।
(सूरा 2 अल बकरह, आयत 161)
4. ऐसे काफिरों का अल्लाह शत्रु है । (सूरा 2 अल बकरह, आयत 98)
5. निश्चय ही ' भूमि पर ' चलने वाले बुरे जीव अल्लाह की दृष्टि में वे लोग हैं जिन्होंने कुर्फ किया फिर वे ईमान नहीं लाते ।
(सूरा 2 अल अनफाल, आयत 55)
6. अल्लाह गैर ईमान वालों के खिलाफ षणयंत्र करता है । (सूरा 86 आयत 15)

अन्ततोगत्वा हमें (सूरा 58) आयत 19-22 में देखते हैं कि कुरआन मानवता को दो भागों में बाँट देती है-

- मौमिन (मुस्लिम) और काफिर (गैर ईमानवाले) । पहले वाला वर्ग अल्लाह का दल कहा जाता है और दूसरा शैतान का दल । मौमिन जिनको विजय का पूरा विश्वास दिलाया गया है उन्हें काफिरों के साथ युद्ध करते रहने का स्थायी आदेश है ।
यह है जिसके कारण ' जिहाद ' प्रत्येंक मुसलमान के लिए जीवन का व्यवहार हो गया है ।
पैगम्बर ने अरबवासियों को सैन्य शिक्षा दे देने के उपरान्त, विश्व विजय के निमित्त, निम्नलिखित (इब्न ए माजाह, खण्ड 2 पृष्ठ 188:189 पर अंकित) नियम निर्दिष्ट किए ।
जब शत्रुओं (गैर ईमान वालों) से मिलो तो उन्हें निम्नलिखित तीन विकल्प दोः

1. इस्लाम स्वीकार करने के लिए आमन्त्रित करों (जिसका वास्तविक अर्थ है मोहम्मद के प्रभुत्व को स्वीकार करना)
2- यदि वे प्रस्ताव स्वीकार न करें तो उन्हें आत्मसमर्पण करना चाहिए और जजिया देना चाहिए ।
3- यदि उपरलिखित विकल्पों को स्वीकार न करें तो उनसे निर्दयतापूर्वक युद्ध करो।

‘‘ किसी नबी ’’ के लिए यह समीव नहीं कि उसके पास कैदी हों जब तक कि वह धरती में (विरोधी दल को) कुचल कर न रख दे । .... जो कुछ गनीमत तुमने हासिल की हैं उसे हलाल और पाक समझकर खाओ । ’’
(सूरा 8 अल अनफाल, आयत 67-69)

यह है वह इस्लामिक जिहाद का प्रकोप जो विश्व भर में प्रवाहित हुआ । सभ्यता के संदर्भ में जिहाद की ऐतिहासिक भूमिका स्पष्ट करने के लिए निम्नलिखित निवेदन करूँगा -

1. यह बद्र का युद्ध था जिसमें जिहाद के बीज बोए गए थें ।
2- यह तूर का युद्ध था जिसमें यह स्पष्ट हो जाता है कि यदि चार्ल्स मार्टेल ने अरब की यूरोप में बढ़ती हुई सेनाओं न रोक दिया होता, तो सभ्यता जैसा उसे हम जानते हैं, कभी की जिहाद की वेदी पर, सूली पर चढ़ गयी होती ।
3- जिहाद और मजहबी साम्राज्यवाद भारत में पूर्ववर्ती आक्रमणकर्ताओं की गाथा और उसके प्राण घातक परिणाम ।

अध्याय 7

जिहाद और सभ्यता 1 (बद्र का युद्ध)

कल्पना को चाहे कितना भी विस्तार देकर देखें बद्र का युद्ध एक छोटी घटना ही थी किन्तु इसने मानव इतिहास की दिशा को उल्लेखनीय ढंग से प्रभावित किया । इस घटना के गहन अध्ययन से स्पष्ट होता है कि वह मामूली सा दिखने वाला तिल, पर्वताकार हो गया क्योंकि उस इस्लामी सिद्धान्त के , जो जिहाद के नाम से जाना गया है, व्यवहार के प्रदर्शन का यह प्रथम अवसर था ।

जिहाद अरबी भाषा का शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है ' प्रयास ' किन्तु इस्लामी आशय में इसका अर्थ है अल्लाह (अरब का ईश्वर) के लिए युद्ध रत रहना, जिससे काफिरों पर अल्लाह का प्रभुत्व स्थापित हो जाए जब तक वे अपना पंथ त्याग कर मुसलमान न हो जांए या जजिया नामक मानमर्दन कर देकर उनकी अधीनता स्वीकार न कर लें ।

गैर ईमान वालों के विरुद्ध जिहाद एक अंतहीन युद्ध है जिसमें हिन्दू, बौद्ध, अनीश्वरवादी, देववादी, संशयवादी तथा यहूदी और ईसाई समाविष्ट हैं । इस सिद्धान्त के अनुसार किसी भी व्यक्ति का सबसे बड़ा अपराध यह है कि वह अल्लाह और ईमान लाए जाने और पूजे जाने के मोहम्मद के एकमात्र अधिकार को न माने । इसलिएएक मुस्लिम देश के लिए किन्हीं भी अन्य गैर मुस्लिमों देशों पर आक्रमण करने और उन्हें दास बना लेने के लिए यह एक पर्याप्त कारण है । यह आश्चर्यपूर्ण तथ्य है कि अल्लाह, गैर मुस्लिमों पर आक्रमण, उनके वध, उनकी लूटपाट, उनकी महिलाओं के शीलभंग, और दास बनाने के कार्यो को, जिन्हें साधारण मानव भी जघन्य अपराध और घोर अनैतिक मानता है, सर्वाधिक पुनीत एवं पवित्र घोषित करके जिहाद के लिए मुसलमानों को घूस देता है ।

क्या अल्लाह को वस्तुतः एक न्यायप्रिय ईश्वर कहा जा सकता है अथवा वह अरब के सांस्कृतिक साम्राज्यवाद की स्थापना के उद्देश्य से अल्लाह की संकल्पना की हेराफेरी मात्र है । इन प्रश्नों के उत्तर के लिए हमें अरब की भौगोलिक पृष्ठ भूमि का अध्ययन करना होगा क्योंकि किसी देश की भौतिक परिस्थितियाँ वहाँ की आदतों एवं संस्कृति के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका रखती हैं ।

अरबवासियों की आर्थिक दशा के कारण वहाँ का समाज पशुपालन पर निर्भर था जो दो समूहों में बँटा हुआ था । पहला वर्ग बहुसंख्यक था और जो बिदोइन कहलाते थे जो अच्छे चारागाहों की खोज में घूमते रहते थे साथ ही साथ दूसरे कबीलों और व्यवसायिक काफिलों पर हमला करके उन्हें लूट कर अपनी अपर्याप्त आजीविका की पूर्ति किया करते थे । यद्यपि यह मात्र लूमटपाट ही थीं , किन्तु इससे उन्हें शांति, सुरक्षा और जीवन यापन की सामर्थ्य प्राप्त हो जाया करती थी और इसलिए यह कार्य पापपूर्ण नहीं माना जाता था वरन् शक्ति सामर्थ्य और सम्मान का स्रोत समझा जाता था । लूटपाट की यह संस्था जिसे ' गजवा ' कहा करते थे, पैगम्बर मोहम्मद के , जो अरब के एक महानतम राष्ट पुरुष थे, प्रादुर्भाव से बहुत पहले से ही प्रचलन मे थी । उमय्याद कवि अल कुतमी ने इस प्रथा का उल्लेख अपनी दो कविताओं में किया है । '' शत्रु पर आक्रमण करना हमारा व्यवसाय है, चाहे वह पड़ोसी हो या भाई, जब कोई न मिले तो भाई ही पर हमला कर दो । ''

यह स्पष्ट है कि दूसरों को लूटना , अरबी राष्ट्रीय चरित्र की एक विवशता थी और इसी कारण इस कृत्य को पापपूर्ण नहीं समझा जाता था, वरन् आदर और पुरुषत्व का चिह्न समझा जाता था । इसकी सार्थकता को समझकर नबी ने इसे एक मजहबी सिद्धान्त का रूप देकर जिहाद का नाम दे दिया अर्थात अरब साम्राज्य के निर्माण के लिए काफिरों के विरुद्ध पवित्र युद्ध । यद्यपि अरब साम्राज्य तत्वतः किसी अन्य साम्राज्य जैसा ही था, प्रत्यक्षतः यह दैवी दिखता था । इसलिए इसे अल्लाह का साम्राज्य कहा गया जिसे महानतम कहा गया तथापि जो सर्जन के लिए मानव पर निर्भर था ।

जिहाद का सिद्धान्त, जिसमें अरबवासियों का रजिया (लूटपाट के लिए आक्रमण) का रिवाज सम्मिलित था अपनी रचना और व्यवहार में वस्तुतः अत्यंत आश्चर्यजनक है । क्योंकि इसमें परम दयालु अल्लाह के नाम में अरब के उत्थान और गैर अरब वालों के विनाश का लक्ष्य समाविष्ट था, इस सिद्धान्त के रचयिता की बुद्धि की विलक्षणता स्पष्ट है कि उसने भेड़िये को मैमना, जैसा गलत को सही जैसा और अन्धकार को प्रकाश जैसा प्रस्तुत किया था ।

यद्यपि मैंने जिहाद के मर्म को समझाने का प्रयास पहले भी किया था किन्तु इसकी जटिलता और भावात्मक आकर्षण को देखते हुए मैं विचार करता हूँ कि इस रक्त पिपासु युद्ध तंत्र की पुनः व्याख्या करूँ क्योंकि जिहाद केवल अरत साम्राज्य निर्माण के लिए नींव का पत्थर ही नहीं बना बल्कि अरब के मजहबी साम्राज्य का भी स्तम्भ बना जो पहले वाले की राख से प्रादुर्भूत हुआ और जो मानव की बौद्धिक और नैतिक प्रतिष्ठा तथा मानवीय सभ्यता को सर्वाधिक विकट चुनौती के रूप में उभरा है । अतः मैं इस दैवी रणनीति का लघु रेखाचित्र पुनः दिखाना चाहता हूँ ।

1. जिहाद के पहले सिद्धान्त के अनुसार इस्लाम स्वीकर कर लेने के पश्चात एक व्यक्ति अपनी स्वतंत्र इच्छा खो देता है और वह अल्लाह का दास बन जाता है क्योंकि इसमें कुछ ऐसे कर्तव्य और पुरस्कार सन्निहित हैं जो कि सभ्य लोगों द्वारा समझने योग्य नैतिकता की परिधि में नही आते ं ।

'' निस्संदेह अल्लाह ने ' ईमान वालों ' से उन्हें प्राणों और उनके मालों को इसके बदले में खरीद लिया है कि उनके लिए जन्नत है ं वे अल्लाह के मार्ग में लड़ते हैं तो वे मारते भी हैं और मारे भी जाते हैं । यह अल्लाह के जिम्मे (जन्नत का) एक पक्का वादा है ।

(सूरा 9 अत तौबा आयत 111)

ध्यान रहे जन्नत विलासिता से परिपूर्ण एक स्थान है । जहाँ पर सुंदर लड़कें व कुमारी कन्याँए बहुतायत में उपलब्ध हैं । वहाँ पर प्रत्येक वस्तु मुफ्त मिलती है । पुनः वहाँ न परिश्रम करना पड़ता है न वहाँ बीमारी होती है न बुढ़ापा आता है और न मृत्यु होती है ।

2. अल्लाह का उद्देश्य क्याहै ? यह काफिरों का कत्ल करना मात्र ही है । और काफिर क्या हैं ? वह स्त्री या पुरुष जो मोहम्म को नहीं मानता, भले ही वह पुरुष या स्त्री ईश्वर प्रेमी हो तो भी इससे तनिक भी अंतर नहीं पड़ता । स्वयं को और मोहम्मद को

महिमा मण्डित कराने के लिए अल्लाह को गैरईमान वालों के कत्ल कराने का ऐसा व्यसन हो गया है कि उसने मानवता को दो स्थायी शत्रुओं में बाँट दिया है ।
'' इन पर शैतान छा गया है । और एसा कर दिया कि ये अल्लाह की याद भुला बैठे । ये शैतान के जत्थे वाले हैं । सुन लो शैतान का जत्था ही घाटा उठाने वाला है । जो लोग विरोध करते हैं अल्लाह और उसके रसूल का , वे ही सबसे अधिक अपमानित लोगों में हैं । लिख चुका है अल्लाह कि मैं विजयी होकर रहूँगा और मेरे रसूल .... । तुम ऐसा नही पाओगे कि वे लोग जो अल्लाह और अंतिक दिन पर ईमान रखते हैं ऐसे लोगों से मित्रता रखते हो जो अल्लाह और उसके र सूल का विरोध करें भले ही वे उनके बाप या उनके बेटे या उनके भाई या उनके घराने के लोग ही क्यों न हों । ....
.... उन्हें ऐसे उद्यानों में दाखिल करेगा जिनमें नहरें बह रही होंगी । .... अल्लाह उनसे राजी हुआ और वे उस से राजी हुए । ये अल्लाह के जत्थे वाले हैं । सुन लो, अल्लाह का जत्था ही सफलता प्राप्त करने वाला है ।

) सूरा 58 अल मुजादला - 19,20,21,22)
संक्षेप में इसका तात्पर्य यह है कि मुस्लिम अल्लाह के दल में हैं क्योंकि वे अपने निकटतम संबंधियों को , यदि वे काफिर हैं, तो प्यार नहीं करते । अपने इस विश्वास के कारण वे काफिरों के विरुद्ध जीतते रहेंगे , जो कि शैतान के दल के हैं ।
अब गैर मुस्लिमों के विरुद्ध युद्ध करने के विशिष्ट आदेश हैं-
'' किताब वाले जो न अल्लाह पर ईमान लाते हैं और अंतिम दिन पर , और न उसे हराम करते हैं जिसे अल्लाह और उसके रसूल ने हराम ठहराया है और न सच्चे दीन को अपनादीन बताते हैं, उनसे लड़ो यहाँ तक कि सत्ता से दस्तबरदार (विलग) होकर और छोटे (अधीन) बनकर जजिया (जान माल की सुरक्षा के बदले में कर)ए देने लगें ।
(सूरा 9 अत तौबा आयत 29)

यह आयत बल देकर कहती है कि एक मुसलमान का कर्तव्य है कि गैर मुसलमानों से युद्ध करे , किताब वालों में से अर्थात यहूदी और ईसाई भी काफिरों के वर्ग में शामिल हैं ।उनसे तब तक लड़ा जाए जब तक वे आत्मसर्मपण न कर दें और अपने अपमान के प्रतीक के तौर पर जजिया देना स्वीकार नकर लें ।
अल्लाह के नाम में काफिरों से जजिया वसूल करना इस्लाम का सच्चा उद्देश्य है । कोई भी स्पष्ट रूप से देख सकता है कि अरब वासियों ने लूटपाट करने के रीतिरिवाज को मजहब का आवरण दे कर पवित्र बना दिया । इस प्रकार लूटपाट, हत्या , बलात्कार जैसे जघन्य अपराध अब दुष्टतापूर्ण कृत्य नहीं हैं जो दण्डनीय हैं किन्तु इनमें उच्चतम पवित्रता दिखने लगी है इन्हें ऐसा बना दिया गया है जिससे ये ऊँचे पुरस्कार के याग्य हो गए जो अल्लाह अपने अनुयायियों को प्रदान करे । यदि जिहादी जीवित बचता है तो उसे लूट का माल और मृतक की स्त्रियाँ कानूनन मिल जाती हैं । इसके साथ साथ स्थायी कर के रूप में प्राप्त होती रहने वाली साम्राज्यवाद की खुशियाँ में भागीदारी होती है ।यदि वह युद्धक्षेत्र में मारा जाता है तो सीधे जन्नत चला जाता है जहाँ शराब, दूध और शहद की नदियाँ बहती हैं और जहाँ अत्यंत सुंदरी कन्यांए व कमसिन लड़के हाथ फैलाकर उनके आगमन की प्रतीक्षा कर रहे होते हैं, इस प्रकार एक मुजाहिद (पवित्र योद्धा) चाहे मरे या जीवित रहे विजयी है ।
पैगम्बर ने यह सुनिश्चित कर दिया कि लूटपाट निम्नकोटि का अव्यवस्थित काम न रहे वरन् एक आदय योग्य व अनुशासित संस्था बन जाए जिसकों दैवी स्वीकृति मिली हो ।
''समझ लो कि जन्नत तलवारों के साये में है । '' (सहीह अल बुखारी 4.73)
इस प्रकार तलवार लूटपाट और जन्नत के मध्य जोड़ने वाला पुल हो गयी और अरबवासियों के लिए विश्वविजय और शासन करने के लिए एक प्रेरक शक्ति बन गयी । बद्र का युद्ध, यद्यपि अपने आप में एक छोटी घटना थी किन्तु अरब साम्राज्यवाद स्थापना के लिए यह एक प्रमुख आधार बन गयी और विगत चौदह वर्षो से यह साम्राज्य लगातार बढ़ता ही जा रहा है ।
मोहम्मद की प्रतिभा न केवल तलवार को पवित्रता प्रदान करने मे ंथी बल्कि उन्होंन इाके लाभदायक प्रयोग का मार्ग खोज लिया, जिससे अपने व्यक्तित्व को चुम्बकीय शक्तियुक्त बना लिया जिससे अपने चारों ओर अनुयायियों की भीड़ जुटाई जा सके । जिन लोगों ने उन्हे अपना आध्यात्मिक नेता स्वीकार कर लिया उनमें से अधिकांश भूखे, ललचाए हुए, और कमीने लोग ही थे । वे अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने, और अत्याचारी मक्कावासियों से, जिन्होंने उन्हें घर छोड़ने ओर मदीना में शरण लेने के लिए विवश किया था, बदला लेने के लिए कुछ भी कर डालने के लिए तत्पर थे । मक्का से मदीना की ओर यह प्रवास मोहम्मद के अपने मजहब के आक्रामक उपदेशों के कारण हुआ था परिणामस्वरूप गैर ईमानवाले पूरी तरह क्रुद्ध हो गए थे ।
विस्थापितों के मनों की कड़वाहट इस तथ्य से और बढ़ गयी कि उन्हें अपने भरणपोषण के लिए अंसारों अर्थात मदीना के स्थानीय मुंलसमानों ईमान वालों पर निर्भर रहना होता था । यद्यपि वे शरणार्थी अंसारों के भाईचारे और आतिथ्य की प्रशंसा करते थे किन्तु उन पर निर्भरता के लिए उनमें आक्रोश था क्योंकि रीति रिवाजों के अनुसार परावलम्बन अपमान, घृ(, और पतन का ही परिचायक था ।
अपने अनुयायियों में व्याप्त निराशा को अनुभव कर ये नबी ने उन्हें उन लोगों के विरुद्ध, जिन्होंने उन्हे प्रताड़ित किया था , बदलें के लिए क्रोध की भावना भड़काकर उन्हें लूटने व सजा देने के लिए उकसा दिया । तथापि इन भावी अपराधकर्ताओं को अन्य लुटेरों और हत्यारों की तरह अधार्मिकता की कालिख नहीं लगेगी क्योंकि उन को बता दिया गया कि उनके कार्य प्रत्यक्षतः अपराधपूर्ण दिखाई देते हुए भी अल्लाह ने उन्हें शुद्ध, पवित्र व पुण्यवान बना दिया था क्योंकि उसने उन कार्यों को गैरईमान वालों के विरुद्ध जिहाद की श्रेणी में रख दिया था ।

अल्लाह सम्पूर्णता के प्यार के नशे में इतना मदोन्मत्त है कि उसे न्याय व शालीनता का विचार नहीं रहा । मोहम्मद में ईमान न लाने की भारी मूर्खता के लिए लोगों की हत्या, बलात्कार और लूट मार को पवित्रता का उच्चतम कृत्य घोषित कर देने की ढिठाई अल्लाह के अतिरिक्त और कौन दिखा सकता था ? यह ध्यान रखा जाए कि एक व्यक्ति जो कि ईश्वर में पूर्ण निष्ठा से विश्वास रखता है फिर भी वह काफिर है और जिहाद का पात्र है जब तक कि मोहम्मद का रसूल स्वीकार नहीं करता । स्पष्टतया विश्वास की धुरी अल्लाह न होकर मोहम्मद ही है ।

पवित्र लूट का यह आदेश उनके उत्सार को आसमान तक ऊँचा उठा देने का प्रभावी मार्ग हो गया था क्योंकि वे यह सब लूटपाट मात्र अपनी जेबें भरने के लिए नहीं करते थे परन्तु अल्लाह को प्रसन्न करने के लिए करते थे । इसलिए अल्लाह के सैनिक को साधारण सिपाही से दोगुना, बहादुर, दबंग और प्रचण्ड होना चाहिए था । इस प्रकार पैगम्बर ने अल्लाह की प्रसन्ना व्यक्त की :

'' निसंदेह अल्लाह उन लोगों का निवारण करता है जो ईमान लाए हैं । निसंदेह अल्लाह किसी विश्वासघाती कृतघ्न को पसन्द नहीं करता । ''

सुन ली गयी उनकी बात जिनसे लड़ाई की जाती है इसलिए कि उन पर जुल्म किया गया , निसंदेह अल्लाह उनकी सहायता का पूरा सामर्थ्य रखता है ।

वे लोग कि नाहक अपने घर से निकाल दिए गए । .... निश्चय ही अल्लाह उनकी सहायता करेगा जो उसकी सहायता करेगा ।

निसंदेह अल्लाह बलवान और प्रभुत्वशाली है ।

(सूरा 22 अल हज्ज 38-40

ध्यान दीजिए, अल्लाह ने मुसलमानों की मदद के वायदे की तरफ, ताकि वे उनसे बदला लेने का तात्पर्य अल्लाह की मदद है उसमें से दैवी रणनीति की गंध आती है, जिसमें, जैसा कि हम देखेंगे गैर मुस्लिमों को लूटने व हत्या करने को जीवन का एक पवित्र कार्य बताया गया है, बद्र का युद्ध इसका प्रथम पूर्ववर्ती उदाहरण है । यद्यपि यह एक छोटा सा ही युद्ध था किन्तु एक महान घटना बन गयी है । जिसने इतिहास की दिशा निर्धारण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । अतः विवरण जान लेना रोचक है :

621 ई0 की गर्मियों तक मोहम्मद के इस्लाम को फैलाने के प्रयास अधिक फलदायी नहीं हुए जब मदीना से आए 12 आदमियों ने जो कि वार्षिक हज समारोह के लिए मक्का आए थे, इस्लाम स्वीकार कर लिया था । उन्होंने इसे अपने साथी मदीनावासियों में फैलाने का वचन दिया था । अगले वर्ष 622 ई0 के लून में मदीना से 75 यात्री आए जिनमें 2 स्त्रियाँ सम्मिलित थीं , उन्होंने सभी को इस्लाम स्वीकार कर लिया था । अपने नए सिद्धान्त के उत्साह से प्रेरित होकर उन्होंने नबी को मदीना आने और अपने बीच में रहने का निमंत्रण दिया ताकि वे उत्पीड़न से बच सकें । मोहम्मद ने जो अब तक उनकी सुरक्षा के प्रति जागरूक को गए थे पूछा कि क्या वे उसकी सुरक्षा उनके अपने लोगों की तरह करेंगें । उनका उत्तर उत्साहवर्द्धक हाँ में ही था किन्तु उसके साथ एक शर्त भी थी कि '' यदि सुरक्षा देने में उन्हें कोई क्षति या किसी की मृत्यु हो जाती है तो उन्हें प्रतिदान में क्या मिलेगा ? नबी ने उत्तर दिया '' निस्संदेह जन्नत '' ।

इन गुप्त बैठकों ने , जिन्हें अलअलकबा की दो शपथ कहा जाता है, नबी को अपने मक्का के अनुयायियों को छोटे छोटे समूहों में मदीना जाने को समझाने के लिए उत्साहित किया । इस प्रकार लगभग 70 लोग मदीना पहुँच गए । तब मोहम्मद ने चुपचाप मदीना की अति संकटग्रस्त यात्रा की क्योंकि उनके मक्का के वासी शत्रुओं ने उनके भाग निकलने से पूर्व हीउनके वध कर देने की शपथ ले रखी थी ।

अप्रयुक्त मार्गों से होते हुए मोहम्मद 24 सितम्बर 622 ई0 को अपने गन्तव्य पर पहुँच गए । यह उड़ान ' हिजरा ' वापसी कहलाती है और इसे इस्लामिक इतिहास के परम्परागत प्रारम्भ का बिन्दु कहा जाता है यद्यपि इस्लामिक काल का प्रारम्भ 16 जुलाई 622 ई0 को अरबी वर्ष के प्रथम दिन जिसमें हिजरा अथवा उड़ान हुई थी माना जाता है । इस तारीख का महत्व इसलिए नहीं है कि इस दिन प्रवास कार्य हुआ था किन्तु इसलिए है कि इसी दिन रिश्तों के बंधन तोड़कर सब मुसलमानों की एकता घोषित हुई थी, चाहे वे कहीं भी रहते हों ।

इसकी पृष्ठभूमि समझने के लिए यह समझना चाहिए कि मोहम्मद का सम्बंध मक्का के कुरेशों से था और मदीनावासियों के सम्बंध अन्य कबीलों से थे । किन्तु इस्लाम का समानता का द्योतक तत्त्व स्वीकार कर लेने के बाद मोहम्मद सहित सभी ने अपने कबीलों के अलगाव का समाप्त कर दिया ।

हिजरा के कृत्य की यह समझ प्रथम दृष्टि में स्वर्णिम दिखती है किन्तु गहराई से विचार करने पर वह गंदगी से युक्त लगती है क्योंकि जैसे ही मोहम्मद सशक्त हुए उन्होंने पूरे जोर शोर से घोषणा कर दी कि शासन करने का अधिकार उनके अपने कबीले कुरेशों में ही निहित रहेगा । यही कारण है कि पूर्व से लेकर पश्चिम तक सारे खलीफा मोहम्मद के कबीले कुरेश से ही हुए ।

मक्का के वासियों को मदीना से स्थापित होने में 18 मास लग गए । अपने लिए मकान बनाने के लिए मोहम्मद को भूमि का खण्ड दिया गया । शक्तिसम्पन्न होते ही, अपनी प्रथम पत्नि खदीजा की , जो उनकी नियोक्ता भी थी, मृत्यु के बाद वे बहुपत्नी वाले हो गए । इस घर के चारों ओर कई छोटे छोटे घर बनवाए गए जिनमें उनकी नौ पत्नियाँ और दो रखैलें रहती थी । चूकिँ उनके अनुयायी उनके घर में नमाज के लिए एकत्र हुआ करते थे और यह घर मदीना की मस्जिद कहलाने लगा ।

मोहम्मद के अनुयायी प्रवासी और मदीनावासी '' अल्लाह की एकाकी सच्चे और उच्च मत '' इस्लाम को कबूल करने को निमित्त इनामों की आशा लगाए रहते थे । काफिर लोगों पर अत्याचार करने के बदले में ये ईमान वाले अल्लाह से इनामों की आशा

रखते थे जो सही थी । सर्वज्ञ अल्लाह ने, अपने भक्तों की प्रार्थना के बदले में मोहम्मद के माध्यम से '' जिहाद '' का सिद्धान्त प्रकट किया जिसका अर्थ है काफिरों को कत्ल करना ताकि उनकी धन सम्पत्ति और स्त्रियों पर अधिकार जमा लें । ''
सारांश यह है कि उसमें कुछ भी नया नहीं था क्योंकि अरबवासी व्यापारिक काफिलों पर स्वभावतः आक्रमण किया ही करते थे । इस कुरीति से लाभ उठाने के लिए इस्लाम में लूटपाट और हत्या की वृत्ति को चतुराई से अल्लाह महान की शान बढ़ाने वाला कार्य कहकर उसे जिहाद का नाम दे दिया गया । आम लूटपाट को दैवी पूजा बता कर लोगों की लूटने की ललक को ही उत्साहित कर दिया गया साथ ही अकथित भक्ति, अनुशासन, व दृढ़ इच्छा को भी उत्साहित कर दिया गया जिसके कारण लुटेरे, योद्धा बन गए जो बहुगुणित उत्साह के साथ अत्याचारों को करने लगे , वस्तुतः वे क्रूरतम राक्षस बन गए जो लूट को पुण्य का कार्य और कत्ल को संगीत समझने लगे ।
मक्का के कुरेश व्यवसायिक समुदाय के थे । पतझड़ के मौसम में उनके व्यापारिक काफिले यमन और अबीसीनिया जाया करते थे तथा वसन्त में सीरिया जाते थे । उनके पास बेचने के लिए सुगंधयुक्त तैल, हीरे, जवाहिरात, धातुंए और चमड़ा हुआ करते थे । अंतिम मद चमड़ा उनके निर्यात की प्रमुख वस्तु होती थी जिसकी सीरिया और फारस मे व्यापक माँग थी और उसके बदले ऊँचा मूल्य प्राप्त होता था । मक्का के ये उत्साही व्यापारी लोग गाजा और अन्य बाजारों में इनके बदले में बनी बनायी चीजें, सिल्क तथा अन्य विलासिता की वस्तुएं लिया करते थे । पुराने मापदण्डों के अनुसार ये काफिलें वास्तव में बहुत बड़े हुआ करते थे तथा 2000 ऊँटों को साथ लेकर चलते थे और उन पर लदे हुए माल का मूल्य 50000 दीनार था मिथिकल से अधिक होता था । मिथिकल सोने का सिक्का था और बाइजैण्टाइन के औरीयस के सममूल्य का था जिसका मूल्य 2/3 पाउण्ड स्टर्लिक के बराबर था । चौदह शताब्दी पहले 50000 दीनार का मूल्य आज करोड़ों डालर होगा ।
इन काफिलों की विशेष पहचान यह थी कि ये मक्कावासियों का आर्थिक जीवन थें क्योंकि इनमें न केवल समाज के अमीर निवेश करते थे किन्तु छोटे छोटे लोग भी जिन्होंने एक दो दीनारें बचायी होती थीं, लाभ के लिए पैसा लगाते थे जो कि लगभग 50 प्रतिशत हुआ करता था । ये काफिले सामुदायिक निवेश का प्रतिनिधित्व किया करते थे और उनके ऊँचे मूल्य होने के कारण बटमारों के निशाना होते रहते थे । इसलिए सुरक्षा सेना बल, जिनकी संख्या काफिले के सामान के मूल्य के अनुसार होती थी, इनके साथ चलते थे । इन व्यापारिक काफिलों की तुलना बहुत मात्रा में पुराने इंग्लैण्ड की समुद्री संयुक्त शेयर कम्पनियें से की जा सकती है जिनकी पूँजी अनेक सहभागी मिलकर एकत्र किया करते थे और उनकी निवेश की गयी पूँजी के अनुसार लाभ का बँटवारा किया करते थे ।
इन काफिलों की यात्रा की सफलता हिस्सेदारी के लिए विशेष खुशीी का कारण हुआ करती थी किन्तु जब ये काफिले लुटेरे गिरोहों के आक्रमण का शिकार हो जाया करते थे, तो बड़े ही हृद्‌य विदारक दृश्य उपस्थित हो जाया करते थे जिनमें हानि की पीड़ा स्वरूप औरतें अपनी छातियाँ पीटकर रोया करती थीं और सिर के बाल भी नोंच लिया करती थीं और रक्षा सैनिकों की मृत्यु पर दुखदायी गीत गाया करती थीं ।
जिहाद के सिद्धान्त के प्रतिपादन से मक्कावासी व्यापारियों के दिल दहल गए जो उत्तर से होने वाले व्यापार के लिए चिंतिंत हो गए क्योंकि इसका मार्ग मदीना और समुद्र के किनारे के बीच से होकर जाता था । यह जान कर आश्चर्य होता है कि पैगम्बर ने , जिसने चोरी के लिए हाथ काटने की सजा तय की थी, स्वयं 623 ई0 में तीन व्यापारिक काफिलों के विरुद्ध गजवाओं (रजिया) यानि कि लूटपाट की मुहिमों का नेतृत्व किया था । यद्यपि इन तीनों प्रयासों में वह विफल रहे, किन्तु जनवरी 624 ई0 में यमन से लौट रहे एक काफिले को मक्का के निकट नख्लाह मे लूटने में असफल रहे ।
पैगम्बर के तीसरे रजिया की विफलता वास्तव में बद्र के प्रसिद्ध युद्ध का ही भाग थी । 623 ई0 में अक्टूबर मास में सरिया जाने वाले एक काफिले का मुखिया अबू सूफियान था । इस काफिले में सीरिया बाजार मे बेचे जाने वाले अरब उत्पाद भारी मात्रा में थे । पैगम्बर ने इसके लूटमार के अभियान के लिए इच्छुक लोगों को बुलाया । लगभग 200 लोग तैयार हो गए । इनके पास मात्र 30 ऊँट थे जिन पर वे बारी बारी से सवार होते थे योजना यह थी कि काफिलें पर ओशैरा नामक स्थान पर , जो कि येन्बो के मार्ग पर पड़ता था, आक्रमण किया जाना था, किन्तु काफिला पवित्र लुटेरों के वहाँ पहुँचने से पहले ही आगे निकल गया था ।
इन काफिलों की सामग्री मुसलमानों के लिए बहुत ही उपयोगी थी क्योंकि उनके पास काफिलों से युद्ध करने और इस्लाम के विस्तार के लिए कुछ भी प्रभावी सामान नहीं था इसलिए मोहम्मद ने ओशैरा में अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए प्रयत्न किए ताकि मक्कावासियों का काफिलोँ का व्यापार और अधिक जोखिमपूर्ण हो जाए । उनके प्रयत्न फलीभूत हुए और इस क्षेत्र के कई कबीलों ने उनके साथ सन्धि कर ली । शुरू में जो अबू सूफियाँ का काफिला मोहम्मद के आक्रमण से बच निकला था उससे उनकी दैवी योजना, अस्त व्यस्त हो गयी और उन्होंने यह निश्चय किया कि इस काफिले पर वापिसी में आक्रमण किया जाए । जासूसी की कार्यवाही के समय मोहम्मद ने अपने दामाद अली को खजूर के पेड़ के साए में नीचे धूल भरी भूमि पर सोते पाया । उसका धूल भरा मुख देखकर पैगम्बर ने हास्यपूर्वक कहा ऐ ! अबू तुराब ! उठकर बैठ ! और अपनी लापरवाही का ध्यान करके वह एक दम उठकर खड़ा हो गया । शेष जीवन के लिए यह उसका उपनाम हो गया । इसीलिए उसे '' अली, अबू तुराब '' कहा गया । काफिले को लूटने का पैगम्बर का निश्चय इतना तीव्र था कि उनके मदीना के विरोधियों ने मक्का में अबू सूफियान के लोगों को भावी खतरे के प्रति सचेत कर दिया । दम दम नाम के एक योग्य व दर्फतगामी संदेशवाहक को इस बुरे समाचार के साथ मक्का भेजा गया ।

जनवरी के प्रारम्भ में टोह लेने के लिए मोहम्मद ने दो स्काउट अलहौरा भेजे जहाँ पर काफिला रुका हुआ था । इन स्काउटों को जुहैना काफिले के मुखिया ने भरपूर स्वागत किया तथा इनकी पहचान को गुप्त रखने के लिएसमुचित उपाय किए । उसकी सेवाएं इतनी मूल्यवान समझी गयीं कि बद्र के युद्ध के पश्चात उसको येन्बो इनाम में दे दिया गया ।

वह रमजान का 12 वाँ दिन था । इस काफिले का महत्व जानकर मोहम्मद अपने भेजे हुए जासूसों की , जिन्होंने स्थिति से अवगत कराना था, वापिसी की प्रतीक्षा किए बिना ही लूटपाट के अभियान पर चल पड़ा । ऐसा प्रतीत होता है कि जो कुछ भी माल काफिला ले जा रहा था उसे लूट लेने की व्यग्रता मुसलमानों के दिमाग पर बुरी तरह हावी थी । लूट में माल की बहुमूल्यता की कहानियाँ सुनकर मदीना के कुछ गैर मुस्लिम भी इस मुहिम में सम्मिलित होने के लिए आ गए । उनमें से कुछ को देखकर पैगम्बर ने अपने ऊँट के पास बुलाया और उनसे पूछा कि वे क्या करते थे । उन्होंने बताया कि वे काफिर थे किन्तू चूँकि उनके देश ने उसे (मोहम्मद) शरण दी थी इसलिए वे भी उसे अपना रिश्तेदार ही समझते थे और उस लूट में भागीदार बनने के लिए साथ जाना चाहते थे । पैगम्बर ने उत्तर में कहा कि वह अभियान ईमान लाने वालों के लिए ही था और काफिरों को ऐसे अभियान में जाने की अनुमति नहीं थी । उन्होंनें बल देकर असंदिग्ध शब्दों में कहा कि '' ईमान लाओ और युद्ध करो '' चूँकि लूट का माल बाँट लेने का यही एक मात्र मार्ग था, उन्होंने हाँ कर दी और स्वीकार कर लिया कि मोहम्मद ही अल्लाह का पैगम्बर है । इस प्रकार उस दल में जाने की अनुमति मिल गयी ।

उनकी सेना में, आवश्यक फेरबदल करने के पश्चात 315 लोग थे, जिनमें 80 शरणार्थी थे यानी कि जो लोग मोहम्मद के साथ मक्का से आए थे, और शेष में से लगभग एक चौथाई '' औस '' और बचे खुचे '' खजराज '' से संबधित थे । लूट अभियान के लिए उनके पास केवल दो घोड़े और तीस ऊँट थे जिन वे लम्बी व कठिन यात्रा के दौरान बारी बारी से सवार होते थे । इनकी संख्या और सैन्य सामान को देखकर उसे सेना नहीं कहा जा सकता था किन्तु प्रभाविता की दृष्टि से उनके उत्साह, क्रूरता और सहनशक्ति की समता विशाल शक्तिसम्पन्न आतिथेय भी नहीं कर सकता था । उनके द्वारा स्वीकार किया गया नूतन मजहब नैतिक, न्याय, और पवित्रता का अजी प्रारूप था, जो कि जिहाद की अवधारणा पर आधारित था, इसमें काफिरों के विनाश, लूटपाट, बलात्कार आदि की भर्त्सना के स्थान पर इनकी प्रशंसा होती थी और इहलोक में मजहबी सफलता तो परलोक में जन्नत के सुख प्राप्त होने का निश्चित मार्ग बताया गया था ं । ऐसे मजहब के उत्साह ने जिसमें हानि, हार और पाप के विचारों को सर्वथा मिटा दिया गया हो, अल्लाह के इन सैनिकों के हृद्यों में आगे बढ़ने के अनुपम प्रेरणा और उत्साह तथा उस माल को , जो कानूनन निवेशको का था, लूट लेने के प्रबल इच्छा पैदा कर दी थी ।

इन पवित्र सैनिकों ने कुछ दिनों तक तो मक्का के लिए सीधा मार्ग पकड़ा किन्तु अस सफरा पहुँचकर ये बद्र की ओर मुड़ गए जो कि सीरिया के मार्ग में एक विश्राम स्थल था । स्थानीय लोगों की गपशप से मोहम्मद के खोजियों को पता चल गया कि अबू सूफियाँ का काफिला वहाँ पहुँचने वाला है ं यह सूचना सही थी किन्तु अबू सूफियाँ एक समझदार व्यक्ति था । आगामी संकटों का अनुमान करके उसने तुरंत एक संदेश वाहक को एक शक्तिशाली (सुरक्षा बल के लिए मक्का भेज दिया ।

मक्कावाले, जिन्होंने नाख्ला पर हानि उठाई थी उस प्रकार के अपमान की पुनरा वृत्ति देखने के लिए तैयार नही थे । पुनः यह काफिले की सामग्री सम्पूर्ण वर्ष भर की थी जिसका मूल्य लगभग 50000 स्वर्ण मुद्रांए थीं । उसके लूट लिए जाने से सारे समुदाय का दिवालिया निकल जाने की स्थिति हो सकती थी । डर और क्रोध का मिला जुला भाव सारे मक्का समुदाय में छा गया था और प्रत्येक परिवार ने अपने माल के अनुपात के अनुसार काफिले की सुरक्षा के लिए एक योद्धा प्रति परिवार का योगदान किया । शीघ्र ही 800 लोगों की एक सेना एकत्र हो गयी जिसके साथ स्त्रियों का एक जत्था भी था जिसकी विशेषता युद्ध के लिए उत्साहित करनेवाले गीत गाने की थी जिन्हें सुनकर एक मेमने के दिल वाला व्यक्ति भी शेर बन जाए । उनके युद्ध के संगीत की धुनों और नगाड़ों के घोष तथा उसके पदचापों की आवाज ने मक्का के सैनिकों को अपने शहर और पूर्वजों की माना मर्यादा की रक्षा के लिए प्राण न्यौछावर कर देने के लिए प्रेरित किया ।

जैसे ही सेना अल जोहफा पहुँची तो अबू सूफियाँ का संदेशवाहक दृष्टिगत हुआ । उसने अबू जाहल को जो कि सेना का प्रधान था बताया कि अबू सूफियाँ का काफिला तेज चाल के कारण और चोरी छिपे यात्रा करके मोहम्मद के गिरोह से बचने में सफल हो गया है और सब ठीक ठाक है । उन्होंने राहत की सांस ली । किन्तु यह प्रश्न उत्पन्न हुआ कि क्या वेबिना युद्ध लड़े ही वापिस चले जांए । सेना के प्रमुखों में आवेश युक्त विचार विमर्श हुआ । एक दल का विचार यह था कि चूँकि कोई नुकसान नहीं हुआ है यु0 करने का कोई औचित्य नहीं है और यह भी तर्क दिया कि विरोधी पक्ष में उनके सगें संबंधी थे, उनका वध करके उनकी अन्तरात्मा सदैव पीड़ित रहेगी । अतः शांति से घर लौट जाना सिर्फ बुद्धिमानी ही नहीं वांछनीय भी था ।

दूसरी ओर अबू जाहल ने जो माखजूम कबीले का नेता था , अंत तक युद्ध करने का आग्रह किया । उसका कहना था कि उनका वापिस लौट जाना उनकी कायता का परिचायक होगा और नीति का कथन है कि बुराई को प्रारम्भ में ही समाप्त कर दिया जाए वर्ना मोहम्मद की काली छाया बढ़ती ही जाएगी । और उसका डर सदैव बना ही रहेगा ं । उसके बार बार कहने पर उसके तर्क की विजय हुई और उन्होंन फव्वारे के पास तीन दिन मौजमस्ती में बिता दिए ।

दूसरी ओर मोहम्मद भी बद्र की ओर बढ़ रहे थे । जब वह आर रूहा पहुँचे तो उन्हें ज्ञात हुआ कि कुरेश, जिन्हें संकट का ज्ञान हो गया था, उसकी ओर ही बढ़ रहे थे । इससे युद्ध की एक परिषद के निर्माण की आवश्यकता बढ़ गयी । मक्का वासियों की सोच के विपरीत मुस्लिमों ने खून के रिश्तों के प्रति घृणा की भावना दिखाई और शीघ्र युद्ध के लिए तीव्र इच्छा प्रकट की ।

यहाँ मोहम्मद के व्यक्तित्व के करिश्में और राजनीतिक प्रवणता का उल्लेख आवश्यक है । वह मदीना में अपने मदीना के अनुयायियों के वचनों के कि वे जब वह उनके बीच होगा तो अपना खून बहाकर भी उसकीरक्षा करेगें, सहोर आए थे । युद्ध परिषद को विशेषकर मदीनावासियों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने घोषणा की कि उसकी शपथ न तो किसी आक्रमण की दशा में

उनके द्वारा उसकी रक्षा हेतु लागू थी और नही किसी घटना पर जो (मदीना के) बाहर घटित हो । अतः यदि वे उसका साथ छोड़ना चाहते थे तो वे एसा करने के लिए स्वतंत्र थे ।
यद्यपि एक राजनीतिक मस्तिष्क इस अवसर का अर्थ भिन्न ढंग से लगाऐगा किन्तु ईमानवालों को इस घोषणा में मोहम्मद की पवित्रता, महानता और नैतिकता दिखाई दी जो कि मदीना के इतिहास में तब तक अनहोनी ही थी । उनके प्रवक्ता सैदबिन मोआध के शब्दों से स्पष्ट है कि वे सभी मोहम्मद के भाषण से कितने सम्मोहित हो गए थे । उसने कहा था '' हे अल्लाह के दूत ! जहाँ आपकी इच्छा हो वहाँ जाओं, जहाँ आप डेरा डालें, आप चाहे युद्ध करो या जिससे चाहो, उससे शांति स्थापित करो । परन्तु मैं उस अल्लाह की कसम खाता हूँ जिसने इस सच्चाई के साथ भेजा है कि तुम जब तक हमारे ऊँट न गिर जाएं बढ़ते रहेंगे, हम तुम्हारे साथ दुनिया के आखिरी कोने तक भी जाएंगे, हममें से कोई एक भी पीछे नहीं रहेगा ।
यह बात भी याद रहे कि सभा के अंत में मोहम्मद ने जो कि '' समस्त मानवता के लिए अल्लाह की दयालुता '' का दावा करते थे काफिरों के लिए दैवी शाप का आह्वाह्न किया और प्रार्थना की '' हे अल्लाह ! अबू जाहल, जो कि अपने लोगों का सरताज है, बचे नहीं, और जमा को बचना नहीं चाहिए , बल्कि उसके बाप की आँखे रोते रोते लाल हो जांए और वह अंधा हो जाए ।
मोहम्मद के इस शाप के पीछे एक मनोवैज्ञानिक उद्देश्य था ।
काफिरों की तुलना में उनकी संख्या कम होने से उन्हें इससे यह विश्वास कराया गया कि उनके पास काफिरों को समाप्त कर देने के लिए पहले से शक्ति थी कि वे शत्रुओं का वधकर उन्हें समाप्त कर सकें । मोहम्मद के प्रति निष्ठावान ईमान लाने वालों के लिए जो अपने ईमान न लाने वाले माता पिता तथा भाइयों से, पैगम्बर के प्रति श्रद्धा दिखाने के लिए घृणा करते थे, यह अविश्वस्नीय था कि काफिरों के विरुद्ध मोहम्मद की प्रार्थना अनसुनी हो जाएगी । इस विश्वासके द्वारा सुदृढ़ होकर उनका निश्चय और सशक्त हो गया कि वे भारी लूट पाट के साथ उनकी मारकाट करें ।
पैगम्बर ने युद्ध के लिए बद्र को चुना । इससे उनकी सैन्य दक्षता और उद्देश्य का गम्भीरता प्रमाणित होती है ँ वह चाहते थे कि चुद्ध निर्णायक हो और कोई भी दल बचकर भाग न पाए । उनको मालूम था कि उसके अनुयायियों का साहस, उनके मजहबी विश्वास से उत्पन्न होने के कारण, उनके विरोधियों की अधिक संख्या बल की उत्कृष्टता की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली था । काफिरों के ऊपर प्राणघातक आक्रमण इस्लामी साम्राज्य की नींव रखेगा ।
बद्र मदीना के निकट स्थित है जो पैगम्बर का शहर कहलाता है । यह एक घाटी है जो समतल है, जिसकेपूर्व में औरउत्तर में खड़ी पहाड़ियाँ हैं । दक्षिण की ओर नीचा पथरीला भाग है और पश्चिम में रेत के टीले हैं । एक छोटा झरना जो कि इधर उधर शाखाओं में विभाजित हो जाता है , इसके मध्य में बहता है । पैगम्बर ने अपनी सेना के लिए सबसे अधिक लाभदायक झरना चुनकर शेष का नाश कर दिया । यह बुद्धिमत्ता एक सैनिक दांव पेंच था जिससे युद्ध क्षेत्र के पानी के साधनों पर उनका अधिकार सुनिश्चित हो गया ँ
युद्ध के एक दिन पूर्व मोहम्मद ने विस्थापितों (प्रवासियों) का झण्डा मुसाब के हाथों में दे दिया, खजरजीत की निशानी अलहुबाब को दी और और का झण्डा साद बिन मोआध को सौंप दिया ।
यहाँ पर पुनः युद्ध का स्थल चुनने में मोहम्मद की तकनीकी बुद्धिमत्ता सामने दिखाई देती है । जैसे ही लगभग 1000 लोगों की कुरेश सेना मोहम्मद की ओर बढ़ी अरब के चमकते हुए सूर्य की किरणें उनकी आँखों में पड़ी और उनकी चलना कष्टमय हो गया । इसके अतिरिक्त शत्रु की संख्या बेहद अधिक संख्या बल की उत्कृष्टता पहाड़ी के पीछे होने के कारण दिखाई नहीं दी । स्थिति की गम्भीरता को समझते हुए नबी ने अल्लाह से फिर प्रार्थना की युक्ति का प्रयोग यिा ताकि उसके अनुयायियों की अंधविश्वासी शक्तियाँ जुटा कर वे चुद्धक सेना हो जाएँ । अपने हाथ ऊपर उठाकर उन्होंने अपने रचयिता का आह्वान किया और कहा हे अल्लाह ! मुझे वह दे दो जिसका वायदा तुमने मुझसे किया था । ओ अल्लाह ! यदि मुसलमानों की इस छोटी सी सेना का विनाश हो जाता है तो इस दुनिया में तुम्हें कोई भी नहीं पूजेगा ।
(मुस्लिम खण्ड3, 4360)
इतिहासकारों को यह विचित्र लगेगा कि एक व्यक्ति अपने रचयिता से कहे कि यदि वह उसकी नहीं सुनेगा तो क्या होगा और सर्वशक्तिमान उसकी बात इस डर से मान लेता है कि यदि वह नहीं मानेगा तो लोग उसकी पूजा करनी छोड़ देगें , किन्तु उसके अनुयायी, जन्नत की हूरों और लड़कों के वायदों के नशे में थे, उन्हें एसी कोई भी आंशका नहीं थी । उनको विश्वास था कि अललाह मोहम्मद के निर्देशों पर चलता है और युद्ध का अंत उनकी घनघोर विजय के रूप में सम्पन्न होगा ।
अरबवासियों में रिवाज था कि युद्ध आरम्भ करने से पहले वे एक से एक द्वन्द्व युद्ध करते थे । जैसे ही शेबा , उसका भाई ओत्बा और , अल वालिद द्वन्द्व युद्ध के लिए आगे बढ़े तो मोहम्मद की सेना में से मदीना के तीन नागरिक जो प्रवासी नहीं थे, द्वन्द्व के लिए आगे बढ़े ।
यहाँ पर हमें नबी की कबीलापन की मनोवृत्ति के दर्शन होते हैं कि वह यह नहीं चाहते कि युद्ध शुरू करने का मान उसके अपनों को छोड़ कर किसी अन्य को मिले । उन्हें वापिस बुला कर वे चिल्लाए कि '' ऐ हाशिम के पुत्रों ! उठो ! और अपने अधिकार के अनुसार युद्ध करों । ''
किन्तु नबी का कुरैशों के प्रति झुकाव , उनके सैनिकों का चुनाव द्वारा भली प्रकार संतुलित था । फौरन तीन सैनिक जो अपनी वीरता साहस और युद्ध कौशल के लिए विश्यात थे आगे बढ़े । इनके नाम थे अली (नबी का दत्तक पुत्र तथा दामाद), हमजा (पैगम्बर का चाचा) और औबिदा । जैसे ही काफिरों ने यह देखा कि उनके वीर पुरुष मुसलमानों के बलि वेदी का बकरा बनने जा रहे हैं उनका दिल बैठने लगा । इससे आश्चर्यजनक यह बात थी कि पैगम्बर की वीरता जो कुरआन की आयतो को गा गाकर

अपनी तलवार ऊँची उठाकर एक ऊँचे ग्रेनाइट पत्थर की भाँति अपने अनुयायियों के मध्य खड़े होकर उनको शहीदी के लिए जन्नत के पुरस्कार का आश्वासन दे रहे थे ।

एक सोलह वर्षीय मुस्लिम लड़के की कहानी जिसका नाम ओमीर था और जिसको इस युद्ध में शामिल होने की आज्ञा मिल गयी थी, ध्यान देने योग्य है। वह भूखा था और खजूर खा रहा था, जब उसने शहीद होने पर जन्नत प्राप्ति के पैगम्बर के वायदे को सुना । अपने हाथ में खजूर को घृणापूर्वक देखकर बोला कि " क्या ये खजूर ही है जो मुझे जन्नत से दूर रखे हुए है ? मैं इन्हें तब तक नहीं खाऊँगा जब तक मुझे मेरा अल्लाह न मिल जाए ।

इस विश्वास से उत्साहित होकर शत्रु पर टूट पड़ा और शहीद होने की उस सुरा का पान किया जिसको अधिकांश लोग घृणा की दृष्टि से देखते हैं किन्तु कुछ ही प्यार करते हैं ।

एक और बताने योग्य कहानी है कि अबू जाहल को कत्ल करने वाले मोआध की , जिस पर उसके पुत्र इक्रिमा के आक्रमण किया था । इस त्रासदी युक्त कार्य में मोआघ की भुजा उसके कंधे से लगभग अलग हो गयी थी । उसकी भी शहीद होने की उत्कट इच्छा थी जो उसका लक्ष्य था, और उसका विश्वास था कि युद्ध में नीचे स्तर का कार्य उसके स्वर्गीय इनाम की तुलना में ठीक नहीं था । चूँकि उसकी झूलती हुई भुजा के कारण वह युद्ध में सर्वश्रेष्ठ निष्पादन नहीं कर पा रहा था उसने अपनी भुजा पर पैर रख कर दैवी वीर के उत्सार से उसे अलग कर दिया और शत्रु पर आक्रमण कर दिया जिससे उसके सर्वाधिक प्रिय लक्ष्य की प्राप्ति हो सके ।

क्या यह मोहम्मद के अनुयायियों की वीरता मात्र ही थी जिसके कारण उस दिन उनको विजय प्राप्त हुई ? वस्तुतः यह भी विजय प्राप्ति का एक बड़ा कारण था किन्तु पैगम्बर ने लोगों को जो प्रेरणा दी थी यह विजय का प्रमुख कारण था । यद्यपि उनके अनुयायी उनको अनपढ़ मानते हैं किन्तु वे भीड़ के मनोविज्ञान में निपुण थे और इस तंत्र को चलाने की प्रक्रिया में बेजोड़ थे ।

रमजान के सत्रहवें दिन हिजरा के दूसरे वर्ष (623 ई.) में यह युद्ध हुआ था, इस दिन बारंबार तूफान आ रहा था । जैसे ही तीव्र आँधी का पहला झोंका आया पैगम्बर ने अपने अनुयायियों से कहा कि गैबरील फरिश्ता एक हजार फरिश्तों को लेकर मुसलमानों के उद्देश्य की पूर्ति के लिए सहायतार्थ आ पहुँचा है ं उसके बाद के आए चीर देने वाले दो झोंकों के विषय में उन्होंने कहा कि फरिश्ता माइकल और फरिश्ता इज्राफील दोनों ही प्रत्येक 1000 फरिश्तों की अतिरिक्त सेनांए लेकर मुसलमानों की तरफ से लड़ने के लिए आ गए हैं ।

किसी को भी विचार नही आया कि फरिश्ते केवल मोहम्मद को ही क्यों दिखाई दे रहे हैं
? आक्रमणकारियों को क्यों नही दिखाई दे रहे हैं ? पुनः फरिश्ते निश्चय ही बड़े दुर्बल प्राणी होगे कि मात्र 1000 मक्कावासियों के विरुद्ध युद्ध करने के लिए तीन हजार फरिश्ते की आवश्यकता थी । इस विषय में कुरआन की निम्नलिखित आयतें इस घटना की पुष्टि करती हें ।

और बद्र (की लड़ाई) में अल्लाह तुम्हारी मदद कर भी चुका था , जबकि तुम बहुत कमजोर थे । तो अल्लाह का डर रखों ताकि तुम कृतज्ञता दिखा सको । (123)

याद करो जब तुम ' ईमान लाने वालों से कह रहे थे कि क्या तुम्हारे लिए यह काफी नहीं है कि तुम्हारा ' रब ' तीन हजार फरिश्ते उतार कर तुम्हारी सहायता करे ? (124)

हाँ यदि तुमन धैर्य से काम लिया और (अवज्ञा) से बचते रहे और वे तुम पर चढ़ भी आए, इसी क्षण तुम्हारा ' रब ' पाँच हजार विध्वंसकारी फरिश्तों से तुम्हारी सहायता करेगा । (125)

(सूरा 3 आले इमरान 123-125

इस वक्तव्य से मोहम्मद ने अपने पैगम्बर के लिए सम्पूर्ण श्रेय ले लिया जिसको अल्लाह ने स्वीकार करके 3000 दैवी योद्धा भेज दिए और भविष्य में काफिरों के विरुद्ध होने वाले युद्ध में 5000 युद्धक फरिश्तों का वायदा भी कर दिया था ।

पाठ्कों को पैगम्बर के अपने प्रमुख शत्रु अबू जाहल के प्रति व्यवहार को, जिस कि उनके सामने तब लाया गया जबकि वह अपनी अंतिम साँसे ले रहा था, जान लेना चाहिए । जब वह पैगम्बर के पैरों में पड़ा हुआ था तो पैगम्बर ने उसकी ओर देखा और कहा " यह मुझे अरब से सर्वश्रेष्ठ चुने हुए ऊँट से भी अधिक स्वीकार्य है । "

अब हम लूट के माल पर आते हैं जो कि इस्लामी युद्धों का उद्देश्य है जिसको अल्लाह ने स्वयं स्वीकृति दी है जिससे जो लोग इस्लाम के साम्राज्यवाद के आगे झुकने से इंकार करें और जो मानवता की मर्यादा का दावा करें , उनके हृद्य आतंक से दहल जांए ।

आधुनिक मापदण्डों के अनुसार बद्र के युद्ध में प्राप्त लूट के माल का मूल्य भले ही नगण्य हो किन्तु अरबवासियों की उस समय की आर्थिक दशा को देखते हुए उसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ा और अरब साम्राज्य की स्थापना में इसकी विशिष्ट भूमि रही । " लूट " में 115 ऊँट , 14 घोड़े, परिधानों और कालीनों और दरियों का विशाल भण्डार, उत्तम चमड़े की अनेक वस्तुएं और भरपूर सैन्य सामग्री थी ।

अबू जाहल की प्रसिद्ध तलवार " धुल फिकार " नबी के हिससे मे आयी ।

बद्र का युद्ध जिहाद के सिद्धान्त के आधार पर हुआ जिसका तात्पर्य ऐसा अरब साम्राज्य बनाना है जिसमें गैर मुस्लिमों के सभी अधिकार छीन लिए जांए सिवाए इसके कि वे अपने अरब स्वामियों की सेवा करते रहें । यह दासता अल्पकालिक नहीं वरन् अनंत काल के लिए हैं क्योंकि जिहाद में गैर मुस्लिमों का स्थायी और सतत निरादर निहित है जिसकों

उन्हें अनंत काल तक के लिए दास बनाकर जजिया की वसूली के लिए प्राप्त किया जाता है । इस दर्शन का जब हम गहराई से अध्ययन करते हैं तो ज्ञात होता है कि उसकी शाखांए गैर अरबी मुसलमानों तक भी पहुँच गयी हैं जिन्हें बलात मुसलमान बनाया गया था । इन लोगों से यद्यपि जजिया नहीं वसूल किया जाता था किन्तु दूसरे दर्जे जैसे नागरिकों जैसा व्यवहार किया जाता है और पंथ की सर्वोपरिता के आधार पर उनका आर्थिक व मनोवैज्ञानिक शोषण भी किया जाता है । जिसमें अरबी मुसलमनों को दूसरे गैर अरब मुसलमनों पर वरीयता दी जाती है । इस विषय पर चर्चा मैं बाद में करूँगा किन्तु यहाँ जिहाद की विशिष्टता ओर उसका काफिरों के विरूद्ध एक युद्ध सिद्धान्त के रूप में वर्णन करूँगा ।

1. एक मुस्लिम राष्‍ को किसी गैर मुस्लिम राष्‍ पर आक्रमण करने के लिए किसी विशेष कारण की आवश्यकता नहीं है । मोहम्मद की अल्लाह का अंतिम रसूल न मानना ही स्वयं में एक जघन्य अपराध है । कुरआन के अनुसार इस्लाम को छोड़कर शेष सभी मजहब झूठे हैं । इस प्रकार अल्लाह सभी गैर मुस्लिमों का शत्रु है जो सूर्य के नीचे संसार में निकृष्टतम जीव हैं ।

यह गप्प है कि किताब वाले होने के कारण यहूदी और ईसाई इस प्रतिबंध से मुक्त हैं । पैगम्बर की एक हदीस कहती है –

अल्लाह के दूत (मोहम्मद) ने कहा – .... यहूदियों और ईसाइयों मे समुदायों में वह जो कोई मेरे विषय में सुनता है और उस में जिसके साथ (कुरआन (मुझे भेजा गया है, यकीन नही रखता और इस (अविश्वास की) स्थिति में ही मर जाता है वह दोखज की आग में जलने वालों में से ही एक होगा । सही मुस्लिम, खण्ड1 हदीसः 284

अन्य सब मजहबों को निरस्त करके पैगम्बर ने उनके प्रति एक कार्य प्रणाली निर्धारित की है :-

1. '' मुझे (अल्लाह से) लोगों के विरुद्ध तब तक युद्ध करने का आदेश मिला है जब तक वे यह स्वीकार न कर लें कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं है और मुझमें ईमान लाएं कि मैं ही (अल्लाह का) दूत हूँ और उसमें जो मैं लाया हूँ । ओर जब वे ऐसा कर दें तो उनकी जान और उनके माल की सुरक्षा की मेरी ओर से गारण्टी हैं सिवाय इसके कि यह कानूनन उचित हो ।

(सहीह मुस्लिम, खण्ड 1 हदीस 31)

यहाँ पर अंदिग्ध रूप से स्पष्ट है कि किसी भी व्यक्ति या राष्‍ के लिए यह सबसे बड़ा अपराध हे कि वह इस्लाम को अस्वीकार करे और समस्या का सही समाधान है – अत्याचारों , काफिरों के विरुद्ध एक अंतहीन युद्ध ।

2. मान कि साम्राज्य वाद की संस्था का आविष्कार अरब में नहीं हुआ । लूट के उद्देश्य से दूसरे राष्ट ्रों की हत्या चाहे वह रोमवासी ने, चाहे ईरानियों ने, या मुगलों ने या अंग्रेजों ने की हैं, समान रूप से निन्दनीय हैं ।

सभी साम्राज्य जैसे जैसे सभ्य होते गए, मानव मर्यादा के प्रति सजग होते गए, उन्होंने यह समझ लिया कि अपने व्यक्तिगत या सामूहिक लाभ हेतु दूसरों की हत्या, मारकाट, उन्हें अपंग बनाना आदि नैतिक दृष्टि से गलत है । वास्तव में शनैः शनैः मानव अधिकारों को न्याय संहिता और आर्थिक विकास द्वारा स्वीकार कर लिया और इस अवधारणा को रंग, जाति भेद के बिना सभी पर लागू कर दिया । आज हम ऐसे संसार में रह रहे हैं जहाँ लूट, हत्या, बलात्कार, न्याय न दिलाना, अधिकारों के हनन को बुरी से बुरी नैतिक कुरीतियों मे गिना जाता है किन्तु नैतिकता का यह मानक इस्लामी दुनिया में कोरी बकवास है । क्यों ?

क्योंकि इस्लाम को न मानना इतना गम्भीर अपराध माना जाता है कि एक व्यक्ति के मानवाधिकारों को तब तक छीन लेने और उसे निरंतर प्रताणित करते रहना पूर्णतया न्यायोचित है जब तक कि वह मोहम्मद के पैगम्बर पन को स्वीकार न कर ले । इस्लाम में विश्वास रखना ही एक मात्र अच्छाई समझी जाती है । यही कारण है कि एक मुसलमान कितना भी दुश्चरित्र हो , जन्नत में जाएगा और एक गैर मुस्लिम कितना ही सदाचारा और चरित्रवावन हो, दोखज में ही फेंका जाएगा । इस विश्व में इस प्रकार का भेदभाव का व्यवहार इस्लामी संस्कृति का आधार है । यह भी एक छोटा सा आश्चर्य है कि जिहाद इस्लामी संस्कृति का आधार है जिसके अनुसार गैर मुस्लिमों की हत्या, बलात्कार और लूट को सर्वोच्च गुण और जन्नत प्राप्ति के लिए असंदिग्ध गारण्टी समझा जाता है । किन्तु इसका प्रधान आकर्षण लूट का माल है जो कि घोर अपवित्र होने पर भी लूट मार करने के लिए सबसे बड़ा प्रेरक कारण हो जाता है ।आ ैर इसको एक मुसलमान की पवित्रता वृद्धि का कारक माना जाता है । मानव का मानव से घृणा करने का यह दर्शन बद्र के युद्ध में गहराई से निहित है और सारे मुस्लिम जगत के लिए एक मार्गदर्शक पूर्वोदाहरण है ।

अरबवासी मुसलमानों ने गैर अरबवासी मुसलमानों को भी अपने बराबर नहीं माना है । उदाहरण स्वरूप कोई भी भारतीय, पाकिस्तानी या बंग्लादेश मुसलमान किसी भी अरब देश में किसी महत्वपूर्ण मंत्री या शासकीय पद पर कार्य नहीं कर रहा है । उनकी व्यवहारिक दशा काफिरों की दशा से भी खराब हैः जब गैर मुस्लिम प्रजाओं ने अरब आधिपत्य की सांकले तोड़ी तो वे स्वतंत्र हो गए और समय बीतने के साथ उनसे भी अधिक उन्नत होते गए । किन्तु गैर अरब मुस्लिम राजनीतिक दृष्टि से स्वतंत्र हो जाने के बाद भी आध्यात्मिक व मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अब भी अरब के दास बने हुए हैं । यह अरब साम्राज्यवाद की विशेषता है जो मोहम्मद की देशभक्ति और बुद्धिमत्ता को प्रदर्शित करती है । यह एक दंतकथा नहीं है वरन् तथ्य है कि क्यांकि इस्लाम अनिवार्य रूप से अरब राष्ट्रीय हितों का दूत है जो कि मजहब के नाम में अरब साम्राज्यवाद को स्थायी बनाने वाला है । पैगम्बर की बुद्धिमत्ता की प्रशंसा किए बिना नहीं रहा जाता जिन्होंनें अपने देश को दैवी आदर का केन्द्र बना दिया और तत्पश्चात सारे विश्व के अपने अनुयायियों को दोखज का भय दिखाकर मक्का की ओर दण्डवत पड़ने के लिए प्रेरित कर दिया जिससे वे जन्नत के अधिकारी बनें ।

निम्नलिखित रणनीतियों पर स्वयं ही विचार कीजिए । नबी ने घोषणा की –

1. अल्लाह ने जिसने दुनियाँ बनाई, काबा (मक्का, अरब का केन्द्र) को अपने घर के रूप में आदम द्वारा बनवाया जिसे फिर से अब्राहम द्वारा बनवाया गया । इस प्रकार अरब की भूमि, अल्लाह का घर होने के कारण अन्य सभी भूमियों से श्रेष्ठ है ।
2. मृत्यु होने के पश्चात एक मुसलमान का शरीर मक्का (अरब के प्रति भक्ति का निमित्त) की ओर रखकर दबाया जाना चाहिए नहीं तो उसे जन्नत में स्थान नहीं मिलेगा ।
3. मक्का (मोहम्मद का जन्मस्थल) इतना पवित्र है कि इस शहर की ओर मुंह करके शौच नही करना चाहिए जो ऐसा करेगा वह काफिर है और दोखज में जाएगा ।
4. अरबी केवल कुरआन की ही भाषा नहीं है किन्तु वह अल्लाह की भाषा है । इसलिए हर मुसलमाना को ईश्वरीय होने के लिए अरबी सीखना और बोलना चाहिए ।
5. हदीस सं 5751 (मिस्कट खण्ड 3) में पैगम्बर में निम्न कथन का वर्णन है ।

अरब वासियों से तीन कारणों से प्यार करो (मैं अरबी हूँ) 2. पवित्र कुरआन अरबी में हैं । 3. जन्नत में रहने वालों की भाषा भी अरबी में ही होगी ।

6. प्रत्येक मुसलमान को जहाँ कहीं भी रहता हो, यदि उसके पास साधन हो तो अपने जीवन में कम से कम एक बार मक्का की तीर्थयात्रा अवश्य करनी चाहिए ।

मुसलमानों का यह मजहबी कर्तव्य सदियों से (सऊदी) अरब की एक महत्वपूर्ण आर्थिक रक्तवाहिनी नाड़ी बनी हुई है और पैगम्बर द्वारा अरब साम्राज्यवाद की शान बनाने के लिए गैरमुस्लिमों पर लगाए जाने वाले जजिया के ही एक स्थानापन्न की भाँति है ।

7. इस्लाम का अरब साम्राज्यवाद का राजदूत होना वास्तव में इस तथ्य में निहित है कि गैर अरब मुसलमानों से यह माँग की जाती है कि वे अरबी संस्कृति व नैतिकता को अंधभक्त की भाँति स्वीकार कर लें । यह कैसे किया जाता है ?

इस असम्भव लक्ष्य को सम्भव बनाने के लिए एक दैवी आदेश का सहारा लिया गया जिसके अनुसार अनुसार अल्लाह ने मोहम्मद को प्रत्येक ईमान लाने वाले के लिए व्यवहार को आदर्श बनाया है, जिसका पालन, दोजख की आग से बचने और जन्नत की विलासिताएं पाने के लिए करना चाहिए ।

निश्चय ही तुम लोगों के लिए अल्लाह के रसूल में एक उच्च आदर्श था उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और अंतिम दिन की आशा रखता हो और अल्लाह को अधिक याद करे

(सूरा 33, अल अहजाब 21)

इस्लाम में अंतिक दिन का आशय कयामत के दिन से है जब एक व्यक्ति का भाग्य दोखज ओर जन्नत की दृष्टि से तय किया जाएगा । और इस फैसले का आधार यह होगा कि उसने पैगम्बर का व्यवहार के आदर्श के रूप में अनुसरण किया गया है अथवा नहीं । स्पष्ट भाषा में जन्नत उन्ही लोगों के लिए है जो मोहम्मद की ही भांति सोचते, अनुभव करते चलते हैं , बातचीत करते हैं, सोते हैं , खाते पीते हैं । हम सभी जानते हैं कि मोहम्मद एक बड़े अरब देश भक्त थे तथा अरबी संस्कृति का अनुसरण करते थे । अतः प्रत्येक गैर अरब मुसलमान को अरब का मोहम्मद की ही भाँति आदर करना चाहिए और अरब के नैतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक मूल्यों को भी अपना लेना चाहिए ।

यह कोई कपोल कल्पना नहीं है वरन् यह सब उन सब देशों में वास्तविकता मे ं हो रहा है जो इस्लाम के प्रभाव में हैं , यह सिद्धान्त अरब साम्राज्यवाद की नींव है , और यह मजहब की ही शक्ति से स्थायी होता है , इससे यह बात भी नगण्य हो जाती है कि राजनीतिक दृष्टि से अरब उनके पूर्ववर्ती है या नहीं ।

पुनः इस्लाम या अरब का साम्राज्यवाद रोमन, ईरानी , तुर्की और इंग्लैण्ड के साम्राज्यवाद से भिन्न है क्योंकि यह आर्थिक और राजनैतिक शक्ति पर आधारित नहीं है अपितु मजहब पर आधारित है जो कि मानव दुर्बलता का शोषण है जो अनिश्चितता के सहज भय से उत्पन्न है । परिणाम स्वरूप मानव को ऐसा लगता है कि वह ऊब रहा है और उसे तिनके के सहारे के अपेक्षा है चाहे वह कृत्य कितना ही बृद्धि के विपरीत क्यों न हो ।

अपने अनुयायियों पर विश्वास की अधिनायकता को थोपकर इस्लाम ने उनकी विवेक व खोज की शक्तियों को पूरी तरह समाप्त कर दिया है जिससे उनकी राष्ट्रीय संस्कृतियाँ नष्ट हो गयी हैं । यह उनके पिछ्ड़ेपन का मुख्य कारण हो गया है और सभी बुराइयाँ इसी से उत्पन्न होती हैं ।

बद्र के युद्ध के महत्व को आँकने के लिए यह जान लेना आवश्यक है कि यदि पैगम्बर इसमें हार गए होते हो इस्लाम का दर्शन उसके आक्रामकों के शवों के साथ ही दफन हो गया होता। यह एक छोटी सी घटना वास्तव में एक अति उत्पादक बीज साबित हुई है, जिसकी शाखांए पूर्व से लेकर पश्चिम तक फैली हुई हैं । पुनः पश्चिम मे इसका विस्तार तूर्स के युद्ध के बाद में रुक गया था । इस घटना ने जीवन और सभ्यता के विकास में बड़ा योगदान दिया है । मैं अगले अध्याय में इसी विषय पर लिखने के लिए लालायित हूँ ।

अध्याय 8

तूर्स का युद्ध

तूर्स के युद्ध को इतिहास की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटनाओं में एक माना जाता है । इसकी शाखाओं के विस्तार पर विचार करने के लिए के पूर्व हमें उन कारणों की छानबीन करना उचित होगा जिनसे यह 732 ई. में यह रक्त रंजित घटना घटी ।

इसका प्रमुख कारण जिहाद है जो कि इस्लाम का एक कुटिल आविष्कार है, जिसका उद्देश्य मानव पर अल्लाह का जो '' रचयिता , सर्वशक्तिमान और संपूर्ण है '' शासन स्थापित करना है ।

वास्तव में , इस यंत्र का आविष्कार एक बहाने के रूप में किया गया है ताकि उन सभी का , जो अल्लाह में और मोहम्मद में विश्वास नहीं रखते विनाश किया जा सके । यह कहना अधिक सही है कि यह एक रणनीति है जिसमें मोहम्मद को पवित्रों में अधिक पवित्रतम के नाते स्थापित किया जाए, क्योंकि दूसरा व्यक्ति वह यहूदी , ईसाई हो , या देवपूजक हो , काफिर माना गया है चाहे वह ईश्वरका भक्त ही क्यों न हो । इस तथ्य से इस सिद्धान्त का सही रंग सामने आ जाता है । जब इस पर ध्यानपूर्वक विचार किया जाता है तो ज्ञात हो जाता है कि जिहाद ईश्वर की अवमानना ही है जिसे '' रचयिता, सर्वशक्तिमान और सम्पूर्ण चित्रित किया जाता है । इस प्रकार ईश्वर जो कि परम है, सर्वोच्च बनाने के लिए किसी भी सहायता की आवश्यकता नहीं है, किन्तु यह युक्ति ईश्वर को अपनी महिमा की स्थापना के लिए मनुष्य पर निर्भर करती है, स्वभाव से ही ईश्वर निंदा है । यदि ईश्वर जो कि '' रचयिता है, वास्तव में यह चाहता है कि लोग उसमें विश्वास करे और मानव उसकी पूजा करें, तो उसने मनूष्य को अपना आज्ञाकारी सेवक '' के रूप में बनाया होता ।

जिहाद, जो ईश्वर की महिमा को कलंकित करता है और निर्दोष और असहाय लोगों के विनाश के लिए एक अति घृणित औजार की तरह काम करता है, पवित्र सिद्धान्त नहीं हो सकता ।

चूँकि जिहाद की प्रकृति की देवत्व विरोधी है, यह मात्र पैगम्बरपन का ही औजार बना है जिसके द्वारा एक मनुष्य (पैगम्बर) अपने व्यक्तिगत हितों को दैवी आवरण में छिपाकर प्राप्त करते में सक्षम होता है । पैगमबरपन का यह सिद्धान्त वास्तव में उसकी प्रभुत्व की ललक की पराकाष्ठा में ही है जो कि एक व्यक्ति को बल प्रयोग, छिछोरा पन व स्वांग रचकर अधिकाशं शक्ति अर्जित करने के लिए प्रेरित करती हे। मोहम्मद को व्यक्तिगत सर्वोच्चता अर्जित कराने के लिए जिहाद में इन सब विधियों का प्रयोग होता है क्योंकि जन्नत के अंधविश्वास में विश्वास प्रेरित करके यह हिंसा को न्यायोचित कर देता है और युद्ध जीतने के लिए धोखाधड़ी को प्रोत्साहित करता है ।

मोहम्मद अनाथ थे जिन्हें उत्तराधिकार में पैतृक सम्पत्ति के रूप में कुछ भी नहीं मिला था ,फिर भी वह इतनी ऊँचाइयों पर उठ गए और अरब के शासक और अरब साम्राज्य के संस्थापक बन गए । इससे उनकी प्रभुत्व की ललक के आकार का पता चलता है, जिसका उन्होंने निपुणता से निष्पादन किया ।

अपनी व्यक्तिगत शक्ति तथा पवित्रता के निमित्त उन्होंने एक योजना बनाई जिसमें अल्लाह, उनके सभी कार्यों के भृत्य के रूप में कार्य करता है । इस्लाम का दुराग्रह है कि :

(अ) ईमान वाला होने के लिए मोहम्मद के पैगम्बर को मानना, मजहब का सबसे अनिवार्य तत्त्व है, क्योंकि मात्र अल्लाह में विश्वास करना निरर्थक है । इस प्रकार एक यहूदी, ईसाई या मूर्ति पूजक एक काफिर है और दोखज में जाएगा ।

(ख) एक व्यक्ति तब तक मुसलमान नहीं हैं जब तक वह पैगम्बर को व्यवहार के आदर्श के रूप में नहीं मान लेता और पूर्ण रूपेण उनकी जीवन शैली का अनुकरण नहीं करता । चूँकि वह एक अरव निवासी थे उनके प्रत्येक गैर अरब अनुयायी को एक अरबी संस्कृतिक उपग्रह की भांति रहना अनिवार्य है ।

यही कारण है कि नबी ने अपनी मातृभूमि और इसकी संस्थाओं को अति उच्च सम्मान दिया । उदाहरण के लिए एक मुसलमान के लिए वह कही का भी वासी हो, यह आवश्यक है कि वह दिन में न्यूनतम पाँच बार मोहम्मद के जन्म स्थल, मक्का की ओर मुख करके दण्डवत प्रणाम करे, इस शहर की ओर मुँह करके शौच न करे, मृत्यु के बाद उसकी कब्र का मुँह मक्का की ओर हो, जिससे वह दैवी रहम के योग्य हो जाएं ।

इस अरब पूजा का यह परिणाम है कि गैर अरबी मुसलमान विशेषकर एशिया और अफ्रीका वाले मुसलमान, स्वदेशों की अपेक्षा अरब के प्रति अधिक भक्तिभाव रखते हैं । इस मनोवृत्ति ने ही इन लोगों (गैर अरबी) को अपने देश के प्रति भक्ति की कीमत पर मोहम्मद की मातृभूमि के आध्यात्मिक दास बना दिया है ।

यही है वह बात, जिससे अन्तर्रा ीयवाद के एक आकर्षक आवरण में ढका हुआ इस्लाम, अरब साम्राज्यवाद की एक जटिल योजना है । साधारण शब्दों में किसी देश का स्तर जितना ऊँचा होगा उस देश के नेता और वहाँ की सांस्कृतिक संस्थाओं की प्रतिष्ठा भी उतनी ही अधिक होगी । पुनः महानता शक्ति द्वारा अर्जित होती है न कि दुर्बलता से भले ही वह कितनी ही विनम्र, मधुर या सम्मोहक हो । केवल एक शक्ति सम्पन्न रा ही ऐश्वर्य, शान और चमत्कार का स्रोत होता है । अतः अरबवासियों को एक शक्तिशाली रा बनाने के लिए पैगम्बर ने उन्हें एक सैन्य शक्ति के रूप में बदल दिया इसके लिए उन्होंने साम्राज्यवाद को उनके अस्तित्व का आदर्श प्रस्थापित किया और इस की प्राप्ति के लिए जिहाद को मूलभूत सिद्धान्त के रूप में प्रस्तुत किया ।

यह कथन किसी स्वप्निल कल्पना पर आधारित नहीं है वरन हदीसों अर्थात् मोहम्मद के कथनों पर ही आधारित है जिन्होंने अरबवासियों को वास्तव में मुदित किया, उनका मार्गदर्शन किया और उन्हें प्ररित किया ताकि जन्नत मिलने की आशा में और जन्नत स्तर प्राप्ति के लिए वे जीवन को रक्त रंजित युद्धों के लिए समर्पित करें । सत्य का अवलोकन स्वयं कीजिए ।

1. यहूदियों के विषय में पैगम्बर ने कहा : '' धाक जब तक नहीं जमेगी जब तक तुम (अरबी लोग) यहूदियों के विरुद्ध युद्ध न करोगे और वह पत्थर जिसके पीछे एक यहूदी छिपा होगा कहेगा कि '' ऐ मुसलमानों ! मेरे पीछे एक यहूदी छिपा है अतः उसे मारो '' ।

(सहीह अल बुख़ारी, खण्ड 4 : 177)

2. तुर्को विषय में मोहम्मद ने कहाः '' इस समय एक शकुन यह है कि तुम ऐसे लोगों से युद्ध करोगे जिनके जूते बालों के बने होंगे और शकुन की घड़ी है कि तुल ऐसे लोगों से लड़ोगे, जिनके चेहरे चौड़े होंगे और उनके चेहरे ऐसे लगते होंगे मानों कि वे चमड़े से आवृत ढाल हों ।

(सहीह अल बुख़ारी, खण्ड 4: 178)

तुर्को के विषय में नबी ने पुनः कहा '' धाक तब तक नहीं जमेगी जब तक तुम तुर्कों से युद्ध नहीं करोगे, जिनकी आँखे छोटी , मुख लाल, ,नाक चपटी होती है । उनके चेहरे ऐसे लगेंगे कि ढाल चमड़े से ढकी हो । धाक जब तक नहीं जमेगी जब तक तुम उन लोगों से युद्ध नहीं करोगे जिनके जूते बालों से बने हुए होते हैं ।

(सही अल बुख़ारी, खण्ड4 - 179)

उपरलिखित विचाराधीन हदीसों के स्पष्ट करने के लिए मैं कहना चाहूँगा :

1. पैगम्बर एक योद्धा थे क्योंकि उन्होंने कवच पहन कर युद्धों मे भाग लिया था ।
2. उन्होंने अपनी सेनाओं का नेतृत्व केवल युद्धों में विजय प्राप्ति के उद्देश्य से ही किया था क्योंकि उनका विश्वास था कि '' युद्ध चालबाजी है '' अतः वांछित परिणाम प्राप्ति हेतु वह कोई भी कुटिलता प्रयोग में ला सकता है । इतने पर भी वह अपने आपको '' मानव मात्र के लिए अल्लाह की दया '' कहलाता था जिसमें ईमान न लाने वालों का भी समावेश होना चाहिए था किन्तु वस्तुतः ऐसा नहीं है । इसके विपरीत यह दया उनके विनाश की ही इच्छुक है ।
3. अपने लोगों को सर्वाधिक आक्रामक योद्धा बना देने के लिए उन्होंने उन्हें न केवल सैन्य प्रशिक्षण दिया वरन् जिहाद के सिद्धान्त से उनके मस्तिष्कों में अपना रोपान्तरण कर दिया । जिहाद नैतिकता के सब सिद्धान्तों के विपरीत अल्लाह के नाम में ईमान न लाने वालों के विनाश को सबसे बड़ी ख़ूबी के रूप में प्रचारित करता है । इस का उद्देश्य यही था कि उनके अनुयायी अपनी अन्तरात्मा की आवाज को उपेक्षित कर देने वाले बन जाएं ।

ऊपर वर्णित हदीसों से स्पष्ट है कि पैगम्बर की अरब साम्राज्य स्थापित करने की इच्छा तीव्र थी । अतः इन्होंने इसको अल्लाह की इच्छा का नाम देकर कहा , कि अरबवासियों को अल्लाह को प्रसन्न करने के लिए एक विशाल साम्राज्य की स्थापना करनी चाहिए । यह साम्राज्यवाद की क्या बुद्धिमत्तापूर्ण योजना थी । इसे दैवी प्राधिकार देने के लिए उन्होंने कहा कि यह पूर्वनिश्चित तथ्य है कि धाक तब तक नहीं जमेगी जब तक अरबवासी यहूदियों, तुर्को, ईरानियों और रोमनों (बाईजेण्टियन) साम्राज्यों को नष्ट नहीं कर देगें । यह ठीक वैसे ही हुआ कि पैगम्बर की मृत्यु के पश्चात रोमन साम्राज्य से भी अधिक विशाल साम्राज्य जो सैकड़ों वर्षो में बनता, अरबवासियों ने मात्र बीस वर्ष में ही बना डाला ।

पैगम्बर की साम्राज्यवादी योजनांए वस्तुतः पूर्व से पश्चिम दोनों ओर व्याप्त थीं किन्तु जब मैं तूर्स के युद्ध का वर्णन करने जा रहा हूँ तो यह वांछनीय है कि मैं अरबों के यूरोप की तरफ अभियान पर अपना ध्यान केंद्रित करूँ ।

प्रत्येक आक्रमणकर्ता चाहे वह किसी भी मजहब का हो , एक लुटेरा ही होता है और उसके अत्याचारी कृत्य अत्यधिक अनैतिक ही हुआ करते हैं, परिणामस्वरूप वह नरक के मार्ग की ओर बढ़ता है किन्तु एक मुस्लिम के सम्बंध में यह सर्वथा भिन्न है उसकी बर्बरता को भी अल्लाह ने औचित्य, पवित्रता और सत्यनिष्ठा का नाम दे रखा है और एक मुस्लिम मुजाहिद के सम्पूर्ण पापों के लिए अल्लाह ने क्षमा की गारण्टी दे रखी है । इस विचित्र दैवी संस्कृति के ही कारण उसे जन्नत उपलब्ध हो जाती है जहाँ अति सुंदर कुँवारी कन्याएँ और किशोर रहते हैं ।

मोटे तौर पर पैगम्बर मोहम्मद की हदीसें (कथन) एक मुसलमान के लिए आदेश ही हैं । जैसा कि पूर्वलिखित हदीसों में देख चुके हैं, ये यहूदियों, तुर्को ईरानियों, रोमनों के पूर्ण विनााश की वकालत करती हैं । इस्लाम के सर्वप्रथम शिकार ईरानी थे और अपने आपको अरब आधिपत्य से मुक्त कर लेने के उपरान्त भी वे लोग आधुनिक युग में आज तक भी अरब आध्यात्मिक एंव सांस्कृतिक जुए के मार को ढो रहे हैं ।

हदीस के संदेश को, जिसमें यह आदेश है कि '' तुर्कों के दमन '' करो , लागू करने के लिए कुतैबाह ने 715 ई0 में काशघर (चीनी तुर्क्रिस्तान) को जीत लिया और ऐसा समझा जाता है कि वह चीन की मुख्य भूमि में भी पहुँच गया था । किन्तु परम्परा के अनुसार इस विजय का श्रेय नस्र इब्न सैयार के पक्ष में जाता है जिसने 738 ई0 और 740 ई0 के मध्य इन क्षेत्रों को पुनः जीता था । वस्तुतः यह दैवी योजना 751 ई0 में सम्पूर्ण हुई थी जब अरबों ने अल शाश (ताशंकद पर अधिकार कर लिया था और मध्य ऐशिया में अपना वर्चस्व स्थापित कर दिया था । इन क्षेत्रों के मंगोलों ने बौद्ध धर्म अपना लिया था और बौद्धों के मठ बुख़ारा, बल्ख़ और समरकंद में स्थापित हो चुके थे । क्योंकि इस्लाम ही अल्लाह का एकमात्र सच्चा मजहब है (अरबी दर्शन के अनुसार) उन्होंने बौद्धों के पूजा स्थलों के स्मृति चिन्हों का पूर्ण विनाश कर दिया ताकि उनका मजहब अनन्त काल तक स्थायी होकर चलता रहे ।

तथापि कुस्तुतुनिया के विनाश के आदेशों से संबधित हदीस को सम्पूर्ण ईसाइयत के सन्दर्भ में ही समझा जाना चाहिए क्योंकि यह नगर इस पंथ की राजनीतिक राजधानी था । अतः उन सभी घटनाओं की जान लेना आवश्यक है जिनके कारण तूर्स का युद्ध हुआ ।

प्रथम अरबी गृह युद्ध जिसका समापन अली के वध के साथ हुआ था, उसके कारण मुवय्याह को राजसत्ता प्राप्त हुयी थी । वह न केवल एक कटोर सैनिक था वरन एक घाघ राजनीतिक और कुटिल शासक भी था । अपनी नाजुक घरेलू स्थिति को देखकर उसने

राजनीतिक कार्य साधकता का सहारा लिया और 658 ई0में संधि करके सम्राट कौन्स्टेन्स 2 को एक वार्षिक अनुग्रह राशि देने को सहमत हो गया । किन्तु मुवय्याह एक उत्साहशील मुसलमान था, वह कुस्तुंतुनिया को विजय का आदेश देने वाली हदीसों की उपेक्षा न कर सका । इस प्रकार यह संधि उसके लिए एक रणनीति से कुछ भी अधिक नहीं रही । जैसे ही स्थिति बदली उसने सीजर के विरुद्ध आक्रमण कर दिया । उसकी सेनांए दो बाद ईसाइत की राजधानी पहुँची किन्तु वांछित उद्देश्य प्राप्त न कर सकीं यानि कि उनके आत्मसमर्पण न करा सकी और इसके लिए एक शताब्दी तक औटोमन तुर्कों के आगमन तक की प्रतीक्षा करनी पड़भ । किन्तु अरब आक्रमण किसी विनोद के लिए नहीं हुआ करते थे , उन्होंने रजिया का रूप धारण कर लिया यानि कि अपने अनुयायियों के मार्गदर्शन के लिए नबी द्वारा स्थापित परम्परा के रूप में प्रत्येक ग्रीष्म ऋतु में ये लुटेरों के आक्रमण पूर्ण नियमितता के साथ निरंतर किए जाते थे ।

ये आक्रमण , अतिभीषण ,कींरतापूर्ण और घातक हुआ करते थे । इतना पहले जितना ए एच 34 (655 ई) में मुवय्याह के एक समुद्री बेड़े को सम्राट कौन्स्टेंस 2 के नेतृत्व वाली समुद्री सेना पर विजय प्राप्त हुई ँ इस युद्ध को जो फीनिक्स में (वर्तमान फिनाइक) हुआ जो कि लीसियन समुद्र तट पर स्थित है, इस्लाम की प्रथम बड़ी सामुद्रिक सफलता माना जाता है । अरब इतिहास में इस घटना को धू अल सवारी के नाम से जाना जाता है ।

एक मुस्लिम पाठक , यह पढ़कर आकस्मिक असमंजस में पड़ सकता है कि ए. एच. (669 ई) का युद्ध अभियान जो कुस्तुंतुनिया की तिहरी दीवारों को लाँघने में सफल हुआ, उसका नेतृत्व मुवय्याह का पुत्र युवराज याजिद कर रहा था जो (मोहम्मद के पौत्र) हुसैन और उसके परिवार के सदस्यों के वध के कारण इस्लामी संसार में इतना बदनाम हुआ है कि शैतान भी उस बदनामी से ईर्ष्या करता है । फिर भी वह विश्वासी मुसलमानों का सेनापति था जो उसके आदेशों को उत्साह के साथ पालन कर रहे थे ताकि उपद्रवों कत्लों, और अंगभंग की क्रियाओं द्वारा माले गनीमत लूट सकें । यह अत्यंत आश्चर्यजनक लग रहा है कि अल्लाह याजिद से निर्देश लेने वाले आक्रमणकारियों के लिए जन्नत के दरवाजे कैसें खोलेगा ।

ईश्वर की कृपा से यहाँ पर मुझे लिखना चाहिए कि याजिद ने इतने जोश, धैर्य और उग्रता से युद्ध किया था उसने '' फतेह अल अरब '' (अरबों का वीर) की उपाधि प्राप्त की । बाइजैण्टाइन की राजधानी को जीत लेने का प्रयास ही अपने आप में एक असाधारण शौर्य का काम था । उसकी तलवार ईसाइयों को पीछे धकेलती हुई जैसे ही चमकती थी कि युद्ध क्षेत्र में '' अल्लाह हो अकबर '' और '' फतेह इल अरब '' के नारे गूँज उठते थे । इसी प्रकार उसके विरोधी भी अपने सेनापति पर प्रशंसा की वर्षा किया करते थे जब वह अरब आक्रमणकारियों का घोर विनाश कर अपना साहस, प्रतिरोध, चुनौती और अपनी भयानकता का प्रदर्शन करता था । जिहाद के अक्षु(ा गुणों के अनुसार याजिद एक मुजाहिद (इस्लाम का पवित्र सैनिक) था जो कि लूटपाट, डाकाजनी और विनाश की प्रकिया द्वारा अपनी प्रभुता उच्चता और उत्कृष्टता स्थापित करने के लिए कटिएद्ध था ।

इस अभियान में अबू अय्यूब अल अंसारी भी एक इतिहास प्रसिद्ध वीर था जो कि किसी समय पैगम्बर का एक मान्य सेवक था । वह उन कुछ स्वामी भक्तों में से था जिन्होंने अरबों के हाथों सीजर की हार की पैगम्बर की भविष्यवाणियाँ सुनी थी । वह बार बार हदीसों कों गा गाकर सुनाया करता था जिससे उसके आक्रमणकारी साथी असामान्य उत्साह से भर जाते थे और काफिरों से अधिकतम लूट एकत्रित करके उन्हें नीचा दिखाया करते थे । अनेक तो शहीद हो जाने के लिए प्रेरित हो जाते थे जो कि जन्नत के अधिक बड़े पुरुस्कार की गारंटी है जिसके आगे लूट का माल महत्वहीन लगने लगता है । कुस्तुंतुनिया के घेरे के समय अबू अय्यूब जो पैगम्बर का एक साथी था तथा जिसकी उपस्थिति में याजिद की टुकड़ी की पवित्रता और आदर पर मुहर लगी थी एक वीर मजहबी युद्ध के सैनिक की भांति मर गया । वह स्थान जहाँ उसे दफन किया गया था, इतना पवित्र हो गया कि वह एक तीर्थ स्थल बन गया जहाँ ईसाई यूनानी भी लम्बी यात्रा करके वर्षा हेतु प्रार्थना के लिए और दैवी आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए आते थे । कई शतांब्दियाँ बीत जाने के बाद 1453 ई0 में जब तुर्कों ने कुस्तुतुंनिया का घेरा डाला तो कुछ सैनिकों ने देखा कि प्रातः काल के सूर्य की किरणें एक मकबरे पर असाधारण बहुलता से पड़ रही हैं । यह अबू अय्यूब के दफनाने के स्थान के अतिरिक्त अन्य कोई स्थान हो ही नहीं सकता था । क्योंकि यह खोज चमत्कारी मानी गयी तो इसकी पवित्रता का आदर करने के लिए उस स्थल पर एक मस्जिद बना दी गयी जो कि तीनों राष्ट्रों अरब, यूनान, और तुर्की के लिए एक तीर्थ स्थल बन गयी ।

चूँकि अबू अय्यूब ने बद्र और उहद के युद्धों में पैगम्बर के साथ भाग लिया था , उसकी कब्र तुर्कों के लिए दैवी प्रेरणा देती थी जिससे प्रेरित होकर उन्होंने अल्लाह को प्रसन्न करने के लिए तुर्की साम्राज्य की स्थापना हेतु पूर्व और पश्चिम में सैनिक अभियान किए थे । हो सकता है कि उन्होंने भी अपनी यूरोपीय प्रजा के संबंध में पवित्रता की उन्ही भावनाओं का अनुभव किया हो जैसा कि शताब्दियों बाद यूरोपवासियों को अपने एशिया के उपनिवेशों में '' सफेद रंग के मानव से आक्रान्त प्रजा '' के सन्दर्भ का अनुभव हुआ था । एक भेड़िये को अंग भंग करने, वध कर देने, और विकृत कर देने के लिए किसी भी बहाने पर गर्व का अनुभव हुआ करता है भले ही वह बहाना कितना ही तुच्छ झूठा और बचकाना क्यों नहो ।

अबूअय्यूब की मस्जिद तुर्की के सुल्तानों के सैनिक उद्घाटन समारोहों के लिए एक गौरवमय और पवित्र स्थल बन गयी जहाँ से मुस्लिमेतर लोगों के विनाश, दैन्य और अस्तव्यस्तता के लिए छेड़े जाने वाले अभियान दैवी आशीर्वाद के अधिकारी हो जाते हैं । चूँकि याजिद के नेतृत्व में छेड़े गए अभियान में अबू अय्यूब भी उपस्थित थे और वह '' अली का मित्र व अनुयायी था '' यह उस अभियान की पर्याप्त मात्रा में महिमा मण्डित कर देता है , पैगम्बर शब्द की प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए ही ईसाइयों के केन्द्र पर सैन्य अभियान करने का साहस करने वाले याजिद के विषय में पुर्नविचार करने को विवश होना पड़ता है । यद्यपि यह अभियान हदीस के अपेक्षित परिणाम अर्जित करने में तो विफल रहा किन्तु कुशलता से यह स्पष्ट कर देने में सफल रहा कि कुस्तुतुंनिया सम्पूर्ण ईसाइयत का केन्द्र था और उस प्रकार तूर्स के युद्ध के बीज बो दिए गए जो ईसा के अनुयायियों को स्थायी मानमर्दन की धमकी देने का प्रयत्न था ।

यूरोप में इस्लाम अफीका के मार्ग से घुसा जब मूसा इब्न नुसिर दमिश्क में सीधे खलीफा से अरबी क्षेत्रों को अधिकार करने के लिए आया था । उसका पिता ईसाई बंदियों में से था जोकि प्रसिद्ध अरब सेनापति खालिद बिन वालिद के हाथों में पड़ गया था ।

अफीका में अरब लोग एक और जातीय समूह के , जिन्हें बर्बर कहते थे, जो किसी समय सेमिटिक कहलाते थे, सम्पक्र में आए । यद्यपि वे ईसाई हो गए थे किन्तु वे रामवासियों जैसे नहीं बन सके थे और मानसिक रूप से अपने दूर के अरबी चचेरे भाइयों के अधिक निकट थे, क्योंकि वे भी घुमक्कड़ तथा अर्द्ध घुमक्कड़ जीवन शैली के थे । उनकी नृतत्त्वीय भावनांए जिहाद के इस्लामी सिद्धान्त से भड़क गयीं क्योकि इसमें अल्लाह के यश के निमित्त आक्रामक युद्धों के प्रतिफल के रूप में दौलत, औरत और शराब का पक्का वायदा था । उन्होंने तुरंत इस्लाम स्वीकार कर लिया और अपने अरब वासियों के अनुचर हो गए । अरब साम्राज्यवाद के विस्तार के लिए इनकी भयावहता और सैन्य कुशलता ने पर्यात्प योगदान दिया ।

उत्तरी अफीका के तट पर अटलाण्टिक तक मूसा की विजय ने यूरोप में अरबों के बढ़ने का मार्ग बना दिया । बर्बर मूल के एक मुक्त व्यक्ति को जिसका नाम तारिक इब्न जियाद था, मूसा ने अपना सहायक बनाया । सन् 711 ई. में वह 7000 लोगों की सेना लेकर, जिसमें अधिकांशतः बर्बर मूल के थे स्पेन में घुस गया किन्तु इसका निश्चय स्पेन विजय का नहीं था । यह अभियान मात्र लूट का माल एकत्रित करने के लिए ही था । वह एक पहाड़ी के निकट पहुँचा जिसे इतिहास ने उसके नाम पर जबाल अल तारिक पक्का कर दिया जो बाद में बिगड़कर जिब्राल्टर हो गया ।

19 जुलाई 711 ई. को जब उसका सामना राजा रोडरिक की सेना से बारबेट नदी के मुहाने पर हुआ तब उसकी कुल सेना 12000 थी । यद्यपि रोडरिक की कमान में 25000 सैनिक थे किन्तु उसकी अधिक संख्या किसी भी काम की न थी क्योंकि उनमें उत्साह का अभाव था, क्योंकि उसने अपने पूर्वाधिकारी, वितिजा के पुत्र को राज्य च्युत कर दयिा था , और इस प्रकार एक अपहर्ता समझा जाता था जिसे शासन करने का वैध प्राधिकार नहीं था । उन दिनों में एक ईसाई के लिए ऐसे राजाओं के कानूनों का पालन करना पाप था । किन्तु इस्लाम के अनुयायियों के लिए गैर मुस्लिमों को लूटना बड़ी मजहबी निष्ठा का काम था । बर्बर आक्रमणकारी अकूत लूट के लालच की आशाओं और विफल होने पर भी जन्नत मिलने के वायदों से चकाचौंध हो गए थे । कल्पना से परे ढीठ हो गए थे और युद्ध के लिए पागल से हो गए थे । अर्द्धमन वाली विस्गोथिक सेना की पराजयय जिसका सेनापतित्व वितिजा का भीई बिशप ओपास कर रहा था, राजा के राजनीतिक शत्रुओं द्वारा निश्चित कर दी गयी थी । कोई नहीं जानता कि रोडरिक को क्या हुआ जो वायुमण्डल में न जाने कहाँ विलीन हो गया ˙

तारिक के मारक अभियान ने एक ही वर्ष में आधे स्पेन पर कब्जा करने में सफलता प्राप्त की । इससे मुक्त दास तारिक का नाम चमक उठा । उसने यह ऐतिहासिक सफलता बर्बरों की सेना लेकर प्राप्त की थी जो अरबो की शान, श्रेष्ठता एवं सर्वोच्च शक्ति से ईर्ष्या करने लगे थे । अरब के गवर्नर मूसा की ईर्ष्या तारिक की असाधारण सफलता से भड़क गयी । बर्बरों के बढ़ते हुए सैन्य यश को धूमिल करने के उद्देश्य मात्र से उसने 10000 शुद्ध अरब लोगों की सेना खड़ी की और जून 712 ई. में स्पेन की ओर अग्रसर हुआ । यहाँ कोई भी जातीय द्वेष को स्पष्ट देख सकता है और इससे इस्लामी भाई चारे की कपोल कल्पना का भण्डाफोड़ भी हो जाता है । इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि अरबवासियों के सैन्य आक्रमणों का अल्लाह की शान से कुछ लेना देना नहीं था वरन उनकी जड़ें लूट और साम्राज्यवाद की भूख में ही थीं । और अल्लाह के नाम का प्रयोग दुष्कृत्यों के पापों को सही, पवित्र और गौरवशाली दिखाने मात्र के लिए ही किया गया था ।

इस अभियान का सही रूप पूर्ण तीव्रता के साथ तब उभर कर आया जब मूसा ओर तारिक टोलेडो में मिले । अभियान के प्रारम्भ से ही आदेश के अनुसार रुकने की आज्ञा का उल्लंघन करने के लिए अनुशासन हीनता का आरोप तारिक पर लगाया गया, मूसा ने आम जनता के सामने तारिक को घोड़े की तरह दौड़ाया, उसकी निन्दा की, उसे गाँलियाँ दी तथा पिटाई की, और उस पर निर्दयता पूर्वक कोड़े बरसा कर एक कैदी की भांति जंजीरों में बँधवा दिया ताकि उसके अपराध को बढ़ा चढ़ा कर दिखाया जा सके । अपने अधीनसी सेनापति को नीचा दिखाकर मूसा अपने आपको विजयश्री से आभूषित करने के निश्चय से स्पेन की विजय सम्पन्न करने चला । चकित करने वाली बात वस्तुतः यह है कि इस सब अवमानना के पश्चात् भी, तारिक इतना हठी और अभिमानी मालिक के अभियान में भी सेवा करता रहा । तारिक का दुराचरण तो एक दिखावा मात्र था । अन्यथा उस पर विश्वास नहीं किया जा सकता था ।

इस बिन्दु पर भाग्य की विडम्बना देखने योग्य है कि उसी वर्ष पतझड़ के मौसम में खलीफा अल वाहिद ने मूसा को दूरस्थ दमिष्क में अपने सामने उपस्थित होने का आदेश भिजवाया । उसके ऊपर भी वीं अभियोग लगाया गया जो उसने तारिक पर लगाया था यानी कि अपने अधिकार से आगे बढ़कर अपने वरिष्ठ अर्थात खलीफा की अनुमति के बिना विदेश पर आक्रमण करना । शक्ति की ललक सभी विचारों पर चड्ढी गाँठ्ती है । खलीफा यह दिखाने के लिए कि वास्तविक शक्ति किसके पास थी और इस प्रकार युद्ध या शांति तय करना किसके अधिकार में था, मूसा की सेवाओं को पूरी तरह भूल गया जिसने उसका अधिकार क्षेत्र विस्तृत किया था । यह प्रमाणित करने के लिए कि साम्राज्य के हित के लिए उसने क्या किया था, मूसा लूट के माल की एक बड़ी गाड़ी भरकर अपने साथ ले गया जिसमें चार सौ गोथिक दरबारी थे, जिनके वस्र शाही थे तथा मेखलांए और मुकुट सुवर्ण के थे । अल्लाह के आशीर्वाद स्वरूप लूट के माल में तीस हजार अत्यंत कोमल शरीर वाली यूरोपीय स्रियाँ भी थीं जिनका सौन्दर्य उनके चमकते हुए आभूषणों से भी अधिक आभामय था । इसके साथ सुंदर व युवा लड़के भी थे जिनकी त्वचा का रंग सफेद व गुलाबी था और वे खलीफा तथा दरबारियों की काम तृप्ति के लिए उनके हरमों के लिए अति उपयुक्त थे । यह कोई भी नहीं जानता कि अपने स्वामी को प्रसन्न करने तथा संतुष्ट करने के लिए मूसा जो खजाना अपने साथ लाया था कितना विशाल था ? किन्तु निस्संदेह वह खजाना विशाल था जिसे अल्लाह ने अपने मुसलमान सेवकों को अपनी दयालुता का अनुभव कराने के लिए प्रदान किया था जो कि उन लोगों के लिए जिन्हें बुरी तरह लूटा गया था, महान पीड़ा दी गयी थी तथा जिनका विनाश किया गया था, अति दुखदायी कार्य था । यही तो है जिससे जिहाद का पता चलता है ।

लूट के माल का काफिला जैसे ही टिबेरियास (फिलीस्तीन) में प्रविष्ट हुा खलीफा के भाई सुलेमान से जो खलीफा का उत्तराधिकारी था, मूसा को संदेश प्राप्त हुा कि खलीफा अल वाहिद गम्भीर रूप से बीमार है अतः उसे राजधानी में अपने प्रवेश को विलम्बित कर देना चाहिए । यह सब सुलेमान की एक कुटिल चाल ही थी कि इस प्रकार वह विजय और उस विशाल लूट की महिमा का श्रेय अपने शासन के लिए स्वयं ही लेले किन्तु वैसा हो नहीं सका क्योंकि अल वाहिद अस्थायी रूप से अस्वस्थ हो गया । विशालकाय लूट के माल को जो स्त्रियों और किशोरों के सौन्दर्य के आकर्षण से महिमा मंडित था, देखकर खलीफा द्रवित हो गया और उसने मूसा का समय के अनुकूल स्वागत किया । उम्मायद की भव्य मस्जिद को सजाया गया जहाँ मूसा को शाही प्रशंसा और कृपाओं से सम्मानित किया गया ।

मूसा ने अपने स्वामी को जो अगणित उपहार दिए थे, उनमें एक उत्कृष्ट मेज (मैदाह) भी थी जिसकी कलाकारी बुद्धिमान सोलेमन के शासन काल में थी । यह शानदार यहूदी शासक, जिसके महल में 300 पत्नियाँ और 700 रखैले मनोविनोद के लिए विद्यमान थी । घोर अपव्ययी था कि उसने उस मेज के प्रत्येक इंच के स्थान को उन बहुमूल्य दुर्लभ हीरों, जवाहिरातों से जड़वा दिया था जिन्हें वह उपलब्ध कर सका । सोलोमन एक महान कवि भी था जिसकी कल्पना शक्ति न केवल उसकी विचक्षणता से सम्पन्न थी वरन् कामुकतायुक्त प्रचुरता से भी सम्पन्न थी, परिणामस्परूप मिस्र और अन्य देशों सहित उसकी अपनी प्रजा के मध्य से संग्रहीत सम्मोहक सुन्दरियों से युक्त एक बड़ा हरम उसके लिए आवश्यक था । इस प्रकार वह कला और उसमें निहित रहस्यों का भी प्रेमी था । उक्त मेज उसकी जगमगाहट, वाह्य चमक और उसमें लगे हीरों की दमक की अपेक्षा उसकी कलाकारी के कारण अधिक दृश्यमान थी ।

एक किवदंती के अनुसार यह अति असाधारण मेज येरूशलम से रोमवासियों द्वारा रोम ले जायी गयी थी जो बाद के घटनाक्रम में गोथों द्वारा इस मेज से वंचित कर दिए गए । सोलोमन की शान से प्रेरित होकर प्रत्येक गोथिल राजा ने एक दूसरे से ईर्ष्या युक्त प्रतिस्पर्धा करते हुए अपने शासन काल में श्रेष्ठता, भव्यता, और शान से उसे अधिकाधिक सज्जित करने का प्रयास किया ताकि कलात्मकता के इतिहास में उनका नाम भी अंकित हो जाए । जब मूसा ने इस मेज को लूटा था, उस समय यह टोलेडों के चर्च में रखी हुई थी और बिशप ने इसे अपने व्यक्तिगत उपयोग के लिए स्वामी से उधार ले लिया था । प्रत्यक्ष रूप से यह सब बिशप के लिए पाप युक्त नहीं था क्योंकि स्वामी अपने प्रतिनिधियों को उनके कुकृत्यों के लिए उत्तरदायी नहीं ठहराता ।

इस यहूदी मेज की चमत्कारिता , रहस्य और विशिष्टता की कहानियों से ज्ञात होता है कि इस मेज का कोई भी भाग वड़ी सरलता से उसकी आकृति व विशिष्टता को बिगाड़े बिना पृथक किया जा सकता था तथा पुनः जोड़ा भी जा सकता था । ऐसा कहा जाता है कि मेज की विलक्षणता से प्रभावित हो जाने के कारण तारिक ने इसकी एक टाँग हटा दी थी और जब यह मेज खलीफा को भेंट की जा रही थी तो उसने एक टाँग बड़े नाटकीय ढंग से प्रस्तुत कर दी । स्पष्टतः वह शाही ध्यान को अपनी ओर आकर्षित करना चाहता था ।

यद्यपि अल वाहिद पर मूसा का जादू चल गया था किन्तु उसके उत्तराधिकारी सुलेमान पर इसका प्रभाव विपरीत ही हुआ । उसने उसको एक पक्षपाती न्यायाधीश के सम्मुख प्रस्तुत कर दिया जिसने मूसा को घमण्डी और झूठा होने का अपराधी पाया । मूसा को सार्वजनिक रूप से कोड़े लगाए गए उसे महल के मुख्य द्वार के सामने सारे दिन भुनते सूर्य की धूप में खड़े रहने के लिए बाध्य किया गया । अन्ततः उसने निष्कासित होकर एक यात्री की भाँति मक्का जाने की याचना की । उसकी यह प्रार्थना स्वकार कर ली गयी किन्तु सारी सम्पत्ति जब्त कर ली गयी । इतिहास में यह बात लिपि बद्ध है कि अफ्रीका और स्पेन का यह विजेता अल हिजाब के एक दूरस्थ गाँव वादी अल कुरा में एक भिखारी की भाँति रहा ।

मूसा, जिसका भिखारी बन जाना नियति थी, एक उत्साही मुसलमान था जिसने कुस्तुतुंनिया को परा भूत करने संबंधी हदीस को चरितार्थ करने की योजना बनाई थी । इतिहास को उसकी योजनाओं का ज्ञान है , अरब साम्राज्य के अंतर्गत यूरोप को लाने के निमित्त उसने प्रथम पग के रूप में स्पेन को चुना था । वस्तुतः उसकी योजना थी कि पायरेनीस को पार करके फ्रान्स और इटली पर विजय प्राप्त की जाए ताकि वहाँ इस्लामी शासन स्थापित हो जाए । वेटिकन की मीनार से कुरआन की आयतें प्रसारित करने की उसकी इच्छा , उसकी तीव्र प्रेरणा का स्रोत थी । एक बार इन ईसाइ भूमि पर अरबवासियों का शिंकजा कस जाता तब वह प्रसन्नतापूर्वक जर्मनी को विजय करता और फिर धीरे धीरे कुस्तुतुंनिया की तरफ अग्रसर होकर पैगम्बर की हदीस में वर्णित आशीर्वादों की पूर्ति करता ।

वह योजना जिसे पूर्ण कर पाने में मूसा विफल रहा, मूसा की मृत्यु के पश्चात वहीं समाप्त नहीं हो गयी क्योंकि वह उसकी व्यक्तिगत योजना नहीं थी वरन वह एक हदीस से उपजी थी, जिसमें ईसाइयों की शक्ति पीठ कुस्तुतुंनिया के विनाश का आदेश था । सन् 717 ई0 या 718 ई0 में अल हुर्र अब्द अल रहमान अल थाक्फी ने इस पवित्र कार्य का बीड़ा उठाया ।

उद्देश्य की पवित्रता के पीछे फ्रान्स के कान्वेन्टों और चर्चो में जो अपार धन दौलत थी उसकी लूट की कामना प्रबल थी । इस प्रकार अल हुर्र ने आक्रमण आरम्भ किए जोउसके उत्तराधिकारी अल समाह इब्न मलिक अल खावलानी ने जारी रखे । उसके प्रयासों से 720 ई0 में सप्तिमानिआ और नारबोने जीत लिए गए । किन्तु तौलूसे में जो कि ऐक्यूटाइन के ड्यूक सूड्स की राजधानी थी, उसके भाग्य ने उसका साथ नहीं दिया और फ्रांसीसी योद्धाओं ने वहाँ उसका डटकर सामना किया , अल समाह युद्ध में मारा गया ।

अब हम तूर्स के युद्ध के क्षणों की ओर अग्रसर हो रहे हैं । यह शहर जहाँ सन्त मार्टिन का पार्थिव शरीर दफनाया गया था । इस कारण फ्रान्स का आध्यात्मिक मंच हो गया था । सामान्यतया वे ईसाई जो सांसारिक सुखों के तुलना में स्वर्गीय आशीर्वादों को वरीयता देते हैं, एक एक पैसा बचाकर इस धर्म स्थल पर अपनी भेंट चढ़ाने आते थे । जबकि भेंटकर्ता भूखे रहने के कारण कृशकाय हो गए थे किन्तु धर्मस्थल के संरक्षक अन्तरात्मा की कोई कैसी भी टीस का अनुभव किए बिन सम्पन्नता की प्रचुरता में लिप्त मोटे ताजे थे

। संत मार्टिन ने स्थानीय चर्चो और कान्वेंटों का भी मान बढत्रा दिया था । और पवित्र चढ़ावे से उनके पास भी सोने की पर्तिकाएं और अन्य बहुमूल्य पात्र आ गए थे जिनके ऊपर वे गर्व करते थे ।

यूरोप के इतिहास में 732 ई. का वर्ष महत्वपूर्ण है क्योंकि इस ही समय अब्द अल रहमान इब्न अब्दुल्लाह अल गाफ्फीकी जो अल समाह का स्पेन के अमीर के रूप में उत्तराधिकारी था, पश्चिमी पाइरीनीस में से होकर आगे बढ़ा । वास्तव में इसी वर्ष पैगम्बर की मृत्यु को एक सौ वर्ष पूरे हो चुके थे । इन एक सौ वर्षो में अरबों को एक इस्लामी साम्राज्य स्थापित करने में सफलता प्राप्त हो चुकी थी जो रोम के उत्कर्ष काल के साम्राज्य से भी अधिक बड़ा था । इसका विस्तार बिस्के की खाड़ी से लेकर सिंधु तक और चीन के सीमान्त तक और अराल सागर से लेकर नील नदी के निचले मुहाने तक विस्तृत था । किन्तु फिर भी पैगम्बर का कुस्तुतुंनिया की विजय का आदेश अभी भी अपूर्ण था, इस पवित्र उद्देश्य की पूर्ति तूर्स के युद्ध में सम्भावित विजय से होनी थी ।

जैसे कि फूल मक्खियों को आकर्षित करते हैं वैसे ही एक गैर ईमान वाले की धन सम्पत्ति मुसलमान को आकर्षित करती है कि वह जिहाद की घोषणा करके उसे लूट ले । संत मार्टिन फ्रान्सीसियों को भावी दुनियाँ में स्वर्ग की सुख सुविधा दिलाने में सहायक हो किन्तु इस जीवन में धन संग्रह करने मे उपयोगी उसकी कब्र ने इस्लामी तलवार की सभी यातनाांए जुटा दीं जो लूट की खोज में लपलपाती थीं ।

यद्यपि तूर्स का युद्ध इतिहास की निर्णायक घटनाओं में से एक है, किन्तु इसका वास्तविक घटना स्थल अभी भी सुनिश्चित हो सका है । कुछ इतिहासकार मानते हैं कि यह युद्ध चटेलरऔल्ट के छः मील दक्षिण पश्चिम में मौसेइस ला बैठेली नामक स्थान पर हुआ था । दूसरों का मत है कि यह युद्ध किसी एक स्थान पर न होकर अनेक क्रमिक संघर्षो की श्रृंखला थी जिनका समापन पोइटीयर्स के निकट कारडोबा (स्पेन) के प्रमुख, अब्दुर रहमान की पराजय से हुआ था ।

किन्तु इसमें कोई संदेह नहीं है कि मुख्य युद्ध तूर्स और पोइटीयर्स नामक स्थानों के मध्य हुआ था । फ्रांसीसियों की तरफ से युद्ध का कोई कारण प्रस्तुत नहीं हुआ था किन्तु इसका बहाना अल्लाह ने निर्धारित किया था जिसने मुसलमानों को मुस्लिमेत्तर लोगों का शील भंग करने, दमन करने का दायित्व सौपां जब तक वे इस्लाम स्वीकार न कर लें या समर्पण नह करें और अपनी हीनता स्वीकार करने हेतु जजिया देना स्वीकार न कर लें । तूर्स ने स्पेन से इस आक्रमणकारी अभियान को इसलिए आकर्षित किया था क्योंकि यह ईसाइयों का एक मजहबी स्थल था जिसमें भरपूर धन सम्पत्ति थी । यह स्पष्ट है कि जिहाद सर्वाधिक उपयुक्त कार्यवाही थी जिसके द्वारा काफिरों की लूट और विनाश के द्वारा उनके समर्पण की गांरटी दी जा सकती थी ।

अब तक निरंतर जीतते रहने वाले अरबवासियों के इस आक्रमण को एक भीषण आघात लगना था । आक्रमणकारियों का सामना चार्ल्स ने किया जिसकी वीरता, बुद्धिमत्ता तथा सैन्य सूझ बूझ ने उसको मार्टल (हथौड़ा) उपनाम से प्रसिद्ध किया उसने पश्चिम में इस्लामी स्वप्न को धराशायी कर दिया । वह फ्रांस का राजा तो नहीं था पंरतु मैरोविन्जियन दरबार में महल का मेयर था । अपने अधिकारों के कारण वह वस्तुतः शासक ही समझा जाता था ।

फ्रांस के गौल प्रदेशों पर क्लोविस के उत्तराधिकारियों का शासन था ।क्लौविस अपने युद्ध कौशल के लिए प्रसिद्ध था किन्तु उत्तराधिकारियों के पास उनके पूर्व पुरुषों वाले गुण नहीं थे । फिर भी सब कुछ समाप्त नहीं हुआ था । फ्रांस के मुखियों में एक यूड्स था जो कि एक्विटेन का ड्यूक था । वह इतना साहसी था कि उसने गौल के दक्षिणी प्रदेशों में राजा के सभी अधिकार हथिया लिए थे उसे ईसाइयों का वीर पुरुष स्वीकार करने के लिए गौथ, सैक्सन और फ्रेंक लोग उसके झंडे के नीच स्पेन के इस्लामी आक्रमणकारियों के विरुद्ध युद्ध करने के लिए एकत्र हो गए थे । प्रारंभ में वह एक सफल नेता सिद्ध हुआ उसने सारासिन्स (अरबों) के पहले आक्रमण को जो खलीफा के सहायक समाह के नेतृत्व में हुआ था विफल कर दिया । तौलूज में हुए इस युद्ध में समाह मारा गया और उसकी सेना तबाह हो गयी ।

ईसाइयों की विजय अरबों के लिए ऐसी थी जिसके विषय में वे कभी सोच भी नहीं सकते थे क्योंकि इससे उस मजहब को लज्जित होना पड़ता जो कि अब तक अविश्वस्नीय रूप से जीतता रहा था । इसने स्पेन के अरबी कब्जेदारों में बदले की भावना प्रज्वलित कर दी जो अन्तरात्मा से उत्सुकतापूर्वक अवसर की खोज में थे ताकि वे ईसाई काफिरों को उनका पराभव दिखा सकें ।

जब तक एक राष्‍ की नियति ऊपर उठने और उन्नत होने के लिए नियत होती है तो उसमें से अनेक वीरों का उद्‌भव होता है । वह एक ऐसा समय था जब अरबों का राष्ट्रीय सितारा उच्च शिखर पर था । अब्दुल रहमान ने जिसकों खलीफा हाशिम ने उसके बड़े ऊंचे पद पर पुनः पहुँचा दिया था, इस सैन्य अभियान का , जो कि दण्डात्मक और लूटपाट करने के मिश्रित उद्देश्य वाला था, नेतृत्व किया । उसका प्रथम लक्ष्य मूर के विद्रोही प्रमुख मुनूजा से जो यूड्स की सुंदर पुत्री के बदले में उसका मित्र साथी हो गया था, निबटना था । अवसर की यह सुविधा जो बाद में चलकर वैवाहिक संबंधों में बदल गयी थी फ्रांसीसियों द्वारा अपनी राष्ट्रीय भावना के प्रति सजग आदर के कारण, घृणा से देखी गयी । मूर के प्रमुख को हरा दिया गया और उसका शिरोच्छेद कर दिया गया । उसकी फ्रांसीसी विधवा पत्नि को लूट का माल समझा गया और उसकी वही दशा हुई जो विजित सरदारों की सुंदर महिलाओं के साथ हुआ करती थी ।उसे दमिष्क के खलीफा के पास उपहार के रूप में भेज दिया गया जो अपने पूर्व खलीफाओं की भाँति सुंदर शरीरों और सुकोमल व्यवहारों का रसिया बन गया था ।

मुनूजा को समाप्त करके अब्दुर रहमान आगे बढ़ता गया और गैरोनी नदी के किनारे पर यूड्स के शिविर पर आकस्मि आक्रमण कर दिया और उसे विनाशकारी पराजय दी उसके बाद उसने बोर्डियू पर आक्रमण कर दिया और चर्चो में आग लगा दी तथा निर्दयतापूर्वक लोगों के घरों को नष्ट भ्रष्ट कर दिया । ईसाइयों की दशा पर जलते हुए नक्र की भाँति हो गयी । इतिहासकार कत्ल हुए लोगों की संख्या का सही अनुमान नहीं लगा सके वह तो केवल ईश्वर को ही ज्ञात है । सारसीनों ने गाँवों में जो अमानवीय विनाश किया आज के माफिया प्रकार की अभद्रता, जंगलीपन, अश्लील नृशंसता से कहीं अधिक था । ये सर्वाधिक दयालु अल्लाह के पूजक, सर्वाधिक निर्दयी साबित हुए जिनके अत्याचार ओल्ड टैस्टामैण्ट में वर्णित प्रताड़नाओं के दृश्यों को भी मात देने वाले थे । इन

घृणित कथानकों में से भी कामुकता और वीरता की गाथांए पैदा की गयी हैं जो पाठ्कों को उनकी अपनी अपनी कलात्मकता और मनोवैज्ञानिक धारणाओं के अनुसार रोमांचित व पीड़ित करती हैं ।

अब्दुर रहमान का चार्ल्स मार्टेल के साथ आमना सामना क्लेन और वियने के संगम पर तूर्स और पौइटियर्स के मध्य हुआ । चार्ल्स जो कि एल्डर पेपिन का अवैध पुत्र था, एक ऐसा सेनापति था जिसने अरवों की न केवल, सैन्य पैंतरेबाजी बल्कि उनके मनोविज्ञान और उनको प्रेरित करने वाले कारणों का भी अध्ययन किया हुआ था । वह जानता था कि मुस्लिम कीर पंथी लूट के लिए लड़ते थे क्योंकि उनके सभी नैतिक अत्याचार अल्लाह द्वारा पवित्र कार्य समझे जाते थे जो उन्हें दोखज की आग में जलाने के बजाय उन्हें जन्नत की असाधारण विलासिताओं से पुरस्ककृत करता हैं । इस्लामी आचार संहिता की असाधारण प्रकृति, जिसमें जिहाद के आवरण में लपेट कर बुराई को अच्छाई बताया जाता है– जिहाद की एक ऐसी प्रक्रिया है जो गैर मुस्लिमों की लूटपाट, हत्या के प्रति समर्पित है, इन सबको समझ कर चार्ल्स ने एक बुद्धिमत्तापूर्ण नीति अपनाई, ताकि मुसलमानों को उन्ही की लाठी से पीटा जा सके ।

यद्यपि उसके देश का आधा भाग मुस्लिम प्रभुत्व के कारण पीड़ित हो रहा था किन्तु फिर भी किसी घबराहट, भय और जल्दबाजी के बिना उसने अपनी तैयारियाँ जारी रखीं । इतिहासकारों ने चार्ल्स की युद्ध के लिए इस योजनाबद्ध विलम्बित तैयारी को उचित महत्व नहीं दिया है ।

उसकी सैन्य बुद्धिमत्ता को देखते हुए यह निष्कर्ष निकालना कठिन नहीं होगा कि वह सब उसने जानबूझ कर किया था । वह चाहता था कि सारसेंस जितनी अधिक लूटपाट कर सके उतनी कर ले । दो कारणों से इस लूटपाट में ही सुरक्षा का कवच निहित था, प्रथमतः वह चाहता था कि उसकी लूट का लोभ चरम बिंदु तक पहुँच जाए ताकि लूटने की उन्हें और अधिक इच्छा न हो । दूसरे व चाहता था कि वे लूट के माल के बोझ तले दबकर गतिहीन हो जांए।

चार्ल्स की सैन्य बुद्धिमत्ता के साथ उसका व्यक्तिगत साहस और देश भक्ति की भावना थी । छोटे छोटे युद्धों का क्रम जिन्हें तूर्स का युद्ध कहते हैं सात दिन चला । पहले छः दिनों में सारसेंस छाए रहे परन्तु अंतिक दिन योद्धाओं के भाग्य पलट गए । यूड्स अपने सैनिकों के साथ अपने अनादर का बदला लेने आ पहुँचा । चार्ल्स के स्वैच्छिक जर्मन सैनिक साथियों ने अपने युद्ध कौशल प्रदर्शित किए और चार्ल्स एवं उसके फींसीसी सैनिकों का वीरतापूर्वक संघर्ष जो कि अपने देश के विनाश को देखकर पगला गए थे पीछे हटना भूल गए । सारसेंस हारने लगे थे किन्तु उनकी भावनाओं में कोई कमी न हीं आयी थी और अल्लाह हो अकबर के नारे, जो अभी भी पहले जैसा भय उत्पन्न करने में सक्षम हो रहे थे, गूंज रहे थे, जो यूरोपवासियों को हराने में समर्थ हो सकते थे किन्तु कदाचित लार्ड जिहोवा अपने ईसाई पूजकों की रक्षा के लिए आ गए थे । जैसे ही रात्रि की अंधेरी छाया व्याप्त होने लगी कि अब्दुर रहमान को एक प्राण घातक आघात लगा और सारसेंस सेना नेतृत्व विहीन हो गयी । सेना में अस्तव्यस्तता छा गयी फिर भी कायरों की भाँति उन्होंने वापिसी नहीं की । रात्रि का गहन अंधकार प्राणघातक शत्रुओं के मण्य आवरण बन गया ।

यह समझने में अजीब लगेगा कि जिहाद की उसी भावना ने मुस्लिम योद्धाओं की एकता पर आघात किया जो उन्हें एक रखने की शक्ति का कार्य करती थी । वास्तव में चार्ल्स की बुद्धिमत्ता ने जिससे उसने अल्लाह के सैनिकों को लूटपाट की खुली छूट देकर उनकी लूट के लालच को हवा दी, ईसाइयों को विजय दिलाई, और इस प्रकार यूरोप में अरबों के भाग्य को मुहरबंद कर दिया । और सभ्यता को अनंत विनाश से बचा लिया ।

आक्रमणकारी सेना के सभी सैनिक शुद्ध अरबी ही नहीं थे, उसमें आधे बर्बर थे जो अपनी हीन भावना छिपाने के लिए अपने आपको अरबों के वंशज बताते थे, पनन्तु वस्तुतः वे अफीका के घुमक्कड़ कबीले के थे जिनका अरबों से दूर का जातिगत संबंध था । अरब लोग ऊपर से बर्बरों से उनके धैर्य, उनकी निडरता व युद्ध कौशल के लिए सहानुभूति दिखाते थे । उन्होंने जिहाद के सिद्धान्तों के कारण ही इस्लाम स्वीकार किया था और उसी से उनकी निर्धनता दूर हुई थी और उन्हें सरकार के शासकीय मामलों में भी अधिकार मिले थे । इस प्रकार अरब और बर्बरों के मध्य वास्तविक संबंध लूट के लिए जिहाद करने के लिए ही थे । यद्यपि यह प्रक्रिया पूर्णतया वीभत्स थी किन्तु इसकी कुरूपता अल्लाह के आदेश के आवरण से छिप गयी और इस प्रकार खी को मीठा, अपमान को आशीर्वाद, अंधकार युक्त को प्रकाश युक्त घोषित कर दिया ।

युद्ध क्षेत्र में अब्दुर रहमान का कत्ल हो जाने के पूर्व मुसलमानों ने पर्याप्त मात्रा में लूट का माल एकत्रित कर लिया था । इतनी बड़ी लूट ने उन्हें दो प्रकार से प्रभावित किया था । एक तो उनकी गति अवरुद्ध हो गयी दूसरे उन्हें जो कुछ जितना अभीष्ट था मिल चुका था । अतः आगे युद्ध क्यों किया जाएं केवल भूखा भेड़िया ही मैमने की तलाश में निकलता है । जिसका पेट भरा हो उसे इसकी आवश्यकता ही क्या है ।

अपने नेता को खोकर सारसेंस की स्थिति गम्भीर हो गयी थी । युद्धक्षेत्र में विजय हेतु अब्दुर रहमान के समान एक नया सेनापति एक दम चुन लेना संभव न था । इस विषय में अंतहीन मतभिन्नता व अधिक देरी न केवल उनके जीवन के लिए अपितु लूट के माल के लिए भी घातक सिद्ध हो सकती थी । लूट के माल को ले आना तो जिहाद कहलाता है किन्तु उसे खो देना जिहाद का अपमान है । अतः सारसेंस ने यह निर्णय लिया कि रात के अंधेरे में भाग निकला जाए और तूर्स के युद्ध की शान को चार्ल्स मार्टेल के लिए छोड़ दिया जाएं ।

इतिहास की विडंम्बना यह है कि जिहाद लूटपाट के माल का पवित्र वाहन, जिसने बद्र के युद्ध में मिले लूटपाट के माल के माध्यम से इस्लाम के भारी बढ़ावे का द्वार खोला , वही लूट का माल पश्चिम में इस्लाम के विस्तार की रुकावट का प्रमुख कारण बना । क्योंकि फींस में बहुत अधिक मात्रा में जो लूट का माल मिला था उसे बचा लेने के लिए पूरे दिल से प्रयास किया गया और युद्ध की कथित पवित्रता दांव पर लगा दी गयी । इससे जिहाद का असली रूप प्रत्यक्ष हो जाता है । तूर्स के युद्ध से ऐसा भीषण आघात लगा कि अरबों ने मुड़कर कभी फींस विजय का विचार दोबारा नहीं किया ।

तूर्स के युद्ध की क्या विशेषताएं थी ।

1. यह ईसाइयों की मुसलमानों के विरुद्ध एक अति देदीप्यमान विजय थी जिनका शासन स्पेन तक सिमट कर रह गया था । इस विजय ने ईसाई शक्तियों को कुछ मात्रा में आत्मविश्वास प्रदान किया तथा यह भी सिद्ध हो गया कि पश्चिम में आध्यात्मिक क्षेत्र में यीशु का प्रभाव स्थिर रहेगा न कि मोहम्मद का । केवल इतना ही नहीं वरन भावी चार शताब्दियों तक ईसाई इस्लाम के ज्वार को रोकने के लिए धर्म युद्ध करेंगे । तूर्स के युद्ध से जागृत चेतना के बिना यह संभव न हुआ होता । इसी कारण से फ्रांस इन धर्म युद्धों का मूल बन गया । शताब्दियों में यूरोप के ईसाइयों में जो एकता की भावना आयी उसका कारण ाि इस्लाम विरोधी रुख और धर्म युद्धों के अध्ययन से इस तथ्य की पुष्टि भी हो जाती है ।
2. इस युद्ध का अधिक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक पहलू है जिसको ठीक ढंग से तभी समझा जा सकता ह जब हम मुस्लिम स्पेन के इतिहास की छानबीन करें ।

निस्सदेंह वहाँ मजहबी सहनशीलता थी किन्तु इतनी नहीं जैसाकि दावा किया जा रहा है । यहूदी जिन्होंनें मुंस्लिम शासन का साथ दिया था, अच्छी तरह जी रहे थे किन्तु ईसाइयों के लिए सामान्यतया शासन तंत्र में उच्च पद प्राप्त करना कठिन था ।

स्पेन में यूरोपवासियों के रहन सहन को काफी हद तक अरब संस्कृति ने विकृत कर दिया था । राष्ट्रीय स्वास्थ्य के नाम पर पुरुष ईसाइयों के एक पत्नि के पवित्र सिद्धान्त का उल्लंघन भी ईसाइयों ने स्वयं किया । उन्होंनें भी बड़े बड़े हरम स्थापित किए और व्यापक स्तर पर अरबी फैशन की तर्ज पर लड़कों का शोषण किया । ईसाई महिलांए भी व्यापक मात्रा में पर्दा करती थीं । ईसाइयों के इस्लाम में मतान्तरण की संख्या नित्य प्रति धीरे धीरे बढ़ रही थी । वस्तुतः मुस्लिम स्पेन के लोग अपने अरब मालिकों की नकल करने में गर्व का अनुभव करते थे, इस प्रकार वे अपने रंग ढंग और वस्त्रों से एशियाई अधिक और यूरोपवासी कम दिखने लगे ।

आमतौर पर यह कहना ठीक नहीं समझा जात है कि पश्चिमी सभ्यता फ्रांस के दरबार में विकसित तौर तरीकों और शिष्टाचार से जन्मी है । उन्हें सभी यूरोप वासी दरबारों ने इच्छा पूर्वक अपनाया । इस प्रकार पश्चिमी सभ्यता रची गयी ।

यदि चार्ल्स मार्टेल सरासेंस से हार गया होता तो न तो फ्रांस का दरबार रह गया होता और नही पश्चिमी सभ्यता वरन यूरोप अन्य सब मुस्लिम राष् ों की भाँति अरब का सांस्कृतिक पिछलग्गू बन गया होता ।

यहाँ मै यह भी कहना चाहूँगा कि जो कुछ रोम और कुस्तुतुंनिया ने प्रस्तुत किया तथा प्रचारित किया वह आधुनिक अर्थो में पश्चिमी सभ्यता नहीं थी । ये दोनों केन्द्र, मध्यवर्ती परम्पराओं के, जों उन्हें ईसाइयत के रूप में मिली थीं रखवाले मात्र थे । पश्चिमी सभ्यता का प्रतिनिधित्व मैग्ना कार्टा एवं फ्रांस की क्रान्ति की आत्मा और महिमा में निहित है । वे दोनों अपने प्रारम्भिक विकास के लिए फ्रांस के दरबार के ऋणी हैं । यदि तूर्स के युद्ध मेें फ्रांसीसी सरासेंस से हार जाते तो फ्रांस के दरबार अपनी विशाल हृद्‌यता की परम्परा में अवशिष्ट न रहते जिन्होंने यूरोप की महिलाओं की गरिमा बढ़ाई और संस्कृति को रंग रुचि तथा सौन्दर्य प्रदान किए । यह पश्चिमी सभ्यता की कलात्मकता वास्तुकला तथा लिंगों के मध्य समता का आधार है ।

3. अंत में मुझे अरब की कला तथा विज्ञान की, जैसे वे स्पेन एवं सिसली में थे, प्रशंसा करनी चाहिए । वे निश्चित रूप से यूरोपवासियों की तुलना में उच्चतर थे किन्तु वे एक गम्भीर पंगुता से पीड़ित थे वे उस पर कुरआन में थोपे गए ईमान के कारण गम्भीर रूप से प्रतिबंधित थे जिसके अनुसार महिलांए केवल काम तृप्ति का एक खिलौना मात्र समझी जाती है और चित्रकला, नाटक, संगीत, नृत्य और मूर्तिकला जैसी कलाओं में लगना वर्जित था । इससे भी अधिक दूषित बात थी कि इस्लामी राजनीति इस्लामी अंधविश्वासों में बुरी तरह जकड़ी हुई थी । प्रत्येक कार्य उसी प्रकार सम्पादित करने की अनिवार्यता थी जैसा कि पैगम्बर ने शताब्दियों पहले किया था । इस्लाम के सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक विकास के मार्ग में इस कीर वाद ने विष का काम किया और समस्त विश्व में मुस्लिम समाज अधोगामी हो गया ।

इसके विपरीत तुलनात्मक रूप में ईसाई समाज खुले मस्तिष्क का था । उसने पुरुषों को बहुपत्नि प्रथा अपनाने की अनुमति नहीं दी । न ही उसे इच्छानुसार अपनी पत्नि को तलाक देने की अनुमति दी । न ही महिलाअें को कानूनन बलात् पर्दे में रहना आवश्यक था नही उनके सामाजिक मिश्रण में कोई प्रतिबंध थे । जर्मनी के मार्टिन लूथर ने 16 वीं शताब्दी में ईसाई मस्तिष्क पर से पादरियों की पकड़ को ढीला किया और स्वतंत्र चिंतन के लिए अवसर प्रदान किए । इस बौद्धिक स्वातन्त्रय ने यूरोप को विज्ञान एवं कला का पालना बना दिया , परिणामस्वरूप मानव के सितारों की नियमित यात्रा सहज एवं सम्भव हो गयी । और हजारों मील दूर बैठे लोगों के देख लेने और वार्तालाप कर सकने वाले चमत्कार करने योग्य बना दिया ।

अपनी हीन भावना के भार को हल्का करने के लिए , मुस्लिम जगत यद्यपि पश्चिम को गालियाँ देता रहता है तथापि पश्चिम की वैज्ञानिक प्रगति से लाभ भी उठा रहा है ।

तूर्स के युद्ध में यदि मुसलमान विजयी हो गए होते तो धीरे धीरे सम्पूर्ण यूरोप अरब राजनीति एवं अरब संस्कृति के औपनिवेशिक प्रभाव का अंग हो गया होता । यूरोप में भी अज्ञान, पिछड़ापन और असहनशीलता की दशांए उसी रूप में व्याप्त हो जाती हैं जैसाकि वे आज इस्लामी जगत में विद्यमान हैं, आधुनिक वैज्ञानिक क्रान्ति और मानव अधिकारों और नागर स्वाधीनताओं के द्वारा अर्न्तराष्ट्रीय सामाजिक प्रबोध की उत्पत्ति नहीं हो सकती थी सभ्यता अधोगामी रही होती और उसी स्तर पर रही होती जैसी कि पैगम्बर मोहम्मद के काल मे 1400 वर्ष पूर्व थी ।

जो लोग यूरोप की आठवी शती की राजनीतिक व सामाजिक स्थिति का अनुमान लगाने में समर्थ हैं वे मानेंगे कि मैने तूर्स के युद्ध के ऐतिहासिक महत्व के विश्लेषण में कोई अतिश्योक्ति नहीं की है ।

मैं चार्ल्स मार्टेल और उसके वीर फ्रांसीसी एवं जर्मन सैनिकों की स्मृति के प्रति नमनकरता हूँ जिन्होंने मानव सभ्यता को बचाने और उसके उन्नयन के लिए अपने रक्त व अस्थियों का महानतम बलिदान किया ।

अध्याय 9

अरब का मजहबी साम्राज्यवाद

पैगम्बर मोहम्मद द्वारा आविष्कृत जिहाद की अवधारणा अन्यायपूर्ण एवं मानवता विरोधी है फिर भी इसने एक लौकिक अरब साम्राज्यवाद स्थापित करने में उपकरण का कार्य किया है जो अपने निहित स्वभाववश अंततः एक मजहबी अरब साम्राज्य की रचना की तरफ उसी प्रकार ले जाता है जैसे एक लारवा अन्ततः तितली बन जाता है । यह इस्लामी घटना असाधारण है अतः इसकी ओर गम्भीरता से ध्यान देना आवश्यक है ।

एक को छोड़कर कुरआन के सभी अध्याय इन शब्दों के साथ प्रारम्भ होते हैं '' अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील और दया वान है । '' जब तक '' कृपा और दयावान '' पूर्णतः हास्यास्पद नहीं है तब तक अल्लाह काफिरों से घृणा नहीं कर सकता और उनको लूटने, उनकी हत्या करने और गुलाम बनाने आदि के आदेश, मात्र इस अपराध के लिए कि वे लोग उसे स्वीकार नहीं करते , नहीं दे सकता ।

यदि हम यह याद करें कि कुरआन के ही शब्दों में अल्लाह रचयिता, सर्वज्ञ, एवं सर्वशक्तिमान है तो जिहाद की अवधारणा उसके सर्वाधिक सक्षम व्यक्ति प्रमाणित करती है, जिसे न्याय दया एवं कृपा के विषय में कुछ भी ज्ञान नहीं है । क्योंकि उसकी सबसे ऊँची लालसा अपने आपको एक मात्र सच्चा ईश्वर स्वीकार करवाने की और उसी रूप में अपनी पूजा करवाने की है तब उसका यह कर्तव्य था कि वह मनुष्य को उस प्रकार गढ़ता कि मानव मात्र जन्त से ही खतना हुआ होता और ईमान वाला होता । चूँकि ऐसा नहीं है, निश्चय ही अल्लाह एक विफल रचयिता है जो न तो सर्वज्ञ है और न ही सर्वशक्तिामन क्योंकि वह बलात्, खतना करवाता है और अरब के मजहब (इस्लाम) को लोगों पर पीड़ा,त्रास, और अत्याचारों को थोपना चाहता है । अल्लाह के रचयिता होने की विफलता के ि नर्णय के लिए इतना ही जानना पर्याप्त है कि सम्पूर्ण विश्व की छः करोड़ की जनसंख्या में मुसलमानों की जनसंख्या लगभग 100 करोड़ ही है । इसका अर्थ है कि 80 प्रतिशत से अधिक इस्लाम को व्यवहार में नहीं लाते हैं फिर भी जिहाद के व्यसन के माध्यम से उन पर बलात मत परिवर्तन का भय बना ही हुआ है ।

इस ब्रह्माण्ड की विशालता पर थोड़ा ध्यान करके देखें जिसमें खरबों सितारें और नक्षत्र हैं जो एक अनन्य और तटस्थ कानून द्वारा बंधे हुए है। यदि ईश्वर ऐसे विराट् और विलक्षण विश्व का नियंता है तो वह इतना निकृष्ट, पीड़ादायक और दुष्कर्मी नहीं हो सकता कि मानवों को झुकाने के लिए आतंक फैलाए । यह मानव अपनी जन्मजात दुर्बलताओं के कारण कृपा और समझदारी का इच्छुक है , अतः ईश्वर को उदार, प्रिय और अनुग्रही होना आवश्यक है । अल्लाह जो शब्दों से तो कृपालू है किन्तु कृत्यों से निंदनीय है, मानव के आदर और भक्ति अधिकारी नहीं है । जिहाद की यह तर्क संगत व्याख्या है जो इसे ईश्वर की प्रतिष्ठा को क्षतिग्रस्त करने के लिए अति निंदित, घृणास्पद और अधोगामी माध्यम बनाती है ।

प्रत्येक को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि इस्लाम के अनुसार , जो अल्लाह में विश्वास रखते हैं किन्तु मोहम्मद में नहीं वे ईमान वाले कहलाने योग्य नहीं हैं, वे भी जिहाद के स्थायी आतंक की परिधि में आते हैं और उस ही अनादर , विनाश एवं लूट के पात्र बन जाते हैं जो कि मूर्ति पूजकों के लिए आरक्षित है । स्पष्टतः इस्लाम मोहम्मद का ही सजावटी विवरण है और अल्लाह तो उनके उद्देश्य की पूर्ति में सुविधा मात्र है । वस्तुतः मोहम्मद ने अपनी मातृभूमि की महिमा के माध्यम से अपना ईश्वरत्व पक्का किया ।

सामान्य बुद्धि प्रयोग से स्पष्ट हो जाता है कि जिहाद का अल्लाह से कुछ लेना देना नहीं है, जो सर्वशक्तिमान है , उसे अपनी महानता बनाए रखने के लिए मानवीय तलवार प्रयोग करने की कोई आवश्यकता नहीं है । इस प्रकार जिहाद का आविष्कार एक लौकिक अरब साम्राज्य की स्थापना के लिए था जहाँ इस्लामिक कानून बलात् लागू किए गए थे ताकि मोहम्मद को राजनीतिक एवं कानूनी प्राधिकार के स्रोत के नाते प्रतिष्ठित किया जा सके और लोगों को वैज्ञानिक रीति से उनके पैगम्बर पन का विश्वास दिलाया जा सके , साथ ही मजहबी अरब साम्राज्यवाद गढ़ा जा सके ।

यह सोचना अपमानजनक नहीं है वरन इतिहास का तथ्य है कि पचास से अधिक देश जो कभी मूर्ति पूजक हुआ करते थे, आज इस्लामी हैं, यद्यपि आज वे अरब की राजनीतिक प्रभुता से मुक्त हैं, किन्तु मक्का के मजहबी उपग्रह हो गए हैं, वे नैतिक एवं सांस्कृतिक मार्गदर्शन और नियंत्रण मोहम्मद की भूमि से ही ले लेते हैं । कोई बात अच्छी है या बुरी, निर्भर करता है कि अरब में उसे कैसे देखा जा सकता है ।

पैगम्बर की मृत्यु के समय, उनके अधिकांश अनुयायियों ने जिन्होंने उनका मजहब लालचवश स्वीकार किया था जो कि उनके सैन्य अभियानों से प्राप्त होने वाली लूट के माल से तुष्ट होते थे, इस्लाम त्याग दिया, जनसाधारण की यह क्रान्ति जिसे रिद्दाह कहा जाता था प्रथम खलीफा उबू वक्र के लिए एक गम्भीर चुनौती थी, जिसने पंथ त्यागने वालों को इस्लाम में पुनः वापिस लाने के लिए बल प्रयोग का निर्णय किया । इस पर भी मुस्लिम विद्वान बहकाते हैं कि मजहब में जोर जबरदस्ती नहीं ।

उसी काल में उदित अनेक पैगम्बरों की ओर आकर्षित होने वाले मस्तिष्कों के लोगों को शांत करने के लिए '' गााजर तथा डण्डा '' की युक्ति का प्रयोग किया गया न कि केवल डण्डे का । अबू वक्र एक बुद्धिमान व्यक्ति था, जिहाद का सिद्धान्त का अनुसरण करते हुए, उसने सीरिया के विरुद्ध सैनिक अभियान छेड़ दिया तथा मक्का उल तैफ, अल यामीन, और अल हिजाज के लोगों को फुसलाया गया कि वे लूट का माल बटोरने के लिए अभियान में शामिल हों जिसे अल्लाह ने पहले से ही '' अच्छा व वैध '' घोषित कर रखा है ।

इस पवित्र लूट का आकर्षण प्रभावी प्रोत्साहन सिद्ध हुआा जिससे प्रेरित होकर भूखे बेदुइनों ने निर्दोष लोगों पर आक्रमण करने के लिए पुनः इस्लाम अंगीकार कर लिया । इस भूकम्प की शक्ति इतनी विकराल थी कि उसने इराक, फारस और मिस्र में विकसित हो रही सभ्यता के विशाल भवनों को मटियामेट कर दिया ।

इस बात का वर्णन करने के लिए प्रत्येक देश जो प्रारम्भ में लौकिक अरब साम्राज्य का भाग था कैसे धीरे धीरे अरब के मजहबी साम्राज्य का अंग बन गया, अनेक खण्डों में लिखना होगा । इसलिए इतिहास की इस त्रासद ऐतिहासिक प्रक्रिया का केवल भारतवर्ष के सन्दर्भ में ही संक्षिप्त वर्णन करूँगा ।

इस निम्नलिखित तर्क वितर्क को समझने के लिए यह समझ लें कि विगत दो सौ वर्षो को छोड़कर भारत सदैव विश्व का सबसे धनी देश ही था । इस तथ्य की पुष्टि इस बात से हो जाती है कि संसार के महान हीरों का इतिहास इसी देश से प्रारम्भ हुआ, जैसे कोहिनूर, दरिया ए नूर, ग्रेट मुगल , फ्लोरेण्टाइन, सान्सी, शाह, दी रीजैण्ट, औरलौफ ये सभी मूलतः भारतीय थे । स्पष्टतया हीरों का खनन और संसाधन भारत में ही हुआ ।

विदेशी लुटेरे भारत की धन सम्पत्ति से आकर्षित हुए । इस देश की सम्पदा ने ही शाहजहाँ को इस इस योग्य बनाया कि वह अपनी पत्नि के प्रेम को यशस्वी करने में 230000000 डालर की लागत का ताजमहल बनवा सका ।

भारतीय सम्पदा के अभाव में यह शंहशाह 7000000 डालर की लागत के मयूर तख्त ताऊस पर नहीं बैठ सकता था और नही वह अन्यत्र प्रत्येक 150000 घनफुट की क्षमता वाली दो भूमिगत तिजोरियों का , जिनमें बहुमूल्य हीरे जवाहरात और सोना चाँदी भरे हुए थे, स्वामी हो सकता था ।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि अंग्रेज गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स, भारत में प्रचलित विलासिता के सर्वोच्च मानकों से इतना प्रभावित हुआ था कि उसने शाहजहाँ के महल के खास महल के स्नानागार और असाधारण शानदार शय्या को उखाड़ देने के आदेश दे दिए । वह उन्हें इंग्लैण्ड ले गया तथा राजा जार्ज चतुर्थ को भेंट स्वरूप दे दिए । महामहिम राजा को , इन उपभोग में लायी जा चुकी वस्तुओं को स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं हुआ और उसने आने राजसी कक्ष को सजा लिया ।

मुहम्मद बिन कासिम प्रथम मुस्लिम लुटेरा था जिसने 710 ई. में भारत पर आक्रमण किया । उसकी लूट में 60 करोड़ दिरहाम तथा कई हजार दास सम्मिलित थे । उन दिनों यह एक बहुत बड़ी धनराशि थी । प्रकटतः इससे सिंध प्रान्त में निर्धनता छा गयी । इस दण्डात्मक लूट का उद्देश्य मजहबी फैलाव भी था । उसने ब्राह्मणों को सड़कों पर भिक्षा माँगने के लिए विवश कर दिया ताकि वह प्रदर्शित कर सके कि मूर्ति पूजा से अल्लाह कितना अप्रसन्न था ।

लूट की कहानी जो महमूद गजनवी से संबंधित है, बड़ी ही रोमाचंकारी है। महमूद गजनवी इतिहास का सबसे बड़ा लुटेरा था जिसने व्यवस्थित यातनाओं , लूटों और विनाश लीला से भारतीय जनमानस को हजार वर्षो तक बुरी तरह पीड़ित किया है । इससे यह सिद्ध होता है कि जो लोग अपने धन दौलत की सुरक्षा नहीं कर सकते, वे उसका संग्रह केवल उपहार, अधःपतन एवं विनाश को ही आमंत्रित करने के लिए करते हैं ।

यह व्यक्ति लूटपाट, बर्बरता और निर्दयता के लिए उतना ही आदी हो गया था जितना और जिस प्रकार वर्तमान युग में लोग नशीले पदार्थो के आदी हो जाते हैं । मानवता के प्रति इन अपराधों को वह उस अल्लाह के नाम पर करता था जो अपने भक्तों से यह आशा लगाए रखता है कि वे सारी मूर्तियों का विध्वंस कर दें और एक मात्र उसे ही पूजें । वह यह स्पष्ट नहीं करता कि दृश्य मूर्तियों की पूजा क्यों बुरी है तथा उस अदृश्य मूर्ति अल्लाह की ही पूजा क्यों श्रेष्ठ है । यदि केवल उसी एकाकी की ही पूजा करना उपयुक्त है तो उसने सभी को एकमात्र उसी की पूजा से प्रेरित उत्पन्न किया होता । उसने ऐसी सृष्टि नहीं बनाई फिर भी वह जो उसमें विश्वास नहीं करता,उनके वध विनाश और विपत्तियों में आंनदित होता है । ऐसे अल्लाह में कोई भी गुण नहीं है अतः गुणी व्यक्तियों को उसका तिरस्कार करना चाहिए ।

महमूज गजनवी ने जो लूट का व्यसनी था, भारत वर्ष के विभिन्न मंदिरों पर आक्रमण करके उन को लूटने का व्यवसाय ही बना लिया था । हिन्दू जो स्वभाववश अपने देवताओं की मूर्तियों को सोने, हीरे और माणिक्यों से सजाने में आनंद लेते थे, चोरों और लुटेरों को इसी प्रकार आमंत्रित करते थे जैसे एक मेमना भेड़िये को, एक चिड़िया बाज को और एक सुंदर युवती लम्पट को आकर्षित करती है ।

भारत पर उसने कम से कम सत्रह बार आक्रमण किए । सन् 1001 ई. में जब उसने जयपाल को हराया था तब उससे 250000 दीनारों का दण्ड वसूल किया था और उसका एक हार जिसका मूल्य 200000 दीनार था बलात ले लिया था । इतना ही नहीं उसने इसके (जयपाल के) संबंधियों से 400000 दीनार इस बात के वसूल किए थें क्योंकि वे पंजाब के मुख्य मूर्ति पूजक से संबंधित थे ।

सन् 1005-6 ई. में मुल्तान के अपने आक्रमण में महमूद गजनवी को 20000000 दिरहम दण्ड स्वरूप प्राप्त हुए । इससे भी कहीं अधिक धनराशि उसने अनेक प्रकार के छलों के माध्यम से वसूल की । उदाहरणार्थ उसने नवासाशाह पर 400000 दिरहाम का दण्ड केवल इसीलिए लगवाया कि उसने इस्लाम छोड़कर अपना पहले वाला धर्म पुनः अपना लिया था । कांगड़ा में भीमनगर की लूट में उसको 70000000 दिरहाम और हीरे आभूषण सुवर्ण और चाँदी की सिल्लियाँ जिनका भार पाँच टन से अधिक था, मिले थे । महमूद गजनवी की '' मजहबी निष्ठा '' ने मथुरा के आभूषणों से आच्छादित भगवान की मूर्ति पर अवर्णनीय अनाचार उड़ेल दिया और भगवान अपनी रक्षा में अपनी एक अंगुलि भी न उठा सका और उन सभी पावन हिन्दुओं को, जिन्होंने उनके सम्मान की रक्षा का यत्न किया हजारों की संख्या में कत्ल हो जाने दिया । महमूद की मथुरा की लूट के माल का व्याप इतना विशाल था कि कोई भी उसका सही अनुमान नहीं लगा सकता । न्यूनतम अनुमान के अनुसार उसमें 98300 स्वर्ण के मिस्कल थे जोकि मंदिर की पाँच मूर्तियों ने पहने हुए थे । भगवान की रुचि कितनी व्यय साध्य है । इसके अतिरिक्त शुद्ध चाँदी की दो सौ मूर्तियों थीं जिनका भार न्यूनतम 10 टन था । इस पावन नगर के उपनगरों से

3000000 दिरहाम दण्ड स्वरूप और जब्त करके वसूल किए गए थे । तथापि सोमनाथ की लूट में उसे 20000000 दीनारें मिली थीं जिनसे अन्ततः अल्लाह संतुष्ट हो गया होगा क्योंकि उसके पश्चात वह पापी लूटेरा भारत में अपनी प्रिय शिकारगाहों में कभी नहीं आया ।

महमूद के अतिरिक्त अन्य भी कई मुस्लिम लुटेरे थे जो भारत की असीम सम्पदा से आकर्षित हुए थे । लक्ष्मी की इस सुंदर , सुवर्ण हीरे जवाहिरात, माणिक्य और मोतियों से सम्पन्न इस भूमि पर सात शताब्दियों तक वित्तीय बलात्कार किया जाता रहा । लूट का यह लालच, हत्या की भूख से प्रखर होकर जिहाद कहलाता है और अल्लाह की पूजा का श्रेष्ठतम मार्ग जन्नत की गारण्टी समझा जाता है ।

मुस्लिम आक्रमण कारी अरब , तुर्की , अफगानी , और मुगल अनेक मुस्लिम राष्ट्रीयता से सम्बंधित थे । सात शताब्दियों तक भारत को निरंतर हल के जुए मे जोतते रहने के पश्चात भी वह विदेशी वंश ही रहे और उन्होंने अपने आपको राष के रूप में भारत के साथ जुड़ने से इंकार कर दिया । इसी कारण से उन्होंने भारत की कीमत पर अपने संकीर्ण पारिवारिक हितों का पोषण किया । इन शासक कुटुम्बों की पैशाचिक स्वार्थ परायणता की इस तथ्य की पुष्टि हो जाती है कि उन्होंने इतनी लम्बी में राष्ट्रीय स्तर का कोई चिकित्सालय या विश्व विद्यालय नहीं बनवाया । उनकी एकमात्र उपलब्धि है कि उन्होंने सर्वाधिक विलासितापूर्ण निजी वेश्यालयों जिन्हें हरम कहते हैं, विशाल महल, शानदार पारिवारिक बाग बगीचे और वैभवशाली भवन जैसे कि ताजमहल बनवाए जिससे लम्पटपन, व्यभिचार और कामवासना से परिपूर्ण अपने वासनात्मक साहसिक कार्य समारोहपूर्वक कर सकें ।

क्योंकि वे विदेशियों की भाँति ही जीवित रहे और मरे भी, उन्होंने जो कुछ भी किया अपने वंशानुगत हितों के लिए ही किया और जिस देश में पैदा हुए, जीवन का आनन्द लिया और अंत में दफन भी हुए, उसके हितों पर कुठाराघात ही करते रहे । चूँकि वे बलात शासन करते रहे, उनके लिए जन सहमति उतनी ही विदेशी थी जितने विदेशी वे स्वयं थे । उनके मजहब के अनुसार मुसलमान अल्लाह के दल के हैं और गैर मुस्लिम शैतान के दल के हैं अतः अल्लाह के दल वालों को शैतान के दल वालों का हर प्रकार से अपमान करने, उन्हें सताना और उनका शिकार करना चाहिए, यही वास्तविक कारण था कि ये शासक सदैव अपनी प्रजा पर सक्रिय आक्रामक रहे । वास्तव में इस्लाम के इसी निर्देश के अनुसार मुस्लिम शासक बाध्य रहे कि वे भारत को दार उल हर्ब अर्थात संघर्ष की भूमि माने जहाँ शांति वर्जित है और उत्पीड़न फैशन है, और सताना, अत्याचार करना, यातना देना, आक्रमणकारियों के निर्धारित लक्ष्य के अर्न्तगत न्यायोचित है ।

क्योंकि भारत के शासकों के दल अपने आपको भारतीय राषि क समझने मे विफल रहे उन्होंने लोगों को शिक्षित करने , उनके आर्थिक स्तर को ऊँचा उठाने और राष्ट्रीय सुरक्षा के निमित्त देश की सैन्य व्यवस्था को सुदृढ़ करने की दिशा में कोई पग नही उठाए। इसमें संदेह नहीं है कि लम्बे मुस्लिम शासनकाल में भारत अवनति की ओर ही अग्रसर होता गया और इन विदेशी उत्पीड़कों की स्मृतियाँ स्थानीय वासियों के मनों में घृणा, जुगुप्सा और अनादर के भाव ही जागृत करती है । यदि उन्होंने भारत को अपना घर समझा होता तो आज भारत के लोग उनके मजहब का विचार न करते हुए उनको अपना वीर पुरुष मानते । किन्तु वे उनकी शाश्वत गालियों के ही केन्द्र बिन्दु बने रहेंगे, जो सर्वथा विपरीत ही है ं

इन मुस्लिम शासकों का भारत के प्रति उत्पीड़न का जो दृष्टिकोण था उसको उजागर करने के लिए इस प्रसंग में ब्रिटिश इतिहास को उद्धृत करना आवश्यक है ।

हेनरी सप्तम वैल्सवासी था और इंग्लैण्ड के सिंहासन पर उसका अधिकार कपटयुक्त था, किन्तु जब वह अपना आधिपत्य स्थापित करने में सफल हो गया, तो भाषा और संस्कृति के भेद के होते हुए भी वह सर्वश्रेष्ठ अंग्रेज सिद्ध हुआ । उसके पुत्र हेनरी अष्टम ने अंग्रेजों में विभिन्न उपायों न केवल राष्ट्रीयता की नूतन भावना जगाई वरन संसदीय प्रक्रिया को बढ़ावा देकर सहमति से शासन की पद्धति की भी स्थापना की जो सम्पूर्ण संसार मे शासन का सर्वाधिक लोकप्रिय रूप हो गया है । रानी एलिजाबेथ प्रथम एक ऐसी महान अंग्रेज महिला प्रमाणित हुई कि जिसने ब्रिटानिया साम्राज्य की नींव डाली जिसने अन्ततः मुगलवंश को हटाकर भारत को निगल लिया । कोई आश्चर्य नहीं कि छोटा सा इंग्लैण्ड ग्रेट ब्रिटेन बन गया किन्तु भारत अपने विशाल क्षेत्रफल , और आर्थिक संसाधनों के बाहुल्य के होते हुए भी सिकुड़कर राजनीतिक बोना बन गया । हेनरी सप्तम औरउसके उत्तराधिकारी स्वाभाविक रूप से राष्ट्रीय वीर व्यक्ति हैं जबकि भारत के मुस्लिम शासक शुद्ध रूप से देश द्रोही है ं क्योंकि उसके पीछे कोई राष कतई नहीं बन सका ।

यह अंतर इस तथ्य से उभरता है कि मुस्लिम शासक अपने मजहब के कारण भारत को दारउलहर्ब मानते रहे जो उन्हें गैर मुस्लिमों के साथ अपमान और यातना की स्थायी प्रक्रिया के द्वारा दुर्व्यवहार करने के लिएउकसाता है किन्तु भारत की विशालता, जिसे विदेशी तानाशाही के प्रभावी ढंग से थोपने के लिए काफी बड़ी संख्या में शासक वर्ग की आवश्यकता पड़ती है, व्यापक रूप से भारतीय हितों के प्रतिकूल सिद्ध हुई क्योंकि इन विदेशी अत्याचारियों ने हिन्दुओं के इस्लाम में बलात मतान्तरण की एक क्रियाशील नीति का प्रयोग किया जिससे एक कठपुलती वर्ग निर्मित हो जाए जो उनके शासकीय कार्यों में सहयोगी हो जाए ।यही है वह जिससे बाँटों और राज्य करो का कुटिल सिद्धान्त बना । मुगल सम्राट औरगजेब के शासन काल में यह मतान्तरण चिंताजनक रूप से बढ़ा, उसकी मजहबी र्कीरता भारत के लिए उसी प्रकार सिद्ध हुई जैसे सूर्यग्रहण सूर्य प्रकाश के लिए, पाला फूलों के लिए और जल अग्नि के लिए ।

दीर्घ काल तक आर्थिक समृद्धि और दार्शनिक तत्त्व चिंतन में लिप्त रहने के मनोवृत्ति के साथ, जिसमें क्रिया, साहस और उद्यमशीलता के मूल्य पर बौद्धिक लिप्तता बढ़ी भारत पथ से विचलित कर दिया गया । इस राष्ट्रीय उदासीनता के पार्श्व में शस्त्र बलिदान और आत्मविश्वास पर आधारित वैदिक परम्पराओं का सुदृढ़ दुर्ग भी था । इस प्रकार महाराणा प्रताप, गुरू तेगबहादुर सिंह और शिवाजी इन विदेशी शासकों के स्थायित्व के लिए घोर संकटकारी सिद्ध हुए क्योंकि विदेशी शासक इस देश में अल्पसंख्यक थे, वे विशाल बहुसंख्यकों को अनन्तकाल तक दयनीय दशा में दबा कर नहीं रख सकते थे ।

सन्निकट विनाश के विरुद्ध रोकथाम की उन्हें घोर आवश्यकता थी । इस परिस्थिति का इस्लाम उपचार भर थाः विजेताओं के रूप में अरब जहाँ कही भी गए वहाँ उन्होंने प्रचारित किया कि सभी मुसलमान भाई भाई हैं जिसका अर्थ है कि इस्लाम में कोई राष वाद नहीं है और सभी ईमान वाले अल्लाह के दल वाले हैं जो कि गैर मुसलमानों के विरुद्ध हैं जो कि शैतान के दल वाले हैं । किन्तु इस भाईचारे ने

व्यवहार में अरब मुसलमानों को स्वामी तथा देशीय मुसलमानों को दास बना दिया था जो कि मोहम्मद के प्रेम के नाम पर दासता का जुआ ढोते रहे ।

इतिहास साक्षी है कि सामान्य नियम के अनुसार हारने वाले लोगों में मनोवैज्ञानिक भाव हीन विकसित हो जाती है, फलस्वरूप उनकी तर्क शक्ति दुर्बल हो जाती है और वे अपने स्वामियों की आज्ञानुसार व्यवहार करने में ही प्रसन्नता का अनुभव करने लगते हैं । वस्तुतः उनकी दशा सरकस के शेर की सी हो जाती है जिसकी समझ शक्ति और पराक्रम को उसका प्रशिक्षक शून्यवत कर देता है जिससे वह धागों पर नाचने वाली कठपुतली के स्तर पर पहुँच जाए जिसे खीचीं गयी डोरी के अनुसार काम करना होता है ।

सुपरीक्षित '' गाजर और डण्डा '' के सिद्धान्त का प्रयोग करके भारत के विदेशी शासकों ने व्यापक मात्रा में हिन्दुओं को मुसलमान बना लिया । मतान्तरित मुसलमानों को उन्होंने पर्याप्त उच्च पद, जमीन्दारियाँ, उपाधियाँ दिए , उन्हें विवाह की सुविधाएं, राजनीतिक लाभ, जैसे कि जजिया कर से मुक्ति, सामाजिक प्रतिष्ठा जिससे स्पष्ट हो कि वे शासक वर्ग के हैं, दिए गए । किन्तु वस्तुतः वह एक कठपुतली की भाँति ही थे जो अपने विदेशी स्वामियों की इच्छा पूर्ति के लिए एक साधन मात्र था, इस तथ्य से कोई मना नहीं कर सकता कि प्रत्येक शासक वंश के सदस्य चाहे वे अरब थे या फारसी, तुक्र, अफगान या मुगल मतान्तरित भारतीय मुसलमानों को शासित वर्ग के सदस्य ही मानता था जो कनिष्ठ, हीन और नीच माने जाते थे ।

अपने विदेशी स्वामियों के परोपकारी रुख की सराहना की स्वीकृति और नवस्वीकृत मजहब के प्रति जिसने उन्हें भाईचारे की मिथ्या अनूभूति दी थी, निष्ठा प्रदर्शन के लिए , उन्होंने अपनी मातृभूमि के साथ अपने संबंध तोड़ने और विदेशी वंशों के हित में काम करने को आवश्यक माना । अपने आप में यह एक अदभुत घटना थी जो मजहब की आड़ में देशद्रोह था ।

क्योंकि इस्लाम ने भारत को दारउलहर्ब और भारतीयों को काफिर यानि अल्लाह का दुश्मन मानामाना , विदेशी शासकों ने भी मतान्तरितों को और अधिक तेजी से अपनी मातृभूमि और भाइयों से विमुख हो जाने के लिए उन्हें मजहब की अधिकतम खुराकें दीं । देशद्रोही तैयार करने की कला को पूर्णता देने के लिए इन शासकों ने मतान्तरण के लिए सूफी मत की भी सेवांए लीं । यद्यपि सूफीवाद इस्लाम के एकदम विपरीतार्थ है क्योंकि सूफी मत सर्वेश्वरवाद और एकेश्वरवाद का मिश्रण है, किन्तु इन प्रभुता के भूखों के लिए यह बात निरर्थक थी उन्हें राजनीतिक शक्ति की चाह अल्लाह की अपेक्षा अधिक थी । अल्लाह तो उद्देश्य प्राप्ति का एक साधन मात्र ही था । ये सूफी सन्त, जिन्होनें रहस्यमयी शक्तियाँ जैसे कि कादिया, चिश्तिया, नक्श बन्दियाँ, सुहरावर्दिया आदि स्थापित किए थे और शाही दरबारों के मजहबी गुरुओं का काम करते थे, स्वयं विदेशी ही थे जो इस्लामी रहस्यवाद के जिसका कुरआन और हदीसों से कोई भी संबंध नहीं है , आवरण में अपने देशवासियों के शासन को सशक्त करने के उद्देश्य से ही भारत आए थे । सत्य तो यह है कि सूफियों का रहस्यवाद, उपनिषदों की शिक्षा का जो कि ब्रह्म के सिद्धान्त पर आधारित है, विस्तार है । इन विदेशी सन्तों ने भारत के रहस्यवादी गीतों को सीख लिया और हिन्दुओं के पैतृक मार्ग से पथभ्रष्ट करने के लिए इसे इस्लाम के नाम से हिन्दुओं पर थोप दिया । इस प्रकार इस्लाम में मतान्तरित हिन्दू अपने आप को एक पृथक राष्‍ मानने लगे ।

जैसाकि पहले लिखा जा चुका है कि ये मुस्लिम शासक अल्लाह में उस समय तक ही रुचि रखते थे जब तक वह उनकें उद्देश्य यानि कि नव मतान्तरित मुसलमानों को मूर्ख बनाने में का पाठ पढ़ाने और धोखा देने के लिए आवश्यक था । इस सब के होते हुए भी वे अरब मान्यताओं के राजदूत के रूप के रूप में काम किया करते थे क्योंकि यदि वे इस्लाम के भक्त न दिखाई देते तो '' बाँटो और राज्य करो '' के सूत्र को व्यवहार में कैसे लाते । यह सूत्र तो मौमिन (मुसलमान) और काफिर (गैर मुस्लिम) के भेद पर आधारित है जिसमें परम कृपालू को प्रसन्न करने के लिए मौमिनों का काफिरों पर अत्याचार , उनको सताना और लूटना आवश्यक है ।

ये टिप्पणियाँ भारत के सभी मुस्लिम शासकों पर लागू होती है जिन्हें अपना आधिपत्य बनाए रखने के लिए स्थानीय लोगों की काफी मात्रा में आवश्यकता होती थी क्योकि उनके अपने लोगों की संख्या कम थी, अतः वे हिन्दुओं का मतान्तरण हताशा के वशीभूत चाहते थे जो अपनी भारतीय वंशावली का ज्ञान होने पर भी उनकी दूसरी श्रेणी की नागरिकता से उत्पन्न होने वाली को छिपाते थे और सांसारिक लाभों के लिए अपने आपको मुस्लिम राष्ट्र का अंग होने का दम्भ भरते थें । इतना ही नहीं वे लोग इससे भी आगे बढ़ गए थे, वे अपनी हिन्दू जातियाँ बदलकर सय्यद, कुरैशी, फरुकी, सिद्दीकी, मिर्जा, मलिक आदि बन गए । जो ये वस्तुतः नही कर सके, उसे दिखाने के लिए उनमें इतना उत्साह था कि देश द्रोह उन्हें सत्य, विश्वासघात उन्हें सत्यनिष्ठा और पतन उन्हें भक्ति लगने लगी ।

आइए भारत के शंहशाह औरगंजेब के विषय में विचार करें । वह इस्लामी पवित्रता का एक नमूना माना जाता है और इस प्रकार का संत माना जाता है जो इतिहास में सर्वाधिक शक्तिशाली शासकों में से एक होते हुए भी वह इतना मितव्ययी माना जाता है कि वह अपने हाथों से टोपियाँ सीकर और अपने हाथ से कुरआन की प्रतियाँ लिखकर बेचता था और जीवन निर्वाह किया करता था ।

क्या औरंगजेब का चरित्र वास्तव में इस्लामी था ? निस्संदेह इस्लाम मुस्लिमेत्तर लोगों के प्रति निर्दयी है किन्तु ईमान लाने वालों के लिए उदारता, प्रेम और सौजन्य की नीति की वकालत करता है । उसके व्यवहार में इन गुणों मे से एक भी दिखाई नहीं देता , उसने अपने पिता शहाँजहाँ को नौ वर्ष तक कैद में रखा जो वहीं मर भी गया जबकि कुरआन में और हदीस बच्चों को यह आदेश देते हैंकि माता पिता का आदर और उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए (यदि वे अल्लाह और मोहममद में विश्वास रखते हो) । उसने तख्त प्राप्ति हेतु अपने भाइयों का कत्ल किया । वास्तव में वह अपहारक था क्योकि शहाजहाँ ने अपने सबसे बड़े पुत्र दाराशिकोह को अपने उत्तराधिकारी के रूप में युवराज नियुक्त किया था । एक निरंकुश शासक होने से उसकी आज्ञांए कानून था जिनका पालन औरंगजेब को करना ही चाहिए था । पुनः इस्लाम उसी व्यय की अनुमति देता है जो न्यायपूर्ण और आवश्यक हो और अपव्यय वर्जित करता है किन्तु उसने अपने राजकोष के द्वार अपने माँ के मकबरे के निर्माण के लिए खोल दिए थे (शाहंजहाँ उस समय जेल में था) । यहाँ यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि इस्लाम में मकबरे बनाना बिल्कुल वर्जित है किन्तु उसने इतिहास प्रसिद्ध सर्वाधिक कीमती मकबरे का निर्माण करवाया ।

मौमिन और काफिर के मध्य दरार चौड़ा करने के उद्देश्य से उसने हजारों हिन्दू मंदिरों को तुड़वा दिया, गैर मुस्लिमों को शासकीय सेवाओं के अयोग्य घोषित कर दिया जब तक कि यह उसके वांशिक प्रयोजन के लिए आवश्यक नहो । हिन्दुओं और सिक्खों को बलात्

इस्लाम स्वीकार करने के लिए उसने उन पर न केवल घृणित जजिया कर थोपा ताकि उनके विरुद्ध मजहबी घृणा जागृत हो बल्कि मतान्तरण के लिए उसने खुले बल प्रयोग की सरकारी नीति अपनाई । सिक्ख जिन्होंने उसका वीरता के साथ विरोध किया, भीषण यातनाओं के शिकार हुए ।

वास्तव में अपने मुस्लिम पूर्वजों की ही भांति भारतीयों को नीचा दिखाकर वह अपना आनुवांशिक शासन स्थापित करना चाहता था । इसका माध्यम थी पवित्रलूट , जन्नत और मृत्यु के पश्चात कामतृप्ति की अवधारणा जिसका इस्लाम में प्राविधान है और जिसकी शक्तिशाली खुराक का आश्रय लेकर उनके मस्तिष्कों पर विफल न होने वाला सम्मोहन किया । इस व्यवस्था के परिणाम स्वरूप एक अद्‌भुत ढंग का पागलपन छा जाता है जिससे न केवल उद्दीपक दिवा स्वप्न देखने की प्रेरणा मिलती है वरन एक कुत्ते को बिल्ली से प्रेमासक्ति का एक साँप को नेवले की पूजा करने का और एक फाख्ता को एक बाज को अपना परम मित्र मान लेने का प्रोत्साहन भी मिल जाता है ।

औरंगजेब ने अपने सुदीर्घ शासन काल में जो मजहबी वातावरण तैयार किया उसमें भारत और उसकी संस्कृति के मूल्यों के प्रति इतनी घृणा बसी थी कि इस्लाम में मतान्तरित अधिकांश हिन्दू स्थायी रूप से अपनी मातृभूमि के लिए अनादर, असुरक्षा और निष्ठाविहीनता के स्रोत बन गए और मोहम्मद द्वारा दक्षतापूर्वक बनायी गयी अरब की महिमा की वेदी पर उस के सम्मान को बलिदान कर देने को तत्पर थे । यही आधार है जो इस्लाम को अरब के अदृश्य मजहबी साम्राज्यवाद का राजदूत बना देता है । इसकी विशिष्टता यह है कि मेमना स्वयं भेड़िये का शिकार बन जाता है ।

जिहाद का मूल उद्देश्य एक अरब साम्राज्यवाद स्थापित करना था, जिससे लोगों को मोहम्मदवाद में मतान्तरित किया जा सके। मोहम्मदवाद जटिल है तथापि अरब अधिनायकत्व के लिए एक लुभावनी मंगल सूचना है । एक व्यक्ति जिसने अपने आपको अरब की राजनैतिक जंजीरों से मुक्त कर लिया है वह भी मक्का की मजहबी बेड़ियों को उतावला होकर पहन लेता है जिससे वह जन्नत में मनगढ़न्त यौन विलासिताओं के योग्य हो जाए जो मुसलमानों के सिवाय किसी अन्य के लिए सुलभ नहीं है ।इस दैवी कृपा के लिए मोहम्मद (मुस्लिम 1:46) ईमान लाना एक अत्याज्य शर्त है । यही कारण है कि उसका चाचा (मुस्लिम 1:36, 408) अबू तालिब (अली का पिता) जिसने उसे पाला था, और जिसने उसके शत्रुओं से उसकी रक्षा की थी दोखज में जल रहा है क्योंकि उसने इस्लाम स्वीकार नहीं किया था । अल्लाह ने मोहम्मद को अपनी माता (अमीना) (ix) 113 तथा मुस्लिम 2:2129 अमीना के निमित्त भी प्रार्थना करने से रोक दिया था क्योंकि वह मोहम्मद में ईमान नहीं रखती थी । वह उसमें ईमान किस प्रकार लाती ? इसके होते हुए भी मुसलमानों ने मोहम्मद के चमत्कारिक जन्म के संबंध में बेतुकी कहानियाँ गढ़ रखी हैं ।

फिर भी जो मोहम्मद में ईमान लाता है, भले ही कितना ही बदमाश क्यों नहो, उसको जन्नत प्राप्ति निश्चित है । मोहम्मद में विश्वास उत्तम नैतिक मूल्यों की श्रेष्ठता को पूर्णतः निरर्थक कर देता है ।
यह कैसे होता है ?

यह सम्भव इसलिए है क्योंकि मोहम्मद को मध्यस्थता करने की शक्तियाँ प्राप्त हैं अर्थात अपने अनुयायियों की ओर से हस्तक्षेप का अधिकार है, और इसिलिए, अल्लाह मोहम्मद की सिफारिशों को स्वीकार करने के लिए बाध्य है, उसके सामने कोई विकल्प नहीं है और उसे प्रत्येक मुसलमान को जन्नत में प्रवेश कराना है भले ही वह भीषण देशद्रोही, बलात शीलहरण, हत्या झूठ, जालसाजी या इससे भी अधिक गहन अपराध में लिप्त हो । यही कारण है कि लोग इस्लाम के मजहबी जुए के भार को ढोते हैं ।

किन्तु हम इस्लामिक मध्यस्थता के इस तंत्र का जब परीक्षण करते हैं तो ज्ञात होता है कि यह बनावटी काल्पनिक और धोखा ही है । क्योंकि कुरआन में बार बार इस बात पर बल दिया गया है कि कयामत के दिन कैसी भी मध्यस्थता (2:48, 123, 254, 251, 284, 109-65,70, 74:48) नहीं होगी । यह अल्लाह का (3:128-129, 85) अनन्य अधिकार है कि वह स्वयं स्वतंत्ररूप से निर्णय करे कि किसे सजा दी जाए और किसे क्षमा किया जाए । वास्तव में अंतिम दिन (7:29, 21:47) कयामत का दिन होगा और अल्लाह न्यायाधीशों का भी न्यायाधीश है । (3, 94:8)

इस आह्वान कथन में कुरआन की निम्नलिखित आयत भी जोड़िये ।
'' हे ईमान लाने वालों ! (अल्लाह के लिए) इंसाफ पर मजबूती के साथ जमे रहने वालों, अल्लाह के लिए (इंसाफ की) गवाही देते हुए यद्यपि वह गवाही तुम्हारे अपने या माता पिता और नातेदारों के विरुद्ध क्यों ही नहो, कोई धनवान हो या निर्धन । ''

(सूरा 4: अन निसा 135)

तटस्थता पर आधारित न्याय के इन सशक्त सिद्धान्तों के कह देने के पश्चात कुरआन अपना स्वर पूर्णतया बदल देता है और कहता है कि (10:3, 20:109, 34:23) (ये संदर्भ अंग्रेजी में लिखित मूल प्रति के अनुसार हैं) मध्यस्थता की अनुमति अल्लाह की अनुज्ञा से दी जाएगी । न्याय का क्या उपहास है और न्यायाधीशों में सर्वोत्तम अल्लाह का घोर अपमान है । यह है ! यह एक सर्वमान्य सिद्धान्त है कि न्याय जब तक न हो, एक धोखा ही है । क्या अल्लाह धोखेबाज है ? नहीं । यह तो न्याय की मोहम्मद की परिभाषा है ताकि उन्हें मजहबी अरब साम्राज्य बनाने के लिए अन्तर्राष ीय स्तर पर अनुयायी प्राप्त हो सकें जिससे वे स्वयं अध्यक्ष बन सकें । इस उद्देश्य के लिए अल्लाह को नाम का अध्यक्ष बनाकर वे स्वयं न्याय दाता बन बैठे ।

निस्संदे वह एक आदरणीय संदेशवाहक (फरिश्ते) की (पहुँचाई हुइ) बात है, जो शक्तिशाली है, सिंघासन के स्वामी के यहाँ बड़े ही मरतबे वाला है, वहाँ उसकी बात मानी जाती है, विश्वास करने योग्य नहीं है ।

(सूरा 81 अत तकवीर 19-21)

मुस्लिम विद्वानों ने इन आयतों का अर्थ लगाया है कि कयामत के दिन पैगम्बर अल्लाह के दाहिनी ओर न्याय के दैवी तख्त पर बैठेंगे । क्योंकि पैगम्बर को मध्यस्थता करने की शक्ति प्राप्त है इसलिए उनका निर्णय मान्य होगा और अल्लाह के पास जन्नत के द्वार उन लोगों के लिए, जिनकी पैगम्बर सिफारिश करेंगे खोलने के अतिरिक्त कोई विकल्प नही होगा । चूँकि मोहम्मद अपने अनुयायियों से प्रेम करते हैं वह उनके निमित्त मध्यस्थता करेगें । फलस्वरूप सारे मुसलमान जन्नत जाएगें ही जहाँ पर विलासिता के अन्य साधनों के साथ वे सर्वाधिक

आकर्षक कामतृप्ति करें, और सब काफिर जैसे यहूदी, ईसाई, हिन्दू बौद्ध, देव पूजक, नास्तिक आदि अनन्तकाल तक दोख़ज की आग में झुलसेंगे ।

पैगम्बर की मध्यस्थता की शक्तियों को हदीस ने भी पूरी तरह प्रमाणित कर दिया है और उपरलिखित आयतें उसकी क्रियान्वयन विधि को दर्शाने हेतु उद्धृत हैं ।

तथापि जन्नत प्राप्त करने के लिए मोहम्मद के अनुयायियों को मोहम्मद की भूमि के प्रति, अपनी मातृभूमियों की अपेक्षा अधिक निष्ठा प्रदर्शित करनी होगी और अपनी संसकृतियों को छोड़कर अरब संस्कृति अपनानी होगी । यही है मजहबी साम्राज्यवाद का मूल । यहाँ इस्लामी योजना का प्रारूप दिया जा रहा है जिसे नबी ने इस चतुराई से साथ बनाया हे कि उसकी गहराई नाप सकना कठिन है ।

पैगम्बर मोहम्मद भारी राजनीतिक सूझ बूझ रखते थे । उन्होंने यह कहकर कि प्रत्येक राष्ट्र का अपना एक पैगम्बर होता है, इस तथ्य पर बल दिया कि उनके अपने विषय में बात भिन्न थी, क्योकि वह न केवल अरबवासियों के पैगम्बर हैं वरन सभी राष्‍ों के लिए भी हैं ।

'' प्रत्येक पैगम्बर अपने राष्ट्र के लिए नियुक्त किया जाता है किन्तु मुझे सभी राष्‍ों के लिए पैगम्बर नियुक्त किया गया है । ''

(मिश्कट, 5500 खण्ड 3)

जब पैगम्बर की व्यापकता के इस दावे को किबला के यरुशलम से काबा स्थानांतरण से जोड़ा जाता है तो हमें मोहम्मद की बुद्धमत्ता की गहराई का ज्ञान हो जाता है । इसका अर्थ है कि गैर अरबी मुसलमान अपना '' किबला '' नहीं रख सकते जो कि राष्ट्रीय सम्मान और एकता की धुरी होता है । उन्हें अरबों के किबले को ही अपना किबला मानना पड़ेगा और इस प्रकार अरब के कानूनों को और संस्कृति को अपनाना पड़ेगा और अपनी राष्ट्रीय परम्पराएं छोड़नी पड़ेंगी । क्या आप जानते हैं कि व्यवहार में इसका क्या तात्पर्य है ? स्पष्टीकरण प्रस्तुत है ।

इस कृत्य से मक्का मुसलमानों के लिए सर्वोच्च मजहबी आदर का स्थान बन गया है । सभी देशों के उच्च और निम्न सभी मुसलमान मक्का को दण्डवत प्रणाम करते हैं । दिन में केवल पाँच बार ही नहीं परन्तु प्रति क्षण क्योंकि इस ग्रह पर समय, क्षेत्र के अनुसार बदलता रहता है । उनकी झुककर दण्डचत करने की आदतन क्रिया से उनकी मनःस्थिति दास की हो जाती है और वे अनायास ही मक्का के आज्ञाकारी हो जाते हैं । इससे उनका विवेक क्षीण हो जाता है । तदनुसार मोहम्मद के जन्म स्थान की पूजा करने के लिए विश्वास बढ़ जाता है। यह आश्चर्य की बात है कि मुसलमान किस प्रकार मोहम्मद से याचना करते हैं कि वह इन दुनियाँ में और आगे की दुनियाँ में अल्लाह की दया के लिए मध्यथता करे । साधारणतया एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर आयुधों से आक्रमण करता है और हारने वाले जीतने वालो से घृणा करते हैं और मुक्त हो जाना चाहते हैं परन्तु इस विषय में सभी गैर अरब मुस्लिम अपने आपको अरब के सांस्कृतिक दास स्वीकार करने के लिए भक्ति के आँसू बहाते हैं । क्या यह एक विशिष्ट उदाहरण नहीं है कि एक मैमना कसाई से प्रार्थना करे कि उसे बूचड़खाने ले जाए । यह है मोहम्मद की बुद्धिमत्ता ।

मानव की दुर्बलताओं को जानते हुए पैगम्बर ने अपने गैर अरब अनुयायियों पर और भी अधिक मनोवैज्ञानिक दबाव बनाया कि उन्हें अपनी संस्कृतियों को अरब संस्कृति के अधीन मान लेना चाहिए । उन्होंने यह लक्ष्य अरब के संस्थानों की मजहबी प्रतिष्ठा को बढ़ा कर किया । संक्षेप में इसका विवरण इस प्रकार है ।

1. काबा अल्लाह का घर है क्योंकि सर्वशक्तिमान ने आदम को आदेश दिया था कि इस घर को उसके (अल्लाह के) निमित्त बनाए तथा यह अब्राहम द्वारा पुनः बनाया गया था ।
2. एक मुसलमान की कब्र ऐसी खोदी जाए कि जब उस का पार्थिव शरीर दफनाया जाए तो उसका मुख मक्का ही ओर ही रहे ।
3. मक्का इतना पवित्र है कि किसी को भी शौच करते समय इस शहर की ओर मुख नहीं होना चाहिए । जो कोई ऐसा करता है वह काफिर (गैर ईमान वाला) है ।
4. अल्लाह अरबी में बोलता है और कुरआन भी अरबी में है, जो कि एक अति कठिन भाषा है, आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए सब मुसलमानों को इसे सीखना चाहिए । देखिए अरब के प्रति अल्लाह का कितना पक्षपात है ।
5. हदीस संख्या 5751 (मिश्कट खण्ड 3) में लिखा है कि पैगम्बर ने कहा है

'' अरब वासियों को तीन कारणों से प्यार करो क्योकि (1) मैं अरब का निवासी हूँ । (2) पवित्र कुरआन अरबी में है । (3)जन्नत के वासियों की भाषा भी अरबी ही होगी । ''

6. काबा अल्लाह के आशीर्वादों का केन्द्र है क्योंकि यहाँ ही प्रतिदिन 120 दैवी आशीर्वाद उतरते है। और वहाँ से शेष संसार को वितरित होते हैं ।
7. इब्ने माजाह ने 1463 वीं हदीस में लिखा है कि नमाज यानी कि प्रार्थना जो कि मदीना मस्जिद में की जाती है वह उसी प्रकार की किसी अन्य मस्जिद में की गयी प्रार्थना से , 100 गुना अधिक आशीर्वाद देती है और काबा में की गयी नमाज से किसी अन्य मस्जिद में की गयी नमाज की अपेक्षा 100000 आशीर्वाद मिलते हैं ।
8. अरब के कब्रिस्तान जन्नत उल मुअल्ला और जन्नत अल बकी भी बहुत पवित्र हैं । एक हदीस के अनुसार आसमान के फरिश्तों को वे उसी प्रकार चमकते दिखाई देते हैं जैसे पृथ्वी निवासियों को सूर्य और चन्द्रमा चमकते दिखाई देते हैं । जो लोग वहाँ पर दफन हैं वे बिना किसी जवाबदेही के सीधे जन्नत में जाऐंगे और प्रत्येग को सत्तर हजार लोगों की मध्यस्थता का अधिकार मिलेगा ।

अग्रलिखित आयत को पढ़िए ।

9. कह दो कि " यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो, अल्लाह तुम्हें प्रेम करेगा और तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा ।

(सूरा 3 आले इमरान आयत 31)

जब इसको उपरलिखित हदीस 5 के साथ पढ़ा जाए तो यह निष्कर्ष निकलता है कि एक गैर अरब मुसलमान को एक मुसलमान कहलाने के लिए अरबवासी की भाँति ही रहना चाहिए ताकि अल्लाह के प्रेम और क्षमा का अधिकारी हो सके ।

10. प्रत्येक मुसलमान को चाहे वह कहीं भी रहता हो अपने जीवन के न्यूनतम एक बार तीर्थ यात्रा पर मक्का अवश्य आना चाहिए, बशर्ते कि ऐसा करने के लिए उसके पास साधन हों, यह इस्लाम मजहब का अंग है ।

सारे संसार से 20 लाख से अधिक मुसलमान प्रतिवर्ष हज करने के लिए मक्का जाते हैं । इन दोनों अनुष्ठानों से ही अरबवासियों के लिए इतना धन एकत्रित हो जाता है कि उनकी जनसंख्या को देखते हुए वे पश्चिमी यूरोपवासियों के जीवन स्तर के समतुल्य जीवन स्तर रख सकते हैं ।

अरब संस्कृति में हज का उत्सव अज्ञात काल से प्रचलन में है । इसका विकास मूर्ति पूजा के भारतीय सिद्धान्तों यथा त्रिमूर्ति , शैववाद, स्थानीय अंधविश्वासों तथा यूनानी प्रभावों से हुआ है । अब्राहम द्वारा कभी काबा के मंदिर के पुनर्निर्माण का कोई ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है । मोहम्मद के जीवन के प्रारम्भिक काल में भी यह मूर्ति पूजा का केन्द्र था जहां प्राचीन काल से ही हज्र एक अस्वद के चुम्बन की परिपाटी प्रचलित थी जिसे पैगम्बर ने भी प्रोत्साहित किया था क्योंकि उसका अरब की राष्ट्रीय संस्कृति के साथ गहन संबंध था । मूर्ति पूजकों का यह व्यवहार जो अरबों को रुचिकर था, इसने भी इस्लाम में मतान्तरित अनुयायी बनाने में सहायता दी ।

हज उत्सव इस्लाम के पूर्वकाल का है । यह आज भी मूर्ति पूजा का ही उतना प्रतिरूप है जैसा कि यह सदैव पहले भी था । लोग काले पत्थर के चूमने की परम्पराओं का पालन करने के साथ काबे के चारों ओर सात बार परिक्रमा करते हैं जो मूर्ति पूजा की परम्पराओं से संबंधित सितारों की परिक्रमा के प्रतीकात्मक अवशेष हैं ।

जो कुछ हज के विषय में सच है वही अल्लाह पर भी लागू होता है । यह काबा की मुख्य प्रतिमा का नाम था जोकि मोहम्मद के कबीले कुरैश से संबंधित थीं । इसी कारण मोहम्मद के पिता का नाम अब्द अल्लाह था जिसका अर्थ है " ईश्वर का सेवक " । इस नाम के प्रति कुरैश कबीले में जो अपना पन था उसी के कारण मोहम्मद ने इस नाम को अपने ईश्वर के लिए बनाए रखा । पुनः अल्लाह अरब का ईश्वर था और प्रत्येक अरब मजहब के भेदभाव के बिना उसके नाम की कसमें लेता था ।

ऐसी योजनांए बनाकर मोहम्मद ने, यहूदियों के यरुशलम के मंदिर के लिए स्थापित पवित्रता की अपेक्षा काबा को अधिक पवित्रता प्रदान कर दी । मक्का के देवत्व ने अरबों को पवित्रता के तेज से ओत प्रोत कर दिया जिसे ऐसी हदीसों ने दृश्यमान कर दिया कि सब मुसलमानों को अरब से प्रेम करना चाहिए और जो इससे ईर्ष्या करेगें वे नबी के मध्सस्थता के आर्शीवचनों से वंचित कर दिए जाएगें और इस प्रकार जहन्नुम में सड़ेगे ।

अरबवाद की अपनी महायोजना मकें मोहम्मद ने अपने आपकों ठीक शीर्ष पर रखा यद्यपि उन्होंने अपने आपकों अल्लाह का सेवक एवं नश्वर माना , किन्तु यह अल्लाह ही है कि वह स्वयं और उसके फरिश्ते मोहम्मद के लिए शांति की प्रार्थनाएं करते हैं अर्थात वह मोहम्मद की पूजा करता है ।

इस प्रकार वस्तुतः मोहम्मद के प्रति प्रेम तथा आज्ञा कारिता ही सच्चा इस्लाम है और अललाह तो मोहम्मद के लिए प्रतीक मात्र है जिस पर मोहम्मद की पकड़ इतनी मजबूत है कि केवल अल्लाह में विश्वास का कुछ भी प्रयोजन नहीं है, यदि मोहम्मद में ईमान न हो ।

इस्लाम को व्यवहार में लाने का सर्वश्रेष्ठ मार्ग है कि मोहम्मद को व्यवहार का आदर्श माना जाए ।

निश्चय ही तुम लोगों के लिए अल्लाह के रसूल में एक उत्तम आदर्श था, उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और अंतिम दिन में आशा रखता हो ।

(सूरा 33 अल अहजाब आयत 21)

इसका तात्पर्य यह है कि छोटे से छोटे क्रियाकलाप में भी नबी का अनुसरण किया जाए अर्थात सोचना, अनुभव करना, तथा कार्य करना नबी की तरह हो , स्वथाव, और आदतों को वैसे ही विकसित करना चाहिए, जैसे नबी की थीं । उन्हीं की भांति ही खाना पीना, बात करना, चलनाा, सोना, पोशाक एवं दिखावा उसी प्रकार होना चाहिए ।

जिसे विषय पर विचार विमर्श किया जा रहा है जब उस पर हम गहनता से विचार करते हैं तो ज्ञात होता है कि यह दर्शन यानि कि " मोहम्मद का व्यवहार का आदर्श होना " वह सच्चा बल है जिसके माध्यम से इस्लाम को स्वतः स्थायी अरब साम्राज्यवाद का रूप प्राप्त हो जाता है क्योंकि इस प्रकार की स्वीकृति एक मुसलमान के लिए प्रेरणास्रोत बन जाती है कि वह पैगम्बर के सिद्धान्तों और व्यवहारों को अपना सच्चा मार्गदर्शक मानना अपना कर्तव्य समझे ।

यद्यपि आधुनिक युग में मुसलमान सर्वाधिक पद दलित, वंचित निर्धनता, एकाकीपन, उत्पीड़न का वास्तविक कारण है । मजहबी अरब साम्राज्यवाद के परिणामों में इन यातनाओं को वे जन्नत में ऐन्द्रिय सुखों की आशा में स्वेच्छा से सहन कर रहे हैं । मृत्यु के उपरान्त कामतृप्ति के सुख के अधिकार के लिए क्या मूल्य है यह ?

उपसंहार

जीवन के प्रसंग मे ''परिवर्तन'' महत्वपूर्ण शब्द है । हमारा जन्म परिवर्तन की प्रक्रिया से ही होता है परिवर्तन की प्रक्रिया जिवन भर चलती है । और जैसे ही हम परिवर्तन की क्षमता को खो बैठ्ते हैं मृत्यु आ जाती है । अरबवासियों के लिए ''जिहाद'' एक प्रभावशील यंत्र था क्योंकि इसके द्वारा वे एक वृहद् लौकिक अरब साम्राज्य बना सके जिससे अंततः महज़बी अरब साम्राज्य नींव पड़ी । पूर्व वाले (अरब साम्राज्य) का अब कोई अस्तित्व शेष नहीं है और बाद वाले से अरब जाति को जितने लाभ मिलते, उनकी तुलना में वैज्ञानिक, तकनीकी और सांस्कृतिक प्रगती की दृष्टि से वह उससे कहीं अधिक भारकारी हो गया है । अरब सभ्यता अपने ''बुद्धिमत्ता'' के आवास'' (बैत-उल-हिकमत) की बहुत ऋणी है जो कि उन्होंने अल-मामून के राज्य काल में भारत और यूनान के साहित्य व विज्ञान की महान कृतियों के अनुवाद से स्थापित किया था । इस प्रकार उन्होंने अपने वैभव-काल में ज्ञान-संग्रह करने, चिकसित करने, और चितरित करने की परिपाटी का निर्माण किया था । वस्तुतः अरबी पैगम्बर का प्रादुर्भाव, और सीखने,प्रयोग करने तथा पढ़ने की घटना परिवर्तन की ही प्रक्रियाएं थी जिन्होंने अरबवासियों का महिमा, शासन और महानता द्वारा सत्कार किया । किन्तु अब उन्होंने काल की अग्रगामी गति को जंजीरों से जकड़ दिया है । इस प्रकार उन सब राष्ट्रों के लिए जो पैगम्बर को व्यवहार का आदर्श (माडल) मानकर प्रेरणा लेते हैं जो कि अब 1400 वर्ष पुराना हो गया हे, वह माडल कालातीत हो गया है । यही कारण है कि मुसलमानों ने वह गतिशीलता खो दी है जिससे राष्ट्रों को सतर्कता, तेजस्विता और सजीवता से जीवन यापन की प्रेरणा मिलती है ।

'' जिहाद '' एक दोधारी तलवार है क्योंकि इसका प्रयोग, एक मुसलमान अपनी व्यक्तिगत महत्वांकाक्षाओं की पूर्ति के लिए इस्लाम के नाम पर, दूसरे मुसलमान भाई के विरुद्ध भी कर सकता हैं । उदाहरण स्वरूप तैमूर लंग (तामरलेन) को ही लीजिए जो कि 1336 ई. में ान्सोक्ियाना में जन्मा था । उसने बगदाद और मेसोपौटामिया के कई शहरों पर इस बहाने को लेकर आक्रमण किया था कि यहाँ के अरब शासक मक्का तथा इस्लाम के अन्य पवित्र स्थानों के यात्रियों की सुरक्षा की समुचित व्यवस्था नहीं करते थे । अरबवासियों के हृद्यों को आतंकित करने के उद्देश्य से उसने टैक्रिट में अपने अरब शिकारों की खोपड़ियों का एक बड़ा पिरामिड बनवाया । सन् 1400 ई0 में उसने पुनः अलेप्पो में लूट और हत्याओं का मदनोत्सव मनाया । सर्वप्रथम उसने जिहाद के नाम पर सारा शहर लूट लेने के आदेश दिए फिर उसके बाद लगभग 20000मुसलमानों के सिर कटवाकर उनके सिरों से एक मीनार बनवा दी । इस्लाम के इस महान समर्थक ने नूरिद और अय्यूबिद की वे शानदार मस्जिदें गिरवा दीं और अपने सैनिकों को उन मुस्लिम कन्याओं के साथ बलात्कार की भी अनुमति दे दी जो अपनी शील रक्षा के लिए उनकी शरण में आयी हुई थीं । जैसे ही उसने सुना कि उसके कुछ सैनिक बगदाद में मार दिए गए हैं वह एक तूफान की तरह लौटा ओर अरबवासियों को बहुत भयावह सजा दी । उसने ऐसा कत्लेआम मचाया कि शहर के विभिन्न भागों में मारे गए अरबवासियों के सिरों से कम से कम 120 मीनारें बन गयीं । तैमूर का यह व्यवहार मुस्लिम विद्वानों की दृष्टि में पूर्णतया इस्लामी था क्योंकि इसमें जिहाद के सभी तत्त्व विद्यमान थे ।

जिहाद का दुरुपयोग केवल तैमूर जैसे व्यक्तियों तक ही सीमित नहीं है । इसका व्याप मुस्लिम राष्ट्रों में भी है । हाल ही में घटित ईरान और ईराक दोनों मुस्लिम राष्ट्रों के मध्य खाड़ी के युद्ध से इस तथ्य का स्पष्टीकरण हो जाता है । उन्होंने एक दूसरे के विरुद्ध जिहाद छेड़ दिया था यद्यपि दोनों ही अपने राष्ट्रीय हितों का अनुसरण कर रहे थे ।

अल्लाह के नाम पर जिहाद या इस कपटपूर्ण मजहबी युद्धों की कोई प्रासंगिकता नहीं है क्योंकि आधुनिक विश्व अब इतने भयावह आयुधों से सज्जित है कि कुछ ही घंटो में सम्पूर्ण मानवता का विनाश सम्भव है। मज़हबी युद्ध की समाप्ति हमारे युग की सर्वाधिक जरुरी आवश्यकता है । जिहाद में इस्लाम का विश्वास मुस्लिम सोच का बचपना दिखाता है जो कि विवेक के लिए एक कड़ी चुनौती है । मौमिन काफिर के दर्शन ने मुस्लिम समाज से मानवता की भावना छीन ली है और वे केवल मुस्लिमों तक ही सोचते हैं और गैर-मुस्लिमों की या तो गुलामी या उनके समूल विनाश में विश्वास रखते हैं ।

वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण में मुस्लिम राष्ट्रों को ही सुरक्षा की आवश्यकता है किन्तु वे ही हैं कि जो तलवारो चलाने के अभ्यस्त हैं । अभी हाल में नाटो की कोसोवो में हुई सैन्य कार्यवाही इस बात का उदाहरण है कि कैसे आधुनिक सभ्यता उच्च नैतिकता से जुड़ी हुई है । अमेरिकी फींसीसी, ब्रिटिश, जर्मनी और कई अन्य देश एकत्रित होकर रात ग्यारह सप्ताह तक मुस्लिमों के अधिकारों को बचाने के लिए अपने ही साथी ईसाई देश पर बम बरसाते रहे तो इससे स्पष्ट कि ईश्वर पश्चिम में है जँहा लोग मानवो की भाँति । यँहा यह ध्यान देने योग्य है कि जब ईसाइ राष्ट्र अपने ईसाई भाइयों पर कोसोवो में व्यापक बमबारी कर रहे थे । तब विश्व के मूस्लिम राष्ट्रो कोसोवो के मुसलमानों के लिए कुछ भी नहीं किया सिवाय इसके कि उन्होंने भाईचारे के थोथे नारे बुलन्द किए और पश्चिम के पवित्र उद्येश्यों पर ही प्रश्न चिहन खड़े किए । इस घटना से स्पष्ट है कि मुसलमान अपने आपको बदलते हुए समय के अनुरूप ढाल लेने में विफल हो गए हैं । इसका कारण है कि इस्लाम 1400 वर्ष पुराने पैगम्बरी जीवनादर्शो से पूरी तरह चिपका हुआ है । मुस्लिम लोग यह दावा करते हैं कि इस्लाम सदैव के लिए एक सम्पूर्ण संहिता है यह सब एक बहाना ही है । उदाहरण के लिए इस्लाम की फूट डालने की मनोवृत्ति के कारण मुस्लिम राष्ट्रो को संयुक्त राष्ट्र का अंग नहीं बचना चाहिए था, किन्तु अब स्थतियों में पूरी तरह परिवर्तन आ चुका है कि उनके पास कोई विकल्प शेष नहीं है वे या तो इस संघ में सम्मिलित हो जाएं अथवा नष्ट हो जाएं । इसी प्रकार आधुनिक अर्थव्यवस्था जो ब्याज पर आधारित है, इस्लाम के पूर्णतया विरुद्ध है । कुरआन में ब्याज लेना और देना दोनों ही निषिध हैं किन्तु मुस्लिम राष्ट्रों के पास इस व्यवस्था का कोई विकल्प नहीं है । उनके भी सभी वित्तीय ब्याज पर आधारित है, और वे इस व्यवस्था को लाभ का एक धोकापूर्ण नाम देकर सतत चलाये हुए है । वाह क्या पाखण्ड है । इसी प्रकार की टिप्पणी उनकी कानूनी व्यवस्था पर भी लागू होती है । जो दूसरे राष्ट्रों प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में उधर ली गई है । उदाहरण -स्वरूप ''खुला'' यानी पत्नी का अपने पति को तलाक देने का अधिकार लीजिए । इस कानून के लिए कुरआन में कोई प्राधिकार नहीं है जिसके अनुसार यह अधिकार केवल पुरुष को ही है । हदीस भी इसकी निन्दा करती है। ''वे स्त्रियां जो वैवाहिक बंधन तोड़ती हैं और अपने पतियों को तलाक (खुला) देती हैं, पाखण्डी हैं ।'' (मिश्कट खण्ड 2:3148)

तथापि नारी शक्ति के दवाब के कारण मुस्लिम देशों में अब 'खुला' फैशन में आ रहा है । पुःन कुरआन में पर्दा संबंधी आदेश लगभग सभी मुस्लिम देशों में अव्यावहारिक हो हैं और लिंग भेद के मामले में भी यही सत्य है क्योंकि स्त्रियों और पुरुषों के लिए कार्यालयों, कारखानों, अस्पतालों आदि में साथ-साथ काम न करना आर्थिक दृष्टि से असम्भव हो गया है । इसी कारण अनेक मुस्लिम देशों में बहुपत्नी प्रथा को भी कानून अतोत्साहित किया जाता है । इस्लामी व्यवहारों की एक लम्बी सूची है जो आधुनिक युग में कालातीत हो चुके हैं । शिक्षित मुस्लमान उनकी अवहेलना करते हैं लेकिन साथी मुस्लतानों से मौखिक रूप में उन्हें न्यायोचित करते हैं । यह एक मनोवैज्ञानिक रुग्णता है जो कि इस्लाम के अनुयायियों के लिए मानसिक द्वन्द्व का एक बड़ा स्रोत बन चुकी है । सारी पहेली वस्तुतः, मुल्लाओं के विरुद्ध एक षड्यंत्र है । उनमें अधिकांश लोग शक्ति के भूखे हैं जिनमें कोई नैतिकता अथवा कोई बौद्धिक श्रेष्ठता नहीं है । अतः वे लोग ईमान लाने वालों को मूर्ख बनाने के लिए अंधविश्वास की ताकत काम में लाते हैं और यह भी नहीं सोचते कि राष्‍ के लिए इसके क्या परिणाम होंगे । महज़ब अन्धविश्वास का प्रबल हथियार है जिसका तर्क के साथ वही संबंध है जैसा अन्धकार का प्रकाश से, मूर्खता का बुद्धिमत्ता से, दुष्टता का साधुता से होता है । यही कारण है कि लोग जितने अधिक अन्धविश्वासी होंगे मुल्ला-मौलवियों के लिए दैवी शक्ति के नाम में व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए उतना ही अधिक भ्रष्ट करना, विकृत करना और उत्पीड़ित करना सरल हो जाता है । वे ऐसा प्रदर्शित करतें हैं कि दैवी शक्ति उनके अनुकूल है, भले ही, उसका व्यवहार किजना ही अमानवीय हो । पोप की संस्था का विचार करने से इस सत्य का ज्ञान हो जाता है । ईसा के विषय में चमत्कारिक कहानियाँ बनाकर और उसकी आध्यात्मिक महानता संबंधी मस्तिष्कों को बौखाला देने वाली कहानियाँ गढ़कर ईसा को ईश्वर का पुत्र बना दिया । तदापरान्त पोप ने ईसाइयों के मस्तिष्कों को अपनी अपराध शून्यता से पूर्ण रूपेण आश्वत करा दिया कि ईसा ने उसे (पोप को) इस भूमि पर अपना प्रतिनिधि नियुक्त कर दिया है और इस प्रकार किसी भी ईसाई को निष्कासित करने, दण्ड देने के अधिकार प्राप्त कर लिए जिससे वह किसी भी ईसाई को स्वधर्म-त्यागी घोषित करके पन्थ त्याग का दण्ड दे सकता है । एक राजा के विषय में इसका तात्पर्य था कि वह ईसाई प्रजा पर शासन के योग्य नहीं था जिन्हें उसके विरुद्ध विद्रोह कर देना चाहिए । इस प्रकार एक ईसाई राजा पोप की इच्छानुसार ही शासन कर सकता था । इतिहास साक्षी हैकि जर्मनी के शासक हेनरी चतुर्थ का पन्थ से बहिष्कार किया गया था और पोप की दया के रूप में उसे अपने राजसी वस्त्राभूषण कर साधारण गर्म कपड़े पहनकर नंगे पाँव कँपकँपाती सर्दी में तीन दिन तक सन् 1077 ई0 में कैनौ सा महल के सामने द्वार पर खड़ा रहना पड़ा था । यह स्वयं-आरोपित अपमान का कृत्य ही था जिसने पवित्र पादरी को राजा को क्षमा करने के लिए प्रेरित किया ।

रोम के पवित्र सम्राट फैंड्रिक बरबारोसा का दुर्भाग्य तो इससे भी अधिक थाः उसे पोप को ईसा मसीह का प्रतिनिधि न मानने के अपराध में जनसाधारण के सामने पोप अलक्षेन्दर 3 के पैर चूमने पड़े थे ।

जैसे -जैसे इस्लामी जग्त में आधुनिक वैज्ञानिक प्रगति से ज्ञान के प्रकाश की किरणें पड़ रही हैं, मुस्लिम जनता अन्धविश्वास के घेरे से बाहर निकालने का प्रयास कर रही है । यह मुस्लिम मुल्ला मौलवियों की शान, शक्ति और सम्मान के प्रति चिन्ताजनक चुनौती सिद्ध हो रही है और वे इस जागृती की चिंगारी को महज़्बी कीरता, पवित्र गपबाज़ी और फ़तवों के कहावती प्रभावी शस्त्रों द्वारा पूरे जोर शोर से बुझा देने का भरसक प्रयास कर रहें हैं ।

इस्लामी जग्त की एक त्रासदी यह भी है कि उन्हें विमत की सस्कृति पनपाने की अनुमति नहीं मिली । ईसाइयों की भाँति यह राजनीति को मज़हब से पृथक् नहीं कर सका । इस प्रकार मुस्लिम समाज की दुर्दशा अवर्णनीय हो गई है और राजनेता तक भी जो कि हृदय से इस्लाम विरोधी होने पर भी जनता को पैगम्बर के नाम में, जो कि पैगम्बर के नाम के बहुत अनुकूल है, बहकाने, मूर्ख बनाने और लूटने के लिए सुविधाजनक पाते हैं । यह तकनीक अच्छा काम करती है क्योकि मुस्लिमों को यह पक्का विश्वास है कि पैगम्बर उनके सभी सांसारिक दुःखों के बदले में उनको जन्नत में पहुँचा देगा ।

इस्लामी प्रचार की निरन्तरता ने मुस्लिम मुल्ला-मौलवियों की सामाजिक प्रतिष्ठा असीमित रुप से बढ़ा दी है । आयतुल्लाह खुमैनी ईरान के शाह को अपदस्थ करके ईरान की प्रगती की राह को पलट सका । फलस्वरूप, यह देश स्त्री के लिए बंदीगृह हो गया है , जो पुरुष के लिए यौन खिलौना रह गयी है । अफगानिस्तान जो कभी हरित और सुखी भूमि थीं, जिहाद के जोश से प्रेरित होकर रखैलों से बेहतर नही है, पुरुषों को भी ऐसा बना दिया गया है कि वे नागर स्वाधीनता भूल गए हैं ।

भारतीय उपमहाद्वीप में तथापि इस्लाम प्रचार ने मुल्ला मौलवियों की अपेक्षा राजनीतिज्ञों को अधिक शक्तियाँ दी हैं । यही कारण है कि मौहम्मद अली जिन्नाह जिसका चरित्र इस्लाम आचरण के आदर्शो से सर्वथा विपरीत था, भारत के मुस्लिम समाज को, अल्लाह को प्रसन्न करने के लिए अपनी मातृभूमि के विभाजन के लिए सहमत कराने में सफल हो गया । गैर अरब मुसलमानों में राष्ट्रीय विघटन की भावंनाए निर्माण करने में, तथा मौमिन काफिर के आवरण में अरब का मजहबी सांस्कृतिक साम्राज्य निर्माण हेतु, उन्हें अपने की देश और अन्य देशवासियों के विरुद्ध खड़ा कर देने के लिए अल्लहा उत्सुक रहता है । आश्चर्य का विषय यह है कि यह कैसा अल्लाह है जो अपनी अनुयायी बनाने के लिए '' बाँटो और राज्य करो '' की नीति अपनाता है ? ईश्वर सर्वव्यापी होने के कारण इस प्रकार की निकृष्ट युक्तियों का आश्रय नहीं ले सकता । चूँकि अरब इस रणनीति का मुख्य लाभार्थी रहा है अतः ये योजनांए पैगम्बर मौहम्मद के ही मस्तिष्क की उपज थीं , जो अरब राष्‍ वाद , जिसे उन्होंने अल्लाह द्वारा स्वीकृत एकाकी मजहब ' इस्लाम ' कहा, के माध्यम से अमरत्व प्राप्त कर लिया ।

क्योंकि इस्लाम के नाम पर मुल्ला मौलवियों और राजनीतिज्ञों ने हर बुराई को बढ़ावा दिया है, अब समय आ गया है कि मुसलमानों को, अपना मार्गदर्शन तर्क और सर्वत्र स्थापित नैतिक मूल्यों में खोजना चाहिए । आधुनिक शस्त्रास्त्रों की भीषण मारक शक्ति को देखते हुए युद्ध से बड़ी कोई बुराई नहीं है । इससे हमारे समय के संदर्भ में जिहाद की प्रकृति स्पष्ट हो जाती है । इस्लामी दर्शन विश्व में एक ऐसी व्यवस्था चाहता है जिसमें सभी मानव जातियाँ स्थायी रूप में समाप्त कर दी जाएं जब तक वे भी अल्लाह की पूजा न करने लगें । यहाँ पर कोई भी स्पष्ट देख सकता है कि जन्नत का स्वप्न यानी कि मृत्यु के उपरान्त कामतृप्ति नैतिक रूप से पुरुष की

प्रतिष्ठा के अनुकूल नहीं है क्योंकि इसके कारण वह एक प्रकार की हिंसा में लिप्त हो जाता है जो नीची श्रेणी के पशुओं की ही विशिष्टता है ।

इस्लाम की तुलना में ईसाइयत समय की गति के अनुसार चलती रही है । पोप जान पाल 2 इस बात के लिए बधाई के पात्र हैं कि उन्होंने घोषित किया कि वे मुसलमानों और यहूदियों के साथ अब्राहम के जन्म स्थान उर में जो ईराक में स्थित है सहस्राब्दी यात्रा पर जाना चाहते हैं । ईसाइयों के धर्मगुरु की ओर से यह एक असाधारण वक्तव्य है जिसको अपने पूर्वाधिकारियों द्वारा स्थापित परम्पराओं के अनुसार मुसलमानों और यहूदियों का विरोध करना चाहिए ।

इस्लामी जगत की निरंतर बढ़ रही रूढ़िवादिता जो कि उसके प्रतिगामी व्यवहार और सामाजिक कुण्ठा से उत्पन्न होती है, मानवता की शांति व उत्तर जीवन के लिए वास्तविक संकट बन रही है । जो पंथ जीवन की वास्तविकताओं के बचने के लिए केवल ढोंग है । आत्म विनाश को आमंत्रित करता है । मरणोपरान्त मनचाही कामतृप्ति के लिए सर्वाधिक विलासितापूर्ण स्थल, जन्नत की खोज आत्मप्रवंचना है और अल्लाह जो अपने लिए भक्त एकत्रित करने के लिए ऐसे अनैतिक पूर्ण लालच दे, वह न तो ईश्वर हो सकता है और न पूजा के योग्य । इस्लाम एक ऐसी विचार धारा है जो विसंगतियों पर आधारित है क्योंकि इसमें मानव कल्याण के मूल्य पर ईश्वर की महिमा की स्थापना की चेष्ठा है । यह एक घृणा मूलक दर्शन है जो कि मौमिनों (मुसलमानों) बनाम काफिरों (गैर मुसलमानों) के स्थायी युद्ध पर मानव संस्कृति की स्थापना का प्रबल इच्छुक है ।यही कारण है कि मुसलमान कही भी गैर मुस्लिमों के साथ नहीं रह सकते चाहे वे उनके अपने संबंधी ही क्यों न हों । भारत को ही देखें, मुसलमानों ने अपनी ही मातृभूमि को बलात विभाजित करके पाकिस्तान की रचना की, जो कि उस प्रत्येक वस्तु के लिए जो इस्लामी नहीं है घृणा का जीवंत प्रतीक बन गया है ।

इस्लाम का एक पहलू इससे भी अधिक खराब है वह है इसकी तानाशाही प्रकृति जो किसी भी परिस्थिति में विमत की संस्कृति के लिए अनुमति नहीं देती । इसी कारण इस्लाम में कटु प्रतिद्वन्द्वी पंथ उत्पन्न होते हैं जो कि पारस्परिक संघर्षों और आंतरिक युद्धों में लिप्त रहते हैं । ईराक, ईरान और अफगानिस्तान का अभी हाल ही का इतिहास इस तथ्य को स्पष्ट करता है ।

स्त्रियों के अधिकार, अल्लाह के विशेष शिकार हैं जो कि उनका इस्तेमाल पुरुष प्रधान समाज की स्थापना हेतु करता है जिससें कि पुरुषों के प्रभुत्व का प्रसार हो जाए और पुरुष की कामुकता, भयावहता और बर्बरता के माध्यम से उसका (अल्लाह) शासन स्थायी हो जाए ।

निश्चय ही ईश्वर शक्ति का इतना भूखा नहीं है कि ऐसी निकृष्ट युक्तियों से अपने आपको महिमा मण्डित करे और न ही इतना दुर्बल है कि अपनी महानता को लागू करने लिए पुरुष शक्ति का आश्रय ले ।

ईश्वर के विषय में इस प्रकार का चिंतन ही , ईश्वर की निन्दा है । ईश्वर एक स्वार्थी व्यक्ति नहीं हो सकता । इस सम्मान का अधिकारी होने के लिए उसे लोगों के ऐक्य और प्रतिष्ठा में विश्वास रखना पड़ेगा और मानव अधिकारों का सम्मान करना पड़ेगा । अब समय आ गया है कि मजहब के पीछे छिपे हुए उद्देश्यों को तर्क के प्रकाश में जाँचा परखा जाए ।

यह दावा किया जाता है कि अल्लाह रचयिता है जिसने मनुष्य को इसीलिए बनाया है कि वह सच्चे मजहब इस्लाम को अपनाए ।

क्योंकि इस पृथ्वी पर आज छः अरब व्यक्ति हैं जिनमें न केवल एक अरब लोग मुसलमान हैं और शेष इस मजहब के विपरीत हैं तो यह स्पष्ट है कि अल्लाह रचयिता के रूप में विफल रहा है ।

इस अभाव की पूर्ति के लिए वह अपनु अनुयायियों को काफिरों के विरुद्ध पवित्र युद्ध करने के लिए उकसाता है और इनके कत्ल, लूट, व उनकी पत्नियों को दास बना लेने को कानूनी और श्रेष्ठ घोषित कर देता है । चूँकि नैतिकता के निम्नतम मानको के आधार पर भी ये कार्य अत्याचार युक्त समझे जाते हैं, आश्चर्यजनक लगता है कि ऐसा अल्लाह क्या वास्तव में दैवीय हो सकता है ।

स्थिति इतनी कटु है कि उसका वर्णन भी नही किया जा सकता जब जन्नत को जो कि कामतृप्ति का सर्वाधिक विलासितापूर्ण स्थान है, मानवता के विरुद्ध इस अपवित्र हिंसा को पुरुस्कार स्परुप घोषित किया जाताा है । यह जिहाद कहलाता है, इसके द्वारा एक सांसारिक अरब साम्राज्य का निर्माण हुआ जो अन्ततोगत्वा मजहबी अरब साम्राज्यवाद का रूप ले गया जैसे कि एक लारवा तितली बन जाता है ।

इस तथ्य का जीता जागता उदाहरण, भारत के विभाजन में जो सन् 1947 ई0 में घटित हुआ था, मिल जाता है । यह अरब की तलवार से नहीं हुआ किन्तु यह भारतीय मुसलमानों के अरब के मजहबी साम्राज्य के जुए को ढोने की उत्कट इच्छा के फलस्वरूप हुआ था ।

कामुकता और हिंसा के अतिरिक्त इस्लाम का एक तीसरा दृष्टिकोण भी विद्यमान लगता है जो कि विवेकपूर्ण है । यह घोषणा करता है कि दीन के बारे में कोई जोरजबरदस्ती नहीं (सूरा 2 आयत 256) यदि तुम सच्चे हो तो प्रमाण प्रस्तुत करो (सूरा2 आयत 111)

यदि मुसलमान यह सिद्ध कर सकें कि इस पुस्तक की विषय साम्रगी तथा निष्कर्ष असत्य या दूर की उड़ान वालें हैं तो मैं जन साधारण के सामने क्षमा याचना के लिए वचनबद्ध हूँ । यदि ऐसा नहीं है तो उन्हें अपनी शांति
बनाए रखनी चाहिए और पुनः सोचना चाहिए कि क्या इस्लाम का मूल दैवी है ?

ऊट्टड्डक्रर्फह्नह्त्तट्टद() राष्ट्रीय राष्ट्रीय